अक्तूबर क्रान्ति और उसकी कलियाँ

कहानियां तथा संस्मरण

अक्तूबर क्रान्ति और उसकी कलियाँ

कहानियाँ तथा संस्मरण

सम्पादक
रमेश सिनहा

प्रकाशक
इण्डिया पब्लिशर्स
सी-७/२, रिवर बैंक कालोनी,
लखनऊ

मुद्रक
चेतना प्रिंटिंग प्रेस,
२२ कैसरबाग,
लखनऊ

प्रथम सस्करण फरवरी, १९७८

मूल्य
सादा १० रुपया
लाइब्रेरी सस्करण १२ रुपया

विषय-सूची

दो शब्द

कहानियो, रेखाचित्रा और सस्मरणो के इस सग्रह मे रूस की अक्तूबर १९१७ की क्रान्ति से सम्बन्धित साहित्य के कुछ नमूने सग्रहीत है। इन रचनाओं मे वह क्रान्ति तथा उसके प्रेरक और नेता जैसे फिर जीवित हो उठते है और पढते पढते अक्सर ऐसा लगन लगता है कि उन घटनाओ और व्यक्तियो को हम स्वय अपनी आखों से देख रह हैं। उन्हे पढना और फिर हिन्दी मे प्रस्तुत करना खुद भी एक अत्यन्त सुखद और ऊँचा उठाने वाला अनुभव रहा है।

अक्तूबर १९१७ की युगान्तरकारी क्रान्ति का पिछडे तथा गरीबी और मुसीबतो मे डूब लागा पर, रूस के आम लोगो पर क्या असर पडा था, कैसे एक सवथा नई ज्योति देकर उसने उन्हे बदल दिया था, इसका भी परिचय इस सग्रह की कहानियो म अविस्मरणीय ढग से मिलता है। चाहे आप शोलाखोव की "हरामी' पढें, चाहे फादियव की 'मेतेलित्शा की गश्त" (जिसे उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'पराजय" से लिया गया है), और चाहे उस जबदस्त अनुभव से गुजरें जो अब्दुला कहार की कहानी अध को ज्योति देने वाला", वीरा इनबर की 'नूर बीबी का जुम' अथवा ए० जोरिच की 'अपमान' को पढने से प्राप्त होता है, आपको लगगा कि आप दवे-कुचले इन्साना को बदलता हुआ, मुक्त होकर अचानक साधारण से

कुछ विशिष्ट बनता हुआ अपने सामने देख रहे हैं। इन कहानियो म बनावट की बू कही नही है बल्कि महानता की अदभुत सादगी है।

मैक्सिम गोर्की की 'कामो' और बोरिस लाव्रेन्योव की लम्बी कहानी 'इक्तालीसवा' एक दूसरी ही श्रेणी की कहानियाँ हैं। व उन तरुणो और तरुणियो के प्रतिनिधियो की जीवन-गाथाए हैं जिन्होन अक्तूबर क्रान्ति को करने और फिर उसे बचाने के महायज्ञ म योग-दान करत हुए विस्मयकारी पराक्रम साहसिकता और सूझ बूझ के उदाहरण पश किये थे। ये कहानिया इस बात का साक्षात प्रमाण है कि सत्य कल्पित कथाओ से भी अधिक विस्मयकारी होता है। इक्तालीसवा के आधार पर इसी नाम की एक विश्व-विख्यात फिल्म भी बन चुकी है।

व्लादीमीर ब्रोन्च ब्रूएविच के सस्मरणो और एलीजवेता द्राबकीना की 'चिन्तन' मे लनिन का, कौंसतैंतिन फेदिन की 'गोर्की हमारे बीच म अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के प्रेरक और अमर चितेरे मैक्सिम गोर्की का, तथा कोर्नेई चुकोवस्की के रेखाचित्र 'शिक्षा के जन कमिसार" और यूरी जरमन की कथा 'अहाते में सर म अनातोली लूनाचार्स्की का जो चित्र हमारे सामने उभर कर आता है उसके अनेक पहलुओ से उन्हे पढने स पहल जैसे हम एकदम अपरिचित थ और ये पहलू कितने मानवीय और महत्वपूर्ण हैं! इसी तरह बोलेस्लाव कतायेव की कहानी 'नींद" के माध्यम स नवजात सोवियत सघ की घुडसवार सना के महानायक—मार्शल बुद्योनी को जैसे पहली बार ही हम इतने नजदीक स जान पाते हैं। तो ऐसे थ वे लोग—जिन्होंने वह क्रान्ति की थी और उसे बचाया था!

कुल मिला कर, इस सग्रह मे सोवियत क्रान्ति के प्रारम्भिक दिनो से सम्बन्धित कुछ सवश्रेष्ठ साहित्य सग्रहीत है। इससे कदाचित इस

/ A

बात का भी कुछ आभास मिल सकेगा कि क्रान्ति और साहित्य के बीच कैसा घनिष्ट सम्बन्ध होता है।

हमारे लिए यह कह सकना कठिन है कि हिन्दी मे प्रस्तुत करते समय मूल रचनाओं के साथ कितना न्याय किया जा सका है। हमने कोशिश पूरी की है कि मूलकी हृदय ग्राहकता एवम महानता को आच न आने पाए। इनमे से अनेक का अनुवाद सम्पादक ने स्वय किया है। कई कहानियो का उल्था तरुण साहित्य प्रेमी और राजनीतिक कार्य-कर्ता श्री नरेन्द्र कुमार तोमर ने किया है। पर जिस रूप मे ये रचनाएँ प्रकाशित हो रही हैं, उनकी अन्तिम जिम्मेदारी सम्पादक की ही मानी जानी चाहिए।

आशा है 'अक्तूबर क्रान्ति और उसकी कलियां' को पढने मे हिन्दी के पारखी पाठको को आनन्द मिलेगा और हिन्दी म उपलब्ध अनूदित साहित्य की इस सग्रह से कुछ अभिवृद्धि होगी।

—रमेश सिनहा
सम्पादक

अक्तूबर क्रान्ति और उसकी कलियाँ

अनातोली लुनाचार्स्की

अनातोली लुनाचार्स्की (१८७५-१९३३) रूस के सामाजिक-जनवादी सगठन म १८९२ मे उस समय सम्मिलित हुए थे जब वह केवल १७ वष के थे। बाद म लेनिन के निर्देशन मे उन्होन बोल्शेविक पत्रो, वपर्योद तथा प्रोलेतारी मे लिखना शुरू कर दिया था। अक्तूबर क्रान्ति के बाद अनेक वर्षों तक सोवियत सघ की समाजवादी सरकार मे वह जन शिक्षा मन्त्री थे।

लुनाचार्स्की बहुत ही ओजस्वी वक्ता, पत्रकार तथा साहित्य के विद्यार्थी थे। सोवियत साहित्य के सम्बन्ध मे अनेक मार्मिक लेख लिखने के अलावा कई नाटक भी उन्होने लिखे थे। लेनिन के हृदय मे उनके लिए बहुत स्नेह और सम्मान की भावना थी।

उस तूफानी रात में स्मोलनी

नीचे से लेकर ऊपर तक, स्मोलनी* की इमारत उज्ज्वल प्रकाश में जगमगा रही थी। उसकी दालानों में उत्तेजित लोगों की भीड़ें चक्कर लगा रही थी। चारों तरफ भारी उत्साह था किन्तु इन्सानों का सबसे प्रचण्ड प्रवाह, उमड़ते आते लोगों का वास्तविक सैलाब वह था जो स्मोलनी की ऊपर की मंजिल पर दालान में अन्त की ओर के उस सबसे दूर और पीछे वाले कमरे की तरफ बढ़ रहा था जिसमें फौजी क्रांतिकारी समिति की बैठक चल रही थी। बाहर के कमरे में ड्यूटी पर तैनात नवयुवतियाँ थकान से चूर चूर होने पर भी, इन्सानों के इस अविश्वसनीय रूप से तीव्र रेले को रोकने-संभालने की अत्यन्त साहस पूर्ण ढंग से चेष्टा कर रही थी। लोगों की भीड़ें अनवरत चली आ रही थी। वे जानकारी प्राप्त करना चाहती थी आदेश माँगती थी अथवा तरह तरह की प्रार्थनाएँ और शिकायतें करती थीं।

इस अन्तहीन इन्सानी भँवर में फँस जाने पर आपको अपने चारों

---

* क्रांति से पहले स्मोलनी का संस्थान एक स्कूल था जिसमें उच्च वर्गीय सम्भ्रान्त लोगों की लड़कियाँ पढ़ती थी। १९१७ में उसे पेत्रोग्राद सोवियत का प्रधान कार्यालय बना दिया गया था। बोल्शेविकों के साथ-साथ, देश की दूसरी राजनीतिक पार्टियों के भी कार्यालय उसी में स्थित थे।—सं०

तरफ उत्तेजना से दमकते चेहरो तथा किसी आदेश या फरमान को लेने के लिए फैले हुए हाथो का हुजूम ही हुजूम दिखालायी देता।

मौके पर ही लोगा को तुरत हिदायतें दे दी जाती उन्हे काम सौप दिये जाते—और वे सब के सब अत्यधिक महत्वपूण होते। टाइपिस्टो को, जिनकी मशीनो की टिपटिपाहट कभी बन्द ही न होने पाती था जल्दी-जल्दी निर्देश लिखवा दिये जाते। कोई अफसर आदेश के कागज को अपन घुटने पर रखकर पेंसिल से उस पर हस्ताक्षर घसीट देता, और मिनटो के अन्दर ही, कोई तरुण साथी, इस बात से खुश कि उसे एक जिम्मेदारी सौंपी गयी थी, उस आदेश को लेकर रात के सन्नाटे को चीरता हुआ भयकर रफ्तार से कार पर बहर निकल जाता।

इसी कमरे से सटे पीछे क एक कमरे मे कई साथी एक मेज के सामने बैठे हुए रूस के विद्रोही शहरो और कस्बो को समस्त दिशाओ मे निरन्तर तार के जरिए आदेश भेज रहे थे। य सन्देश जितना ही उत्तेजन और स्फुरण उत्पन्न करने वाले थे—उतने ही उत्तेजक वे साधन थे जिनके द्वारा उन्ह भेजा जा रहा था।

काम की जा आश्चयजनक मात्रा वहाँ पर की गयी थी उसकी अब भी अत्यन्त चकित होकर मैं याद करता हूँ और सोचता हूँ कि अक्तूबर क्रान्ति के समय फौजी क्रान्तिकारी समिति के जा क्रियाकलाप थ वे मानवीय कम शक्ति की एक एसी अभिव्यक्ति थे जो उस अक्षय आरक्षित शक्ति का परिचय देते है जो किसी क्रान्तिकारी के हृदय मे सुप्त और सचित रहती है और इस बात को स्पष्ट कर देती है कि क्रान्ति के शखनाद से जागृत हो उठने पर वह हृदय कैसे कैसे अतिमानुषिक और चमत्कारिक काय कर दिखा सकता है।

सोवियतो की दूसरी काग्रेस स्मोलनी के श्वेत भवन मे उसी शाम को आरम्भ हुई।

प्रतिनिधि हर्ष और विजयोल्लास से झूम रहे थे। चारों तरफ जबदस्त उत्तेजना थी। और यद्यपि शीत महल के आस पास घनघोर लड़ाई चल रही थी और कभी कभी बहुत ही त्रास पैदा करने वाला समाचार आ जाता था किन्तु भय या घबड़ाहट का वहाँ ज़रा सा भी चिह्न नहीं दिखलायी देता था।

जब मैं कहता हूँ कि ज़रा भी घबड़ाहट वहाँ नहीं थी तो यह बात मैं बाल्शेविकों और काग्रेस के उस भारी बहुमत के सम्बन्ध में बता रहा हूँ जो बोल्शेविकों के साथ था। इसके विपरीत, द्वेष से भरे हुए, चकराये-से और डरपोक वे दक्षिणपन्थी समाजवादी" थे जो भय और घबड़ाहट से संत्रस्त में पड़े थे।

अन्त में, जब अधिवेशन शुरू हुआ तो काग्रेस का मिज़ाज स्पष्ट हो गया। बोल्शेविकों के भाषणों को लोग ज़बदस्त उत्साह से सुन रहे थे। उन साहसी तरुण नौसैनिकों की बातों को जो उस भयंकर युद्ध की आँखों देखी रिपोर्ट देने आये थे जो शीत महल के इर्द गिर्द उस समय चल रहा था सराहना और समादर के भाव से सुना जा रहा था।

जब यह चिर-प्रतीक्षित समाचार आया कि शीत महल पर अन्ततः सोवियतों का कब्ज़ा हो गया है और पूँजीवादी मन्त्रियों को गिरफ्तार कर लिया गया है, तो हर्षोल्लास का वेसा—जैसे कभी न समाप्त होने वाला तूफान उठ खड़ा हुआ था।

इसी समय एक मन्शेविक, लेफ्टिनेन्ट कूचिन उठ खड़ा हुआ और मंच पर पहुँच गया। वह उस समय सेना के संगठन कार्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा था। धमकाते हुए उसने स्मोल्नी में जमा लोगों से कहा कि अगर उन्होंने अपनी हरकतें बन्द न की तो पेत्रोग्राद के अपने मार्चे से फ़ौरन वह वहाँ सैनिकों को ले आयेगा और उन्हें ठीक कर देगा। इसके बाद उसने उन प्रस्तावों को पढ़कर सुनाना शुरू कर दिया जो पहली, दूसरी और तीसरी से लेकर बारहवीं सेना

तक ने (जिनमे एक विशेप सेना भी शामिल थी) सोवियत सत्ता के विरुद्ध पास किये थे। उन्हे पढने के बाद उसने पत्रोग्राद को, जिसने "इस तरह का दुस्साहस" करने की हिम्मत की थी फिर धमकी दी और कहा कि वे यदि अपनी गतिविधिया ठीक नही करेंगे तो वह उन्हे ठिकाने लगा देगा।

उसके शब्दो से कोई नही डरा। न उसकी इस घोपणा से ही कोई भयभीत हुआ कि किसानो का पूरा सागर हमारे विरुद्ध उमड पडेगा और हमे लील जायेगा।

लेनिन का जौहर देखते ही बनता था। वह प्रसन्न थे। बिना रुके हुए वह बराबर काम कर रहे थे। दूर के किसी एक कोने मे बैठ कर उन्होने नयी सरकार की उन राजाज्ञाओ को लिख डाला था जो, जैसा कि अब हम जानते हैं, हमारे युग के इतिहास का सवप्रसिद्ध पष्ठ बन गयी हैं।

इन थोडी सी पक्तियो मे जन मन्त्रियो की पहली परिपद किस प्रकार बनी थी उसके सम्बन्ध मे भी अपने कुछ सस्मरण लिपिबद्ध कर दू। जन मन्त्रियो की पहली परिषद की स्थापना स्मोलनी के एक ऐसे छोटे मे कमरे मे हुई थी जिसमे कुर्सियाँ उन हैटो और कोटो के अम्बार के नीचे छिप गयी थी जो उन पर डाल दिये गये थे। मेज पर बहुत कम रोशनी थी और सब लोग उसी को घेरे खडे थे। हम लोग उस समय पुनर्जन्मे रूस के नेताओ का चुनाव कर रहे थे। मुझे लगता था कि चुनाव बहुधा अत्यन्त अचिन्तित ढग से किया जा रहा था और मैं डरता था कि जिन लोगो को चुना गया था वे उन विराट कार्य भारो को उठाने के योग्य नही थे जो देश के सामने थे। मैं उन्हें अच्छी तरह जानता था और मुझे लगता था कि जिन विभिन्न विशेप कार्यो के लिए उन्हे नियुक्त किया गया था उन्हे करने के लिए उन्हे कोई शिक्षा नही मिली थी। लेनिन ने किञ्चित झुनलाहट से मेरी बात को अनसुना कर दिया, किन्तु साथ ही साथ मेरी तरफ देखकर थोडा मुस्कराये भी।

"यह तो केवल थोड़ी अवधि के लिए है" वह बोले। "बाद में हम देखेंगे। हमें सभी पदों के लिए जिम्मेदार लोगों की जरूरत है। अगर वे अनुपयुक्त साबित होते हैं, तो हम उन्हें बदल देंगे।'

लेनिन की बात कितनी सही थी! कुछ लोग, निस्सन्देह, बाद में बदल दिये गये थे। दूसरे अपने पदों पर बने रहे थे। और ऐसे लोगों की भी संख्या कितनी बड़ी थी जिन्होंने काम को डरते डरते हाथ में लिया था किन्तु बाद में उस काम के लिए पूर्णतया सक्षम और सिद्धहस्त साबित हुए थे! निस्सन्देह, उन विराट सम्भावनाओं तथा अलंघ्य दीखने-वाली कठिनाइयों के सम्मुख पहुंच कर कुछ लोगों का (कुछ ऐसे लोगों का भी जिन्होंने सशस्त्र विद्रोह में भाग लिया था और उस संग्राम के केवल दर्शक नहीं थे) सर चकरा गया था।

अद्भुत मानसिक सन्तुलन से लेनिन ने उन तरीकों का अध्ययन किया जिनके माध्यम से कार्य भारों को पूरा करना था और फिर उन्हें उसी तरह अपने हाथ में लेकर सभाला जिस तरह कि एक अनुभवी वायुयान चालक किसी विशाल वायुयान के संचालन चक्र को हाथ में लेकर संभाल लेता है।

जौन रीड

जौन रीड (१८८७–१९२०) एक अमरीकी पत्रकार और लेखक थे जो अक्तूबर क्रान्ति के दिनों में रूस में मौजूद थे।

दस दिन जब दुनिया हिल उठी के रूप में अक्तूबर क्रान्ति का आँखों देखा विवरण उन्होंने १९१९ में प्रकाशित किया था। जौन रीड की पुस्तक की प्रस्तावना लिखते हुए लेनिन ने (अंग्रेजी में) कहा था

"जौन रीड की पुस्तक, दस दिन जब दुनिया हिल उठी को मैंने अत्यधिक दिलचस्पी तथा पूर्ण एकाग्रता से पढ़ा है। बिना रत्ती भर भी हिचकिचाहट के मैं दुनिया भर के मजदूरों से सिफारिश करता हूँ कि वे इस किताब को पढ़ें। यह एक ऐसी किताब है कि मैं चाहूँगा इसकी लाखों करोड़ों प्रतियाँ प्रकाशित की जायें और इसका सभी भाषाओं में अनुवाद किया जाय। सर्वहारा क्रांति तथा सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व वास्तव में क्या है इसे समझने के लिए जो घटनाएँ अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं उनका इसमें सच्चा और अत्यन्त सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है।'

जौन रीड की पुस्तक से यहाँ हम दो संक्षिप्त उद्धरण दे रहे हैं।

उस दिन जब दुनिया हिल उठी

(उद्धरण)

८ बजकर ठीक ४० मिनट हुए थे जब तालियो की जबदस्त गडगडाहट स पता चला कि सभापति मण्डल के सदस्यो* न प्रवश किया। उनमे लेनिन–महान लेनिन भी थ। नाटा कद, गठा हुआ शरीर कन्धो के ऊपर एक बडा सा सिर गजा और आगे की तरफ उभरा हुआ दृढता से जमा था। छोटी छोटी आँखें चिपटी सी नाक, चौडा अच्छा खासा मुह और भारी ठुड्डी दाढी इस समय सफाचट थी किन्तु पहले के और बाद के वर्षो की उनकी प्रसिद्ध दाढी के बाल उगन लगे थ। वे पुरान कपड पहने हुए थ, जिनम पतलून उनके कद को देखते हुए खासी लम्बी थी। चेहरे–मोहरे स वह ऐसे नही थे कि जनता के आराध्य बन सक फिर भी उन्हे जितना प्रेम और सम्मान मिला उतना इतिहास म विरल ही नेताओ को मिला होगा। वे एक विलक्षण जन नेता थे–जो केवल अपनी बुद्धि के बल नेता बन थ। उनकी तबियत म न रगीनी थी न लताफत और न कोई ऐसी स्वभावगत विलक्षणता ही थी जो मन को आकर्षित करती। वह दृढ अविचल तथा

* यहाँ ८ नवम्बर १९१७ को हुई सोवियतो की द्वितीय अखिल रूसी कांग्रेस के द्वितीय अधिवशन के सभापति मण्डल की बात कही जा रही है।—सं०

अनासक्त आदमी थे, परन्तु गहन विचारो को सीधे सादे शब्दो मे समझाने और किसी भी ठोस परिस्थिति का विश्लेपण करने की उनमे अपूर्व क्षमता थी। और, सूक्ष्म दर्शिता के साथ साथ, उनमे जबदस्त बौद्धिक साहसिकता भी भरी हुई थी

अब लेनिन बोलने के लिए खडे हुए। सामने वे पढने के स्टैण्ड को पकडे, वह अपनी छोटी छोटी मिचमिचाती आखो स भीड को एक सिरे से दूसरे सिरे तक देख रहे थे। मिनटो तक तालियो की गडगडाहट होती रही लेकिन, वह जैसे उमसे बेखबर, लोगो के खामोश होन का इतजार करते खडे रह। जब तालिया बन्द हुइ, तो निहायत सादगी से उन्होने कहा, "**अब हम समाजवादी व्यवस्था का निर्माण शुरू करेंगे**!" और फिर जन समुद्र का वही प्रचण्ड गजन आरम्भ हो गया।

"पहला काम है शान्ति की स्थापना के लिए अमली कदम उठाने का सोवियत की इन शर्तो के आधार पर कि--किन्ही देशो को हडपा नही जायगा, किसी म कोई हर्जाना नही वसूल किया जायगा और कौमो को आत्म निणय का अधिकार दिया जायगा---हम सभी युद्धरत देशो की जनता के सामने शान्ति का प्रस्ताव रखेंग। साथ ही, अपन वादे के अनुसार, हम गुप्त सन्धियो को प्रकाशित कर देंगे और उन्हे खारिज कर देंगे--युद्ध और शान्ति का प्रश्न इतना स्पष्ट है कि, मैं समझता हूँ कि, बिना किसी भूमिका के ही सभी युद्धरत दशो के जनगण के नाम घोपणा के मसौद को मैं आपके सामन पढ कर सुना द सकता हूँ"

जब वे बोल रहे थे तो उनका बडा मुह खुला हुआ था और उस पर जैसे हँसी खेल रही थी। उनकी आवाज भारी थी, किन्तु सुनने मे अप्रिय नही लगती थी---लगता था कि वर्षो तक इसी तरह बोलते रहने म वह इस तरह सख्त हो गयी थी। वह एक ही लहजे मे बोलत रहे। सुनने वाले को महसूस होता था कि वह इसी तरह हमेशा-हमेशा

तक बोलते रह सकते थे अपनी बात पर जोर देना होता तो बस जरा सा आग की ओर व झुक जाते, न कोई अंगविक्षेप न भावभंगी। और उनके सामने हजारों सीधे सादे लोगों के एकाग्र मुखड़े थे जो भक्ति भाव से उनकी ओर उठे हुए थे।

समस्त युद्धरत राष्ट्रों के जनगण तथा सरकारों के नाम घोषणा

६ तथा ७ नवम्बर की क्रान्ति द्वारा स्थापित तथा मजदूरों, सैनिकों और किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों पर आधारित मजदूरों और किसानों की यह सरकार समस्त युद्धरत जनगण तथा उनकी सरकारों से प्रस्ताव करती है कि एक न्यायपूर्ण तथा जनवादी शान्ति संधि के लिए वे तत्काल वार्ता आरम्भ करें।

न्यायपूर्ण तथा जनवादी शान्ति से—जिसके लिए युद्ध से थके मान्दे और दुर्बल हो गये सभी युद्धरत देशों के मजदूरों एवं मेहनतकश वर्गों का बहुमत लालायित है और जिसकी जारशाही राजतन्त्र को धराशायी करने के बाद से रूस के मजदूर और किसान स्पष्ट रूप से लगातार माँग करते आये हैं—सरकार का मत सब ऐसी तात्कालिक शान्ति से है जिसमें दूसरे देशों का हड़पा नहीं जायगा [अर्थात जिसमें दूसरे देशों के प्रदेशों को अधीन नहीं बनाया जायगा दूसरी कौमों (जातियों) को बलात हड़पा नहीं जायेगा] और जिसमें किसी प्रकार के हर्जाने नहीं वसूल किये जायेंगे।

रूस की सरकार समस्त युद्धरत देशों के जनगण से प्रस्ताव करती है कि ऐसी शान्ति की स्थापनार्थ बातचीत सम्बन्धी निर्णायक कदम उठाने के लिए तुरन्त तनिक सा भी विलम्ब किये बिना और समाम देशों और जातियों की अधिकृत जन प्रतिनिधि सभाओं द्वारा इस प्रकार की शान्ति की सभी शर्तों की निश्चित पुष्टि की जाने से पहले ही वे अपनी रजामन्दी जाहिर करें और ऐसी शान्ति संधि पर हस्ताक्षर करें..

ठीक १० बज कर ३५ मिनट पर कामेनेव ने कहा कि जो लोग "घोषणा" के पक्ष म हो वे अपने काड दिखलाये। केवल एक प्रतिनिधि न विरोध मे अपना हाथ उठाने की जुरअत की, किन्तु उसके चारो ओर लोगो मे यकायक जो उत्साह भडक उठा उसकी वजह से उसने भी अपना हाथ जल्दी से नीचे कर लिया "घोषणा' सवसम्मति स स्वीकृत हो गयी।

सहसा, हमने देखा कि जैसे एक ही सहज प्रेरणा से अनुप्राणित होकर, हम सब उठ खडे हुए हैं और हमारे कण्ठो मे "इण्टरनेशनाल' (मजदूरो के अन्तर्राष्ट्रीय गीत) का मुक्त, आरोही स्वर फूट निकला है। एक पुराना, खिचडी बालोवाला सिपाही बच्चे की तरह फूट-फूट कर रो पडा। अलेक्सान्द्रा कोलन्ताई न जल्दी से अपन आसुओ को किसी तरह रोक लिया। गीत के प्रबल स्वर सभा भवन मे गूजते हुए खिडकियो और दरवाजो से बाहर निकल गये और ऊपर उठ कर निस्तब्ध आकाश मे व्याप्त हो गय। "लडाई खत्म हो गयी! लडाई खत्म हो गयी!' मेरे पास खडे एक नौजवान मजदूर न कहा। उसका चेहरा दमक रहा था। और जब गान समाप्त हो गया और हम सब वहाँ एक विचित्र सी खामोशीमे मन्त्रमुग्ध से खोये-खोये खडे थे तभी सभा भवन के पीछेसे किसी ने आवाज दी "साथियो! हम उन लोगो के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करें जिन्होंने स्वतन्त्रता के लिए अपने जीवनो की बलि दी है!" और तब हमने शव यात्रा का वह शोक-गान गाना शुरु कर दिया जिसका स्वर धीमा व उदास होते हुए भी विजयपूर्ण था। वह ठेठ रूसी और अत्यन्त हृदयद्रावक गीत था। 'इण्टरनेशनाल" (मजदूरो का अन्तर्राष्ट्रीय गीत) आखिर तो विदेशी ही ठहरा। परन्तु "शव यात्रा" मे तो ऐसा लगता था कि जैसे उन धूल धूसरित जन समुदायो की आत्मा ही किसी ने उँडेल दी थी जिनके प्रतिनिधि इस भवन मे बैठे हुए अपने धुधले मानस चित्रो के आधार पर एक नये रूस का और सम्भवत उससे भी बडी किसी चीज का निर्माण कर रह थे।

जन स्वातन्त्रय के लिए, जन-सम्मान के लिए,

प्राणघाती युद्ध मे तुमने अपने जीवन की आहुति दी।

तुमने अपना जीवन बलि चढ़ा दिया और अपना सब कुछ होम कर दिया।

भयकर बन्दी गृहो मे तुमने यातनाएँ सहीं,

जजीरो से बँधे तुम काले पानी गये

तुमने अपनी जजीरो की पीडा को सहा और उफ भी नहीं किया,

क्योकि अपने दुखी भाइयों की आवाज को तुम अनसुना नहीं कर सकते थे

क्योकि तुम्हारा विश्वास था कि न्याय की शक्ति खड्ग की शक्ति से बडी है

समय आयेगा जब तुम्हारा अर्पित जीवन रग लायेगा।

वह समय आने ही वाला है जब अत्याचार ढहेगा

और जनता उठ खडी होगी—स्वतन्त्र और महान !

भाइयो, अलविदा ! तुमने उदात्त रास्ता चुना

तुम्हारी समाधि पर हम शपथ लेते हैं

आजादी के लिए और जनता की खुशी के लिए हम लडेंगे, सघर्षरत रहेंगे

इसी के लिए वे, मार्च* के शहीद वहा मास के मैदान की ...नी ठण्डी बिरादराना कब्र म, पडे हुए है इसी के लिए हजारो ... दसियो हजारो लोगो ने जलो काले पानी और साइबेरिया की ... म अपनी जानें गँवायी है। वह क्रान्ति आज आयी है, किन्तु वह

...फरवरी क्रान्ति के शहीद।—स०

उस तरह नही आयी जिस तरह वे सोचते थे, या जिस तरह बुद्धिजीवी चाहते थे, लेकिन वह आ गयी है—उद्दण्ड, सबल, सारे सूत्रो की धज्जियाँ उडाती हुई, भावुकता को तिरस्कारपूर्वक ठुकराती हुई, **सच्ची, वास्तविक क्रान्ति।**

"मिखाइलोवस्की अश्वारोहण स्कूल" के विशाल भवन के द्वार खुले हुए जैसे जम्हाई ले रह थे। दो सन्तरियो ने हम रोकने की कोशिश की, किन्तु उनकी परवाह न कर और उनकी क्रोधभरी आपत्तियो को अनसुना करते हुए, दनाते हुए हम अन्दर घुस गये। अदर उस विशाल सभा भवनके ऊपर, बिल्कुल छत के समीप केवल एक आर्क लैम्प जल रहा था। सभा-भवन के चौकोर चालीसा खम्भे और उसकी खिडकियो की कतार अँधेरे मे खोयी हुई थी। उनके इर्द गिर्द बख्तरबन्द गाडिया की भयावह आकृतिया धुधली धुधली दिखलायी दे रही थी। एक गाडी सबसे अलग सभा भवन के बीचो बीच ठीक आर्क लम्प के नीचे खडी थी और उसके चारा ओर भूरी वर्दिया पहने लगभग दो हजार सनिक जमा थे। उस शाही इमारत की विशालता मे वे जैसे खो गये थे। लगभग एक दजन आदमी—अफसर, सैनिक समितियो के सभापति, और वक्ता—गाडी के ऊपर लटके बठे थे और एक सनिक बीच के कँगूरे पर खडा होकर भाषण दे रहा था। उसका नाम खा जूनोव था। पिछली गर्मियो म हुई बख्तरबन्द टुकडिया की अखिल रूसी काग्रेस का वह अध्यक्ष था। चमडे का कोट पहने, जिस पर लेफ्टीनेण्ट के झब्बे लग थ, यह सुन्दर छरहरे बदन का फुर्तीला आदमी तटस्थता के समर्थन मे जोरा से भाषण द रहा था।

'रूसिया के लिए अपने ही रूसी भाइया का मारना एक भयकर चीज है,' उसने कहा। 'जिन सिपाहिया ने कन्धे से कन्धा मिलाकर ज़ार का मुकाबला किया और ऐसी लडाइया म विदेशी शत्रु को परास्त किया जो इतिहास म सदा अकित रहगी, उनके बीच गृह युद्ध कभी नहीं होना चाहिए! राजनीतिक पार्टियो के इन झगडा-टण्टा से हम सिपा-

हियो को क्या बना देना है ? मैं आपसे यह तो नही कहूँगा कि अस्थायी सरकार एक जनवादी सरकार थी   पूँजीपति वर्ग के साथ हम किसी भी प्रकार की सयुक्त सरकार नही चाहते, बिल्कुल नही चाहते। एक सयुक्त जनवादी सरकार जरूर हम चाहिए, वरना रूस का बेडा गर्क हो जायेगा ! ऐसी सरकार की स्थापना हो जाने पर गृह युद्ध की और भाई द्वारा भाई को मारने की कतई कोई जरूरत नही रह जायेगी !"

उसकी बात उचित लगती थी। विशाल सभा भवन गगन भेदी नारो और तालियो की गडगडाहट से गूज उठा।

एक सिपाही ऊपर मच पर जा पहुँचा। उसका चेहरा सफेद और तना हुआ था। जोर से चिल्लाते हुए उसने कहना शुरु किया साथियो ! मैं रूमानिया के मोर्चे से आप सब को यह जरूरी सन्देश देने के लिए आया हू कि शान्ति होनी चाहिए ! फौरन शान्ति की स्थापना की जानी चाहिए ! जो भी हम शान्ति प्रदान कर सकता है चाहे वह बोल्शेविक पार्टी हो और चाहे यह नयी सरकार उसी के पीछे हम चलेंगे। शान्ति ! मोर्चे पर जो हम लोग हैं अब और अधिक नही लड सकते। हम न जर्मनो से लड सकते हैं न रूसियो से—" यह कह कर वह नीचे कूद पडा और वह सारी क्षुब्ध उत्तेजित भीड जैसे दर्द से कराह उठी। किन्तु, उसके बाद ही जब एक मेन्शेविक प्रतिरक्षावादी* ने उठ कर यह कहने की कोशिश की कि लडाई को तब तक चलाते जाना आवश्यक है जब तक कि मित्र राष्ट्रो की विजय नही हो जाती तो भीड जैसे आग-बबूला हो उठी।

एक प्रचण्ड आवाज ने गरजते हुए कहा 'तुम तो केरेन्स्की की तरह बकवास कर रहे हो !'

---

* मेन्शेविक प्रतिरक्षावादी—ये लोग अस्थायी सरकार की साम्राज्यवादी नीति के समर्थक थे।—स०

दूमा के एक प्रतिनिधि ने तटस्थता के पक्ष मे दलीलें पेश की। सिपाहियो ने उसे सुना जरूर, लकिन बुडबुडाते हुए, वे महसूस कर रहे थे कि वह उनका अपना आदमी नही था। समझने की इतनी सख्त कोशिश करते हुए, फैसला करने के लिए इतना कठोर प्रयास करते हुए इसानो को मैंने कभी नही देखा। बोलनेवाले की ओर टकटकी लगाये वे अविचल भाव से देख रहे थे उनकी दृष्टि मे भय.वह एकाग्रता थी। सोचने के प्रयास म उनके माथो पर बल पडे हुए थ, चेहरे पर पसीने की बूदें छलक रही थी। वे विशालकाय देवा जैसे लोग थ, उनकी आँखें बच्चो की तरह निश्छल थी और उनके चेहरे प्राचीन महाकवियो के शूरवीरो जसे थे

अब एक उनका अपना आदमी—एक बोल्शेविक बोल रहा था। उसके अन्दर से गुस्से और नफरत की चिंगारिया निकल रही थीं। उसकी बातें उन्हे पहले वाले वक्ता से कुछ ज्यादा अच्छी नही लग रही थी। उनका मिजाज कुछ और ही था। इस क्षण साधारण विचारो के प्रवाह से बहुत ऊँचे उठ कर वे रूस के, समाजवाद के, सारे ससार के विषय मे सोच विचार कर रहे थे—जैसे कि क्रान्ति जीवित रहेगी या मर जायेगी इसका सारा दारोमदार उन्ही के ऊपर था

एक के बाद एक कितने ही भाषणकर्ता आये और, उस तनावभरी खामोशी, समर्थनभरी तालियो की गडगडाहट या क्रुद्ध गर्जनाके बीच, एक ही सवाल पर बार बार बहस करते रहे हम युद्ध से हट जाना चाहिए या नही ? खारजुनाव फिर बोला, हमदर्दी से और समझाने की कोशिश करता हुआ। किन्तु शान्ति की वह चाहे जितनी बातें करे, आखिर तो वह एक अफसर था, और एक प्रतिरक्षावादी था ? उसके बाद वासिली ओस्त्रोव का एक मजदूर बोलने आया। उसका स्वागत उन्होने इस प्रश्न के साथ किया, "मजदूर भाई, तुम हमे शान्ति दोगे या नही ?" हमारे पास कुछ आदमी बैठे थे जिनमे बहुतेरे अफसर

थे, उन्होंने तटस्थता के हिमायतियों का तालियों के साथ समर्थन करने के लिए एक गिरोह सा बना लिया था। वे बार बार 'खार्जुनोव! खार्जुनोव'! की रट लगा कर उसे बोलने के लिए बुलाते थे। और जब भी कोई बाल्शेविक बोलने की कोशिश करता था, तो वे सीटियाँ बजा कर उसका अपमान करने की कोशिश करते थे।

अचानक गाड़ी के ऊपर जमा सैनिक समितियों के आदमी और अफसर किसी चीज के बारे में बड़े जोर शोर से हाथ हिला हिला कर बहस करने लगे। श्रोताओं ने चिल्ला चिल्ला कर पूछना शुरू किया कि माजरा क्या है। वह सारा जन समुदाय बेचैनी से अधीर और आलोड़ित हो उठा। एक सिपाही ने जिसे एक अफसर पकड़ कर रोके हुए था, अपने को छुड़ा लिया और अपना हाथ ऊपर उठाकर खड़ा हो गया।

चिल्लाते हुए वह बोला, 'साथियो! कामरेड क्राइलेंको यहाँ मौजूद हैं और हमसे कुछ कहना चाहते हैं।' सभा भवन में हल्ला मच गया—एक साथ ही तालियों, सीटियों और 'बोलिए! बोलिए!' तथा 'मुर्दाबाद!' की तीव्र आवाजें आने लगीं। इसी सारे हल्ले गुल्ले के बीच सैनिक मामलों के जन कमिसार (मंत्री) गाड़ी पर चढ़ गये। सामने और पीछे से कुछ हाथ चढ़ने में उन्हें सहारा दे रहे थे तो कुछ हाथ ऊपर और नीचे से उन्हें खींच रहे थे और धक्का दे रहे थे। गाड़ी पर चढ़ कर क्षण भर वे खामोश खड़े रहे और फिर आगे बढ़ कर उसके रेडियेटर पर खड़े हो गये। उन्होंने अपने दोनों हाथों को कमर पर रखा और मुस्कराते हुए धीरे से चारों ओर नजर दौड़ाई। वह एक ठिगने से आदमी थे जिनकी टाँगें उनके शरीर के मुकाबले में छोटी थीं। सिर उनका नंगा था, उनकी वर्दी पर कोई बिल्ले या तम्बे नहीं थे।

मेरे पास जो गिरोह बैठा था उसने बेतहाशा चीखना और शोर मचाना शुरू किया "खार्जुनोव! हम खार्जुनोव को चाहते हैं! क्राइलेंको मुर्दाबाद! अपना जबड़ा बन्द करो! गद्दार का नाश

हो ।" पूरे सभा भवन मे खलबली मच गयी और चारा तरफ शोर होने लगा । और तभी, बफ की किसी बडी चट्टान की तरह भयावह ढग से खिसकते हुए, हमारी तरफ बढते हुए, बहुत से लम्बे-तडगे काली भौंहो वाले आदमी भीड को ठेलते-ठालते झपट कर आगे आ गये ।

"कौन हमारी मीटिंग को तोड रहा है ?" कडक कर उन्होने कहा । 'यह सीटी कौन बजा रहा है ?' वहा जो गिरोह इक्ट्ठा था वह घबडा कर तितर बितर हो गया, उसके लोग इधर उधर भागते नज़र आये-- और फिर दुबारा इक्ट्ठा होने का साहस व नही कर सके

थकान म भारी आवाज मे क्राइलेको न शुरू किया, 'साथी सिपाहिया ! मुझे अफसास है कि मैं आपस ठीक से बात नही कर पा रहा हूँ, मै चार रातो से सोया नही हूँ

'मुझ आपको यह बतलान की जरूरत नही है कि मैं एक सिपाही हूँ । मुझे आपको यह बतलाने की भी जरूरत नही है कि मैं शान्ति चाहता हूँ । लकिन जो बात मुझे आपसे अवश्य कहनी है वह यह है कि बोलशेविक पार्टी न-जिसने आपकी तथा उन सभी दूसरे वीर साथिया की सहायता स खून के प्यासे पूजीपति वग की सत्ता को सदा के लिए धराशायी कर दिया है और मज़दूरा और सिपाहिया की क्रांति को सफलतापूवक सम्पन्न कर लिया है--वादा किया था कि ऐसा करन के तुरन्त बाद दुनिया के तमाम जनगण के सामने वह शान्ति का प्रस्ताव रखेगी । इस वादे का पूरा कर दिया गया है--आज ही पूरा कर दिया गया है !' तालियो की गडगडाहट से सभा भवन फिर गूज उठा ।

'आपसे कहा जाता है कि आप तटस्थ रहे--आप तो तटस्थ रहे और युकर लोग (फौजी कैडेट) तथा "मौत की टुकडिया," जो कभी भी तटस्थ नही रहती--सडको पर हमे गोलिया से भूनती रहे और केरेन्सकी को, अथवा शायद उसी गिरोह के किसी दूसरे डाकू को, पेत्रोग्राद मे वापिस लाकर फिर हमारे सिर पर बैठा दे ! कालेदिन दोन नदी की

तरफ से बढ रहा है। केरेन्स्की मोर्चे की तरफ से हमारी ओर झपटता आ रहा है। कोर्नीलोव अगस्त की अपनी कोशिश का दोहरान के लिए तेखी-तख्ता को उभाड रहा है। इन तमाम मन्शेविकों और समाजवादी क्रान्तिकारियों ने—जो आज आप से गृह युद्ध को टालने की अपीलें कर रहे हैं—गृह-युद्ध के ज़रिए नहीं, तो किस तरह सत्ता को अपने हाथ मे बनाये रखा है ? और वह भी कैसे गृह युद्ध के ज़रिए—उस गृह युद्ध के ज़रिए जो जुलाई से लगातार चला आ रहा है और जिसमे आज ही की तरह, ये लोग बराबर पूँजीपति वर्ग की तरफ रहे हैं।

"अगर आपने पहले ही मन में फैसला कर लिया है तो मैं आपको कैसे समझा सकता हूँ ? सवाल बहुत सीधा सादा है। एक तरफ केरेन्स्की, कालेदिन और कोर्नीलोव तथा मन्शेविक, समाजवादी क्रान्तिकारी, कडेट दूमावादी और अफसर हैं　　ये हमसे कहते हैं कि उनके उद्देश्य अच्छे हैं। दूसरी तरफ मजदूर सैनिक और नौसैनिक तथा एकदम गरीब किसान हैं। सरकार आपके हाथ में है। आप ही मालिक है। बृहत्तर रूस आज आपका है। क्या आप उसे वापस लौटा देंगे ?

श्नाइलेन्को जब बोल रहे थे तो स्पष्ट था कि वह केवल अपनी इच्छा शक्ति के बल पर खडे थे। पर जैसे जैसे वह बोलते गये वैसे ही वैसे उनकी थकी, बैठी हुई आवाज के अन्दर से उनके शब्दो में जो गहरी सच्ची भावना थी वह प्रकट होती गयी। भाषण खत्म करते ही वह लडखडाये, और अगर सैकडों हाथों ने आगे बढकर उन्हे सहारा न दे दिया होता तो शायद वह गिर ही पडते। जिस मेघगर्जन से उनके भाषण का स्वागत किया गया वह उस सभा भवन के विशाल धुंधले कोनो से प्रतिध्वनित हो उठा।

ख्राजुनोव ने फिर बोलने की कोशिश की, लेकिन लोगो ने हल्ला करना शुरू कर दिया, 'वोट लो ! वोट लो ! वोट !" अन्त मे उनकी मर्जी के सामने झुकते हुए, ख्राजुनोव ने अपना प्रस्ताव पढ सुनाया। उसमे कहा गया था कि सैनिक क्रान्तिकारी समिति से बढ़कर

ब द टुकडी अपने प्रतिनिधि को वापस लेती है और इस बात का एलान करती है कि इस गह युद्ध मे वह तटस्थ है। जो लोग प्रस्ताव के पक्ष मे हा वे दायी ओर चले जायें, जो विराध म ह वे बायी आर। क्षण भर की दुविधा और निस्तब्ध प्रतीक्षा के बाद, मजमा तेज़ी के साथ, लडखडाता और गिरता हुआ बायी तरफ बढने लगा। धुधले प्रकाश मे सैकडो भीमकाय सैनिको का जन पुञ्ज उस ग दे फश पर दौडता हुआ बायी तरफ पहुँच गया आस-पास लगभग पचास व्यक्ति, जो हठ पूवक प्रस्ताव का समथन कर रहे थे, खाली खडे रह गये। और जब गगन भेदी जयघोप से ऐसा लगने लगा कि वह ऊँची छत फट जायगी तो वे पीछे की ओर मुडे और तेज़ी से हाल से बाहर निकल गये—और, उनम से कुछ तो, क्राति के पथ स ही बाहर निकल गय

कल्पना कीजिए कि इसी सघप की जो इस सभा-भवन म देखन को मिला था, शहर व ज़िले की हर बारिक मे, पूरे मोर्चे पर, और पूरे रूस मे, पुनरावत्ति हो रही थी। कल्पना कीजिए कि क्राइले को जैसे कई-कई रात के जग लोग एक जगह से दूसरी जगह रेजीमेण्टा की नब्ज़ का पता लगाते, बहसे करत, डराते धमकाते और समझाते पुचकारते दौड रहे है। और फिर कल्पना कीजिए कि यही चीज़ हर मजदूर यूनियन की हर स्थानीय शाखा मे, कारखानो और गावा, तथा दूर दूर तक फल हुए रूसी बेडा के जगी जहाज़ो मे दोहरायी जा रही है। खयाल कीजिए कि उस विशाल देश के एक किनारे से दूसरे किनार तक, सभी जगह लाखों रूसी नागरिक—मज़दूर किसान, सैनिक और नौसनिक—भापण-कर्त्ताआ की तरफ एकटक नज़र लगाये हुए, अत्यत एकाग्र भाव से उ हे समझने और यह तय करन की कोशिश कर रह ह कि अपने लिए वे कौन सा रास्ता चुनें और फिर, अत मे, उसे चुनकर वे सवसम्मति से फैसला कर रह हैं। तो ऐसी ही थी रूसी क्राति

व्लादीमीर बोन्च-ब्रूएविच

व्लादीमीर बोच-ब्रूएविच (१८७३–१९५५) कम्युनिस्ट पार्टी के सबसे पुरान सदस्या म स एक थ। उहान फरवरी और अक्तूबर की क्रातिया मे सक्रिय भाग लिया था। लनिन क साथ उनका घनिष्ट सम्बध था और वर्षों तक उहान उनके साथ काम किया था।

अक्तूबर क्राति के प्रारम्भिक दिना से लेकर १९२ तक वह जन मत्रियो (जन कमिसारा) की परिषद के कार्यवाहक मत्री थे। बाद मे वह झिज्न ई ज्नानिए (जीवन और ज्ञान) नामक राजकीय प्रकाशन गह के प्रधान सम्पादक तथा राजकीय साहित्यिक सग्रहालय के सगठनकर्त्ता एवम सचालक थे।

रूस के क्रातिकारी आदोलन के विषय म अनक निबध उहोने लिखे थे। साहित्यिक विषया तथा नस्शास्त्र (ethnography) पर भी उहोने अनेक लख लिखे थे।

लेनिन ने भूमि सम्बन्धी आज्ञप्ति (डिक्री) कैसे लिखी थी

बोल्शेविक क्रान्तिकारी शक्तियों द्वारा शीत महल पर कब्जा कर लिये जाने के बाद ही लेनिन ने, जो दृढ़ कदम उठाने के सम्बन्ध में हमारे सैनिक नेताओं की सुस्ती और ढिलाई के कारण अत्यधिक चिन्तित थे, मुक्त भाव से साँस ली। तब अपने सीधे सादे छद्म भेष को उन्होंने उतार कर फेंक दिया और अपने पुराने राजनीतिक मित्रों को लेकर, उस तरफ को चल पड़े जिधर पत्रोग्राद के मजदूरों और सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियत का अधिवेशन क्रान्तिकारी घटनाओं के समापन की प्रतीक्षा कर रहा था।

"गगन भेदी जयघोष कहने से उस चीज का हल्का-सा भी आभास नहीं मिलता जो मंच पर लेनिन के चढ़ने के समय घटित हुई थी वह गगन भेदी जयघोष से कहीं अधिक थी। ऐसा लगता था कि मानवीय भावनाओं की एक प्रचण्ड आँधी उठ खड़ी हुई थी जिसमें सम्पूर्ण सभा-भवन अकल्पनीय गति से उड़ा चला जा रहा था। सभा शुरू हुई। अभिनन्दनों, नारों, हर्षोल्लास का तुमुल और अन्तहीन कोलाहल फिर उठ खड़ा हुआ और वह अद्भुत, ऐतिहासिक सभा अन्त तक इसी तरह के तूफानी और उत्साहपूर्ण वातावरण में चलती रही।

आखिरकार, जब सायंकाल की सभा का काम पूरा हो गया, तो रैन बसेरे के लिए हम लोग मेरे निवास स्थान पर गये। जो कुछ हमें

मित्र सवा उस यान के बाद मैंने इस बात की भरसक कोशिश की कि व्लादीमीर इलिच रात को थोड़ा सा आराम करें। यद्यपि वे उत्तेजित थे किन्तु यह भी स्पष्ट था कि वे अत्यधिक थके हुए थे। बड़ी मुश्किल से मैं उन्हें इस बात के लिए राजी कर सका कि वे मेरी चारपाई पर जो एक अलग कमरे में पड़ी थी, सो जायें। इस कमरे में मेज, कागज, स्याही तथा एक छोटा सा पुस्तकालय भी था जिसका वक्त जरूरत वे इस्तेमाल कर सकते थे।

उसी के बगल के कमरे में एक सोफा पर मैं लेट गया। लेटने से पहले मैंने यह तय कर लिया था कि जब तक मुझे इस बात का पक्का भरोसा न हो जायगा कि व्लादीमीर इलिच सो गये हैं तब तक मैं जागता रहूँगा। और अधिक सुरक्षा की दृष्टि से मैंने घर के सड़क की तरफ के दरवाजों और खिड़कियों के सारे ताले, चटकनियों और बड़ों को भी मजबूती से लगा दिया। अपने रिवाल्वरों को भी मैंने भर लिया। मैं सोच रहा था कहीं ऐसा न हो कि घर तोड़ कर व्लादीमीर इलिच को गिरफ्तार करने या जान से मार देने की कोशिश की जाय—क्योंकि सत्ता को हाथ में लेने के बाद यह हमारी पहली रात्रि थी और इसमें कुछ भी हो सकता था।

किसी भी ऐसी संकटपूर्ण स्थिति का सामना कर सकने की तैयारी के रूप में एक अलग कागज पर मैंने उन तमाम साथियों तथा स्मालनी और मजदूरों व ट्रेड यूनियन कमेटियों के टेलीफोन नम्बर लिख लिये जिन्हें मैं जानता था जिससे कि जरूरत के समय मैं उन्हें भूल न जाऊँ।

तब तक व्लादीमीर इलिच ने अपने कमरे की बत्ती बुझा दी थी। मैंने कान लगा कर सुनने की चेष्टा की कि वह क्या कर रहे हैं किन्तु अन्दर से कोई भी आहट नहीं मिली। मुझे बहुत जोर से उँघाई आ रही थी और शायद एक ही आध क्षण में मैं सो गया होता, किन्तु तभी

अचानक उनके कमरे मे फिर रोशनी जल उठी। मैंने सुना कि बिना ज़रा भी आवाज़ किये वह अपनी चारपाई से उठे, अपने को आश्वस्त करने के लिए कि मैं सचमुच 'सो गया हूँ" (जो कि वास्तविकता थी नही) आहिस्ता से उन्होने दरवाज़ा खोला और फिर धीरे धीरे जिससे कि कोई जग न जाय, वह मेज़ के पास पहुँच गये। मेज़ के सामने बैठ कर उन्होने दावात का ढक्कन हटाया, कुछ कागज़ो को सामने रखा और तुरन्त काम मे जुट गये।

उन्होने लिखा, उसे काटा, पढा, कुछ नोट बनाये, दोबारा लिखना शुरू कर दिया और फिर अन्त मे, ऐसा लगा कि उन्होने जो कुछ लिखा था उसकी वह एक अच्छी कापी तैयार कर रहे हैं। रोशनी होने लगी थी और आकाश पेत्रोग्राद मे दूर से आये पतझड के अरुणोदय के रंगो से हल्का हल्का रंगने लगा था जबकि ब्लादीमीर इलिच ने अपने कमरे की बत्ती बुझायी और फिर वह चारपाई पर जाकर लेट गये।

सुबह जब उठने का समय हुआ तो घर मे हरेक से मैंने चुप रहने के लिए कहा। मैंने लोगो को बतलाया कि ब्लादीमीर इलिच सारी रात काम करते रहे थे और निस्सन्देह बहुत थक गये थे। किन्तु जब उनके आने की कोई भी आशा नही कर रहा था हमने देखा कि अचानक उनके कमरे का दरवाज़ा खुला और पूरे तौर से तैयार होकर वह कमरे से बाहर आ गये। वे एकदम ताज़ा और प्रसन्न दिख रहे थे। थकान का उनके चेहरे पर कही नामो निशान तक नही था और वह हम सबके साथ हँसी-मज़ाक कर रहे थे।

हम सब का अभिवादन करते हुए उन्होने कहा, "समाजवादी क्रान्ति का आज पहला दिन है। इस अवसर पर मैं आप सबको बधाई देता हूँ।" उनके हाव-भाव मे थकान या परेशानी का कही कोई चिह्न न था। ऐसा लगता था जसे कि रात भर उन्होने अच्छी तरह आराम कर

हमेशा समर्थन करेंगे। जरूरी है कि किसानों के साथ हम घनिष्ट रूप में सम्पर्क स्थापित करें और उनके जीवन तथा उनकी आकांक्षाओं को समझें। फिर भी अगर कोई मूर्ख हैं जो हम पर हँसते हैं, तो उन्हें हँसने दो। समाजवादी क्रांतिकारियों को हमने किसानों की इजारेदारी नहीं दे दी है और न हमारा कभी ऐसा इरादा था। सरकार की हम मुख्य पार्टी हैं और यह स्वाभाविक है कि, सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की स्थापना करने के बाद हमारे सामने सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न किसानों का है।"

भूमि सम्बन्धी आज्ञप्ति की घोषणा कांग्रेस में उसी दिन शाम को करनी थी। इसलिए तय किया गया कि उसे तुरंत टाइप करवा लिया जाय और अखबारों में भेज दिया जाय जिससे कि अगले दिन सुबह ही वह छप जाय। आज्ञप्ति को जनता के बीच व्यापक रूप से प्रचारित करने और सरकार की समस्त विज्ञप्तियों को प्रकाशित करना तमाम अखबारों के लिए अनिवार्य कर देने का विचार व्लादीमीर इलिच के मस्तिष्क में इसी समय पैदा हुआ था।

फैसला किया गया कि भूमि सम्बन्धी आज्ञप्ति को एक अलग पुस्तिका के रूप में तुरंत छाप कर मुख्यतया उन सैनिकों के बीच बंटवा दिया जाय जो देहातों की तरफ वापस जा रहे थे जिससे कि उनके माध्यम से उसकी खबर अधिक से अधिक किसानों के पास पहुंच जाय। तय किया गया कि आज्ञप्ति की ५०, ०० प्रतियां छापी जायँ। अगले चन्द दिनों के अन्दर ही इन तमाम कामों को अत्यन्त खूबी के साथ पूरा कर लिया गया।

जल्दी ही हम लोग स्मोल्नी की तरफ चल दिये—पहले पैदल चल फिर एक ट्राम पकड़ ली। व्लादीमीर इलिच को सड़कों पर जब पूर्ण व्यवस्था दिखलायी दी तो उनका चेहरा खुशी से खिल गया। अधीरता से वह शांति की प्रतीक्षा करने लगे। द्वितीय अखिल रूसी

कांग्रेस द्वारा ज्योंही शांति सम्बन्धी आज्ञप्ति पारित कर ली गयी त्योंही, अत्यन्त स्पष्ट आवाज में, भूमि सम्बन्धी आज्ञप्ति को उन्होंने कांग्रेस को पढ़ कर सुना दिया। अतीव उत्साह के साथ कांग्रेस ने उसे सब सम्मति से पास कर दिया।

आज्ञप्ति के पास होते ही उसकी प्रतियाँ को अपने हरकारों के हाथ मैंने पेत्रोग्राद के तमाम अखबारों के कार्यालयों में भिजवा दिया। साथ ही उसे डाकखाने भी भिजवा दिया जिसमें कि तार द्वारा दूसरे शहरों को भी वह भेज दी जाय। हमारे अपने अखबारों ने उसे पहले से ही तैयार करके रख दिया था। अगले दिन सुबह लाखों बल्कि करोड़ों लोगों ने उसे पढ़ा। महनतकश जनता ने सोत्साह उसका स्वागत किया। पूंजीपति उसे पढ़ कर क्रोध से पागल हो उठे। अपने तमाम अखबारों में उसके विरुद्ध उन्होंने चीखते चिल्लाते हुए खूब विष वमन किया। किन्तु उस समय उनकी बकवास की तरफ ध्यान देने वाला था कौन?

व्लादीमीर इलिच विजय भाव से उल्लसित थे।

वह बोले, "अकेला यह कदम ही हमारे इतिहास पर ऐसी छाप डाल जायगा जिसे अनेक-अनेक वर्षों तक भी कोई मिटा नहीं सकेगा।"

सजनात्मक क्रान्तिकारी क्रियाशीलता से भरपूर एक नये युग का अत्यन्त सफलतापूर्वक शुभारम्भ हो गया था। भूमि सम्बन्धी आज्ञप्ति में व्लादीमीर इलिच की दिलचस्पी बहुत दिनों तक बनी रही। वह हमेशा इस बात की पूछ-ताछ करते रहते थे कि, अखबारों में निकालने के अलावा कितनी प्रतियाँ उसकी सैनिकों और किसानों के बीच बंटवायी गयी थी। उसे एक पुस्तिका के रूप में बारम्बार छापा गया था। रूस के छोटे से छोटे जिला केन्द्रों तक के पास उसकी बहुत-सी प्रतियाँ मुफ्त भेज दी गयी थी।

भूमि सम्बन्धी आज्ञप्ति का सचमुच सभी जगह ढिंढोरा पिट गया। सम्भवत और किसी भी कानून को इतने व्यापक पैमाने पर नहीं प्रकाशित किया गया था। भूमि सम्बन्धी यह कानून हमारी नयी, समाजवादी विधि-व्यवस्था का वास्तव में मौलिक कानून था। यह एक ऐसा कानून था जिसे बनाने में स्वयं व्लादीमीर इलिच ने बहुत शक्ति लगायी थी और जिसे वह अत्यन्त महत्वपूर्ण मानते थे।

श्री जे बगरहट्टा, श्री रामचन्द्र शर्मा,
श्री हरिशंकर शर्मा एवम्
श्री याज्ञवल्क्य शर्मा की स्मृति में भेंट
द्वारा - हर प्रसाद बगरहट्टा
प्यारे मोहन बगरहट्टा
चन्द्रमोहन बगरहट्टा

सोवियत राज्य का राज्य-चिन्ह

सोवियत राज्य के राज्य चिन्ह का नमूना तैयार करवाना एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य था, क्योंकि इस राज्य चिन्ह को ऐसा बनना था कि पूंजीवादी राज्यों के अब तक बने राज्य चिन्हों से अपने अर्थ गौरव में वह मूलतः भिन्न हो।

मंत्री परिषद के कार्यालय में किसी ने राज्य चिन्ह का एक नमूना जल रंगों में बना कर भेजा था। उसका आकार गोल था और उसके अन्दर वही प्रतीक मौजूद थे जो हमारे वर्तमान राज्य चिन्ह में पाये जाते हैं। किन्तु उन प्रतीकों के बीच से एक लम्बी तलवार जाती हुई दिखलायी गयी थी। तलवार एक तरह से उस नमूने के पूरे डिज़ाइन पर छायी थी। उसकी मूठ नीचे की तरफ, बालियों की पुलियों के अन्दर टिकी प्रतीत होती थी और उसका फलक राज्य आभूषण के सम्पूर्ण ऊपरी भाग में फैला हुआ सूर्य की किरणों में चमचमाता दिखलायी देता था।

राज्य चिन्ह का नमूना जिस समय व्लादीमीर इलिच के सामने ला कर उनकी मेज़ पर रखा गया उस समय अपने कार्यालय में वह याकूव स्वर्लोव फ़ैलिक्स ज़रज़िन्सकी तथा कई दूसरे साथियों के साथ बातें कर रहे थे।

यह क्या है राज्य चिन्ह का नमूना है? अच्छा लाओ देखें ...ा। यह कहकर वह मेज़ पर रखे नमूने की रूपरेखा को गौर से ...खने लगे। हम सब भी डिज़ाइन को देखने के लिए उत्सुकता से

व्लादीमीर इलिच के आस पास खड़े हो गये। राज्य चिन्ह के इस नमूने को गोजनक के उस छापखाने मे काम करनेवाले एक नक्काश ने भेजा था जिसमे बैंक के नोट छपते थे।

देखने मे राज्य चिन्ह बहुत अच्छा लगता था। गेहूँ की पूलियो के अर्ध चक्र से घिरी हुई उदय होते सूर्य की किरणें डिज़ाइन की लाल पृष्ठभूमि मे खूब दमक रही थी, इस अर्ध-चक्र म उभरे हुए हँसिया और हथौड़े के चिन्ह बहुत अच्छे लग रहे थे। किन्तु, तलवार का वह तेज़ फलक, जो नीचे से ऊपर तक चला गया था, पूरे डिज़ाइन पर छाया हुआ था। उसे देखते ही सब लोग चौकन्ने हो गये।

"अच्छा तो है!" व्लादीमीर इलिच ने कहा। कल्पना ठीक है किन्तु यह तलवार किस लिए बीच मे डाल दी गयी है? हमारी तरफ घूम कर वह हम लोगो को देखने लगे।

"हम युद्ध कर रहे हैं, हम सघर्ष मे जुटे हुए है और जब तक सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को हम सुदृढ नही बना लेते और श्वेत गार्डो तथा हस्तक्षेपकारियो को अपने देश से बाहर नहीं निकाल भगाते तब तक हम सघर्ष करते रहेगे, किन्तु इसका मतलब यह कभी नही होता कि युद्ध, युद्ध के सरदार, और हिंसा हमारे जीवन मे कभी प्रमुख स्थान ग्रहण कर सकेंगे। हम दूसरे देशो को जीतने की कतई जरूरत नहीं है। दूसरे देशो को जीतने की नीति हमारी विचारधारा के विरुद्ध है। हम किसी पर हमला नही कर रहे है, बल्कि अन्दरूनी और बाहरी दुश्मनो के हमलो से स्वय अपनी रक्षा कर रहे है। हमारा युद्ध सुरक्षात्मक है। तलवार हमारी प्रतीक नहीं है। दुश्मन जब तक हमे घेरे है, जब तक हम पर हमले किये जा रहे हैं और जब तक हमारे अस्तित्व के लिए खतरा है तब तक, अपने सर्वहारा राज्य की रक्षा करने के लिए, आवश्यक है कि हम भी खड्ग को मजबूती से हाथ मे लिये रहे। किन्तु इसका अर्थ यह नही होता कि उसे हम हमेशा ही लिये रहेगे

"समाजवाद सभी देशा म विजयी होगा - इसम सन्देह नही है। जनता के भाईचारे की भी दुदुभि बजेगी और सार ससार म उसकी स्थापना हो जायगी। हमे तलवार की जरूरत नही है। वह हमारी प्रतीक नही है" व्लादीमीर इलिच ने फिर दोहराया।

वह कहते गय, अपने समाजवादी राज्य मे राज्य चिन्ह से तलवार को हमे हटा दना चाहिए।" उन्हाने एक तज नोक वाली काली पेंसिल उठा ली और प्रूफ रीडरा के ढग से तलवार को उससे घेर कर डिजाइन मे से उसे निकाल दने का निशान बना दिया। नमूने के दाहिने तरफ़ के हाशिय पर भी उसे निकालने का एसा ही निशान उन्होन बना दिया। फिर उन्होने कहा

*'और सब मान म डिजाइन (नमूना) अच्छा है। हम इसकी रूप-*रेखा को स्वीकृति दे दें। दोबारा तैयार हो जाने पर हम उस फिर देख सकते हैं तथा जन मन्त्रिया की परिषद म उस पर गौर कर सकते हैं। किन्तु इसे जल्दी ही तयार करवा लेना चाहिए "

फिर डिजाइन (नमून) के खाके पर उन्होने दस्तखत कर दिये।

गाजनक का न्वकाश उसी इमारत मे मौजूद था, मैंने खाका उसे लौटा दिया और उससे कहा कि उसे सुधार कर वह जल्दी ले आय।

राज्य चिन्ह का खाका जब बिना तलवार के बनकर आ गया ता हमने तय किया कि उसे शिल्पकार आन्द्रियेव को दिखलायें। उन्होंने उसम कुछ प्राविधिक सुधार जरूरी बतलाये। उन्होने उसे फिर से तैयार किया, उसकी बालियो की पूलियो को और मोटा किया, सूय की चमकती किरणो को और भी प्रखर बनाया तथा, आम तौर से, पूरे राज्य चिन्ह को और भी सजीव और अभिव्यजना-पूण बना दिया।

सोवियत सघ का राज्य चिन्ह १९१८ के प्रारम्भ मे ही स्वीकार कर लिया गया था।

एलेकज़ण्डरा कोलन्ताया

गलेक्ज़ेण्डरा कोलन्ताया (१८७७-१९५२) पिछली शताब्दी के अतिम दशक मे ही क्रांतिकारी आन्दोलन म शामिल हो गयी थी। १९१७ मे अक्तूबर क्रांति की लडाइयो मे उन्होने आगे बढ कर भाग लिया था। लेनिन की वह घनिष्ट मित्र थी।

अक्तूबर क्रान्ति के बाद वह सामाजिक सुरक्षा की जन मन्त्री (जन कमिसार) नियुक्त की गयी थी। फिर उन्हे कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय सघ (कौमिण्टन) के अन्तर्राष्ट्रीय महिला सचिव मडल का सचिव बना दिया गया था। बाद में नौरव, मेक्सिको और स्वीडन मे उन्होने सोवियत सघ की राजदूत के रूप में काम किया था।

१९१७ की क्रांति के सम्बन्ध में एलेक्ज़ेण्डरा कोलन्ताया के सस्मरण सोवियत सघ में बारम्बार प्रकाशित किये जा चुके है। उन्ही के आधार पर लेखक डेनियल ग्रानीन ने "प्रथम आगन्तुक" नामक फिल्म की लिपि (स्क्रिप्ट) तैयार की थी। इस फिल्म को लेनिनग्राद स्टूडियो ने बनाया था।

पहला लाभ

१९१७ का अक्तूबर। हवा तेज चल रही थी, आकाश धूम्र वर्ण का था, और बादल छाये हुए थे। स्मोलनी संस्थान के उद्यान के वृक्षों की फुनगियों का पवन जोरों से लथेड़ रहा था। किन्तु मार्गों की अन्तहीन भूल-भुलैया वाली स्मोलनी की इमारत के अन्दर के और बड़े बड़े रोशन और हल्के फुल्के फर्नीचर वाले सभा भवनों मे जैसी गम्भीर एकाग्रता से काम काज हो रहा था वैसी एकाग्रता दुनिया मे पहले कभी नहीं देखी गयी थी।

सत्ता दो ही दिन पहले सोवियतो के हाथ मे आयी थी। शीत महल पर मजदूरो और सैनिको ने अधिकार कर लिया था। केरेंसकी की सरकार का तख्ता उलट गया था। किन्तु हम सब समझते थे कि, यह केवल पहला कदम था उस कठिन सीढी पर चढ़ने का जो श्रमजीवी जनता को मुक्ति तथा एक नये, अब तक अज्ञात श्रम के गणराज्य की स्थापना की ओर ले जायगा।

बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति बगल के एक छोटे से कमरे में मिली हुई बैठी थी। कमरे के बीचोबीच एक साधारण सी मेज रखी थी, खिड़कियो और फर्श पर अखबारो के ढेर लगे थे और इधर उधर कुछ कुर्सियाँ पड़ी थी। मुझे याद नही पड़ता कि किस काम के लिए मैं वहाँ गयी थी, किन्तु इस बात की अच्छी तरह मुझे याद है कि व्लादीमीर इलिच ने मुझे अपनी बात तक पूछने का अवसर नही दिया था। उनकी

नज़र ज्योंही मुझ पर पड़ी त्योंही उन्होने फैसला कर दिया कि मैं जो काम करने जा रही थी उससे कही अधिक उपयोगी काम मुझे करना चाहिए।

"फौरन जाओ और सामाजिक सुरक्षा मन्त्रालय के काम को सभालो। उसे तुरन्त हाथ मे लेना ज़रूरी है।"

व्लादीमीर इलिच सर्वथा शान्त थे, बल्कि कहना चाहिए कि एक तरह से वह विनोदपूर्ण मुद्रा मे थे। किसी चीज़ को लेकर उन्होने परिहास किया और फिर तुरन्त कुछ अन्य लोगो से बातें करने लगे।

मुझे याद नही पड़ता कि वहाँ मैं अकेली क्यो गयी थी, किन्तु अक्तूबर के उस गीले सीलन भरे दिन की मुझे अच्छी तरह याद है जिस दिन काज़न्सकाया माग पर स्थित सामाजिक सुरक्षा मन्त्रालय के द्वार पर मेरी मोटर पहुँची थी। एक लम्बे-तड़गे, सफेद दाढ़ीवाले, रोबदार-से दरबान ने, जिसकी वर्दी मे बहुत सी सुनहरी, रेशमी पट्टियां लगी हुई थी, दरवाज़ा खोला और नीचे से ऊपर तक घूरते हुए मुझे देखा।

'यहाँ का ज़िम्मेदार अफसर कौन है?' मैंने उससे पूछा।

"अर्जियाँ देनेवालो का समय खत्म हो गया," महत्त्वपूर्ण लगनेवाले सुनहरे फीतेवाले उस बुड्ढे ने मेरी बात को काटते हुए रोब से कहा।

"मैं कोई अर्ज़ी देने नही आयी हूँ। बतलाओ कौन कौन बड़े बाबू यहाँ हैं?"

"मैं सीधी सादी रूसी भाषा मे आपसे कह चुका हूँ कि अर्जियाँ यहां केवल एक से लेकर तीन बजे तक ली जाती हैं। देखिए, अब चार से भी अधिक हो गया है।

मैंने फिर वही सवाल किया और उसने फिर आगे बात करने से इन्कार कर दिया। कोई भी उपाय कारगर नही हो रहा था। वह रट लगाये था मिलने का समय समाप्त हो गया है। उसे आदेश है कि किसी को अन्दर न आने दे।

उसकी रोक टोक के बावजूद मैंने ऊपर जाने की चेष्टा की, किन्तु यह हठी बुड्ढा दीवाल की तरह मेरे सामने खड़ा हो गया। उसने मुझे एक कदम भी आगे नहीं बढ़ने दिया।

इसलिए मैं खाली हाथ ही लौट आयी। मुझे एक मीटिंग में पहुँचना था। उन दिनों मीटिंगें ही सबसे महत्वपूर्ण चीजें थीं। शहर के ग़रीबों और सैनिकों के बीच वहाँ घनघोर बहस छिड़ी हुई थी। इस बात का फ़ैसला किया जा रहा था कि वे बच सकेंगे या नहीं, सैनिक वर्दी पहने मजदूर और किसान सोवियत सत्ता को बनाए रख सकेंगे या पूँजीपति वर्ग फिर सत्ता को उनसे छीन लेगा।

अगले दिन बहुत सुबह ही उस फ्लैट (मकान) के दरवाजे पर जिसमें केरेंस्की के जेल से छूटने के बाद से मैं रह रही थी घण्टी बजी। कोई आदमी बिना रुके लगातार घण्टी बजाये जा रहा था। दरवाजा खोला गया। सामने एक ठेठ किसान खड़ा था—भेड़ की खाल के कोट, छाल के जूते दाढ़ी आदि सबसे वह लैस था।

जन कमिसार (मन्त्री) कोलन्ताया क्या इसी मकान में रहती है? मुझे उनसे मिलना है। मैं उनके मुख्य बोल्शेविक के पास से लेनिन के पास से एक पत्र उनके लिए लाया हूँ।'

मैंने उस काग़ज़ के टुकड़े को देखा। वह सचमुच लेनिन के हाथ का लिखा था।

'इनके घोड़े के एवज़ में इन्हें जो मिलना चाहिए वह सामाजिक सुरक्षा कोष से इन्हें दे दो।

बिना किसी जल्दी के अपने ठेठ किसानी ढंग से उसने अपनी पूरी कहानी मुझे बतलायी। फरवरी की क्रान्ति से ठीक पहले, ज़ार के शासन काल में युद्ध कार्यों के लिए उसके घोड़े को ज़बरदस्ती उससे ले लिया गया था। उससे वादा किया गया था कि घोड़े की "अच्छी कीमत'

उसे दी जायेगी। किंतु समय बीतता गया और मुआवज़ा मिलने का कहीं कोई चिह्न नहीं दिखलायी दिया तब मजबूर होकर उसे पेत्रोग्राद आना पड़ा। पिछले दो महीने से लगातार वह अस्थायी सरकार के कार्यालयों के चक्कर लगा रहा है। पर उसकी बात कोई नहीं सुनता। उसे इधर से उधर, इस कार्यालय से उस कार्यालय, दौड़ाया जा रहा है। अब उसके पास न धीरज रह गया है, न रुपया। तभी अचानक उसने सुना कि कोई बोल्शेविक लोग हैं जो मजदूरों और किसानों से ज़ार तथा ज़मींदारों ने जो कुछ छीन लिया था उसे उन्हें वापस दिलवा रहे हैं। युद्ध के दिनों में जनता की जो लूट खसोट की गयी थी उसे वे वापस दिलवा रहे हैं। बस ज़रूरत केवल यह है कि बोल्शेविकों के मुखिया यानी लेनिन से एक पर्ची लिखवा ली जाय। इसे सुन कर उसने व्लादीमीर इलिच को स्मोलनी में जा घेरा। पौ फटने से पहले ही उसने उन्हें जगाया और उनसे एक पर्ची लिखवा ली। वह मुझे वही पर्ची दिखला रहा था। किंतु उसे देने को वह तैयार नहीं था।

"इसे रुपया पा जाने के बाद ही मैं आपको दूँगा। जब तक रुपया नहीं मिलता तब तक इसे मैं अपने पास ही रखे रहूँगा—अधिक भरोसे की बात यही होगी।" उसने साफ मुझसे कहा।

उस किसान और उसके घोड़े के विषय में मैं करती भी तो क्या? मन्त्रालय अब भी अस्थायी सरकार के कर्मचारियों के हाथ में था। वे विचित्र ही दिन थे—सत्ता सोवियतों के हाथ में थी, जन मन्त्री परिषद बोल्शेविकों की थी किंतु सरकारी संस्थाएँ अब भी अस्थायी सरकार के राजनीतिक ढर्रे पर ही चल रही थीं। इंजन ऊपर की तरफ जा रहा था, लेकिन रेल के डिब्बे पहाड़ी से नीचे की ओर भाग रहे थे।

समस्या यह थी कि मन्त्रालय पर अधिकार कैसे किया जाय? बल प्रयोग द्वारा? ऐसा करने पर आशंका थी कि क्लर्क सब भाग जायेंगे और मैं वहाँ बिना किसी कर्मचारी के अकेली रह जाऊँगी।

हम लोगों ने दूसरा ही फैसला किया। हमने निम्न श्रेणी (अवर-वर्ग) के (तकनीकी) कर्मचारियों की ट्रेड यूनियन के प्रतिनिधियों की एक मीटिंग बुलायी। उनका अध्यक्ष एक मेकेनिक इवान येगोरोव था। यह एक विशेष प्रकार की ट्रेड यूनियन थी। उसमें भिन्न भिन्न काम करने वाले लोग, अर्थात, हरकारे, नर्सें, कोयला झोंकनेवाले मजदूर हिसाब-किताब रखनेवाले बाबू, नकल-नवीस (प्रतिलिपिक), मिस्त्री (मैकेनिक), मुद्रक तथा मकान, आदि की निगरानी करनेवाले कारिन्दे जैसे कर्मचारी थे जो मन्त्रालय में केवल तकनीकी किस्म का काम करते थे।

उन्होंने स्थिति पर विचार किया। काम काजी ढंग से उन्होंने उसके विभिन्न पहलुओं पर गौर किया। उन्होंने एक समिति चुनी और अगले दिन एकदम सुबह ही मन्त्रालय पर कब्जा करने पहुँच गये।

हम लोग अन्दर घुस गये। सुनहले फीतेवाले दरबान की बाल्शेविकों के साथ सहानुभूति नहीं थी। इसलिए वह मीटिंग में नहीं सम्मिलित हुआ था। उसे हमारा अन्दर जाना पसन्द नहीं था। किन्तु उसने हमें रोका नहीं। हम ऊपर चढ़ने लगे तो हमने देखा कि सारे के सारे लोग—क्लर्क टाइपिस्ट, एकाउण्टिंग विभागों के अध्यक्ष सब भड़भड़ाते हुए तेजी से नीचे चले आ रहे थे वे भयंकर जल्दी में थे। उन्होंने हमारी तरफ एक नजर देखना भी जरूरी नहीं समझा। सिविल सर्विस के अधिकारियों द्वारा तोड़ फोड़ का काम शुरू हो गया था। केवल चन्द लोग रह गये। उन्होंने कहा कि वे हमारे साथ, बोल्शेविकों के साथ काम करने के लिए तैयार हैं। मन्त्रालय के तथा अन्य आम कार्यालयों में हम घूमे तो हमने देखा कि वे सारे के सारे खाली थे। टाइपराइटर मुर्दा पड़े थे, कागज-पत्तर चारों तरफ उड़ रहे थे, रजिस्टर हटा दिये गये थे, उन्हें तिजोरियों के अन्दर तालों से बन्द कर दिया गया था—और चाबियाँ लापता थीं। तिजोरियों की भी चाबियाँ गायब थीं।

उन्हें कौन ले गया था ? रुपये के विना काम हम कैसे कर सकते थे ? सामाजिक सुरक्षा का काम ऐसा था जिसे बन्द नहीं किया जा सकता था। उसके अन्तगत अनाथालय आते है, अगहीन सैनिक तथा कृत्रिम हाथ-पाँव बनानेवाली फैक्ट्रियाँ आती हैं, अस्पताल, सेनीटोरियम, कुष्टरोग से पीडित लोगों की बस्तियाँ आती हैं, सुधारालय लडकियां और महिलाओं की सस्थाएँ तथा नेत्र हीनों के गह आते है काम का एक विशाल क्षेत्र उसके अन्तगत आता है। चारो तरफ से मागो और शिकायतो का रेला रहता है ...और चाभियो का कहीं पता नहीं ! सबसे अधिक परेशान तो वह किसान कर रहा था जो लेनिन से पर्ची लिखवा लाया था ! सुबह होते देर नहीं कि वह आकर दरवाजे पर जम जाता था।

मेरे घोडे की कीमत का क्या हुआ ? वह कब मुझे दोगी ? मेरा घोडा—लाजवाब जानवर था वह ! इतना हृष्ट-पुष्ट और काम करने वाला अगर वह न होता तो उसका दाम पाने के लिए इतनी दौड धूप मैं न करता।'

दो दिन बाद चाभियां आ गयी। सामाजिक सुरक्षा जन मन्त्रालय ने सामाजिक सुरक्षा कोश से पहली रकम जो दी वह उस घोडे का मुआवजा था जिसे जार की सरकार ने बल पूवक और छल कपट से एक किसान से जबदस्ती छीन लिया था। उसके लिए उसके मालिक किसान को लेनिन की पर्ची के अनुसार पूरी पूरी रकम चुका दी गयी।

मिखाइल शोलोखोव

दोन की कहानियां जिनमें से यह कहानी ली गयी है मिखाइल शोलोखोव (इस शताब्दी के) तीसरे दशक में लिखी थी। लेखक के रूप में मिखाइल शोलोखोव का जीवन तब शुरू ही हुआ था। किंतु यह उस समय भी स्पष्ट था कि उन कहानियों का लेखक एक महान कलाकार था। बाद में "धीरे बहे दोन रे" "कुंवारी धरती ने अँगड़ाई ली" तथा "इंसान का नसीबा" आदि ने एक कलाकार के रूप में शोलोखोव की महानता को और भी उजागर कर दिया।

एलेक्जेण्डर सराफीमोविच ने १९२६ में ही लिखा था कि, 'शोलोखोव की कहानियाँ स्तेपी में खिले एक फूल के समान लगती हैं। वे सादी और सजीव होती हैं और उनके एक एक शब्द को आदमी स्वयं महसूस करता लगता है—आँखों के सामने जग के साकार हो उठती हैं। उनकी भाषा सजीव। की रंगीन भाषा है। हर चीज उनमें स...होती है, ...तु जीवन भावुकता तथा सच्चाई से के परिपूर्ण होती है।

ТЫ
ЗАПИСАЛСЯ
ДОБРОВОЛЬЦЕМ?

हरामी

मीशा ने स्वप्न देखा कि बाबा उसकी तरफ चले आ रहे हैं। उनके हाथ म चेरी की एक लम्बी सी कमची है जिसे बगीचे से उन्होंने ताड लिया था। गुस्से से उसे घुमाते हुए, डाट कर उन्होंने कहा

आओ इधर तो आओ मिखाइलोफामिच। आज हम तुम्हारी चमडी उधेडेंगे।"

"क्या, बाबा ? मैंने क्या किया ?"

'क्या किया ? उस करगी वाली मुर्गी के दरबे से सारे अण्डे तू ने चुरा लिये और जाकर चक्करवाले हिंडाल पर बेच कर आया !'

पर बाबा, पूरी गरमी भर मैं ता चक्करदार झूल के पास तक नहीं फटका।' मीशा न घबडा कर कहा।

किंतु बाबा न उसकी एक नहीं सुनी। उन्हाने अपनी दाढी पर हाथ फेरा और जोर से पैर पटकते हुए बोले,

झूठे, बदमाश कहीं के! इधर तो आ। अपना पाजामा नीचा कर!"

मीशा सोते ही सोते भय से चीख पडा, और उसकी आख खुल गयी। उसका दिल धक धक कर रहा था जसे कि कमचियो से सचमुच उसकी अच्छी तरह पिटाई हुई हो। धीरे से उसने एक आख थोडी-सी खोली और नजर इधर उधर दौडाई। उजाला हो चुका था। खिडकी

के बाहर सुबह का सुहाना प्रकाश फैला था। ड्योढ़ी से आवाजें आ रही थी। मीशा ने सिर उठाया। उसे अपनी मा की तेज़, महीन और उत्तेजनापूर्ण आवाज़ सुनाई दी। हँसी के मारे मा का गला जैसे रुँधा जा रहा था। बाबा खाँ खाँ करते हुए बराबर खाँस रहे थे। एक कोई और भी था जिसकी आवाज़ बहुत बुलन्द थी।

मीशा ने आँखें मल कर नींद को भगाने की कोशिश की। तभी बाहर वाला दरवाजा खुला और बन्द हो गया। लम्बे लम्बे कदम उठाते हुए बाबा कमरे में घुस आये। उनका चश्मा जो नाक पर था कभी ऊपर जाता, कभी नीचे आता। एक मिनट तो मीशा ने सोचा कि शायद गिरजे की गायक मण्डली के साथ पादरी आये होंगे—क्योंकि ईस्टर के दिनों में जब वे आते थे तो बाबा इसी तरह उत्तेजित होकर इधर उधर दौड़ते दिखलायी पड़ते थे। किन्तु बाबा के पीछे पीछे जो आदमी कमरे मे घुसा वह पादरी नहीं था। वह एक अजनबी एक लम्बा-तगड़ा फौजी था जो काला ओवर कोट और कल्गी के बिना रिबन वाली टोपी पहने था। मा उसके गले मे हाथ डाले हुए अत्यन्त उत्तेजित भाव से बात कर रही थी।

उस आदमी ने अन्दर आकर मा को एक तरफ झटक दिया और ऊँची आवाज़ से पूछता हुआ बोला 'मेरा बेटा कहाँ है?'

मीशा डर कर कम्बल के नीचे दुबक गया।

'मिशूश्का, उठो बेटे। देखो तुम्हारे पिता लड़ाई से वापस आये हैं।' मा ने पुकार कर कहा।

और इसके पहले कि मीशा कुछ समझ फौजी ने उसे बिस्तर से उठा लिया और उछाल कर छत की तरफ ऊपर फेंक दिया, फिर उसे रोक लिया, और फिर सीने से चिपका लिया। फिर अपनी लाल लाल कँटीली मूछों से वह उसके होंठों और आँखों को चूमने और प्यार करने लगा। उसकी मूछें कुछ-कुछ नम भी थीं और नमकीन लग रही थीं।

मीशा ने उसकी गोद से छिटकने की कोशिश की किन्तु उसकी एक न चली।

उसका बाप जोर से हँसता हुआ बोला, 'वाह, कैसा बढ़िया और बड़ा बोल्शेविक मैंन पैदा किया है ! यह छोकरा जल्दी ही अपने बाप से भी बाज़ी मार ले जायगा ! हो हो हो !"

वह मीशा को छोड़ना ही नही चाहता था। लगातार उसके साथ खेल रहा था। कभी वह उसे अपने हाथ पर बैठाता और एक छोटे बच्चे की तरह झलाता, कभी उठा कर ऊपर छत की धनी तक उछाल देता।

मीशा बहुत देर तक यह सब सहता रहा। किन्तु जब और अधिक बर्दाश्त न कर सका तो उसने अपने बाबा की तरह चेहरा सख्त किया, भौंहें सिकोडी और पिता की मूछो को दोनो हाथो से पकड कर बोला,

'छोड दे मुझे बापू !"

"नही, मैं नही छोडने का !"

"मुझे छोड दे ! मैं अब कोई छोटा बच्चा नही हूँ कि तुम मुझे इस तरह फेंको—उछालो।"

बाप ने नीचे बैठ कर मीशा को अपनी गोद मे बैठा लिया।

"कै वप का हो गया है रे तू अब, छोकरे ?" मुस्कराते हुए उसने पूछा।

मीशा ने रुखाई से कहा, "आठवा साल चल रहा है।'

"अच्छा बेटे, तुझे याद है कि जब दो साल पहले मैं आया था तो मैं कैसी नावें तेरे लिए बनाता था ? और फिर कैसे हम उन्हे तालाब में चलाते थे ?"

"याद है,' मीशा ने झट से जवाब दिया और डरते डरते अपनी दोनो बाहे उसने अपने बाप के गले मे डाल दी।

और फिर तमाशा शुरू हो गया। बाप ने मीशा को अपने कन्धा पर बैठा लिया और घोड़े की तरह कमरे में नाचना कूदना, दुलत्तियाँ झाड़ना और फिर अचानक हिनहिनाना शुरू कर दिया। मीशा खुशी और उत्तेजना से हाँफने लगा। सिर्फ मां उसकी आस्तीन पकड़ कर खींच रही थी और बार-बार कह रही थी

"मीशा! अरे जा, बाहर अहाते में खेल! जा भाग! दुष्ट, बाहर जाकर खेल!

बाप को भी झिड़की देते हुए वह बोली,

"फामा, छोड़ दो उसे। छोड़ो! मैं भी तो तुम्हें एक नजर देख लूँ! पूरे दो वर्ष से आँखें तुम्हें देखने के लिए तरस रही हैं, और तुम हो कि इस बच्चे में ही उलझे हुए हो!

बाप ने मीशा को गोद से उतार दिया और कहा,

'जा भाग! जाकर थोड़ी देर अपने दोस्तों के साथ खेल। बाद में मैं तुझे दिखलाऊँगा कि तेरे लिए क्या लाया हूँ।"

मीशा दरवाजा खोल कर बाहर निकल गया। पहले तो उसकी इच्छा हुई कि वहीं दरवाजे पर खड़ा होकर सुने कि बड़े लोग क्या बातें करते हैं। किन्तु तभी उसे खयाल आया कि गाँव के किसी भी लड़के को उसके बाप के आने की जानकारी नहीं हुई थी। तुरंत उसने दौड़ लगायी और अहाते के पास घर के बगीचे के अन्दर से आलू के पौधों को रौंदता फाँदता वह तालाब की तरफ भाग गया।

तालाब के ठहरे हुए और बदबूदार पानी में थोड़ी देर मीशा छप-छप करता रहा फिर बालू में लोटने लगा जिससे कि उसके सारे बदन पर उसकी तह जम गयी। फिर आखिरी बार नहाने के लिए वह तालाब में कूद गया। बाहर निकल कर, पहले एक टाँग पर, फिर दूसरी टाँग पर खड़ा होकर उसने अपना पतलून पहना। ज्योंही वह घर जाने के

लिए तैयार हुआ त्योंही पादरी का छोटा लडका वित्या वहा आ धमका ।

"मीशा, थोडी देर और रुक जा । चल, हम एक एक गोता और लगायें और फिर हमारे घर चल कर हम लोग खेलेंगे । मा ने कहा है कि तुम हमारे यहा खेलने आ सकते हो !"

बाए हाथ से मीशा ने अपने पतलून को ऊपर खीचा और उसकी जो एक पट्टी बच रही थी उससे उसने उसे कन्धे पर बाँध लिया ।

"मैं तेरे साथ नही खेलना चाहता," उसने कहा । "तेरे कान बुरी तरह गन्धाते है ।"

अपने दुबले शरीर से अपनी बुनी हुई कमीज को उतारते हुए वित्या ने कहा,

'वह तो गल्सुआ की वजह से है ।" और फिर जसे बदले की भावना से एक आख को मीचते हुए उसने कहा, "परन्तू किस मुह से बात करता है ! तू कज़ाक का बेटा थोडे ही है । तुझे तो तेरी मा नाली से उठा लायी थी ।'

' तू देख रहा था न !"

"मैंने अपनी बावर्चिन से सुना था । वह मेरी मा को बतला रही थी ।"

मीशा ने पाँव की अपनी अँगुलियो को बालू मे गडा दिया । फिर अपने अधिक ऊँचे कद से वित्या की ओर घूरते हुए उसने कहा,

'तेरी मा झूठी है ! और कुछ भी हो, मेरे बापू तो लडाई लडकर आये है । तेरा बाप—वह तो हरामखोर ह, बैठे-बैठे सिफ दूसरो का माल हडपता रहता है !'

"और तू हरामी है," पादरी के लडके ने जवाब दिया । उसकी आँखें डबडबा आयी थी ।

मीशा ने झुक कर एक बडा सा चिकना पत्थर उठा लिया। किन्तु तभी, अपने आसूओ को रोकते हुए, पादरी के लडके न उसकी तरफ अत्यन्त मधुर ढग से मुस्कराते हुए देखा और कहा,

'मीशा, पागल मत बन! लडने झगडने मे कोई फायदा नही है। अगर तू चाहे तो मैं तुझे अपनी कटारी दे सकता हूँ। उसे मैंने लोहे मे बनाया है।"

मीशा की आखें खुशी से चमक उठी। उसने हाथ के पत्थर को फेंक दिया। मगर तभी उसे अपने बाप के घर लौटने की याद आ गयी। तिरस्कार से उसन कहा,

'मेरे बापू लडाई के मोर्चे से मेरे लिए कटारी लाये हैं। वह तेरी कटारी से कही अधिक अच्छी है।'

वित्या को विश्वास नही हुआ। 'झू' अक्षर को खीचने हुए उसने कहा तू झू झू झूठ बोल रहा है!'

झूठ तू बालता है! जब मैं कहता हूँ कि वह लाये हैं तो इसका मतलब है कि वह लाये है। और एक अच्छी बन्दूक भी लाये हैं।

वित्या न होठ फडफडाते हुए, और एक सूखी सी ईर्ष्याभरी हँसी हँसते हुए कहा, "ओह! तब ता तेरे बडे ठाठ हैं!"

"और उनके पास तो एक टोपी भी है जिसमे झालर लगी हुई है और झालर पर उसी तरह के सुनहले अक्षर लिखे है जैसे कि तेरी उन किताबो मे हैं!"

वित्या को इसका जवाब सोचने मे कुछ देर लगी। उसके माथे पर बल पड गये और बिना साचे समझे वह अपने पेट की सफेद त्वचा को खुजलाने लगा। अन्त मे उसने कहा,

'मेरे पिता तो जल्दी ही बिशप (बडे पादरी) बनने वाले हैं। और तेरा बाप—वह तो एक चरवाहा है ढोर चराता था। अब बोल!

परन्तु वहाँ खड़े खड़े और बहस करते हुए मीशा ऊब गया था। वह मुड़ा और अपने घर की तरफ चल दिया।

पादरी के लड़के ने आवाज़ देते हुए उससे कहा, "मीशा ! सुन, तुझे एक बात बतलाऊँ !"

'बतला।"

"और पास आ !"

मीशा उसके पास आ गया। उसकी आँखें सशंकित दृष्टि से उसे देख रही थीं।

'बोल कौन सी बात है ?'

अपनी पतली और टेढ़ी मेढ़ी टाँगों से रेत पर फुदकते हुए पादरी के लड़के ने जैसे खूब मज़ा लेते हुए कहा,

"जानता है—तेरा बाप कम्युनिस्ट है ! जैसे ही तू मरेगा और तेरी आत्मा उड़कर आसमान में पहुँचेगी तो भगवान तुझसे कहेगा, 'तेरा बाप कम्युनिस्ट था इसलिए तुझे सीधे नर्क में जाना होगा।' और वहाँ शैतान तुझे पकड़ कर गर्म तवे पर ज़िन्दा भूनेंगे ! "

'और तू सोचता है कि तुझे वे छोड़ देंगे !'

'मेरे पिता तो पादरी हैं। तू बिल्कुल बुद्धू है, अनपढ़ गँवार ! तुझसे बात करने में फायदा क्या ?"

इससे मीशा डर गया। वह चुपचाप मुड़ा और अपने घर की तरफ दौड़ने लगा।

अहाते के बाड़े के पास पहुँच कर वह रुका और मुड़कर, पादरी के लड़के को घूसा दिखलाते हुए, उसने कहा,

अभी जाकर मैं बाबा से पूछूंगा। अगर झूठ निकला तो फिर हमारे हाते के पास से न कभी निकलना !"

बाड़े को लांघ कर मीशा घर की तरफ लपका। उसकी आँखों के सामने जलते हुए उस तवे का दृश्य था जिसमें खुद उसे भूना जा रहा था। वह जल रहा था और उसके चारों तरफ छन छन करती हुई भाप उठ रही थी। उसके सारे शरीर में जूड़ी दौड़ गयी। उसने सोचा कि उसे फौरन बाबा के पास पहुँच कर उनसे असलियत का पता लगाना चाहिए।

ठीक तभी उसकी नजर एक सुअरनी पर पड़ी। उसका सिर फाटक की झाड़ी में फँस गया था और बाकी सारा शरीर बाहर था। वह अपनी पूरी ताकत से धक्का देती हुई, अपनी छोटी दुम हिलाती और बेतरह रोती मिमियाती उससे निकलने की कोशिश कर रही थी। मीशा उसकी मदद के लिए दौड़ गया। किन्तु जब उसने फाटक खोलने की चेष्टा की तो सुअरनी ने सूं सूं करना शुरू कर दिया। इसलिए वह उसकी पीठ पर चढ़ गया, और तब, पूरा जोर लगा कर सुअरनी ने धक्का दिया जिससे फाटक के कब्जे टूट गये, रास्ता खुल गया और वह मीशा को पीठ पर लिये हुए अहाते के बीच से खूब जोर से भागी। मीशा ने अपनी एड़ियों से उसके बदन को कस लिया जिससे कि वह गिर न जाय। सुअरनी उसे लेकर हवा हो गयी। वह इतनी तेज भाग रही थी कि मीशा के बाल हवा में लहरा रहे थे। खलिहान के पास मीशा कूदकर सुअरनी की पीठ से उतर गया। उसने इधर उधर नजर दौड़ायी तो देखा कि ड्योढ़ी की देहरी पर बैठे हुए बाबा उसे बुला रहे थे।

नौजवान, जरा यहाँ मेरे पास तशरीफ लाइए।

मीशा समझ न सका कि बाबा उसे क्यों बुला रहे हैं। तभी उसे नरक में तवे पर भूने जाने की बात की याद आ गयी। वह तेजी से ड्योढ़ी की तरफ भागा।

'बाबा, स्वर्ग में क्या शैतान होते हैं ?'

'मैं तुझे अभी बतलाता हूँ कि शैतान कहा होते हैं। ज़रा ठहर तो! बदमाश कही का! तेरी तो कोडा से पिटाई होनी चाहिए। तू सुअरनी की पीठ पर क्यो चढा था? क्या वह घोडा है?"

बाबा ने मीशा के बाल पकड लिये जिससे कि वह भाग न सके, और तब घर म उसकी मा को आवाज़ देते हुए बोले, 'ज़रा बाहर आकर अपने लाडले बेटे को तो देखो।"

मा हडबडाई हुई बाहर आयी।

'अब इसने क्या बदमाशी की है?'

'यह हज़रत सुअरनी पर चढ कर अहाते के चक्कर लगा रहे थे और धूल की आधी उडा रहे थ!

क्या उस गाभिन सुअरी पर जिसके बच्चे होन वाले है?' मा घबडाहट से चीख उठी।

मीशा अपनी सफाई देने क लिए मुह तक न खोल पाया था कि बाबा ने अपनी कमर स पेटी खोल ली और एक हाथ से अपने पतलून को थाम कर दूसरे हाथ से मीशा के सिर को अपने घुटनो के बीच दबा लिया। इसके बाद खूब जम कर उन्होने मीशा की पिटाई की। वह उसे पीटते जाते और साथ-साथ दोहराते जाते, "और चढोगे सुअरी पर! फिर चढोगे सुअरी पर!"

मीशा ने ज़ोर-ज़ोर से रोना-चिल्लाना शुरू कर दिया, किन्तु बाबा न तुरन्त उसे रोक दिया। वह बोले

'अपन बाप से तू इसी तरह प्यार करता है? थका-हारा वह अभी घर आया है और सोन की कोशिश कर रहा, और तू अपन शोर से आसमान फाडे डाल रहा है!'

मीशा को चुप हो जाना पडा। उसने बाबा को खीच कर एक लात मारी किन्तु वह उनके पास तक न पहुँच सकी। फिर मा ने उसे पकड कर घर के अन्दर ढकेल दिया।

"चुप बैठ ! शैतान की औलाद ! मैं मरम्मत करने लगूगी तो बाबा की भी सारी पिटाई भूल जाओगे !"

बाबा रसोईघर की तिपाई पर बठे मीशा की ओर बार-बार दख लेते थे। मीशा दीवाल की तरफ मुह किये बैठा था।

यकायक, अपनी आँख के आखरी आँसुओं को मुट्ठी से पोछता हुआ मीशा बाबा की ओर घूम पडा—दरवाज़े से पीठ सटा कर उसने कहा,

अच्छा बाबा, तुम भी देखना !'

'बाबा को धमका रह हो क्या ?'

बाबा न फिर अपनी पेटी खोलनी शुरू कर दी। मीशा ने धक्का देकर दरवाज़े को थोडा सा खोल लिया।

बाबा ने फिर दोहराया क्या रे तू मुझे धमका रहा है ?"

मीशा चुपचाप दरवाज़े से बाहर निकला और ग़ायब हो गया। किन्तु थोडी देर बाद फिर उसने अन्दर की तरफ झाका। बाबा की गति विधिया का सतकता से देखते हुए वह फिर चिल्लाकर बोला 'अच्छा बाबा, थोडे दिन और ठहर जाओ! तुम्हार सारे दात गिर जायेंगे तब न मुझसे कहना कि पीस कर खिलाओ कहोगे भी तो मैं खिलाऊँगा नही। समझे ? '

बाबा बाहर दालान म निकल आये। उन्ह निकलते देख मीशा छू-मन्तर हो गया। सनई की झाडिया के बीच से भागते हुए केवल मीशा के सिर और उसके नीले पतलून की ही एक झलक बाबा को दिखलायी दी। बुडढे ने धमकाते हुए अपनी छडी हिलायी किन्तु दाढी मूछो के अन्दर छिपे उनके आठ हल्के हल्के मुस्करा रहे थे।

1

उसका बाप उस मिन्का कहता था मा मिन्यूश्का। बाबा जब खुश होते तो उसे आवारा कहते, किन्तु जब वे गुस्सा होते तो अपनी

घनी सफेद भौहा को वक्र करके कहत, "मिखाइलो फामिच, इधर ता आ, जरा तेर कान गरम कर दू।'

वाकी सब लोग—गप्पी पडौसी, बच्चे, और गाँव के सारे लाग जब उस 'हरामी" न कहते ता मीश्का कह कर पुकारते।

मा की शादी हान स पहल ही वह पदा हो गया था। यह सही है कि महीन भर बाद ही उसके पिता चरवाह फामा से उसकी शादी हा गयी थी। किन्तु वदनामी भरा हरामी' शब्द सारे जीवन के लिए मीशा के नाम के साथ जुड गया था।

मीशा छाट रूप-आकार का वच्चा था। उसके बाल वसन्त के प्रारम्भिक दिना म सूरजमुखी की पँखडिया का जैसा रग हाता है वसे ही रग के थे किन्तु, वाद मे, जून के महीन मे, सूरज की गरमी स वदरग होकर सूरजमुखी की पखडिया जैसी हो जाती हैं वैस ही व भी बदरग होकर खबरीली लटो मे वदल गय थे। उसके गाला पर गौरैया चिडिया के अण्डे की तरह फुन्सियो के निशान थे, और उसकी नाक, धूप की गरमी और तालाव म बहुत गोते लगाने की वजह से, पपडियो स पट गयी थी। ये पपडिया सूख सूख कर हमेशा गिरती रहती थी। उसकी बस एक ही चीज अच्छी थी कमान की तरह टेढे मेढे परा वाले छोटे से मीशा की आखें अत्यन्त सुन्दर थी। उसकी नीली और शरारती आखें अपने सँकर पपाटो के बीच स नदी के अन्दर के अध-पिघले वफ के टुकडा की तरह झाकती रहती थी।

मीशा का बाप इन्ही आखा से और उसके चुस्त तथा चपल स्वभाव के कारण उस इतना प्यार करता था। लडाई से लौटते समय वह अपने वटे के लिए एक मीठी टिकिया, जो बासी होन की वजह स पत्थर की तरह कडी हो गयी थी और एक जोडा थोडे पुराने हो गये जूतो का लेता आया था। मा न जूतो का एक तौलिया मे लपेट कर वकसे के अन्दर रख दिया था। और, जहाँ तक टिकिया की वात थी तो

मीशा ने हथौडे से तोड फोड कर उसी शाम को उस पूरा साफ कर दिया था ।

अगले दिन मीशा सूर्योदय होत ही उठ गया। बतन स उसन हाथ मे थोडा सा कुनकुना पानी लिया, अपने मैले मुह को धोया, और मुह सुखान के लिए घर से बाहर दौड गया।

मा अहाते मे गाय की चारा सानी देख रही थी। बाबा मिटटी क उस मुडेर पर बठे थे जो घर के चारा तरफ बनी थी। उन्हान मीशा को आवाज दी

"ओ बदमाश जरा खत्ती के अ दर तो घुस। वहाँ से किसी मुर्गी के कुडकुडाने की आवाज आयी है। उसने अण्डा दिया होगा।

बाबा को खुश करने के लिए मीशा सदा ही तय्यार रहता था। पट के बल रेंगता हुआ वह खत्ती के अन्दर घुस गया। खत्ती के दूसरी तरफ पहुँचते ही वह उठा और अपने शरीर से गर्दा झाडता हुआ पिछवाडे की बगिया के रास्ते भाग खडा हुआ। थोडी थाडी देर पर मुडकर वह पीछे नजर डाल लेता था कि बाबा तो नही कही देख रह हैं। बाडे के पास पहुँचते पहुँचते उसक पैर काटो से भर गये थे। बाबा इन्तजार करते करते थक गये तो सरकते हुए खुद खत्ती के अ दर घुस गय। वहा मुर्गियो की बीट पडी हुई थी। वह उसमे अच्छी तरह लस गये। नमी से भरे अधेरे मे उन्हे कुछ नही सूझता था इसीलिए खत्ती के दूसरी तरफ पहुँचते पहुचत उनके सिर म काफी चाटें आ गयी और दद होन लगा।

वह बाले 'मीशा, तू तो बडा मूख है ! तब से अभी तक एक अण्डे की ही तलाश मे जुटा हुआ है। तू सोचता है कि मुर्गी इतने अन्दर घुस कर अण्डा देगी ! अरे, वह तो यही, इस पत्थर के पास ही कही होगा। लेकिन तू है कहाँ ?'

बाबा को कोई जवाब नही मिला। पतलून से गद और कूडा झाडते हुए वह खत्ती से बाहर निकल आये और तलइया की तरफ नजर दौडाने लगे। निश्चय ही, मीशा वहाँ मौजूद था। बाबा ने क्रोध से मुह बनाया और वापस लौट आये।

तलइया के किनारे गाँव के छोकरे मीशा को घेरे खडे थे।

किसी ने ललकारते हुए उससे पूछा, "तुम्हारा बाप कहाँ है? मोर्चे पर गया है?"

"हाँ।"

"वहाँ वह क्या कर रहा है?'

"लड रहा है—और क्या कर रहा है!'

"सच मच बताओ? वहाँ वह सिर्फ चीलरा से लड रहा है! बाकी समय रसोई घर के द्वार पर बैठा बैठा वह हड्डिया चबाता रहता है'

छोकरे जोर-जोर से हँसने लगे और मीशा की तरफ इशारा कर कर के उसके आस-पास कूदने-नाचने लगे। मीशा की आखो मे गुस्से आसू भर गये। पादरी के लडके वित्या ने उसे और भी चिढाते हुए पूछा,

'तुम्हारा बाप तो कम्युनिस्ट है, क्या?"

'मुझे नही मालूम।'

"तुम्हे नही मालूम, पर मुझे तो मालूम है। वह कम्युनिस्ट है। अपनी आत्मा उसने शैतान के हाथो बेच दी है। मेरे पिता ने आज ही सुबह यह बात मुझे बतलायी है। हाँ, और जल्दी ही सारे कम्युनिस्टो को पकडकर लटका दिया जायगा।"

यह सुनकर सारे बच्चे एकदम खामोश हो गये। मीशा का दिल दहल गया। उसके पिता को फाँसी की रस्सी से टाग दिया जायेगा?

किसलिए—उन्होंने कौन-सा अपराध किया है ? क्रोध से दाँत किट-किटाते हुए उसने उत्तर दिया,

'मेरे पिता के पास बहुत बडी बन्दूक है। वह सारे पूँजीपतियों का मारकर सफाया कर देंगे—समझे ?'

वित्या ने विजय भाव से एलान किया, हरगिज नही। मेरे पिता उसे ईश्वरीय आशीर्वाद नही देंगे। और उसे पवित्र आशीर्वाद नहीं मिलेगा तो वह कुछ भी नही कर सकेगा।

पसारी के बेटे प्रोश्का ने मीशा की छाती पर एक घूसा जमाते हुए क्रोधपूर्वक कहा, अपने उस दागल बाप के बारे मे बहुत बढ-बढकर बाते न बनाओ। क्रान्ति हुई थी तो उसमे मेरे पिता जी का सारा माल छिन गया था। मेरे पिता जी कहते हैं बस थोडा समय और रुक जाओ स्थिति बदलने ही वाली है। और तब पहला काम जो मैं करूँगा वह होगा गडरिए के उस बच्चे, फोमा का सफाया करना।"

प्रोश्का की बहन नताशा ने भी, जो वही खडी थी, पैर पटकते हुए जोर से कहा, अरे लडको, तुम लोग इन्तजार किस चीज का कर रहे हो ? इसकी अच्छी तरह मरम्मत कर दो जिससे कि फिर कभी ऐसी बकवास न करे।

'हाँ, हाँ, इस कम्युनिस्ट बच्चे की अच्छी तरह जरा मरम्मत कर दो।" किसी दूसरे लडके ने ललकारा।

'हरामी कहीं का—!'

"प्रोश्का लगाओ साले को!"

प्रोश्का ने एक लकडी उठायी और घुमा कर मीशा के सर पर पटक दी। पादरी के बेटे वित्या ने एक दूसरी लकडी को मीशा की टाँगों के बीच फसा कर उसे जमीन पर गिरा दिया।

चिल्लाते और गाली बकते हुए वे छोकरे उसके ऊपर टूट पड़े।

नताशा ने अपने तेज नाखूनो से उसकी गदन को नोच लिया। किसी दूसर लडके ने उसके पेट म इतनी जोर से लात मारी कि दद से वह कराह उठा।

मीशा ने प्रोश्का को अपन ऊपर से गिरा दिया और उठकर अपने घर की तरफ इस तरह भागने लगा जिस तरह कि पीछा करने वाले शिकारिया से बचने के लिए कोई खरगोश टेढा मेढा भागता है। छोकरो न जोर जार से सीटिया बजानी शुरू कर दी। किसी ने पीछे से एक बडा सा पत्थर उसे मारा। लेकिन उसके पीछे कोई दौडा नही।

मीशा अपने घर के पिछवाडे की बगिया मे पहुच कर सनई के एक पेड के नीचे साम लेने के लिए रुका। गीली सुगधभरी जमीन पर वह पड गया। नोचने से उसके गले से जो खून निकला था उसे उसने पाछ डाला। और तब वह रोन लगा। घनी पत्तियो के बीच से आती हुई धूप ने उसके आसुओ को सुखा दिया। ऐसा लगा कि वह उसके घुघराले कुछ लाल जैस बालो का उसी तरह चूम रही थी जिस तरह कि कभी कभी उसकी मा उन्हे चूमा करती थी।

सनई के पौधो के बीच मीशा बहुत देर तक बठा रहा, उसके आसुओ का बहना रुक गया, तब वह उठा और धीरे-धीरे घर के हाते की तरफ चलने लगा। ओसारे मे खडा उसका पिता लारी के पहिया को कोलतार से रँग रहा था। उसकी टापी खिसक कर पीछे की तरफ पहुँच गयी थी जिसमे कि उसके रिबन बाहर निकल आये थे। वह नीली और सफेद धारिया वाली कमीज पहने था। धीरे धीरे खिसक कर मीशा लारी के पास पहुच गया और चुपचाप खडा होकर अपने पिता का काम करता देखन लगा। कुछ देर बाद जब वह साहस बटोर सका, उसने अपने पिता के हाथ को स्पश करते हुए अत्यन्त धीरे से पूछा,

' लडाई मे तुम क्या करते थे, बापू ?"

'बेटा वहाँ मैं लड़ता था। तुम यह क्यों पूछ रहे हो ?" उसके पिता ने अपनी लाल मूछों के नीचे से मुस्कराते हुए कहा।

'लड़के ... लड़के कहते हैं कि तुम तो सिर्फ जुआ और चिलगरा से ही लड़ते थे ।'

मीशा का गला फिर रुँध गया और फिर उसकी आँखों से आँसू टपकने लगे। उसका पिता केवल हँसता रहा। फिर मीशा को उठा कर उसने गोद में ले लिया।

वे छोकरे झूठ बोल रहे हैं बेटे। मैं एक जहाज पर तैनात था एक बहुत बड़े जहाज पर जो तमाम घूमा था और फिर मैंने युद्ध में भाग लिया था।"

तुम किससे लड़े थे ?

मैं मालिकों के खिलाफ लड़ा था, बेटे। तुम अभी बहुत छोटे हो बेटे इसीलिए मुझे लड़ाई में जाकर तुम्हारे लिए लड़ना पड़ा था। इसके बारे में तो एक गीत भी है जिसे हम लोग गाया करते थे।"

उसका पिता फिर मुस्कराने लगा और फिर अपने एक पैर से थाप देता हुआ, आहिस्ता-आहिस्ता वह गाने लगा

ओ, मेरे नन्हे मिश्का, मीशा मेरे,
तुम जाओ नहीं लड़ाई में जाने दो अपने पिता को।
पिता बड़े हो गये। वह जीवन देख चुके हैं !
पर तुम छोटे हो अभी, शादी भी नहीं कर पाये हो।

मीशा अपने सारे दुख-दर्द को भूल गया और जोर जोर से हँसने लगा। उसे अपने पिता की लाल लाल उन मूछों को देखकर हँसी आने लगी जो उन सींकों की तरह कँटीली थीं जिन्हें लेकर उसकी माँ झाड़ू बनाया करती है।

उसके पिता ने कहा, 'मिश्का, अब तुम जाओ, खेलो। मुझे इस लारी को ठीक करना है। शाम को जब तुम सोने के लिए लेटोगे तब मैं तुम्हे लडाई के बारे म तमाम बातें बतलाऊँगा।"

अन्तहीन स्टेपी* के बीच से गुजरने वाली किसी एकाकी पगडण्डी की तरह दिन खिसकता गया। एक लम्बी प्रतीक्षा के बाद सूरज डूब गया। पशुओ के झुण्ड गाव के बीच स तेजी से लौटने लगे। धूल के बादल बैठ गये और आकाश मे घिरती अँधियारी के अन्दर से लजाता हुआ सा पहला एक तारा झाँकने लगा।

प्रतीक्षा करता मीशा एकदम थक गया था। दूध को दुहने और फिर उसे छानने मे मा बहुत समय लगा रही थी। और उसके बाद वह नीचे तहखाने मे चली गयी और कम से कम घण्टा भर तक वहा न जाने क्या करती रही। बेसबरी से परेशान होता हुआ मीशा उसके इर्द-गिर्द चक्कर लगाता रहा।

"मा! खाने का समय अभी नही हुआ?"

"तुझे भूख लग आयी? बेटा, तुझे थोडी देर और रुकना पडेगा।'

किन्तु मीशा उसे तग करता रहा। जहा भी वह जाती पकवान में, या ऊपर रसोई म—वह बराबर उससे चिपका हुआ उसका पीछा करता रहा।

'मा—आ—आ! भूख लगी है!"

"तूने तो मुझे तग कर डाला। थोडी देर और तू मेरी जान छोड दे। बहुत भूख लगी हो, तो जा, रोटी का एक टुकडा ले ले।'

* वृक्ष रहित चौरस मैदान।

परन्तु मीशा को चुप करना असम्भव था। अन्त में मा ने उसके एक तमाचा भी जड़ दिया, किन्तु इससे भी कोई लाभ नहीं हुआ।

आखिरकार जब खाना आया तो जल्दी-जल्दी मीशा ने उसे ठूस लिया और दौड़कर दूसरे कमरे में पहुँच गया। अपने पतलून को अलमारी के पीछे फेंक कर वह सीधा बिस्तरे पर कपड़े के टुकड़ों को जोड़कर बनायी गयी माँ की चमकीली रजाई के अन्दर घुस गया। वहां लेट कर वह अपने पिता के आने की और आकर लड़ाइयों के बारे में बात बतलाने की राह देखने लगा।

बाबा पवित्र आत्माओं के चित्रों के सामने घुटनों के बल बैठकर धीरे धीरे प्रार्थना करने लगे। प्रार्थना करते करते वह अपने माथे को फर्श पर टेक देते थे। इस सबको देखने के लिए मीशा ने अपना सिर बाहर निकाल लिया। बायें हाथ के सहारे बाबा ने फिर अपने सर को ऊपर उठाया और दुबारा माथा टेकने के लिए तब तक झुकते गये जब तक कि उनका सर फर्श से टकरा नहीं गया। तभी मीशा ने भी शरारत से अपनी कोहनी को दीवाल में मार कर उसी तरह की आवाज पैदा की।

बाबा फिर बुदबुदाते हुए थोड़ी देर तक प्रार्थना करते रहे फिर अपने सर को जमीन से टेकने के लिए उन्होंने झुकाना शुरू कर दिया। माथे के जमीन से टकराने से फिर आवाज हुई। मीशा ने भी दीवाल में अपनी काहनी मारकर उसी तरह की जोरदार आवाज पैदा की। बाबा गुस्से से लाल पीले हो उठे।

बदमाश कहीं का! मैं तुझे अभी ठीक करूँगा। ईश्वर मुझे माफ करो! दुबारा तूने आवाज की तो मैं तेरी ऐसी धुनाई करूँगा कि कभी नहीं भूलेगा!'

उसी समय यदि मीशा के पिता कमरे में न आ गये होते तो निश्चय ही मीशा की अच्छी तरह मरम्मत हो जाती।

उसके पिता ने पूछा, "मिन्का, तू यहा क्या कर रहा है ?"

'मैं हमेशा मा के ही पास सोता हूँ ।"

उसका पिता चारपाई के एक किनारे बैठ गया । थोडी देर तक वह अपनी मूछो को ऐंठता हुआ चुप बैठा रहा । फिर उसने कहा, मीशा तू जाकर बाबा के साथ रसोई घर मे सो जा ।"

मैं बाबा के पास नहा सोऊगा !"

'क्यो ?"

'क्योकि उनकी मूछें—उनसे तम्बाकू की बहुत बदबू आती है ।"

पिता ने ठडी साम ली और फिर अपनी मूछा का ऐठने लगे ।

"फिर भी बेटे, तुम जाकर बाबा के ही पास सो जाओ ।"

मीशा ने रजाई को ऊपर खीच कर अपना मुँह ढक लिया । थोडी देर बाद रजाई के अन्दर से याँकते हुए गुस्से से उसने कहा, 'तुम कल मेरी जगह सो गये थे और अब फिर वही करना चाहत हो । तुम खुद क्या नही जाकर बाबा के पास सो जाते ?"

अचानक वह उठ कर बैठ गया । पिता के सर को नीचे झुका कर धीरे से उसने उनके कान म कहा, "अच्छा हो कि तुम जाकर बाबा के पास सो जाओ क्योकि मा, तुम्हारे साथ कभी नही सोयेगी । तुम्हारे मुह मे भी तम्बाकू की बदबू आती है ।"

'अच्छी बात है तो मैं जाकर बाबा के पास सो जाता हूँ । बस, फिर मैं तुम्हे लडाई की बातें नही बताऊँगा ।

पिता खडे हो गये और रसोई घर की तरफ जाने लगे ।

"पापा !"

बोलो ?"

हताश होकर मीशा बिस्तर से बाहर निकल आया और कहने लगा

'तुम यहाँ सोना चाहते हो तो ठीक है, सो जाओ। लेकिन, अब तो लड़ाइयों के बारे में तुम मुझे बतलाओगे ?

'हाँ, अब मैं बतलाऊँगा।"

बाबा बिस्तरे में लेट गये। मीशा के लेटने के लिये उन्होंने एक तरफ की जगह छोड दी। थोडी देर बाद मीशा के पिता भी रसोई घर में आ गये। चारपाई के पास एक बेंच को खींचकर वह बैठ गये। उन्होंने फिर एक बदबूदार सिगरेट सुलगा रखी थी।

'अच्छा तो सुनो । तुम्हे याद है जब हमारे खलिहान के पास वाले खेत पर उस दूकानदार का कब्जा था ?"

हाँ, मीशा को उसकी अच्छी तरह याद थी। उसे याद था कि गेहूँ की ऊँची ऊँची सुगन्ध भरी बालों की कतारों के बीच से कैसे वह खुश हो कर दौडता फिरता था। खलिहान के चारों तरफ पत्थर का जो कोट था उस पर चढ कर उधर कूदते ही वह गेहूँ की बालियों के बीच पहुँच जाता था। बालियों की ऊँचाई उसके कद से अधिक थी और उनके बीच वह एकदम छिप जाता था। भारी भारी काली काली-सी दिखने वाली बालियाँ उसके गालों से लग कर गुदगुदी पैदा करती थी। चारों तरफ से घास और गुलबहार और स्टेपी की हवा की खुशबू आती थी। उसे वहाँ बहुत अच्छा लगता था।

उसे वहाँ देखकर उसे चेतावनी देती हुई माँ कहती, 'मीशा बालियों के अन्दर बहुत दूर न जाना। तुम रास्ता भूल जाओगे।

धीरे धीरे मीशा के बालों को सहलाते हुए उसके पिता ने उससे कहा 'और तुम्हें उस दिन की याद है जब तुम और मैं उस बलुवी पहाडी के उस पार गेहूँ के अपने खेत की तरफ गये थे ?"

मीशा को उसकी भी याद थी। उसे बलुवी पहाडी के उस पार, सडक के किनारे वाले अपने उस छोटे से सँकरे टेढे मेढे, जमीन के टुकडे की

याद थी और उस दिन की भी याद थी जिस दिन अपने पिता के साथ जब वह वहाँ पहुचा था तो उसने देखा था कि किसी के पशुओ ने गेहू की उनकी सारी फसल का रौंद कर तबाह कर दिया था। गेहू के पौधो के बालो विहीन डठल हवा मे हिलते खडे थे। टूटी हुई बालियाँ जमीन पर गिरकर बिखर गयी थी और धूल के साथ मिल गयी थी। उसके पिता का चेहरा इस दृश्य को देख कर विकृत हो उठा था और धूल से भर उसके गालो पर से—उसके पिता, मीशा के बडे और मजबूत पिता के गालो पर से—आँसुओ की बूदें टप टप टपकने लगी थी! इसे देखकर मीशा भी रोने लगा था।

घर लौटते समय उसके पिता ने तरबूजो के खेत पर बैठे पहरेदार फिदोत से पूछा था "मेरे खेत को किसने बरबाद किया है ?"

और फिदोत ने खँखार कर अपने गले का साफ करने के बाद उत्तर दिया था, "उस दूकानदार ने। वह जान बूझकर अपने जानवरो को तुम्हारे खेत के अन्दर से हाँकता हुआ बाजार ले गया था।"

उसके पिता ने अपनी बेंच को चारपाई के और नजदीक खीच लिया।

"दूकानदार ने और दूसरे तमाम बडे बडे पेट वालो ने सारी जमीन पर कब्जा कर लिया था। गरीबो के पास खेती करने और अपनी जीविका चलाने के लिए कोई जमीन नही रह गयी थी। केवल यहा हमारे गाव मे ही नही, बल्कि सभी जगह यही हाल था। उन दिनो वे लोग हमारे ऊपर बहुत अत्याचार करते थे। हमारे लिए जिन्दा रहना कठिन था, इसीलिए मैंने गाँव के जानवरो को चराने की नौकरी कर ली थी। तभी मुझे फौज मे बुला लिया गया। फौज के अन्दर भी ऐसी ही खराब हालत थी। छोटी से छोटी चीज को लेकर अक्सर लोग हमे पीट डालते थे और तभी बोल्शेविक लोग आ गये। उनका एक नेता था जिसका नाम लेनिन था। देखने में वह बहुत बडे नही लगते थे, लेकिन

जबरदस्त विद्वान थे, गोकि तुम्हारी और मेरी तरह वह भी एक किसान परिवार के थे। और वे बाल्शेविक लोग ऐसी बातें करते थे कि हम लोग आश्चर्य मे पड जाते थे। वे कहते मजदूरो और किसानो तुम लोग सोच क्या रहे हो? एक झाड़ू लेकर इन तमाम भू-स्वामियो और अफसरो का सफाया कर दो। उन्हे मार कर हमेशा के लिए भगा दो। सब चीजो के असली मालिक तो तुम्ही हो।"

"हा इसी तरह की बात की थी हमने उन लोगो ने, और हम कुछ भी न बोल सके थे—क्योकि जब हमने सोचा तो हमे लगा कि वे ठीक ही तो कह रहे थे। हमने मालिको की जमीनो और जमीदारियो पर कब्जा कर लिया। मालिको को अच्छा नही लगा। अपनी जमीन के बिना वे कैसे खुश रह सकते थे! गुस्से से वे पागल हो उठे और हमारे खिलाफ मजदूरो और किसानो के खिलाफ उन्होने युद्ध छेड दिया। समझे बेटे, यही असली बात थी।"

'और फिर बोल्शेविको के नेता उसी लेनिन ने लोगो को झकझोर कर खडा कर दिया—उसी तरह जिस तरह कि हल से नीचे तक गोड कर तुम धरती को उलट पलट देते हो। उन्होने मजदूरो और सैनिको को भी जगाकर सचेत कर दिया और वे उन मालिको पर टूट पडे। फिर उनके जो परखचे उडे तो देखने लायक था! उन सैनिको और मजदूरो का नाम लाल रक्षक (रेड गार्ड) पड गया। मैं भी लाल रक्षको की टुकडी मे था। हम सब एक बहुत बडे मकान मे रहते थे, उसे स्मोलनी कहा जाता था। बेटे जी, उसके बडे बडे और लम्बे लम्बे सभा कक्षो और कमरो का तुम देखोगे तो चकाचौंध हो जाओगे—कमरे उसमे इतने थे कि तुम उन्ही मे खो जाते।

'एक दिन बाहर के दरवाजे पर मैं सन्तरी की ड्यूटी कर रहा था। ठण्ड असह्य थी। मेरे पास अपने फौजी कोट के अलावा और कुछ नही था। सर्द हवा कलेजे तक को चीरती हुई चली जाती थी। उसी समय

दो व्यक्ति दरवाजे से बाहर निकले । जब वे लोग जा रहे थे तो मैंने पहचाना उनमे से एक लेनिन थे । और वह सीधे मेरे पास आकर ठिठक गये और अत्यन्त मित्रता के भाव से बोले,

"कामरेड, तुम्हे ठण्ड नही लग रही है ? '

'और, मैंने उनसे कहा, नही, कामरेड लेनिन, हमे न ठण्ड हरा सकती है, न दुश्मन । अब सत्ता हमारे अपने हाथो मे आ गयी है । हम उन पूजीपतियो को अब हम कभी वापस नही लेने देगे ।

"वह हँसने लगे । उन्होने अत्यन्त स्नेह मे मुझसे हाथ मिलाया और फिर फाटक की तरफ चले गये ।"

मीशा का पिता चुप हो गया । उसने तम्बाकू की अपनी थैली और कागज का एक टुकडा निकाला और अपने लिए सिगरेट बनाने लगा । जब सिगरेट को सुलगाने के लिए उसने दियासलाई जलाई तो मीशा ने देखा कि उसकी घनी लाल मूछो के ऊपर आसू की एक बूद चमक रही थी ।

'इस तरह के है वह । उनकी नजर मे हर आदमी महत्वपूर्ण है। वह हर सैनिक का पूरे दिल से खयाल रखते है । उस दिन के बाद मैं उन्हे अक्सर देखा करता था । वह कही जाते होते तो मुझे दूर से ही पहचान लेते और मुस्करा कर कहते, तो पूजीपति हमे कभी नही हरा पायेंगे है न ? '

और मैं उन्हे जवाब देता "नही कामरेड लेनिन, कभी नही ।"

'और बेटे, सब चीजें ठीक उसी तरह हुई जिस तरह उन्होने बतलायी थी । हमने जमीनो और कारखानो पर कब्जा कर लिया । खून चूसने वाले बडे-बडे पेट वालो को हमने निकाल बाहर किया । जब तुम बडे हो जाओ तो यह न भूलना कि तुम्हारा पिता एक नौसैनिक था और कम्यून की रक्षा के लिए चार साल की लम्बी अवधि तक लडा था । किसी न किसी दिन मैं मर जाऊँगा, और लेनिन भी मर जायेंगे, लेकिन

जिन चीजों के लिए हम लडे थे व सदा जीवित रहेगी। बडे होने पर, क्या तुम भी अपने पिता की तरह सोवियतो की रक्षा के लिए लडोगे ?

'जरूर ! जरूर लडूगा ।" मीशा ने जोर से कहा और उठकर अपने पिता के गले से चिपट गया। उठते-उछलते समय वह यह भूल गया कि बाबा भी उसी की बगल मे पडे थे। इसलिए जब वह झपट कर उठा तो उसका पैर बुड्ढे के पेट मे जा लगा।

बाबा के चोट लगी तो वह बहुत जोर मे गुर्राये। उन्होने मीशा के बाल पकड कर उसे अपनी तरफ घसीटने की कोशिश की किन्तु उसके पिता ने मीशा को गोद मे उठा लिया और उसे लेकर दूसरे कमरे मे चला गया।

थोडी देर मे मीशा अपनी पिता की गोद मे ही सो गया। पर ऊँघते-ऊँघते वह उस अदभुत आदमी लेनिन तथा बाल्शेविकों के बारे मे, युद्धो और बडे बडे जहाजो के बारे मे सोचता रहा। सोते ही सोते उसे धीमी धीमी आवाजे सुनायी देने लगी और पसीने और तम्बाकू की मिली जुली नशीली खुशबू से उसका मन भर गया। और फिर उसकी आखे मजबूती से बद हो गयी—ऐसे जैसे किसी ने उन्हे सी दिया हो।

वह सोया ही था कि उसकी आखो के सामने एक शहर मँडराने लगा। शहर की सडकें चौडी चौडी थी और जिधर देखो उधर ही कूडे के ढेरो पर मुर्गियाँ लोट रही थी। गाँवो में तो बहुत सी मुर्गियाँ होती थी, किन्तु शहर में तो उनकी सख्या बेशुमार थी। और मकान—वे ठीक उसी तरह के थे जिस तरह के बप्पा ने बतलाये थे। ताजे तख्तो से छाया हुआ एक बडा सा मकान दिखलायी देता था—और फिर उसकी चिमनी के ऊपर एक दूसरा मकान बना था, और उसकी चिमनी के ऊपर एक और मकान था। और सबसे ऊपर वाले मकान की चिमनी उठती हुई ऊपर आसमान तक चली गयी थी।

मीशा सडक पर चल रहा था। इमारतो को अच्छी तरह देखने के

लिए उसका सर ऊपर की तरफ उठा हुआ था। तभी लाल कमीज़ पहन हुए एक लम्बा-तडगा आदमी तेजी से बढकर उसके सामने आ खडा हुआ।

उसने अत्यन्त स्नहपूण ढग मे पूछा, 'मीशा, तुम यहा कहा बेकार भटक रहे हो?"

"बाबा ने मुझे छुट्टी दे दी थी और कहा था कि मैं यहा खेल सकता हू' मीशा ने जवाब दिया।

"अच्छा तुम जानते हो कि मैं कौन हू?"

'नही।"

"मैं कामरेड लेनिन हू।"

मीशा इतना डर गया कि उसके घुटने कापने लगे। वह वहा से तुरन्त भाग जाता लेकिन लाल कमीज वाले आदमी न उसका हाथ पकड कर उसे रोक लिया और कहा,

"मीशा, क्या तुम्हारे आत्मा नही है—तुम्हारी आत्मा बिल्कुल मर गयी है! तुम्ह मालूम है कि म गरीबो के लिए लड रहा हू। फिर तुम क्यो नही मेरी सेना में भरती हो जाते हो?'

"बाबा मुझे नहीं भरती होने देंगे," मीशा ने सफाई देत हुए कहा।

'अच्छी बात है, जसी मर्जी हो वसा करो। लेकिन एक बात अच्छी तरह समझ लो—तुम्हारे बिना मेरा काम नही चलने वाला। तुम्ह मरी सना में नाम लिखाना पडेगा।"

मीशा ने कामरेड लेनिन का हाथ पकड लिया और अत्यन्त दृढता स बोला, 'अच्छी बात है। मै फिर बिना बाबा से पूछे ही आपकी सना म भरती हो जाऊँगा और गरीबो के लिए लडूगा। लेकिन अगर बाबा मेरी पिटाई करें तो आपको मुझे बचाना पडेगा।"

"अवश्य! मैं तुम्हे पिटन नही दूगा।" कामरेड लेनिन ने कहा और

वह आगे बढ गये । मीशा खुशी से पागल हो उठा । वह चाहता था कि ज़ोर ज़ोर से चिल्ला कर अपनी खुशी के बारे में वह सबको बता दे, परन्तु उसकी ज़बान सूख गयी थी और मुह खुल ही नही पा रहा था । यकायक मीशा अपने बिस्तरे पर उछल पडा, बाबा से जा टकराया— और उसकी आँखें खुल गयी !

बाबा के होठ हिल रहे थे और सोते ही सोते वह कुछ बुडबुडा रहे थे । मीशा ने देखा कि खिडकी के बाहर तालाब और उसके आगे पीला पीला सा नीला आकाश फैला हुआ था । पूर्व की ओर से हल्के-हल्के लाल और गुलाबी बादलों के टुकडे तैरते चले जा रहे थे ।

अब मीशा का पिता हर रोज़ शाम को उस लडाइयों के बारे में, लेनिन के बारे में नये नये किस्से सुनाता है । उसने जो तमाम जगह देखी थी उनके बारे में वह उसे बतलाता है ।

शनिवार की शाम को गाव का चौकीदार एक अजनबी आदमी को साथ लेकर मीशा के घर आया । वह नाटा सा आदमी था । वह फौजी ओवरकोट पहने था और उसके हाथ में चमडे का एक बैग था ।

चौकीदार ने बाबा से कहा 'यह कामरेड सोवियत अफसर है । शहर से आये हैं और आज रात को तुम्हारे घर में रहेंगे । दादा इनको खाना खिला देना ।

'हा यह हम कर सकते है ।'' बाबा ने कहा ! लेकिन, मिस्टर कामरेड आपकी तारीफ ? '

बाबा की विद्वतापूर्ण बातचीत सुनकर मीशा आश्चर्यचकित रह गया । मुह में अँगुली डाल कर वह उन लोगों की बाते सुनने की कोशिश करने लगा ।

चमडे के बैग वाले आदमी ने मुस्कराते हुए कहा 'दादा, मैं अभी

आपको सब कुछ बतलाऊँगा।' यह कह कर वह मकान के अन्दर बढ़ने लगा।

बाबा उसके पीछे पीछे चलने लगे, और मीशा बाबा के पीछे पीछे।

रास्ते में बाबा ने पूछा, 'हमारे गाँव में आपने कैसे तकलीफ की?"

'जो नये चुनाव होने वाले हैं मैं उन्हीं की देख रेख करने आया हूँ। आपके यहाँ गाँव की पचायत (सावियत) के सदस्यों और प्रधान का चुनाव होना है।'

तभी मीशा का पिता खलिहान से घर आ पहुँचा। उसने उस अजनबी आदमी के साथ हाथ मिलाया और माँ से कहा खाना जल्दी तैयार करो।

खाने के बाद पिता और वह अजनबी व्यक्ति चौके की बेंच पर बैठ गये। अजनबी आदमी ने चमड़े का अपना बैग खोला और उसमें से कागज निकाल कर पिता जी को दिखलाने लगा। मीशा भी डरते डरते उनके करीब पहुँच गया और एक तरफ सिमट कर देखने की कोशिश करने लगा कि उन कागजों में क्या है। उसके पिता ने एक कागज निकाला और उसे मीशा की तरफ बढ़ाते हुए कहा, "देखो मिनका ये हैं लेनिन।'

मीशा ने बढ़ कर तस्वीर अपने हाथ में ले ली। उसे देखकर आश्चर्य से उसका मुँह खुला ही रह गया। फोटो में जो व्यक्ति था वह लम्बा नहीं था, और न वह लाल कमीज ही पहने हुए था। वह तो एक बिल्कुल मामूली-सा कोट पहने था। उसका एक हाथ उसके पतलून की जेब में था और दूसरा आगे की तरफ इस तरह बढ़ा हुआ था जैसे कि वह किसी को रास्ता दिखला रहा हो। अत्यन्त उत्सुकता से मीशा फोटो में चित्रित आदमी के नख शिख को देखने लगा। उसके स्मृति पटल पर तस्वीर की हर छोटी छोटी चीज की—टेढ़ी भ्रुकुटियों, आँखों और ओठों पर खिली मुस्कराहट, आदि की छाप अमिट रूप से पड़ गयी।

बाहर से आये व्यक्ति ने थोडी देर बाद तस्वीर का मीशा से ले लिया और फिर अपने बैग मे रख लिया। उसके बाद सोने के लिए वह दूसरे कमरे मे चला गया। अपने ओवरकोट को कम्बल की तरह ओढ कर वह सोने ही जा रहा था कि अचानक उसे दरवाजे के खुलने की आवाज सुनाई दी। अपना सर बाहर निकालकर अजनबी आदमी ने पूछा, 'कौन है ?'

अन्दर किसी के नगे परो घुसने की आहट सुनाइ दी।

अजनबी ने फिर पूछा, 'कौन है ?" और तब उसने देखा कि नन्हा सा मीशा उसके बिस्तर के पास आकर खडा हो गया था।

'क्या बात है बच्चे ?" उसने पूछा।

कुछ देर तक मीशा के मुह से कोई बोल नही फूटा। किन्तु अन्त मे हिम्मत करके उसने धीरे से कहा सुनिये, मिस्टर—आप अपना लेनिन मुझे दे दीजिए।'

अजनबी ने कोई जवाब नही दिया। चुपचाप पडा पडा वह मीशा की तरफ देखता रहा।

मीशा एकदम घबडा गया। मान लो यह आदमी खराब हो ? मान लो तस्वीर देने से यह इन्कार कर दे ? बडी मुश्किल से अपने शब्दो को सभालते हुए और इस बात की कोशिश करते हुए कि उसकी आवाज काप नही, मीशा ने आहिस्ता से कहा

'कृपाकर मुझे अपने पास रखने के लिए वह दे दीजिए। मैं आपको टीन का अपना बक्सा दे दूगा। वह बहुत अच्छा बक्सा है। और मेरे पास जितनी भी गोलियाँ हैं वह सब भी मैं आपको दे दूगा। और हा, मेरे पिता मेरे लिए जो जूते लाये है उन्हे भी मैं आपको दे दूगा। अजनबी को खुश करने की अपनी सारी शक्ति लगाते हुए उसने कहा।

अजनबी आदमी ने मुस्कराते हुए पूछा, लेकिन लेनिन का तुम करोगे तो क्या ?"

मीशा सोचने लगा, यह नही देगा। अपने आँसुओं को छिपाने के लिए अपने सर का दूसरी तरफ़ घुमाते हुए करुण स्वर मे उसने कहा,

"मैं उन्हें अपने पास रखना चाहता हूँ, अपने पास !"

अजनबी आदमी हँसने लगा। तकिया के नीचे से उसने अपना बग निकाला और उसमें से फोटो निकाल कर मीशा को दे दिया। मीशा ने उसे अपनी जाकेट के नीचे छिपा लिया और दोनो हाथों से उसे कसकर दबाये हुए वह चौक की तरफ दौड गया। उसकी दौड धूप से बाबा की नींद उचट गयी। उन्होंने बिगडते हुए पूछा,

'तुझे हो क्या गया है जो आधी रात का धमा चौकड़ी मचाये हुए है ? मैंने तुझसे कहा था कि सोते वक्त दूध न पीना। अगर तेरी हालत बहुत खराब है तो उधर जाकर उस गन्दे पानी वाले घडे में शौच कर ले। तुझे बाहर ले जाने के लिए इस वक्त मैं नही उठूगा।'

मीशा बिना कुछ उत्तर दिये बिस्तर पर लेट गया। वह एकदम स्थिर पडा था। वह डर रहा था कि यदि वह ज़रा भी हिले-डुलेगा तो फोटो मुड जायेगी। उसे अब भी अपने दोनो हाथों से पकड कर वह छाती से चिपकाये हुआ था। इसी तरह लेटा हुआ वह सो गया।

जब वह उठा तो पौ फट रही थी। मा ने दूध दोह कर गाय को अभी-अभी बाडे से बाहर चरने के लिए निकाला था। मीशा को उठता देख वह आश्चर्य मे पड गयी।

"तुझे क्या हुआ है ? आज इतनी जल्दी क्यो जग गया ?" उसने पूछा।

फोटो को अब भी अपनी जाकेट के नीचे मजबूती से दबाये हुए मीशा अपनी मा के पास से गुज़रता हुआ खलिहान की तरफ़ चला गया। वह बखार के नीचे जाकर बैठ गया। बखार के चारों तरफ मोटी-मोटी घास और काँटो की झाडियाँ उग आयी थी। मीशा ने घास, मुर्गियों की बीट,

आदि का इटाकर थोडी-सी जगह साफ की। लेनिन की तस्वीर का उसने एक बडे से सूखे पत्ते मे लपेटा और जो जगह साफ की थी उसमे सभाल कर रख दिया। हवा मे कही वह उड न जाय इसलिए उसके ऊपर उसने एक बडा सा पत्थर भी रख दिया।

उस दिन बराबर झडी लगी रही। आसमान काले काले बादलो से ढका रहा। अहाते मे जगह जगह पानी के गड्ढे भर गये। सडको पर नदियाँ जैसी बहने लगी।

मीशा को घर के अन्दर बद रहना पडा। किन्तु शाम होते ही उसके पिता और बाबा गाँव वालो की सभा मे भाग लेने के लिए सोवियत घर की तरफ चल दिये। मीशा ने भी बाबा की टोपी लगायी और धीरे धीरे और चुपचाप उनके पीछे चलने लगा। सोवियत का सदर दफ्तर गिरजा-घर के अहाते मे था। काफी कठिनाई से उसके बरामदे की टूटी फूटी और मिट्टी से सनी सीढियो पर चढता हुआ मीशा अन्दर पहुँच गया। अन्दर जरा भी जगह नही थी। ऊपर, छत के नीचे, तम्बाकू का धुआँ भरा था। खिडकी के पास की एक मेज के सामने बैठा वह अजनबी आदमी सभा को कुछ समझा रहा था।

मीशा चुपके से कमरे के पीछे निकल गया और आखीर वाली बेंच के एक किनारे बैठ गया।

कामरेडो! आप लोगो मे से जो फोमा कोशुनोव को सोवियत पचायत का प्रधान चुनना चाहते है वे कृपाकर अपने हाथ उठा दे।

दूकानदार के दामाद प्रोखोर लाइसकोव ने, जो मीशा के एकदम सामने बैठा था, वहीं से चिल्लाकर ज़ोर से कहा, 'नागरिको! इसके नाम पर मुझे आपत्ति है। वह ईमानदार आदमी नहीं है। वह जब हमारे गाव का चरवाहा था तभी से हम उसे जानते है।

तभी गाँव का मोची, फिदोत, जो खिडकी के ऊपर बैठा था, उछलकर खडा हो गया और जोर-जोर से हाथ हिलाते हुए बोला, "साथियो ! बडी तोद वाले ये लोग एक चरवाह को प्रधान नही बनने देना चाहते हैं । लेकिन फोमा हमारा आदमी है सवहारा है, और सोवियत सत्ता की वह जम कर रक्षा करेगा।"

मार धनी मानी कज्जाक दरवाज़े के पास इकटठा होकर शोरगुल करन और सीटियाँ बजाने लगे । हल्ला गुल्ला की वजह स कमरे मे कुछ भी सुनाई नही पड रहा था । किसी की आवाज आयी, "चरवाहे को हम प्रधान नही बनने देंगे !"

दूसरी आवाज़ उठी, "अब वह फौज से लौट आया है फिर चरवाहे का काम कर सकता है।

'फोमा कोर्शुनोव मुदाबाद !"

मीशा की नजर अपने पिता को ढूढने लगी। वह नजदीक ही खडा था। उसका चेहरा सफेद हो गया था। पिता के लिए डरने हुए मीशा का चेहरा भी सफेद हो गया।

तभी उस अजनबी आदमी की कडक आवाज सुनाई दी। मेज़ पर जोर स घूसा मारते हुए उसने कहा, 'साथियो, खामोश ! शोर गुल बद नही होगा तो गडबडी मचाने वालो को हम बाहर निकाल देंगे !"

"किसी सच्चे कज्जाक को प्रधान बनाइए !" एक आवाज़ आयी।

फोमा मुर्दाबाद !" कोई दूसरा चिल्लाया।

'हा, उसको यहाँ से हटाइए !' किसी ने चिल्लाते हुए समथन किया।

सारे खाते-पीते कज्जाक एक स्वर से चिल्लाने लगे । उनमे भी सबस तज आवाज़ गाँव के पसारी के दामाद, प्राखोर की थी ।

एक भारी भरकम, लाल दाढी वाला कज्जाक, जो कानो मे बालिया

पहने था, उठकर एक बेंच पर खड़ा हो गया। उसके फटे कोट में जगह-जगह थिगड़े लगे थे। ऊँची आवाज़ मे अपने आदमियों को सबोधित करते हुए वह बोला

"भाइयो, देख रहे हो ये लोग कैसी शरारत कर रहे हैं। यह तुंदियल–यह किसी अपन ही गुर्गे को पचायत का प्रधान बनाना चाहते हैं जिससे कि अपनी मनमानी चला सकें और जैसे इनके पहले ठाठ थे वैसे ही आगे भी बने रहें।"

कान की बाली और भारी शरीर वाला वह कज्ज़ाक जोर-जोर से चिल्ला रहा था, लेकिन उस हगामे मे मीशा सिर्फ एक आध शब्द ही सुन-समझ पाया। उसे केवल यही सुनायी पड़ा कि, 'जमीन उसका फिर से बँटवारा गरीबों को बजर और परती और सारी बढ़िया वाली जमीन ये तुंदियल लुटेरे खुद अपने पास रखेंगे।"

दरवाज़े पर खड़ा धनी कज्ज़ाकों का गिरोह बराबर रट लगाये था, 'प्रोखोर प्रधान बनेगा! प्रो--खो--र! खो---र! खो---र '

कमरे मे फिर शान्ति स्थापित करने मे काफी देर लगी। वह अजनबी आदमी बराबर चिल्ला रहा था, जोर-जोर से और गुस्से से लोगो को डाट रहा था। मीशा को लगा कि गुस्से से भर कर लोगो को वह गालियाँ दे रहा है।

जब जरा शान्ति हुई तो अजनबी ने जोर से पूछा, "फोमा कोर्शुनोव को प्रधान बनाने के पक्ष में जो हो वे हाथ उठा दें।"

भारी सख्या मे लोगों ने हाथ उठा दिये। मीशा ने भी हाथ उठा दिया। एक आदमी ने एक एक बेंच के पास जाकर वोटों का गिनना शुरू कर दिया।

" ..तेसठ चौसठ' "और फिर मीशा के उठे हाथ की तरफ इशारा करते हुए वह बोला,---पैंसठ!'

अजनबी ने एक कागज पर कुछ नोट किया। फिर उतने ही जोर से बोलते हुए उसने पूछा 'प्रोखोर लाइसेंकोव को कौन लोग प्रधान चुनना चाहते हैं—वे हाथ उठा दें।"

धनी कज्जाकों के सत्ताइस हाथ एकदम ऊपर उठ गये। फिर एक और हाथ उठा—पनचक्की के मालिक येगोर का। मीशा ने भी फिर हाथ उठा दिया। लेकिन वोटों को गिनने वाला आदमी जब एकदम पीछे वाली बेंच के समीप पहुँचा तो उसकी नजर मीशा पर पड़ी। उसके उठे हाथ को देखते ही उसने लपक कर उसका कान पकड़ लिया और जोर से उसे उमेठते हुए बोला, 'बदमाश का बच्चा! तू भी! भाग जा यहां से, नहीं तो तेरी हड्डी पसली ठीक कर दूंगा! आप वोट देने आये हैं!"

लोग खिलखिला कर हँस पड़े। जो आदमी हाथों को गिन रहा था उसने मीशा को पकड़ा और दरवाजे के पास ले जाकर बाहर ढकेल दिया। बरामदे की रपटाऊ सीढ़ियों पर लुढ़कते हुए मीशा को याद आया कि बाबा से बहस करते हुए उसके पिता ने एक बार क्या कहा था।

तब चीखता हुआ वह बोला, "तुम्हें किसने इसका हक दिया है?"

"तुझे मैं अभी बताता हूँ कि किसने!"

अन्याय हमेशा ही बहुत कड़वा लगता है!

मीशा घर पहुँचा तो रोने लगा। उसने मां से शिकायत की। लेकिन वह भी उससे नाराज थी। वह बोली, "तुमने तो मेरी नाक में दम कर रखा है। हर जगह अपनी नाक घुसेड़ते फिरते हो! तुमसे किसने कहा कि जहाँ तुम्हारी जरूरत नहीं है वहां जाकर घुस जाओ?"

अगले दिन जब सारा परिवार नाश्ता कर रहा था तो दूर कहीं से संगीत की धुन सुनायी दी। पिता ने अपने छुरी कांटे को रख दिया और मूछों को पोंछते हुए कहा, "यह फौजी बैंड की आवाज है।"

मीशा एकदम उठ कर तीर की तरह बाहर निकल गया। उसके जाते ही दरवाजे के जोर से बंद होने की आवाज आयी। बाहर से उसके दौड़ते कदमों की आहट सुनायी पड़ रही थी।

पिता और बाबा भी बाहर निकल आये। माँ खिड़की से बाहर की तरफ देखने लगी।

लाल सैनिकों की एक टुकड़ी एक हरी भी लहर की तरह उमड़ती हुई देहाती सड़क पर बढ़ती आ रही थी। लाल सैनिकों की एक के बाद एक कतार जोर जोर से हाथ हिलाती हुई आगे बढ़ती आ रही थी। आगे आगे बैण्ड चल रहा था। नगाड़ों और बजती हुई बिगुलों की आवाज से सारा गाँव गूँज उठा।

मीशा खुशी और उत्साह से जैसे नाच रहा था। तेजी से भागता हुआ वह मार्च करते लाल सैनिकों के समीप पहुँच गया। उसकी छाती में एक विचित्र प्रकार की मिठास भरी गुदगुदाहट भर गयी। गला जैसे रुँध गया। एकटक लाल सेना के सैनिकों के प्रसन्न धूल से भरे चेहरों की तरफ और बैंड बजाने वालों की तरफ वह देखने लगा। उनके फूले फूले गाल कैसे शानदार लग रहे थे! उसने तुरन्त संकल्प कर लिया और सोचा कि मैं भी उनके साथ जाऊँगा और देश की भलाई के काम में भाग लूँगा।

बहुत दिनों से जिस बात का स्वप्न वह देख रहा था वह आज साकार होने जा रही थी। किसी प्रकार हिम्मत करके वह आगे बढ़ा और एक लाल सैनिक की कारतूसों की पट्टी को पकड़ कर उससे बोला, "आप कहाँ जा रहे हैं? युद्ध में भाग लेने?

और कहाँ? हम सब मोर्चे पर जा रहे हैं।'

आप किसके लिए लड़ने जा रहे हैं?

'सोवियतों की रक्षा के लिए बच्चे! आ तू भी हमारे साथ शामिल हो जा।'

मीशा को घसीट कर सैनिक ने उसे अपने साथ ले लिया। हँसते हुए एक दूसरे सैनिक ने लडके के उलझे बालो को पकड कर उसके सर को प्यार से झकझोर दिया। एक तीसरे सैनिक ने अपनी जेब मे हाथ डाला चीनी की मिठाई का एक मैला सा टुकडा निकाला और उसे बच्चे के मुह मे डाल दिया। सैनिक टुकडी जब चौराहे के मैदान पर पहुची ता उसे आदेश मिला 'रुक जाओ!"

लाल सैनिक आज्ञा पाते ही तितर बितर हो गये। उनमे से अनेक स्कूल के अहाते की दीवार के पास की शीतल छाया मे विश्राम करने के लिए लेट गये। एक लम्बा-सा सैनिक जिसकी दाढी मूछ साफ थी और जिसकी पेटी से एक तलवार लटक रही थी मीशा के पास आया और हल्के से मुस्कराते हुए उससे पूछा, 'तुम्हारा घर कहा है ?

मीशा ने अकड कर अपनी छाती को फुलाया अपने पतलून को ऊपर खीच कर ठीक किया और बोला, 'मैं भी आपके साथ हूँ। आपके साथ लडाइयो मे भाग लूगा।'

एक लाल सैनिक ने दूर से ही चिल्ला कर कहा, 'साथी बटालियन कमाण्डर! आप उसे अपना एडजूटेण्ट (सहायक) बना लीजिएगा!'

सारे लोग खिलखिला कर हँस पडे। मीशा रुआसा हो गया। लेकिन जिस व्यक्ति को उन लोगो ने, "बटालियन कमाण्डर" कह कर पुकारा था उसने उन्हे झिडकते हुए सख्ती से कहा,

मूर्खो, तुम हँस किसलिए रहे हो ? निस्सन्देह, हम इसे अपने साथ ले चलेंगे। केवल एक ही शर्त है।' यह कह कर वह मीशा की तरफ मुडा और बोला, "तुम्हारे इस पतलून मे—कधे से लटकाने की एक ही पट्टी है।—इस हालत में हम तुम्हे नही ले चल सकते। इससे तो हम सबकी बेइज्जती होगी। देखो—मेरे पतलून मे दो पट्टियाँ हैं तुम फौरन दौड कर घर जाओ और अपनी मा से एक पट्टी और सिलवा लो। हम

तुम्हारा इन्तजार करेंगे।" फिर स्कूली अहाते की दीवार के पास विश्राम कर रहे लाल सैनिकों की तरफ आँख मारते हुए उसने जोर से हुक्म दिया, "तरेंको ! जाओ और हमारे नये लाल सैनिक के लिए एक बन्दूक और एक ओवरकोट ले आओ ! '

उनमे से एक सैनिक फौरन उठ खड़ा हुआ और कमाण्डर को सैल्यूट करता हुआ बोला, 'अभी लाता हूँ।' इतना कहकर वह दौड़ता हुआ वहां से चला गया।

'अब तुम भी तुरन्त दौड़ जाओ । बटालियन कमाण्डर ने मीशा से कहा। "अपनी मा से कहना कि तुम्हारे पतलून मे जल्दी से एक और पट्टी सी दें।

मीशा ने कमाण्डर की तरफ एकटक देखते हुए पूछा आप अपने वादे से मुकर तो नही जायेंगे ?"

"तुम फिक्र मत करो।"

गाँव के चौराहे से मीशा का घर काफी दूर था। अपने घर के दरवाजे तक पहुँचते पहुँचते उसकी सास फूल गयी। उसने फुर्ती से अपना पतलून उतारा और मा को आवाज देता हुआ नंगे ही पाँव घर के अन्दर की तरफ भागा। "मा, मा ! मेरा पतलून ! एक पट्टी !"

पर उसका घर खाली था, उसमें सन्नाटा छाया हुआ था। काली-काली मक्खियों का एक झुण्ड चूल्हे के पास भिनभिना रहा था। मीशा घर म इधर से उधर दौड़ने लगा आहाते मे गया खलिहान मे जाकर देखा, पीछे की बगिया में ढूढ़ा, लेकिन वहाँ कहीं कोई नही था—न मा न पिता,—न बाबा । वह फिर दौड कर घर म घुस गया। इधर उधर नजर दौड़ाई तो एक जगह उसे एक खाली बोरा दिखाई दिया। चाकू से उसने बोरे में से एक लम्बी पट्टी काट ली। उसके पास इतना समय नही था कि सीने सिलाने म बरबाद करे, और फिर सीना उसे आता ही कहाँ था ! उसने पट्टी को जल्दी-जल्दी . . . के निचले

से गाँठ लगाकर बाँध दिया, फिर उसे कधे के ऊपर से लाकर पतलून के सामने वाले हिस्से मे बाध लिया । उल्टे पैर घर से वह बाहर की तरफ भागा । बाहर दौडकर वह बखार क नीचे घुस गया ।

उसकी साँस फूल रही थी, फिर भी किसी तरह उसने जिस भारी पत्थर से तस्वीर को ढका था उसे हटाया और लेनिन की तस्वीर का देखने लगा । लेनिन की आगे की ओर बढी हुई बाँह सीधे मीशा की तरफ दिखलायी दे रही थी । उसे देखत ही मीशा ने आहिस्ता से कहा "लीजिए, अब मैं भी सेना मे भर्ती हो गया हूँ ।'

तस्वीर को फिर पत्ते के अन्दर अच्छी तरह से लपेट कर उसने उसे अपनी कमीज के नीचे रख लिया और वहा से दौडता हुआ गाव क चौराहे की तरफ चल पडा । एक हाथ से वह फोटो को कमीज के नीचे दबाये था और दूसरे से अपने पतलून को सम्हाले था । पडोसियो के बाडे के पास से दौडते हुए उसने जोर मे पुकारा,

"ओ, अनीसीमोवना !"

'क्या है रे ?" अनीसीमोवना ने पूछा ।

मेरे घर वालो से कह देना कि खाने के लिए मेरा इन्तजार न करें ।"

"तू जा कहाँ रहा है, बदमाश कहीं का ?"

'मैं लडाई पर जा रहा हूँ !"—यह कहते हुए उस अलविदा मे दूर से ही हाथ हिलाकर उसने टा टा किया ।

परन्तु मीशा जब चौराहे पर पहुँचा तो जसे उसे काठ मार गया । वहाँ कहीं कोई नही था । स्कूली आहाते के पास की जमीन पर कुछ जली हुई सिगरेटें, टीन के कुछ खाली डिब्बे और किसी की एक फटी हुई पट्टी पडी थी । बड फिर बजने लगा था, लेकिन वह बहुत दूर, गाव के दूसर छोर पर था । मिट्टी की पक्की सडक पर लाल सेना के मार्च करते हुए कदमों की हल्की-हल्की आवाज दूर से आ रही थी ।

दुख और निराशा से रोते हुए मीशा ने अपनी पूरी ताक़त से उनके पीछे दौड़ना प्रारम्भ कर दिया। और इसमें ज़रा भी शक नहीं कि रास्ते में चमड़े की फ़ैक्टरी के पास सड़क के ठीक बीचों बीच अगर एक भारी भरकम पीला-सा कुत्ता दांत निकाल कर गुर्राता हुआ सामने न पड़ा होता तो वह सैनिकों की टुकड़ी को जरूर पकड़ लेता। कुत्ते से बचने और वहां से घूम कर जाने में मीशा को जितनी देर लगी उतनी ही देर में लाल सैनिकों की टुकड़ी अन्तर्धान हो गयी। बैंड और सैनिकों के मार्च करते कदमों की आवाज़ शून्य में धीरे धीरे खो गयी।

एक दो दिन बाद, लगभग चालीस सैनिकों की एक टुकड़ी फिर गांव में आयी। ये सैनिक वर्दियों में नहीं थे। कामकाजी, तेल और गर्द से सने कपड़े और ढील ढाले नमदे के बने जूते पहने थे। गाँव के सोवियत घर से मीशा का पिता खाना खाने के लिए जब अपने घर आया तो उसने बाबा से कहा, "बखारे में जो गेहूँ रखा है उसे निकाल लो। फाजिल गल्ला इकट्ठा करने के लिए सरकारी कर्मचारी आये हैं।"

खाद्य टुकड़ी के सैनिकों ने घर घर जाकर अपनी संगीनों से मिट्टी के फ़र्शों और उसारों को कुरेद कुरेद कर देखा, जहाँ गड़ा हुआ ग़ल्ला मिला उसे निकाला, और गाड़ियों पर लाद कर अनाज के पंचायती गोदाम में भेज दिया।

आखिर में गाँव सोवियत के प्रधान की बारी आयी। अपने पाइप के कश खींचते हुए एक सैनिक ने बाबा से पूछा, 'अच्छा बाबा हमें सच सच बतला दो कि तुमने कितना गल्ला छिपा रखा है?"

लेकिन बाबा ने शान से और अभिमानपूर्वक अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा, 'मेरा बेटा कम्युनिस्ट है।"

सैनिकों को फिर वह बखार में ले गये। पाइप वाले सैनिक ने

कोठारे के अन्दर के पीपो पर नजर डाली। उसने कहा "अच्छी बात है, एक पीपा सरकारी गोदाम मे पहुँचा दो और बाकी का खाने और बीज के लिए अपने पास रखे रहो।"

बाबा ने अपने पुराने घोडे सवरास्का को गाडी मे जोता, एक दो बार ठण्डी सास ली और मन ही मन कुछ बुडबडाय, किन्तु गेहूँ का उन्होन गाडी पर लादना शुरू कर दिया। वह पूरा आठ बोरी था। बाबा न निराशा से एक बार फिर उस पर नजर डाली और सरकारी गोदाम की तरफ चल दिये। गेहूँ को जाता देख कर मा की भी आखो म आसू आ गये। मीशा ने गेहूँ के बोरो को भरन म बाबा की मदद की और जब बाबा उसे गाडी पर लेकर चले गय तो वह भी वित्या के साथ खेलने के लिए पादरी के घर चला गया।

पादरी के घर म दोना लडके चौके क फश पर बैठ कर खेलने लगे। उन्होने कागज से काट कर कुछ घोडे बनाय और उन्ही क साथ खेलने लगे।

तभी गल्ला इकटठा करन वाले सैनिक वहाँ आ पहुँचे। सैनिको का यह वही दल था जो मीशा के घर गया था। पादरी दौडता हुआ उनसे मिलने के लिए घर से बाहर आ गया। घबडाहट मे उसका पैर उसके चोगे की झूल मे फँस गया और वह गिरते गिरते बचा। सैनिको के पास पहुँच कर उसने उन्हे अपन बैठने के कमर मे आन के लिए आमन्त्रित किया। पाइपवाले सनिक न सख्ती से पादरी स कहा,

"हम लाग आपकी बठक नही, बखार देखना चाहते है। अपना अनाज आप कहाँ रखते हैं ?"

पादरी की पत्नी बदहवास हालत म दौडती हुई रसोई घर म आ गयी। उसके बाल बिखरे थ। लोमडी जैसी मुस्कराहट स दात निपोरते हुए वह बाली, "सज्जनो क्या आप यकीन करेंगे कि हमार पास जरा भी

गल्ला नही है। मेरे पति ने अपने इलाके का ल्गान अभी तक नही दिया है।"

'आपके घर मे क्या कोई तहखाना है ?"

"नही, हमारे पास कोई तहखाना नही है। अपने गल्ले को हम हमेशा बखार मे ही रखते आये है।"

मीशा को अच्छी तरह याद था कि घर के नीचे एक लम्बा चौडा तहखाना है। वित्या और वह उसमे बहुत बार खेले थे। उसका दरवाजा रसोईघर के अन्दर से है। पादरी की पत्नी की तरफ देखते हुए, उसने पूछा, "रसोईघर के नीचे वाला वह तहखाना कहाँ गया जिसमे वित्या और मैं खेलते थे ? आप भूल गयी होगी।"

पादरी की पत्नी हँसने लगी, किन्तु उसका चेहरा पीला पड गया। वह बोली, 'बच्चे तुम कहाँ की कपोल कल्पित बातें कर रहे हो ! वित्या, तुम दोनो जाकर बगीचे मे क्यो नही खेलते ?"

पाइप वाला सनिक मीशा की तरफ देखकर मुस्कराया। उसकी भौंवें तन गयी। मीशा से उसने पूछा,

'उस तहखाने मे किधर से जाते हैं नौजवान ?"

पादरी की पत्नी ने क्रोध से अपनी मुटिठयो को जोर से बाँधते हुए कहा, "आप कहाँ इस पागल बच्चे की बात मे पडते हैं ! यक़ीन कीजिए, हमारे घर मे कोई तहखाना नही है।"

पादरी ने अपने लम्बे चोगे की सलवटो को ठीक करते हुए कोमल स्वर मे सुझाव दिया, "कामरेड लोग थोडा चाय पानी कर लें। आइये, बैठक मे चलें।"

बच्चो के करीब से जाते हुए पादरी की पत्नी ने मीशा के इतनी जोर से चिकोटी काटी कि वह कराह उठा, किन्तु ऊपर से अत्यन्त स्नेहपूर्ण ढंग से मुस्कराते हुए बच्चो से उसने कहा
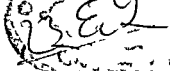
"बच्चो ! जाओ तुम लोग बगिया में खेलो । तुम लोगो की वजह से हमारी बातचीत मे खलल पडता है ।"

सैनिक एक दूसरे की तरफ देखने लगे । फिर उन्होंने सावधानी से रसोई-घर की जाच पडताल करना शुरू किया । अपनी राइफिलो के कुन्दो से हल्के-हल्के उन्होंने रसोईघर के फश को ठोकना शुरू किया । दीवार से लगी हुई एक मेज रखी थी, उसे हटा कर उन्होंने उसके नीचे जो टाट बिछा था उसे खीचा । पाइप वाले सैनिक ने फश के तख्ते को उखाड लिया और नीचे झाँक कर तहखाने के अन्दर देखने लगा । रोष से सिर हिलाते हुए उसने कहा,

"आप लोगो को शम आनी चाहिए ! हमसे आप कह रहे है कि आपके पास रत्ती भर भी गल्ला नही है जबकि आपका तहखाना ऊपर तक गेहूँ से ठसाठस भरा है ।'

पादरी की पत्नी ने मीशा की तरफ ऐसी नजर से देखा कि वह भय स काँप उठा । उसकी इच्छा हुई कि जल्दी से जल्दी अपने घर भाग जाय । वह दरवाज़े की तरफ खिसकने लगा । दरवाजे के पास बालो स पकड कर पादरी की पत्नी न उसे ज़ोरो से झकझोरना शुरु कर दिया । उसके सर को ज़ोर-ज़ोर से खीचते और दरवाज़े से टकराते हुए वह रोती जा रही थी ।

मीशा ने किसी तरह अपने को छुडा लिया और अपने घर की तरफ भाग गया । रोते रोते रुँधे गले स अपनी मा को उसन सारी बात बतलायी । घबडा कर वह अपने हाथ मलने लगी । नाराज होती हुई बोली 'मैं तेरा क्या करूँ ? मेरे सामने से हट जा, नही तो मैं तेरी बुरी तरह मरम्मत करूँगी !"

इसके बाद जब भी मीशा को चोट लगती और उसका दिल दुखता तो सीधा वह बखारे के नीचे पहुँच जाता । वहाँ रखे उस पत्थर को एक तरफ़ खिसकाता, पर्से को खोलकर और रोते रोते लेनिन की तस्वीर को निकालता और अपना सारा दुःख-दद उन्हे बतला देता ।

एक हफ्ता बीत गया। मीशा एकदम अकेला था। खेलने के लिए अब उसका कोई साथी नहीं था। पास पड़ोस के जितने भी लड़के थे वे सब उससे कतराने लगे। जब भी वे उसे देखते वे चिल्लाकर कहते, "हरामी है," "देखो यह हरामी जा रहा है!" इतना ही नहीं। वे उसे और भी बहुत बुरी बुरी गालियाँ देते जो अपने बड़ों के मुँह से उन्होंने सुनी थीं। वे चिल्लाते,

"देखो, उस कम्युनिस्ट छोकरे को देखो!," "उस गन्दे 'कौमनस्ट' को देखो!"

एक दिन तीसरे पहर मीशा जब तालाब से घर आया तो उसने अपने पिता की कड़कती हुई आवाज सुनायी दी। वह जोर-जोर से और सख्ती से कुछ कह रहे थे। माँ जोर जोर से इस तरह रो रही थी जैसे कि लोग किसी के मर जाने पर रोते हैं। मीशा घर के अन्दर गया। उसका पिता बैठा बैठा अपने बूट चढ़ा रहा था। उसका फौजी ओवर-कोट उसके पास तैयार रखा था।

'डैडी आप कहाँ जा रहे हैं?'

उसका पिता हँसने लगा। उसने कहा,

'बेटे, अपनी माँ को शान्त करने की कोशिश करो। उनके रोने से मेरा दिल बैठा जा रहा है। मुझे फिर लड़ाई के मोर्चे पर जाना है और यह मुझे जाने नहीं दे रही है।"

'डैडी मुझे भी आप अपने साथ लेते चलिए।"

पिता ने खड़े होकर अपनी पेटी ठीक की और रिबनों से सजी हुई टोपी लगा ली। मीशा से उसने कहा

'बेटे पागल जैसी बातें मत करो। हम दोनों एक साथ घर छोड़ कर कैसे जा सकते हैं? जब तक मैं लौट नहीं आता तब तक तुम्हें कहीं नहीं जाना चाहिए। वरना फिर फसल के समय गल्ला कौन घर

में लायेगा ? मा को पूरा घर देखना पडता है और बाबा—वह अब बूढ़े हो रहे हैं।"

मीशा ने बडी मुश्किल से अपने आंसुओ को रोका। बडी कोशिश करके पिता को अलविदा कहते समय अपने चेहरे पर वह मुस्कराहट भी ल आया। मा पिता के गले स लिपट गयी—उसी तरह जिस तरह जब वह घर आये थे तो वह उनसे चिपक गयी थी। उसे समझा बुझाकर अलग करन म पिता को बडी कठिनाई हुई। बाबा न भी ठण्डी साँस लेत हुए उसका चुम्बन लिया। फिर अलविदा कहते हुए धीरे से उसके कान मे उन्होन कहा,

"फोमा, सुनो—क्या तुम घर पर ही नही रह सकते ? क्या तुम्हारे बिना उनका काम नही चल पायेगा ? भगवान न कर, लेकिन अगर तुम्हे कुछ हो गया तो हमारा क्या होगा ? '

"बप्पा, ये सब बातें न करो। तुम्हारे मुह से ये अच्छी नही लगती। भला, सोचो तो अगर सारे मर्द अपनी औरतो के घाघरो के पीछे छिप जायेंगे तो सोवियतो की रक्षा के लिए कौन लडेगा ?"

"अच्छा, अगर तुम न्याय और सच्चाई के लिए लडने जा रहे हो, तो जाओ।"

अपना मुह दूसरी तरफ करके बाबा ने चुपचाप आख के आँसू पाछ लिये।

पिता के साथ वे सब लोग उसे भेजने गाँव के सोवियत घर तक गये। वहा लगभग एक दजन सैनिक साइकिलें लिये खडे थे। मीशा के पिता ने भी एक साइकिल ले ली। उसके बाद उसने मीशा को फिर प्यार किया और दूसरे सैनिको के साथ गाँव से बाहर जाने वाली सडक पर चल दिया।

मीशा बाबा के साथ घर की तरफ लौट रहा था। मा भी बडी कठिनाई से उनके पीछे पीछे घिसटती हुई चलने लगी। गाँव मे कही-

कहीं कुत्ते खड़े भौंक रहे थे। कहीं किसी मकान में रोशनी जलती दिखायी दे जाती थी। गाँवों ने रात के अंधकार में अपने को इस तरह छिपा लिया था जिस तरह कि कोई बूढ़ी स्त्री अपने काले शाल में अपने को ढक लेती है। हल्की हल्की फुहार पड़ रही थी, और उधर दूर स्टेपी के मैदानों में, लगातार बिजली चमक रही थी। बीच-बीच में बिजली की गड़गड़ाहट भी गूंज उठती थी।

वे चुपचाप घर की तरफ चलते रहे। लेकिन ज्योंही वे घर के फाटक के पास पहुँचे त्योंही मीशा ने पूछा,

"बाबा, मेरे डैडी किससे लड़ने गये हैं?"

"मुझे तंग मत कर!"

"बाबा!"

'क्या है?"

'मेरे डैडी किससे लड़ने गये हैं?"

फाटक को अन्दर से बन्द करते हुए बाबा ने जवाब दिया, "गाँव के बिल्कुल पास कुछ बहुत दुष्ट लोग जमा हैं। लोग कहते हैं कि उनका एक गिरोह है। लेकिन मेरी समझ में तो वे निरे डाकू हैं। तुम्हारे डैडी उन्हीं से लड़ने गये हैं।"

'उनकी तादाद कितनी है, बाबा?'

'हो सकता है कोई दो सौ हों--लोग ऐसा ही बतलाते हैं। अच्छा, अब तुम भागो! तुम्हारे सोने का वक्त हो गया है।"

रात में कुछ आवाजें सुनकर मीशा की नींद खुल गयी। उसने हाथ बढ़ा कर बाबा को जगाना चाहा लेकिन बाबा बिस्तरे में थे ही नहीं।

'बाबा! तुम कहाँ हो?"

'शी ऽऽ। --चुपचाप पड़े रहो और सो जाओ।"

मीशा उठ बैठा और अँधेरे मे टटोलता हुआ रसोई घर के रास्ते से खिडकी की तरफ बढने लगा। बाबा वही एक बेंच पर बैठे थे। जाँघिया और बनियाइन के अलावा उनके तन पर कुछ नही था। खुली खिडकी से बाहर सर निकाल कर जैसे वे कुछ सुनने की कोशिश कर रहे थे। मीशा भी चुपचाप सुनने लगा। रात के सन्नाटे मे उसे गोलिया के चलने की आवाज साफ सुनाई पडी। गोलियाँ गाव के बाहर कही चल रही थी। पहले इक्की-दुक्की गोलियो की आवाज आ रही थी, फिर लगा कि जम कर गोली-वार हो रहा है।

"तड ! तड ! ! "

ऐसा लग रहा था जैसे कि कोई कीलें ठोक रहा है। मीशा डरने लगा। वह बाबा से चिपक गया।

उसने पूछा 'यह क्या मेरे डैडी गोलिया चला रहे हैं ?"

बाबा ने उत्तर नही दिया। और मा ने फिर रोना शुरू कर दिया था।

गोली बराबर रात भर चलती रही। भोर होते होते खामोशी छा गयी - मीशा वही बेंच पर लुढक कर गहरी और चिंता भरी नींद मे सो गया। थोडी देर मे घुडसवारो की एक टुकडी सरपट दौडती हुई गाँव के सोवियत घर की तरफ बढने लगी। बाबा ने मीशा को जगा दिया और खुद फुर्ती से बाहर की तरफ निकल गये।

गाव के सोवियत-घर से अचानक धुए की काली काली लपटें उठने लगीं। लपटा ने आस पास के घरो म भी फैलना शुरू कर दिया। घुडसवारा ने उन्मत्त होकर रास्ता पर दौडना आरम्भ कर दिया। उनमे से एक ने बाबा को आवाज देते हुए पूछा,

"ए बूढे ! तेरे पास भी कोई घोडा है ?"

'हाँ !"

"तो फिर जीन कसलें और जा अपने कम्युनिस्टो को ले आ। उनकी लाशें झाडियो के पास पडी हुई हैं। उनके घर वालो से कह दे कि जाकर उन्हे दफना दें... ।"

बाबा ने सवरारका को जल्दी से गाडी मे जोत लिया और काँपते हाँथो से लगाम को पकड कर तेजी से वह गाँव के बाहर की तरफ चल दिया।

गाँव म कोहराम मच गया। चारो तरफ से रोने धोने और चीत्कार की आवाजें सुनायी देन लगी। लुटेरे हमलावर अटारियो से भूसा निकाल रहे थे और भेडो को काट रहे थे। उनमे से एक अनीसीमोवना के बाडे के पास जाकर अपन घोडे स उतर गया और उसके घर मे घुस गया। मीशा ने अनीसीमोवना के चीखने रोने की आवाज सुनी। लुटेरा घर से बाहर निकल आया। उसकी चमचमाती हुई तलवार दरवाजे स टकरा कर झनझना उठी। वह ओसारे मे बैठ गया, उसने अपने जूते उतारे, पाँव की गन्दी पट्टियो को निकाल कर फेंक दिया, और अनीसीमोवना के इतवार के दिन ओढे जाने वाले सुन्दर से शाल के दो टुकडे कर डाले, और फिर उन्हे अपने पावो मे लपेट लिया।

मीशा दौड कर मा के बिस्तरे पर पहुँच गया। तकिया के नीचे सर छिपाकर वह चुपचाप लेट गया। फाटक के खुलने की चरचराहट जब तक उसने नही सुनी तब तब वह इसी तरह लेटा रहा। फाटक के खुलने की आवाज सुनकर वह बाहर की तरफ दौडा। उसने देखा कि बाबा घोडे की लगाम पकडे गाडी को अन्दर अहाते म लिये आ रहे हैं। उनकी दाढ़ी और सारा चेहरा आँसुओ से गीला था।

गाडी पर एक आदमी पडा था। उसके पैर नगे थे और हाथ दोनो तरफ फैले थे। झटको के कारण उसका सर गाडी पर ऊपर-नीचे हो रहा था। गाडी के तख्तो पर सर के आस-पास काला काला बहुत-सा खून पडा था।

काँपते काँपते मीशा गाडी की तरफ बढा और वहाँ पहुँच कर उस आदमी के चेहरे को देखने लगा। उसे तलवारों से खूब काटा गया था। उसके दाँत खुल ये। एक गाल बिल्कुल कट गया था और चमडे से एक तरफ लटका हुआ था। एक आँख बाहर निल आयी थी। खून से लथ पथ उस आँख पर एक बडी सी हरी मक्खी बैठी थी।

मीशा भय और सत्रास से काँप रहा था, किन्तु पूरी वात वह तुरन्त समझ नही पाया। उसन वहाँ से दूर हट जाने की कोशिश की। तभी उसकी दष्टि उस नीली और सफेद धारी वाली नाविको की कमीज पर पडी जो खून से भीगी हुई थी। एकदम आँखें गडा कर और मर्माहत होकर वह उसकी तरफ ऐसे देखने लगा जैसे कि किसी ने उसके मुह पर एकदम से भारी प्रहार कर दिया हो। वह फिर मुडा और विस्फारित नेत्रा से उस स्थिर गतिहीन और काले हो रहे चेहरे को घूरने लगा।

उछलकर गाडी पर चढते हुए वह चीखा, 'डैडी! डैडी! उठो, जल्दी उठो! डैडी! !"

गाडी से वह नीचे गिर पडा। उठ कर उसने वहाँ से भागने की कोशिश की, किन्तु उसके पैरो ने उसका साथ नही दिया और वह वही पसर गया। हाथो पैरो के बल धीरे-धीरे खिसक कर किसी तरह वह बरामद तक पहुँचा। वहाँ फिर वह औंधे मुह पड गया। अपने मुह को उसने बालू के अन्दर छिपा लिया।

बाबा की आखें एकदम धँस गयी थी। गहरे कोटरो में घँस कर वे जैसे खा गयी थी। उनका सर हिल रहा था, और ओठ बिना कोई आवाज किये फडफडा रहे थे।

बहुत देर तक एक शब्द भी उनके मुह से नही निकला। चुपचाप वह मीशा के बालो को थपथपाते-सहलाते रहे। फिर मा की तरफ, 'जो

बिस्तरे पर उल्टी पडी थी, एक नजर डाल कर धीरे से उन्होने कहा,

"चलो, बेटे ! हम लोग यहाँ से बाहर चलें।"

उन्होने मीशा का हाथ पकडा और उसे लेकर ओसारे मे निकल गये। जब वे दूसरे कमरे के खुले द्वार के पास से निकले तो मीशा अचानक जोर से काँप उठा। अपनी आँखें उसने नीची कर ली। सामने वहा, मेज पर, उसके डैडी पडे थे—इतने शान्त और स्थिर ! खून के धब्बे धोये जा चुके थे, किन्तु मीशा उन पथराई, रक्तपूर्ण आखो और उनके ऊपर भिनभिनाती उस हरी मक्खी को नही भूल पा रहा था।

कुएँ पर बाबा ने बाल्टी की रस्सी को खोलने की बहुत कोशिश की, लेकिन उनके हाथ बराबर काँप रह थे। फिर उन्होने सवरास्का को पकडा और बखार से बाहर निकाल लाये। उन्होने घोडे के मुह पर लग फेन का अपनी बाह से पाछा, और फिर उसके लगाम लगा दी। क्षण भर वह चुपचाप खडे सुनते रहे। गाँव अब भी शोर-गुल, और चिल्लाहट और लोगो की हँसी की आवाज से गूज रहा था। तभी दो लुटेरे घोडो पर सवार वहाँ से निकले। शाम के धुधलके मे उनकी सुलगती सिगरटें चमक रही थी।

उनमे से एक बोला, इन कम्बख्तों को हमने बतला दिया है कि अपने फाजिल गल्ले का उन्ह क्या करना चाहिए ! दूसरो का गल्ला लूटने खसोटने की जगह अब वे दूसरी दुनिया म तमीज से रहना सीखें।"

घोडो की टापो की आवाज जब खत्म हो गयी तो बाबा ने झुक कर मीशा के कान मे कहा,

"मैं बुड्ढा हो गया हूँ। मैं घोडे पर नही चढ सकता। बेटे, मैं तुम्ह उस पर बैठाये देता हूँ। तुम सीधे प्रोनिन फाम पर चले जाओ। मैं तुम्हें रास्ता बतला दूगा। जो सनिक उस वक्त बिगुल और नगाडे बजाते हुए गाँव से गय थे वे वही हैं। उनसे कहना कि यहाँ

लुटेरे घुस आये हैं, इसलिए वे जल्दी से गाव मे आ जाएँ। तुम्हें याद रहेगा कि क्या कहना है ?"

मीशा ने सर हिलाकर हाँ कहा। बाबा ने उसे उठा कर घोडे की पीठ पर बैठा दिया। बाल्टी से जो रस्सी उन्होने खोली थी उससे उसके पाँवों को अच्छी तरह उन्होने बाँध दिया जिससे कि वह गिर न जाय और फिर घोडे की रास पकड कर उसे खलिहान, तालाब और लुटेरो के पहरेदारो के पास से गाँव के बाहर स्टेपी के खुले मैदान की तरफ ले गये।

हाथ से एक पगडण्डी की तरफ इशारा करते हुए तब बाबा ने कहा, "उस पगडण्डी को देखते हो जो पहाडी के बीच से गयी है ? उसी पगडण्डी पर सीधे चले जाना। इधर-उधर कही न मुडना। वह सीधे तुम्ह फाम पर पहुँचा देगी। अच्छा, बेटे! खुदा तुम्हारी रक्षा करे!"

बाबा ने मीशा को प्यार किया और हल्के-से सवरास्का की पीठ थपथपाई।

स्वच्छ चाँदनी रात थी। सवरास्का धीमी गति से दुलकी चाल चल रहा था। बीच-बीच मे वह फुनफुना उठता था। सवार का वजन इतना हल्का था और काठी के ऊपर वह इस तरह ऊपर नीचे हो रहा था कि घाडा बार-बार अपनी गति को धीमा कर देता था। जब वह ऐसा करता तो मीशा धीरे से या तो उसकी लगाम खीच कर कस देता या उसकी गदन पर आहिस्ता से कुछ मार देता।

खेतो मे पकती हुई घनी घनी और हरी-पीली बालिया खडी हिल रही थी और चिडियाँ आनन्द से चहचहा रही थी। पगडण्डी पर कही से एक सोते के गिरते पाने का ममर स्वर सुनायी दे रहा था। शीतल हवा चल रही थी।

स्टेपी के विशाल मैदान मे अपने को एकदम अकेला पाकर मीशा डरने लगा। उसने सवरासका की गदन से बाँहें लपेट लीं। नन्हा-सा

वह प्राणी घोड़े के ऊष्ण शरीर से चिपक गया। इससे उसे कुछ राहत मिली।

पगडण्डी पहाड़ी के ऊपर की तरफ गयी, फिर थोड़ी सी नीचे उतरी, और फिर ऊपर की ओर चढ़ने लगी। मीशा धीरे धीरे अपने से ही बुड़बुड़ाता हुआ कुछ कह रहा था। पीछे की तरफ देखने से वह डरता था। सोचने तक से उसे डर लग रहा था। उसने आँखें बन्द कर लीं। उसके कानों के पर्दे निस्तब्धता से जैसे बन्द हो गये थे।

यकायक सवरास्का ने झटके से अपना सर हिलाया, नथुने फुलाकर फुनफुनाया, और फिर अपनी चाल उसने तेज़ कर दी। मीशा ने आँखें खोल दीं। नीचे पहाड़ी की तलहटी के पास, धीमी धीमी रोशनी की झिलमिलाहट दिखलायी दे रही थी। हवा के साथ साथ कुत्तों के भौंकने की भी आवाज़ आयी।

क्षण भर के लिए मीशा का सहमा दिल खुशी से भर गया।

एड़ियों से घोड़े के पेट को कुरेदते हुए उसने ज़ोर से कहा, 'चलो! खुश हो जाओ!"

कुत्तों के भौंकने की आवाज़ अब समीप आ गयी थी और ढाल के ऊपर रात की कुहासे भरी रोशनी में एक पवन-चक्की की रूपरेखा उभरती हुई दिखलायी दे रही थी।

चक्की की तरफ से तभी एक कड़क आवाज़ आयी, "कौन जा रहा है?'

मीशा ने चुपचाप सवरास्का को और तेज़ दौड़ाना शुरू कर दिया। मुर्गे बाँग दे रहे थे।

"ठहरो! कौन जा रहा है? रुको! नहीं तो मैं गोली चलाता हूँ!"

मीशा भयभीत हो उठा। उसने लगाम को और ज़ोर से पकड़

लिया। किन्तु, दूसरे घोडा की खुशबू नजदीक पाकर सवरास्का जोरा से हिनहिनाने लगा और तेजी से आग बढ गया।

'ठहरो!"

इस ललकार के साथ ही साथ पवन चक्की के पास कहीं से गोलियाँ चलीं। उनकी आवाज स आकाश गूज उठा। घोडे की टापा की भदभदाहट मे मीशा की चीत्कार खो गयी। सवरास्का ने खर खर सांस ली कुछ पीछे की तरफ हटा, और फिर भरभरा कर दाहिनी तरफ गिर पडा।

मीशा का पाँव पीडा से चमक उठा। उसकी पीडा इतनी भयानक, इतनी असह्य थी कि उसके मुह से रान तक की आवाज नही निकल पा रही थी। और उसके दद मे काँपते पाँव के ऊपर सवरास्का के शरीर का बोझ निरन्तर बढता ही जा रहा था।

टापा की आवाज करीब से करीबतर आती गयी। दो घुडसवार सामने आकर खड हो गय। झनझनाती तलवारो को लटकाये हुए वे अपन घोडो से उतर पडे। झुक कर उन्होने मीशा को देखा।

"ईश्वर भला करे! अरे, यह तो बच्चा है!"

'मरा तो नही?"

एक हाथ मीशा की कमीज के नीचे पहुँच गया। उसने अपने चेहरे पर एक उष्ण तम्बाकू भरी साँस की गध महसूस की।

स्पष्ट सतोष की साँस लेते हुए पहली आवाज ने कहा, "जिन्दा है! लगता है कि घाडे से उसके पैर मे चोट लग गयी है।"

मूर्छित सा हाते हुए भी मीशा ने किसी तरह बुदबुदाया, 'गाँव मे लुटेरे घुस आये हैं। उन्होने मेरे डैडी को मार डाला है। सोवियत घर का जला दिया है। बाबा ने कहा है कि आप लोग जल्दी से जल्दी गाँव पहुँच जायें।"

वह प्राणी घोडे के ऊष्ण शरीर से चिपक गया। इससे उसे कुछ राहत मिली।

पगडण्डी पहाडी के ऊपर की तरफ गयी, फिर थोडी सी नीचे उतरी, और फिर ऊपर की ओर चढने लगी। मीशा धीरे धीरे अपने से ही बुडबुडाता हुआ कुछ कह रहा था। पीछे की तरफ देखने से वह डरता था। सोचने तक से उसे डर लग रहा था। उसने आख बन्द कर ली। उसके कानो के पर्दे निस्तब्धता से जैसे बन्द हो गये थे।

यकायक सवरास्का ने झटके से अपना सर हिलाया, नथुने फुलाकर फुनफुनाया, और फिर अपनी चाल उसने तेज कर दी। मीशा ने आँखें खोल दी। नीचे पहाडी की तलहटी के पास, धीमी धीमी रोशनी की झिलमिलाहट दिखलायी दे रही थी। हवा के साथ साथ कुत्ते के भौंकने की भी आवाज आयी।

क्षण भर के लिए मीशा का सहमा दिल खुशी से भर गया।

एडियो से घोडे के पेट को कुरेदते हुए उसने जोर से कहा, "चलो! खुश हो जाओ!"

कुत्तों के भौंकने की आवाज अब समीप आ गयी थी और ढाल के ऊपर रात की धुहासे भारी रोशनी मे एक पवन-चक्की की रूपरेखा उभरती हुई दिखलायी दे रही थी।

चक्की की तरफ से तभी एक कडक आवाज आयी, "कौन जा रहा है?"

मीशा ने चुपचाप सवरास्का को और तेज दौडाना शुरू कर दिया। मुर्गे बाँग दे रहे थे।

"ठहरो! कौन जा रहा है? रुको! नही तो मैं गोली चलाता हूँ!"

मीशा भयभीत हो उठा। उसने लगाम को और जोर से पकड

लिया। किन्तु, दूसरे घोडो की खुशबू नजदीक पाकर सवरास्का जोरो से हिनहिनाने लगा और तेजी से आग बढ गया।

'ठहरो!"

इस ललकार के साथ ही साथ पवन चक्की के पास कही से गोलिया चली। उनकी आवाज से आकाश गूज उठा। घोडे की टापो की भदभदाहट मे मीशा की चीत्कार खो गयी। सवरास्का ने खर-खर साम ली कुछ पीछे की तरफ हटा, और फिर भरभरा कर दाहिनी तरफ गिर पडा।

मीशा का पांव पीडा से चमक उठा। उसकी पीडा इतनी भयानक, इतनी असह्य थी कि उसके मुह से रोने तक की आवाज नही निकल पा रही थी। और उसके दद से कापते पाव के ऊपर सवरास्का के शरीर का बोझ निरन्तर बढता ही जा रहा था।

टापो की आवाज करीब से करीबतर आती गयी। दो घुडसवार सामने आकर खड हो गये। झनझनाती तलवारो को लटकाये हुए वे अपने घोडो से उतर पडे। झुक कर उन्होने मीशा को देखा।

"ईश्वर भला करे! अरे, यह तो बच्चा है!"

'मरा तो नही?"

एक हाथ मीशा की कमीज के नीचे पहुँच गया। उसने अपने चेहरे पर एक उष्ण तम्बाकू भरी सास की गध महसूस की।

स्पष्ट सतोप की साँस लेते हुए पहली आवाज ने कहा, "जिन्दा है! लगता है कि घोडे से उसके पैर मे चोट लग गयी है।"

मूर्छित सा होते हुए भी मीशा ने किसी तरह बुदबुदाया, 'गाव मे लुटेरे घुस आये है। उन्होने मेरे डैडी को मार डाला है। सोवियत घर को जला दिया है। बाबा ने कहा है कि आप लोग जल्दी से जल्दी गाँव पहुँच जायँ।"

इसके बाद उसकी आँखो के सामने का अधकार गहरे से गहरा होता गया। मीशा की आँखो के सामने जैसे रग-रग के चक्र बनने बिगडने लगे।

उसने देखा कि हँसते हुए, अपनी लाल मूछो को उमेठते हुए उसके डैडी चले जा रहे हैं। फिर उसे दिखलायी दिया कि डैडी की खून स सनी लाल लाल आख की पुतली पर एक बडी हरी-सी मक्खी बैठी है। फिर उसने दखा कि गुस्से से बुडबुडाते हुए और अपने सर को ज़ोर-ज़ार से हिलाते हुए बाबा चले जा रहे हैं और फिर मा! और फिर उसे ऊँची पेशानी वाला वह छोटा सा आदमी दिखलायी दिया जो अपनी भुजा से सीधे मीशा की तरफ इशारा कर रहा था।

रुँधी हुई आवाज़ मे मीशा ने ज़ोर से कहने की कोशिश की, "कामरेड लेनिन! !"

फिर बहुत कोशिश करके उसने अपना सर उठाया और मुस्कराते हुए अपनी दोनो बाँहे उनकी तरफ फला दी।

अलेक्जेन्डर फादिएव

लेखकों की उस पीढी के विषय मे जिसने अक्तूबर क्रांति के दिनों म साहित्यिक क्षेत्र मे प्रवेश किया था, बात करते हुए एक बार अलेक्जेण्डर फादिएव ने कहा था,

"हम सौभाग्यशाली थे जो सबसे पहले हमे ही मौका मिला कि लोगो को बतलाये कि जीवन की समाजवादी पद्धति क्या है और उसकी स्थापना कैसे की गयी थी!"

अलेक्जेण्डर फादिएव (१९०१–१९५६) ने क्रांति और गृह युद्ध मे रूस के सुदूरपूव के इलाको मे भाग लिया था। छापेमारो के एक दस्ते मे शामिल होकर जगली पगडडियो पर वह हजारो किलोमीटर घूमे थे। उस समय उनकी उम्र सिर्फ सत्रह साल की थी।

लडाइ के उन वर्षो मे फादिएव ने बहुत से अविस्मरणीय अनुभव प्राप्त किये थे जो वीरतापूण भी थे और दु खद भी। सुदूर पूव के छापेमारो के नेता सर्गेई लाजो को और स्वय फादिएव के चचेरे भाई वासेवोलोद सिबितशेव को जापान की हस्तक्षेपकारी फौजो ने रेल के एक इजन की भट्टी मे डाल कर जिन्दा जला दिया था।

'पराजय' तथा 'उदेगेह का अत' नामक फादिएव के उपन्यासो मे तथा बहुत सी उनकी लघु कथाओ मे सुदूर पूव के गृह-युद्ध की घटनाओ का विशद और सजीव चित्रण मिलता है। यहाँ जो कहानी दी जा रही है वह उनके उपन्यास "पराजय" से ली गयी है।

मेतेलित्शा की गश्त

छापेमार दस्ते के कमाण्डर लेविंसन ने मेतेलित्शा को जब दुश्मन की खोज-खबर लेने के लिए भेजा तो उसे यह भी हिदायत कर दी की हर हालत में उसे उसी रात को शिविर में वापस लौट आना चाहिए। किन्तु मेतेलित्शा को जिस गाँव में भेजा गया था वह लेविंसन के अनुमान से कहीं अधिक दूरी पर था। वह वास्तव में शिविर से तीसरे पहर लगभग चार बजे रवाना हुआ और करीब करीब पूरे रास्ते अपने घोड़े को सरपट दौड़ाता रहा। अपने घोड़े की गर्दन पर वह एक शिकारी बाज़ की तरह छिपकर चला था। घोड़े के कोमल नथुने खुशी से फूल रहे थे मानो मार्च के पाँच लम्बे और नीरस दिनों के बाद इस सरपट दौड़ से वह मदहोश हो रहा था। उसकी इस मुद्रा में निर्ममता और उल्लास दोनों ही कुछ-कुछ मात्रा में मौजूद थे।

गोधूलि की वेला आ गयी किन्तु मेतेलित्शा अब भी पतझड़ के दिनों के टैगा (वन प्रदेश) के बीचोबीच चारों तरफ से उससे घिरा था। वन प्रदेश का कहीं अंत दिखाई नहीं दे रहा था और मेतेलित्शा को अब भी डूबते हुए दिन की ठण्डी, गमगीन रोशनी में घास की अंतहीन सरसराहट के अलावा और कुछ नहीं सुनाई दे रहा था। अन्त में जब मेतेलित्शा वन प्रदेश से बाहर निकला तो अंधेरा घना हो गया था। उसने एक पुरानी और टूटी-फूटी लट्ठों की बनी झोंपड़ी के पास

अपने घोड़े की रास खीची । झोपडी मे जाडे के दिनो मे मधुमक्खियो के छत्ते लगा दिये जाते थे । झोपडी की छत टूट कर गिर गयी थी। साफ दिखलाई दे रहा था कि वह वर्षों से खाली पडी थी ।

मेतेलित्शा ने घोडे को बाँध दिया और खडे हुए खम्भो के सहारे झोपडी के ऊपर चढ गया । छत पर चढना बडे जोखिम का काम था, क्योकि जिस भी खम्भे को वह छूता था वह भरभरा कर गिरने लगता था । इस बात का डर था कि वह खुद भी झोपडे के उस अधेरे गढे मे गिर जाय जिसमे से सडी लकडी और गन्दी घास की बदबू आ रही थी । अपने मजबूत घुटनो के बल कुछ झुका हुआ, और एकाग्र-भाव से अधेरे मे घूरता और कान खडे करके सभी आवाजो को सुनता, लगभग १० मिनट तक वह खडा रहा । जगल की काली पृष्ठ-भूमि के साथ उसकी आकृति मिल कर एकाकार हो गयी थी और इस समय वह हमेशा से भी अधिक एक शिकारी बाज की तरह लग रहा था । उसकी आखो के सामने पवतो की दो कतारो के बीच उदासी मे डूबी एक घाटी फैली पडी थी । उस घाटी मे जहा तहाँ घास के काले ढेर और पेडो के झुरमुट दिखलाई दे रहे थे । उस अमैत्रीपूर्ण, तारो भरे आकाश की पष्ठभूमि मे पवतो की वे कतारें भी काली काली और भयावनी लग रही थी ।

मेतेलित्शा कूद कर घोडे पर सवार हो गया और सडक की तरफ रवाना हो गया । बडी-बडी घास के बीच धँसी सडक की लीक कठिनाई से ही नजर आती थी । लगता था कि अरसे से उधर से कोई गाडी नही गुजरी थी । भोज के वृक्ष (बर्च के वृक्ष) के छरहरे तने बुझी मोमबत्तियो के समान अधकार मे झिलमिला रहे थे ।

वह एक नीची पहाडी की चोटी पर चढ गया । उसके बायी ओर किसी विशालकाय जीव की रीढ के समान काले पवतो की कतार अब भी फैली दिखलाई दे रही थी । कही कही से किसी झरने के बहने

की कल-कल ध्वनि आ रही थी। लगभग डेढ दो मील की दूरी पर, शायद उसी झरने के किनारे, एक अलाव जल रहा था। अलाव को देख कर मेतेलित्शा को चरवाहों के एकाकी जीवन की याद हो आयी। अलाव से और आगे सड़क के उस पार किसी गाँव की स्थिर सी रोशनी दिखलाई दे रही थी। उसके बायीं ओर के पर्वतों की कतार दूर हटती हुई नील अंधकार में विलीन हो गयी। उस तरफ की जमीन अपेक्षाकृत काफी नीची थी—शायद वह पहले किसी नदी की पेटी रही होगी। ढाल पर घनीभूत उदासी में डूबा एक जंगल खड़ा था।

मेतेलित्शा ने सोचा वहाँ कोई दलदल होगा।" उसे सर्दी लगने लगी थी। उसके रुई के कोट के बटन खुले थे और बे-बटन वाली जो फौजी कमीज वह पहने था उसका भी गला खुला था। उसने सबसे पहले अलाव के पास जाने का निश्चय किया। सावधानी की दृष्टि से अपने रिवाल्वर को निकाल कर उसने जाकेट के नीचे अपनी पेटी में खोस लिया और रिवाल्वर के थैले को जीन के पीछे बंधे बोरे में छिपा दिया। उसके पास कोई राइफिल नहीं थी। अब देखने पर वह अपने खेत से लौटते किसी किसान की तरह लगता था। जर्मन युद्ध के बाद से बहुत से किसान सैनिकों की जाकट पहनने लगे थे।

जब वह अलाव के काफी पास पहुँच गया तब सहसा रात की निस्तब्धता को चीरती हुई घोड़ा के हिनहिनाने की चिंतापूर्ण आवाज़ उसे सुनाई पड़ी। मेतेलित्शा के घोड़े के शक्तिशाली शरीर में कँपकँपी दौड़ गयी। उसने एक लम्बी छलाँग मारी, अपने कानों को शरीर से चिपका लिया, और जैसे उत्तर में स्वयं भी एक उत्तेजक तथा शोकाकुल स्वर में हिनहिनाने लगा। उसी समय अलाव की लपटों के सामने से अचानक एक छाया जैसी चलती दिखलायी दी। मेतेलित्शा ने अपने घोड़े को एक चाबुक रसीद की और उसे कुछ पीछे की तरफ हटा लिया।

अलाव के पास भयभीत नेत्रों से मेतेलित्शा को घूरता हुआ काले बालो वाला एवं दुबला-पतला लडका खडा था। उसके एक हाथ मे चाबुक थी और चिथडो मे लिपटा उसका दूसरा हाथ मानो आत्म-रक्षा मे ऊपर उठ गया था। वह लकडी के जूते पहने था, उसकी पतलून चिथडे चिथडे हो रही थी, और जाकेट उसके शरीर के हिसाब से बहुत लम्बी थी। जाकेट को पेटी के बजाय सन की रस्सी के एक टुकडे से उसने कमर मे बाँध रखा था। मेतेलित्शा ने भयकर क्रोध से अपने घोडे को ठीक उस लडके के सामने लाकर खडा कर दिया। वह घोडे की टाँगो के नीचे आते-आते बचा। मेतेलित्शा कडक कर लडके को डाटने वाला था कि सहसा उसकी दृष्टि लडके की त्रस्त आँखो पर, उसकी झूलती फटी आस्तीन पर, फटी पतलून के नीचे से दिखलायी देते उसके नगे घुटना पर और उसकी मैली-कुचैली पुरानी जाकेट पर पडी जो निश्चित रूप से लडके के मालिक की रही होगी। बच्चो जैसी उसकी गर्दन विचित्र रूप से इतनी पतली थी और उसकी जाकेट मे से अपरा धिया जैसी मुद्रा मे तथा दयनीय ढग से इस तरह बाहर निकली हुई थी कि वह हिचकिचा कर रुक गया।

मेतेलित्शा उलझन मे पड गया। उसने उससे कहा, 'वहा खडे खडे तुम क्या कर रहे हो ? घबडा रहे हो, बेवकूफ कही के! ओ मेरे चुग्गे, तुम तो महामूर्ख हो!" वह उससे जिस भर्राई, किन्तु स्नेहपूर्ण आवाज मे बोल रहा था उसमे दूसरे आदमियो से वह कभी नहीं बोलता था उसका प्रयोग केवल अपने घोडा को ही सम्बोधित करते समय वह करता था। "वहाँ मे हटता नही है! गधा कही का! अगर कही मेरे घोडे के नीचे आ जाता, तो ? मूर्ख कही का!" उसने दोहराया। मेतेलित्शा का दिल एकदम मुलायम हो गया। इस लडके और उसकी गरीबी को देख कर उसके भीतर कोई ऐसी भावना जाग उठी थी जो खुद भी उसी की तरह दयनीय हास्यास्पद और बचकानी लग रही थी। डर के मारे लडके के लिए सास लेना भी दूभर हो रहा था। उसने अपनी बाँह नीचे गिरा ली।

"पागलो की तरह तुम मेरे ऊपर क्या झपटे आ रहे थे ? लडके ने कहा। वह कोशिश कर रहा था कि एक बडे आदमी के समान समझदारी और आज़ादी से उमम बात करे। लेकिन उसकी आवाज मे अब भी घवडाहट थी। 'तुम्हें इस तरह आता देखकर कौन न डर जाता ? मेरे पास भी यहाँ घोडे हैं ।"

'घोडे ? ' मेतेलित्शा ने व्यगपूवक कहा। सचमुच !' अपने हाथों को कूल्हो पर रख कर वह पीछे की तरफ झुका और फिर अधमुदी आखो से लडके को देखने लगा। सिल्क जैसी अपनी भौंहो को धीरे स उसने ऊपर उठाया और सहसा खिलखिला कर ज़ोर स हँसने लगा। उसकी यह हँसी इतनी सच्ची और स्नेहपूण तथा विनोदपूण थी कि स्वय भी उसे आश्चय होने लगा कि उसके गले से ऐसी ध्वनियाँ कैसे फूट पडी थीं !

लडका अब भी परेशान था और सदेह कर रहा था। इसलिए उसने फिर नाक से साँस लेते हुए स्थिति को भाँपने की कोशिश की। फिर उसे लगा कि डरने की कोई बात नही है, उल्टे, जो कुछ हो रहा था वह सचमुच मज़ेदार था। उसने अपनी नाक को इतना कस कर सिकोडा कि उसकी पतली नोक ऊपर को उठ गयी और वह खुद भी एक हल्की-सी नटखट और बचकानी हँसी हँसने लगा। यह कुछ इतना अप्रत्याशित था कि उसे देख कर मतेलित्शा और भी ज़ोर स हँसने लगा और फिर वे दोनो ही जैसे एक दूसरे को हँसाते हुए कई मिनट तक साथ-साथ हँसते रहे। उनमे से एक अपने घोडे की जीन पर बैठा हँस-हँस कर विभोर हो रहा था जिससे कि अलाव की रोशनी मे उसके दाँत चमक-चमक उठते थे, और दूसरा ज़मीन पर बैठा हुआ अपने पेट को पकड कर हँसते-हँसते गिर गिर पड रहा था।

"तूने मुझे खूब हँसाया, नन्हे जवान !' मतेलित्शा ने रकाबो से अपने पैरो को झटके से बाहर निकालते हुए उससे कहा। 'तुम तो खूब ही मज़ेदार आदमी हो, सचमुच .."

यह कहता हुआ वह घोडे से नीचे कूद पडा और आग के सामन हाथ फैला कर अपनी हथेलियो को सेंकने लगा ।

लडके न भी हँसना बन्द कर दिया और सच्चे तथा उल्लास भरे आश्चय स उसकी ओर देखने लगा जैसे कि वह यह सोच रहा था कि मेतेलित्शा और भी चकित करने वाली मजेदार हरकतें उसे दिखायेगा ।

आखिरकार, लडके ने उससे कहा "तुम भी खूब ही खुशमिजाज शतान हो, सचमुच !" अपनी बात को उसने रुक रुक कर और त्तन स्पष्ट ढग से कहा कि ऐसा लगा जैसे कि उसे वह अपने अन्ततम स गहरी अनुभूति के बाद कह रहा था ।

मेतलित्शा न खीस निकालते हुए पूछा। 'मैं, ? हा, छोकर ! खुशमिजाज तो मैं हूँ !"

'पर मेरे ता जैसे डर के मारे प्राण ही निकल गये थे," लडके ने कहा और फिर बोला, "मरे पास यहा घोडे हैं, और म कुछ आलू भून रहा था ।'

आलू ? बहुत बढिया !" अपने घोडे की रास पकडे हुए मेतेलित्शा उसके बगल मे बैठ गया । उसने पूछा, "ये आलू तुम कहा स लाते हो ?"

"वहाँ से वहा उनकी भरमार है !' लडके ने अपने हाथ से एक चक्कर सा बनाते हुए कहा ।

'अच्छा, तो आप उन्हे चुरा कर लाते हैं ?"

"जी हाँ ! लाओ, मैं तुम्हारे घाडे की लगाम थाम लू । यह ता सांड घाडा है, है ना ? फिकर न करो, मैं उसे छाडूगा नही बढिया घोडा है सचमुच !" घोडे की खूबसूरत देह पर अनुभवी दृष्टि दौडाते हुए उसने कहा । फिर पूछा, "तुम कहाँ के रहने वाले हो ?'

"तुम, ठीक कहने हो, यह जानवर बुरा नही है,' मेतेलित्शा' ने

सहमति प्रकट की और फिर पूछा, 'और तुम कहाँ के रहने वाले हो ?

गाँव से आती हुई रोशनियों की दिशा में इशारा करते हुए लड़के ने कहा, "वहाँ के। हमारे गाँव का नाम धानीवेज़ा है— । उसमें गिने हुए एक सौ बीस घर हैं—न कम, न ज्यादा।" उसने किसी दूसरे से सुने शब्दों को दोहराते हुए कहा। फिर ज़मीन पर थूक दिया।

ओह अच्छा   और मेरे गाँव का नाम वारावयोवका है। वह उधर, पहाड़ों के उस तरफ, बसा है। तुमने कभी उसका नाम सुना है ?'

"वारावयोवका का ? नहीं, मैंने कभी नहीं सुना। बहुत दूर होगा   ।'

"हाँ दूर तो है

'यहाँ तुम किसलिए आये हो ?

"तुम्हें क्या बतलाऊँ ? एक लम्बी कहानी है।   मैं यहाँ कुछ घोड़े खरीदना चाहता था। लोग कहते हैं कि यहाँ तुम्हारे इलाके में बहुत घोड़े होते हैं   । दरअसल, मुझे घोड़े बहुत पसन्द हैं। सारे जीवन में घोड़ों की ही देखभाल करता आया हूँ लेकिन वे मेरे नहीं थे।" मेलेलित्या ने अपने दिल की बात बतलाते हुए कहा।

'तो, क्या तुम्हारा ख्याल है कि ये घोड़े मेरे हैं ?   नहीं, ये सब मालिक के हैं।"

लड़के ने अपनी फटी, लटकती हुई आस्तीन के अन्दर से एक पतला मैला हाथ निकाला और चाबुक की मूठ से अलाव की राख को कुरेदने लगा। राख के अन्दर से काले-काले आलू वह ललचाता हुआ बाहर निकालने लगा। फिर लड़के ने उससे पूछा, "खाओगे ? मेरे पास थोड़ी रोटी भी है। बहुत नहीं, पर है।'

'शुक्रिया। मैंने अभी अभी खाना खाया था—गले तक पेट भरा हुआ है।" मलेलित्शा ने अपने गले पर हाथ रख कर इशारा करते हुए

झूठ बाला। तभी उसने महसूस किया कि वास्तव मे उसे भी कितनी जार से भूख लगी हुई थी।

लडके ने एक आलू तोडा, मुह से फूक कर उसे ठण्डा किया और उसके आधे भाग को छिल्का समेत अपने मुह मे रख लिया। फिर अपनी जीभ से घुमाता हुआ रस ले ले कर वह उसे खाने लगा। उसके मुह के साथ-साथ उसके लम्बे-लम्बे कान भी हिल रहे थे। जब उसने उस टुकडे को खा लिया तो वह मेतेलिदशा की तरफ देखने लगा। उसन फिर उसी लहजे मे, जिसमे पहले उसे एक हँसोड शैतान कहा था, साफ़-साफ़ बतलाया,

"मैं अनाथ हूँ। अनाथ हुए छं महीने बीत गये है। कज्जाका ने मरे पिता को मार डाला, फिर मेरी मा के साथ उन्हान बलात्कार किया और उसे भी मार डाला। मेरे भाई की भी जान उन्हाने ल ली ।"

चौकन्ना होते हुए मेतेलिदशा ने पूछा, 'कज्जाका ने ?"

"हा, और किसने ? और वह भी बिना किसी वजह के । उन्होन हमारे घर को आग लगा दी, और सिफ हमारे ही घर को नही, बल्कि कम से कम एक दजन दूसरे घरा को भी। वे हर महीने आकर हमारे घरा पर हमला करते हैं। लगभग चालीस तो इस वक्त भी गाँव मे मौजूद हैं। इस इलाके का केन्द्र, राक्तिनाया यहा से दूर नही है। गर्मी भर वहाँ एक पूरी रेजीमेण्ट पडी रही है। वे लोग दरअसल एकदम जगली हैं । लो, एक आलू खाओ ।"

'तुम्हारे लोग यहाँ से भाग क्या नही गये ? । तुम्हारे आस पास तो यहाँ भारी जगल फैला हुआ है " यह कहता हुआ मतेलिदशा उठ कर बैठ गया।

"जगल कौन काम आ सकता है ? जिन्दगी भर तो आदमी वहाँ नही छिपा रह सकता। इसके अलावा, उसमे दलदल हैं—ऐसे गहरे दलदल कि उनम फँस कर आदमी कभी निकल ही नही पायेगा... ।"

मेतलित्सा ने मन ही मन कहा "मेरा भी यही खयाल था।" उसे याद आ गया कि इस क्षेत्र का देख कर उसे भी एसा ही लगा था।

उठ कर सीधा होते हुए वह बोला, "सुनो, तुम ज़रा मेरे घोड़े को यहीं चराना। इतने मे मैं तुम्हारे गाँव तक हो आऊँ। वहा खरीदने को तो कुछ है नहीं, उल्टे, शायद वहा के लोग मेरे कपड़े तक उतार लेंगे।

निराश होते हुए गडरिये के लडके ने उससे कहा, "तुम्हें इतनी जल्दी किस बात की है? बैठो!" उसने भी खड़े होते हुए और दुःखी आवाज में अपनी बडी बडी डबडबाई, याचनापूर्ण आखो से मेतेलित्सा की ओर देखते हुए कहा, 'यहाँ अकेले मे जी घबडाता है।"

मेतेलित्सा ने और अधिक रुक सकने के सम्बन्ध मे अपनी विवशता व्यक्त करते हुए कहा, 'नहीं भाई मैं रुक नहीं सकता। मुझे जाकर खुद जाच पडताल करनी होगी और यह काम अँधेरे मे ही किया जा सकता है। लेकिन मैं जल्दी ही लौट आऊँगा। इस बीच घोड़े को हम लोग बाँध दें। कज्जाकों का यह सरदार रहता कहाँ है?"

लडके ने उसे बतलाया कि स्क्वैड्रन के कमाण्डर के घर तक कैसे पीछे के रास्ते से पहुँचा जा सकता था।

मेतेलित्सा ने पूछा, वहुत कुत्ते तो नहीं हैं वहा?"

"हैं तो बहुत से लेकिन बहुत खतरनाक नहीं हैं।"

लडके द्वारा बतलाये गये तरीके से, अनेक गलियों के अन्दर से होता हुआ, मेतलित्सा गाँव की तरफ बढने लगा। चर्च के पास से वह मुड गया और अन्त मे पादडी के बाग के सामने के रंगे हुए बाड़े के समीप पहुँच गया। (कज्जाकों का सरदार स्क्वैड्रन कमाण्डर पादडी के ही घर मे रहता था) मेतेलित्सा ने उस मकान के आस पास चारों

तरफ नजर डाली और सुनने की कोशिश की कि कही से कोई आवाजें तो नही आ रही हैं। जब उसने देखा कि कही कोई सन्देहजनक चीज नही नजर आ रही है तो वह बिना जरा भी आवाज किये आहिस्ता से बाडे को पारकर बाग के अन्दर घुस गया।

अन्दर खूब घना बाग था, यद्यपि दरख्तो की दूर दूर तक फैली शाखा के पत्ते झड चुके थे। सास रोके हुए और अपने दिल की तेज धडक को थामे रहने की कोशिश करते हुए मेतेलित्शा आगे बढने लगा। सहसा उसने देखा कि बाग के बीच से एक पगडण्डी है और उस पगडण्डी के बायी तरफ लगभग बीस गज के फासले पर एक खिडकी के अन्दर स रोशनी आ रही है। खिडकी खुली थी और कमरे के अन्दर से लोगो के बोलने की आवाजें आ रही थी। खिडकी के बाहर जमीन पर बिखरे पत्तो के ऊपर रोशनी की एक मुलायम ममनल चादर बिछी थी और सेब के दरख्तो की नगी टहनिया पर जहा भी रोशनी पडती थी वहा वे एक विचित्र सुनहरे आलोक म डूबे दिखते थे।

"अच्छा, तो यहा हैं वे लाग !" मेतेलित्शा न मन ही मन कहा। उसके दिल म फिर उद्दाम, कठोर और अनिवाय तथा भय रहित दुस्साहस की वह भावना एकदम ज्वार की तरह उमडने लगी जिसके कारण आमतौर से वह खतरनाक से खतरनाक कामो को भी पूरा कर डालता था। इस भावना की गर्मी से उसका एक कान फडकने लगा।

वह यह नही जानता था कि कोई उससे यह अपेक्षा करता था कि नही कि उस रौशन कमरे मे बैठे लोगो की बातचीत को वह सुने, किन्तु उसे लगा कि वास्तव मे उन लोगो की बातचीत सुन बिना वह वहाँ से हट न सकेगा। कुछ ही मिनटो के अन्दर वह खिडकी के ठीक नीचे, सेब के एक पेड की आड म जाकर खडा हो गया। एकाग्र होकर उनकी बातें सुनने और जो कुछ वहाँ हो रहा था उसे याद रखने की कोशिश वह कर रहा था।

कमरे के अन्दर चार व्यक्ति थे जो दूसरी तरफ को पड़ी एक मेज के इद गिर्द बैठे ताश खेल रहे थे। दाहिनी तरफ को हल्के और तल से चिकने बालों तथा ब्रिज्जी-जैसी आँखों वाला एक बूढ़ा, नाटा पादरी बैठा था। उसके छोटे छोटे हाथ दक्षता से चल रहे थे और ताश के पत्तों को वह फुर्ती से बाँट रहा था। बाँटते समय उसकी आँखें मानों प्रत्येक पत्ते के नीचे झाँक कर उसे देखने की चेष्टा करती इस तरह साफ नजर आती थीं कि उसकी बगल में बैठा व्यक्ति, जिसकी पीठ मेतेलित्सा की ओर थी, अपने पत्ता को तुरत उठा कर, उन पर जल्दी-जल्दी और घबड़ाई हुई दृष्टि डालता हुआ, फौरन मेज के नीचे छिपा लेता था। मेतलित्शा के सामने एक खूबसूरत अफसर बैठा था। उसका शरीर भारी भरकम था आँखें उनींदी सी थीं और देखने में वह एक खुशमिजाज आदमी मालूम पड़ता था। अपने दाँतों के बीच वह एक पाइप दबाये था। शायद उसके मोटापे के कारण ही मेतेलित्शा ने सोचा कि वही कज्जाकों की टुकड़ी का कमाण्डर होगा। फिर भी किसी अज्ञात कारणवश मेतेलित्शा का ध्यान मुख्यतया चौथे खिलाड़ी पर ही केन्द्रित था—वह एक पीले पीले और फूले से चेहरे वाला व्यक्ति था। उसकी पलकें एकदम निश्चल प्रतीत होती थीं। वह काली भेड़ा की खाल की एक टोपी लगाये था और बकरे के चमड़े का काकेशियाई एक ऐसा कोट पहने था जिसके कन्धे पर कोई पट्टियाँ नहीं थी। पत्ते की हर चाल के बाद अपने कोट को वह और भी अच्छी तरह कसकर बन्द कर लेता था।

मेतेलित्शा की आशा के विपरीत, वे एकदम साधारण तथा गैर-दिलचस्प बातें ही कर रहे थे। उनकी ज्यादातर बातचीत खेल के ही बारे में थी।

जिस खिलाड़ी की पीठ मेतेलित्शा की तरफ थी उसने चाल चलते हुए कहा 'मैं अस्सी चल रहा हूँ।"

भेड़ की खाल की काली टोपी वाले आदमी ने कहा, 'महामहिम,

यह तो बहुत कम है !" फिर लापरवाही से उसने कहा, "मैं बिना देखे ही सौ की चाल चलता हूँ।"

मोटे खूबसूरत अफसर ने आखें सिकोड कर अपने पत्तो को अच्छी तरह जाचा, मुँह से पाइप निकाला और एक सौ पाच की चाल चल दी।

पहले वाले आदमी ने पादडी की तरफ, जिसके पास बाकी पत्ते थे, मुडकर कहा, "मैं छोडता हूँ, अब आप चलिए।"

भेड की खाल की टोपी वाले ने मुस्कराते हुए कहा, "मेरा भी यही खयाल था !"

"क्या यह मेरा कसूर है कि मेरे पास अच्छे पत्ते नही आत ?' पहले आदमी न सहानुभूति के लिए पादडी की ओर देखते हुए कहा।

पादडी ने मजाक के लहजे मे और अपने उस साथी के खेल का तुच्छ जताने की कोशिश करते हुए अपनी आँखें बन्द की और कुटिल हँसी हँसते हुए कहा, 'बूद बूद से सागर भरता है ! तुम्ह हम खूब जानते हैं, दो सौ दो प्वाइन्ट तो तुम जीत ही चुके हो !　　　।' उसन उसकी तरफ धमकाते हुए अँगुली हिलाई और बनावटी मुहब्बत दिखलाता हुआ हँसने लगा।

मेतेलित्शा ने सोचा यह कैसा लुटेरा है !

फिर पादडी ने ऊँघते जैसे दिखलाई देने वाले अफसर को सबोधित करते हुए पूछा, 'क्या आपने भी अपनी चाल छोड दी ?" फिर भेड की खाल की टोपी वाले की तरफ कुछ और बन्द ताश खिसकाते हुए उसने कहा, "और लो, अब ये तुम्हारे पास चले ?"

मिनट भर तक अपन पत्ता को जोर जोर से वे मेज पर पटकते गय। अन्त में, भेड की खाल की टोपी वाला हार गया। मेतेलित्शा ने घृणापूवक मन मे कहा, 'धूत आदमी ! कितनी शेखी बघारता था　"

तब तक वह तय नहीं कर पाया था कि वह लौट जाय या कुछ देर और रुके। किन्तु वास्तव मे उस समय वह जा भी नहीं सकता था, क्योंकि हारने वाले आदमी का मुह अब खिड़की की तरफ था और मेतेलित्सा को लगा कि उसकी तीव्र दृष्टि अपलक ढग से उसी पर लगी हुई है।

इस बीच पत्ते वह खिलाडी फेंटने लगा जिसकी पीठ खिड़की की तरफ थी। वह बहुत ही नपे-तुले ढग से, कम से कम गति करता हुआ, इस तरह पत्ते फेंट रहा था जिस तरह कि कोई बुढिया खुदा से दुआ कर रही हो।

उनींदी पलको वाले अफसर ने जम्हाई लेते हुए कहा, 'नेचीताइलो अभी तक नहीं लौटा। लगता है कि उस छोकरी के साथ उसका मामला पट गया। काश, मैं भी उसके साथ चला गया होता ।"

खिड़की की तरफ से मुडते हुए भेड की खाल की टोपी वाले ने पूछा क्या कहा, दो दो एक साथ ? बाद मे कुटिल मुस्कराहट के साथ उसने जोडा, 'हा, क्या नहीं ! वह एक तगड़ी छोकरी है ! "

पादड़ी ने पूछा, "कौन ? वासका ? हाँ हाँ, इसमे क्या शक है, वह खूब तगड़ी है । यहाँ एक बडा सा, मोटा ताजा गायक आया था। मेरा ख्याल है कि उसके बारे मे मैं तुम्हे बतला चुका हूँ । लेकिन सर्गेई इवानोविच इसके लिए राजी न होगा। नहीं कभी नहीं ...। जानते हो कल मुझे गुप्त रूप से उसने क्या बतलाया था ? कहने लगा 'मैं उसे अपने साथ ले जाऊँगा और उससे शादी करने मे भी नहीं हिचकिचाऊँगा । ओह !"

पादड़ी बीच मे ही रुक गया और अपने मुह पर हाथ रखते हुए उसने उसे बन्द कर लिया। उसकी छोटी छोटी चालाक आँखो मे एक कुटिल हँसी चमक रही थी। 'ओह देखा तो, मेरी याददाश्त को क्या हो गया है ! जो बात मुझे नहीं कहनी चाहिए थी वही मेरे मुह से निकल गयी—गोकि उसे बतलाने का मेरा इरादा नहीं था। खैर अब

इसे अपने तक ही रखना !" यह कह कर झूठ मूठ जैसे यह दिखलाते हुए कि वह डर गया है, उसने अपना हाथ हिलाया। हालाकि मेतेलित्शा की ही तरह वे सभी उसके पाखण्ड और प्रत्येक शब्द और हाव भाव के पीछे छिपी उसकी कमीनी चाटुकारिता को समझ रहे थे, फिर भी किसी ने उसके सबध मे कुछ कहा नही और सब के सब हँस पडे।

मेतेलित्शा, जो अब भी चुपचाप दुबका खडा था खिडकी से पीछे की ओर हटने लगा। वह उस पगडण्डी के पास पहुँचा ही था जो बगीच के अन्दर एक तरफ से दूसरी तरफ जाती थी कि उसके सामने एक आदमी आ खडा हुआ। वह, एक बडा-सा कज्ज़ाका वाला ओवरकोट अपने एक कधे पर डाले था। उसके पीछे दो आदमी और थे।

आश्चय से उसने मेतेलित्शा से पूछा, तुम यहा क्या कर रहे हो ?" वह उसकी तरफ देखता हुआ अपने ओवरकोट को, जो कि मेतेलित्शा से अचानक सामना हो जाने पर उसके कधे मे सरककर गिरने लगा था, अच्छी तरह पहनने लगा।

मेतेलित्शा कूद कर पीछे हटा और झाडियो की तरफ दौडा।

'ठहरो !, पकडा ! देखो वह उधर भाग रहा है ! दौडो ! दौडो।" कई आवाजें एक साथ उठने लगी। कई गालिया के भी चलने की आवाज़ ज़ोर से गूज उठी। मेतेलित्शा झाडिया मे फँस गया। उसकी टोपी कही गिर कर गायब हो गयी। फिर वह केवल अन्दाज़ से आगे की तरफ भागने लगा। लेकिन अब आवाजें उसके आगे से भी ज़ोर-ज़ोर से आने लगी थी। सडक से एक कुत्ते के भी भौंकने की गुस्से भरी आवाज़ आने लगी।

तभी एक हाथ आगे बढाकर कोई उसकी तरफ यह चिल्लाता हुआ झपटा, "देखो, वह वहाँ है ! पकड लो ! ' मेतेलित्शा के कान के पास से सनसनाती हुई एक गोली निकल गयी। जवाब मे मेतेलित्शा ने भी

तरह, इस तरह, पडा पडा सड़ता रहेगा। उसने पूरे ओसारे को, उसकी एक-एक दरार को अच्छी तरह देखा। उसके दरवाजे को भी तोडने की उसने कोशिश की। लेकिन सब बेकार! चारो तरफ शीत और सडी लकडी के अलावा कुछ नहीं था, और दरवाजे में जो दरारें थी वे इतनी पतली एवं छोटी थी कि उनके अन्दर से वह कुछ भी नहीं देख सकता था। उनके अन्दर से तो पतझड के फीके से प्रभात का प्रकाश तक अन्दर नहीं आ पाता था!

वह चारो तरफ़ घूम घूम कर निकलने का रास्ता देखता हुआ चक्कर लगाता रहा। किन्तु, अन्त में, वह समझ गया कि इस बार वह इस तरह फँस गया था कि वहा से निकलने का कोई रास्ता न था। जब उसे इस बात का पूरे तौर से यकीन हो गया कि वह वहा से नहीं निकल पायेगा तो फिर स्वय अपने जीवन और मरण के प्रश्न में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं रह गयी। अब उसकी सारी आत्मिक और शारीरिक शक्ति एक ही बात पर केन्द्रित हो गयी थी जो कि स्वय उसके अपने जीवन मरण की समस्या की तुलना में सर्वथा महत्वहीन थी किन्तु जो कि इस समय उसके लिए अन्य किसी भी वस्तु की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण बन गयी थी। उसके दिमाग में जो चीज इस समय घूम रही थी वह यह थी कि वह मैतेलिरशा, मौत को हर क्षण चुनौती देने वाले योद्धा के रूप में मशहूर मैतेलिरशा, अपनी जान लेने वालों को यह कैसे दिखला दे कि उनसे रत्ती भर भी वह नहीं डरता और उनसे दिल से नफरत करता है!

इस बात पर वह अभी विचार ही कर रहा था कि दरवाजे के बाहर उस कुछ शोर सुनाई दिया। दरवाजे की सिटकनियों को हटाकर दरवाजा खोला गया और दो हथियारबन्द वर्दीधारी कज्जाक दरवाजे से छन कर आती हुई पीली पीली प्रकम्पित रोशनी के साथ ओसारे में दाखिल हो गये। मैतेलिरशा जो वहीं खड़ा था मिचमिचाती हुई आँखों से उन्हें देखने लगा।

एक गोली दाग दी। उसका पीछा करने वाला आदमी लड़खड़ा कर गिर गया।

विजयोल्लास से मेतेलित्शा ने कहा, "तुम मुझे नही पकड पाओगे?" और आखरी क्षण तक उसे सचमुच यह विश्वास नही था कि वे उसे पकड पायेंगे।

किन्तु पीछे से एक बडे और भारी भरकम आदमी ने झपट कर उसे जोर से पकड लिया और जमीन पर गिरा दिया। मेतेलित्शा ने अपनी बाह छुडाने की कोशिश की, किन्तु तभी उसके सिर पर जोर का एक प्रहार हुआ और उसे चक्कर आ गया।

उसके बाद वे बारी बारी से उसे पीटने लगे। बेहोश हो जाने के बाद भी वह महसूस कर रहा था कि उसके असहाय शरीर पर वे लगातार प्रहार करते जा रहे हैं।

मेतेलित्शा का जब होश आया तब वह एक बडे से अधेरे ओसारे मे था। वह सीलन भरी जमीन पर पडा था। होश आने पर पहली चेतना उसे ठण्ड की हुई—उसे लगा कि धरती की सारी सीलन उसीके शरीर मे पैठ गयी है। उसे सारी घटना याद आ गयी। घूसो और चोटो की आवाजें अब भी उसके सर मे गूज रही थी। उसके बाल जम गये खून से लसे थे और उसके गालो और माथे पर भी खून सूख कर पपडी जैसा बन गया था।

पहला विचार उसके मन मे जो स्पष्ट रूप से उठा यह था कि—क्या वह यहाँ से भाग जा सकता है? इस बात पर उसे विश्वास नही हो रहा था कि जीवन मे इतना सब अनुभव कर लेने के बाद अपनी इतनी शानदार उपलब्धियो और उन कामयाबियो के बाद जिनकी वजह से उसका नाम प्रसिद्ध हो गया था, अन्त मे वह हर साधारण आदमी की

तरह, इस तरह, पडा पडा सडता रहेगा । उसने पूरे ओसारे का, उसकी एक एक दरार को अच्छी तरह देखा । उसके दरवाजे को भी तोडने की उसने कोशिश की । लेकिन सब बेकार ! चारो तरफ शीत और सडी लकडी के अलावा कुछ नही था, और दरवाजे मे जो दरारे थी वे इतनी पतली एव छोटी थी कि उनके अन्दर से वह कुछ भी नही देख सकता था । उनके अन्दर से तो पतझड के फीके से प्रभात का प्रकाश तक अन्दर नहीं आ पाता था !

वह चारो तरफ घूम घूम कर निकलने का रास्ता देखता हुआ चक्कर लगाता रहा । किन्तु, अन्त में, वह समय गया कि इस बार वह इस तरह फँस गया था कि वहा से निकलने का कोई रास्ता न था । जब उसे इस बात का पूरे तौर से यकीन हो गया कि वह वहा से नही निकल पायेगा तो फिर स्वय अपने जीवन और मरण के प्रश्न मे उसकी कोई दिलचस्पी नही रह गयी । अब उसकी सारी आत्मिक और शारीरिक शक्ति एक ही बात पर केन्द्रित हो गयी थी जो कि स्वय उसके अपने जीवन मरण की समस्या की तुलना म सवथा महत्वहीन थी किन्तु जो कि इस समय उसके लिए अन्य किसी भी वस्तु की अपेक्षा अधिक महत्वपूण बन गयी थी । उसके दिमाग मे जो चीज इस समय घूम रही थी वह यह थी कि वह मेतेलित्शा, मौत को हर क्षण चुनौती देने वाले योद्धा के रूप मे मशहूर मेतेलित्शा, अपनी जान लेने वाला को यह कैसे दिखला दे कि उनसे रत्ती भर भी वह नही डरता और उनसे दिल से नफरत करता है !

इस बात पर वह अभी विचार ही कर रहा था कि दरवाजे के बाहर उसे कुछ शोर सुनाई दिया । दरवाजे की सिटकनियों को हटाकर दरवाजा खोला गया और दो हथियारबन्द वर्दीधारी कज्जाक दरवाजे से छन कर आती हुई पीली पीली प्रकम्पित रोशनी के साथ ओसारे म दाखिल हो गये । मेतेलित्शा जो वही खड़ा था, मिचमिचाती हुई आँखो से उन्हे देखने लगा ।

जब उन लोगों की नजर उस पर पड़ी तो वे वहीं ठिठक कर खड़े हो गये और उनमे से जो जरा पीछे था वह परेशान होकर नाक भौं सिकोड़ने लगा।

आगे वाले आदमी ने नर्मी से, लगभग एक अपराधी–जैसे व्यक्ति के स्वर में, उनसे कहा "ऐ नौजवान, आओ, बाहर आ जाओ।"

अपने अदम्य माथ को नीचा किये हुए मेतेलित्सा ओसारे से बाहर निकल आया।

शीघ्र ही वह एक परिचित व्यक्ति के सामने पहुंच गया उस व्यक्ति के सामने जिसे पादड़ी के बाग से कमरे के अन्दर उसने पिछली रात को अच्छी तरह देखा था। वह भेड़ की खाल की काली टोपी लगाये था और काकेशियाई कोट पहने था। उसके बगल में एक आराम कुर्सी पर एक और आदमी सीधा बैठा था। वह एक खूबसूरत मोटा सा और अच्छे स्वभाव का कोई अफसर मालूम पड़ता था। मेतेलित्सा को लगा कि शायद वही स्क्वैड्रन का कमाण्डर है। उसने मेतेलित्सा की तरफ आश्चर्य से देखा, किन्तु उसकी दृष्टि में कठोरता नहीं थी। दोनों को ध्यानपूर्वक देखने के बाद मेतेलित्सा को लगा कि नेक लगने वाला अफसर नहीं, बल्कि काकेशियाई ओवरकोट वाला वह आदमी ही दर असल कमाण्डर था।

"तुम लोग जा सकते हो!" दरवाजे पर खड़े दोनों कज्जाकों को हुक्म देते हुए कमाण्डर ने कहा।

कमरे से बाहर निकलते हुए वे जैसे लड़खड़ाकर एक दूसरे से टकरा गये।

मेतेलित्सा के सामने खड़ा होकर और उसकी तरफ एकटक और गहराई से देखते हुए कमाण्डर ने तेजी से उससे पूछा "कल तुम बगीचे के अन्दर क्या कर रहे थे?"

मेतेलित्शा बिना कोई उत्तर दिये तिरस्कारपूवक उसकी तरफ घूरता रहा। उसकी आखें अफसर की आँखो के सामन झुकी नही। सिर्फ जैसी उसकी काली-काली भौह हल्के से हिली और उसकी पूरी भाव भगिमा से स्पष्ट जाहिर हो गया कि वे लोग उससे चाह जो सवाल पूछें और उनका जवाब निकालने के लिए उसके साथ चाह जो कुछ करें, वह ऐसी कोई बात उन्ह नही बतलायगा जिससे उनकी जिज्ञासा पूरी हो सके।

"यह नाटक ब द करो", कमाण्डर ने उससे कहा। उसके स्वर म क्रोध जरा भी नही था। उसने अपनी आवाज भी ऊँची नही की थी लेकिन जिस स्वर म वह बोल रहा था उससे स्पष्ट था कि वह भली-भाति समझ रहा था कि मेतेलित्शा के मन मे कौन से विचार उस क्षण उठ रहे थे।

मेतेलित्शा न जैसे अनुग्रह करते हुए कमाण्डर से कहा, 'बमतलब बात करन से फायदा क्या ?"

स्ववेडन कमाण्डर कई क्षण तक उसके स्थिर, चेचक के निशान वाले उस चेहरे को, जिस पर जगह-जगह खून जमकर सूख गया था, ध्यानपूवक देखता रहा। फिर बाला,

'चेचक क्या तुम्हे बहुत पहले हुई थी ?"

मेतेलित्शा इस तरह के प्रश्न के लिए तैयार नही था। परेशान-सा होत हुए उसने पूछा, "क्या ?' वह परेशान इसलिए हो गया था कि कमाण्डर के प्रश्न म न तो व्यग-भाव था, न तिरस्कार का लहजा। लगा कि कमाण्डर केवल उसके चहरे के चेचक के निशानो के ही बारे मे जानना चाहता था। मेतेलित्शा की समझ मे जब यह बात आयी तब वह और भी अधिक गुस्से से जल उठा। अगर वह उसका मजाक बनाता, या उसका अपमान करने की चेष्टा करता तब शायद वह इतना

रुष्ट न होता। उसे क्रोध इसलिए आया कि यह अफसर मानवीय स्तर पर उसके साथ सबध स्थापित करने की कोशिश कर रहा है।।

"तुम स्थानीय आदमी हो, या किसी और इलाके से आये हो?"

क्रुद्ध सकल्प के साथ मतेलित्शा ने कहा, "मान्यवर, यह सब बातें मत कीजिए ।" उसकी मुट्ठियाँ मजबूती से बध गयी, उसका चेहरा लाल हो उठा और उसे लगा कि अफसर पर हमला किये बिना उसे चैन नही मिलेगा। वह कुछ और कहना चाहता था, किन्तु तभी उसके मन मे विचार उठा कि क्या न वह उस आदमी की, जो काला आवरकोट पहने था और जिसका गन्दी लाल लाल सी दाढ़ी वाला फूला फला चेहरा इतने अप्रिय ढग से शान्त था, गर्दन को पकड़कर उसका गला घोट दे? इस विचार ने उसे इतने जोर से पकड़ लिया कि वह भूल गया कि वह क्या कहना चाहता था। वह एक कदम आगे बढ़कर कमाण्डर के सामने पहुच गया, उसकी अगुलियो मे स्फुरण हो आया और चेचक के दाग वाला उसका चेहरा पसीने से भीग गया। कमाण्डर ने जोर से कहा, "आहा!" पहली बार उसने आश्चर्य जाहिर किया। किन्तु वह पीछे नही हटा और न अपनी आँखें ही उसने मतेलित्शा के चेहरे से हटाई। मतेलित्शा की आखे अगारो की तरह जल रही थी और दुविधा मे डूबा वह चुपचाप खडा था।

तभी कमाण्डर ने अपना रिवाल्वर निकाल लिया और उसे मतेलित्शा की नाक के नीचे तक ले गया। मतेलित्शा ने अपने को काबू मे किया और खिडकी की तरफ मुह मोडकर तिरस्कृत भाव से चुपचाप खडा हो गया। उसके बाद रिवाल्वर दिखा-दिखाकर वे लोग उसे कितना ही धमकाते-डरवाते रहे, भयकर से भयकर यातनाएँ देने की कितनी ही धमकियाँ देते रहे और अगर वह 'सब कुछ सच-सच बतला दे' तो उसे मुक्त कर देने के कितने ही सब्जबाग दिखलाते रहे, किन्तु उत्तर मे एक शब्द तक उसने नही कहा और न उनकी तरफ मुडकर ही एक भी बार देखा।

यह सवाल-जवाब चल ही रहा था कि तभी आहिस्ता से कमरे का दरवाज़ा खुला और झबरे बालों वाला एक सर समाने दिखलाई दिया। अन्दर आने वाले उस आदमी की बडी बडी आँखें घबडाई हुई सी और मूखतापूर्ण लग रही थी।

स्क्वैडन कमाण्डर ने उससे पूछा, "क्या, सब लोग तैयार हो गये? अच्छी बात है। सिपाहियों से कहो कि इस आदमी को भी अपने साथ ले जायें।"

पहले वाले वही दोनो कज्ज़ाक आये और मेतेलित्शा को लेकर आहाते मे चले गये। वहाँ उन्होंने इशारे से उससे कहा कि खुले हुए फाटक से बाहर चलो और फिर खुद भी उसके पीछे पीछे चलने लगे। मेतेलित्शा ने पीछे मुडकर नही देखा, लेकिन वह जानता था कि वह सेना अफसर उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। थोडी देर मे सब लोग गिरजाघर के सामने के मैदान मे पहुच गये। गिरजाघर के निरीक्षणाध्यक्ष के मकान के सामने एक भीड खडी थी और उसे चारों तरफ से घोडो पर सवार हथियारबन्द कज्ज़ाक घेरे हुए थे।

मेतलित्शा को हमेशा ही यह लगता था कि उन सब लोगो से, जो अपने ही छोटे छोटे और तुच्छ काम काज मे उलझे रहते थे, वह नफरत करता था। इसलिए वे उसके बारे मे क्या सोचते या कहते थे—इसके सबध मे उसे ज़रा भी परवाह नही रहती थी। उसके कभी कोई दोस्त नही थे और न उसने कभी किसी का अपना दोस्त बनाने की कोशिश ही की थी। इसके बावजूद, जो कुछ भी अपने जीवन मे कोई महत्वपूर्ण काम उसने किया था उसे उसने लोगो के लिए, आम लोगो की भलाई के लिए ही किया था—जिससे कि वे उसे देखें, उस पर अभिमान करें और उसकी प्रशसा करें, यद्यपि स्वय उसने कभी इस चीज़ को महसूस नही किया था। और अब, जब उसने अपना सर झुका कर इधर-उधर नज़र दौडायी तो उसे, अचानक लगा कि उसका सम्पूर्ण हृदय, सारा

तन-मन उस चुपचाप खड़ी रगारग भीड़ के साथ था। उस भीड़ में उसकी नजर कुलबुलाते किसानों, तरुण लड़कों, हाथ से कात गये कपड़े की चमकीली स्कर्टें (घाघरे) पहने हुई स्त्रियों, फूलदार डिज़ाइनों वाले सफ़ेद स्कार्फ (बड़े रूमाल) गले में बाँधे तरुणियों और माथे पर लापरवाही से बाल बिखराये खड़े अक्खड़ घुड़सवारों की कतारों पर पड़ी। वे सबके सब साफ-सुथरे और रंग बिरंगे कपड़ों में खूब चुस्त-दुरुस्त दिखलायी दे रहे थे। उनकी हिलती डुलती लम्बी-लम्बी परछाइयाँ छोटी छोटी घास से ढकी ज़मीन पर नृत्य करती जैसी दीख रही थीं। ठण्डे आसमान के नीचे खूब ऊँचाई पर सीधे खड़े गिरजे की प्राचीन निष्कम्प गुम्बज भी हल्की हल्की धूप में चमकती हुई लुभावनी लग रही थी।

उसके मुँह से जैसे अपने आप निकल गया, 'देखो यह है ज़िन्दगी!' उसका मन विभोर हो उठा। उसके रोयें रोयें में जैसे उल्लास मुस्करा उठा। वह जीवन, वह चमक दमक, वह ग़रीबी, वह हर चीज़ जो गतिशील थी और साँस ले रही थी और चारों तरफ से आलोक-मंडित दीख रही थी। वह सारा अभिनव दृश्य उसके अन्दर रोमान्च पैदा कर रहा था। वह और भी तेज़ी तथा उन्मुक्त भाव से आगे बढ़ने लगा। उसके कदम इतने हल्के थे और मन में इतना मानवीय उछाह उमड़ रहा था कि उसे लगा कि वह हवा में उड़ता हुआ पैंगें भर रहा है। जब वह इस प्रकार चल रहा था तब उसका लचीला शरीर जैसे हवा में दोलायमान हो रहा था। चौकोर मैदान में खड़े हर व्यक्ति की नज़र उसकी तरफ घूम गयी। अचानक उसे महसूस हुआ कि उसके छरहरे और उत्कंठित शरीर के अन्दर भी जीवन की शक्ति छिपी हुई है।

भीड़ के अन्दर से लोगों के सरों को देखता हुआ वह आगे बढ़ता गया। उसका सारा शरीर अनुभव कर रहा था कि उनका खामोश और सकेंद्रित ध्यान उसी पर लगा हुआ है। गिरजे के निरीगाध्यक्ष

मकान की बरसाती के सामने वह रुक गया। पीछे चलने वाले सर उसके पास आ गये और फिर बरसाती के ऊपर चढ गये।

अफसरो के ही समीप एक जगह की तरफ संकेत करते हुए डन कमाण्डर ने मेतेलिरशा से कहा इधर आओ यहा खडे हो गो!" एक ही लम्बा डग उठा कर मेतेलिरशा उस जगह पर पहुँच और कमाण्डर के बगल मे खडा हो गया।

अब सब लोग अच्छी तरह उसे देख सकते थे। जीवन स्फूर्ति से उसका तना लचीला शरीर, सीधी खडी उसकी आकृति, काने कान के बाल हिरन के चमडे की उसकी बिरजिस और खुले बटन की की कमीज जिसके ऊपर पेटी की तरह एक डोरी बंधी था सब कुछ लोगो की नजर के सामने था। ऊपर वह रुई-भरा एक कोट ते था जिसके नीचे से कमीज पर बँधी डोरी की हरी हरी झालर दिखायी दे रही थी। उसकी बेचैन आखो मे जिन्दगी की एक ज्वाला जलती प्रतीत होती थी। बेफिक्र भाव से वह पहाड की उन ऊँची टियो की तरफ एकटक देख रहा था जो भोर के मटमैले कोहरे मे काश को छूती हुई निस्पन्द खडी थी।

स्क्वैडन कमाण्डर ने अपनी पैनी, छेद करके जैसे अन्दर तक घुस ने वाली आखो से भीड को देखते हुए पूछा, 'इस आदमी को तुममे कौन पहचानता है? उसकी दृष्टि एक के बाद दूसरे चेहरे को राई से देखती-टटोलती एक किनारे से दूसरे किनारे की तरफ बढ रही थी।

जिस व्यक्ति पर भी उसकी नजर थमती वह घबडाकर अपना नीचा कर लेता। केवल स्त्रियाँ ही आतक-भरे कौतूहल से और और मूक भाव से अपलक उसकी तरफ देख रही थी। उनमे इतनी कत नही थी कि अपनी दृष्टि को वे उसके चेहरे से दूर हटा लें।

कमाण्डर ने फिर पूछा, "क्या इसे कोई नही जानता?" "कोई

नही" शब्द पर उसने व्यग के साथ इस तरह ज़ोर दिया जसे कि उसे अच्छी तरह मालूम था कि "इस आदमी" को उनमे से हर एक जानता था या उसे जानना चाहिए था ! उसने कहा, 'अच्छा जल्दी ही सब पता चल जाएगा ।" और फिर उसने नचीताइलो को आवाज़ दी। आवाज़ देने के साथ साथ हाथ से उसकी तरफ इशारा करते हुए उसने कहा "यहा आओ ।' नीचेताइलो एक लम्बा अज्ज़ाकी ओवरकोट पहन एक कद्दावर अफसर था । वह कुलाचें भरते एक खूबसूरत कुम्मैत घोडे पर सवार था ।

भीड मे हल्की सी हलचल हुई । जो लोग आगे खडे थे वे घूम कर पीछे की तरफ देखने लगे । काली वास्कट पहने एक व्यक्ति दृढतापूवक भीड को धक्का देता हुआ आगे की तरफ आ रहा था । उसका सर इस तरह नीचे झुका था कि ऊपर से सिर्फ उसका रोओ का गम टाप ही दिखाई पड रहा था ।

भीड के अन्दर से जाता हुआ वह जल्दी जल्दी कह रहा था, "मुझे निकल जाने दो, मुझे जाने दो !" एक हाथ स अपने लिए वह रास्ता बना रहा था और दूसरे से किसी को पकडे घसीटता हुआ आगे की तरफ लिये जा रहा था ।

आखिरकार वह बरसाती के पास पहुँच गया । सब लोगो ने देखा कि एक दुबले पतले मरियल से काले बाल वाले छोकर को घसीटता हुआ वह वहा ले आया था । वह लडका एक लम्बा सा कोट पहन था और भयभीत आखो स कभी मेतेलित्शा की तरफ देखता था और कभी स्क्वड्रन के कमाण्डर की तरफ । भीड की हलचल अब बढ गयी थी । वहा से लोगो के बोलने की आवाज़ें, ठण्डी सासें और स्त्रियो की फुस-फुसाहट साफ सुनायी देने लगी । मेतेलित्शा न छोकर की तरफ दृष्टि की तो तुरन्त पहचान गया कि यह तो मल वाला वही काले बालो का गडरिया है जिसके पास वह अपना घोडा छोड आया था । उसकी

आँखो मे अब भी उसी तरह भय समाया हुआ था और उसकी गदन अब भी उसी तरह पतली और बच्चा जैसी कुछ विचित्र सी लग रही थी ।

जो आदमी लडके का हाथ मजबूती से पकडे था उसने अपनी टोपी उतार ली। उसका मिर असाधारण तौर से चिपटा था। उसके भूरे बाला म जगह-जगह सफेद बाल इस तरह चमक रहे थ जिस तरह कि बिना किसी तरतीब के उन पर किसी ने सफेद नमक छिडक दिया हो। अफसरो को झुक कर उसने सलाम किया और फिर अपनी कहानी कहना शुरू कर दी।

"मरा यह नौजवान गडरिया ।'

कि तु अचानक उसे यह डर लगा कि लाग उसकी बात नही सुनेंगे। इसलिए चुक कर और मेतेलित्शा की तरफ अँगुली से इशारा करते हुए उसने उस लडके से पूछा

'क्या यह वही आदमी है ?"

कई क्षण तक वह लडका और मेतेलित्शा नजर मिलाकर एक दूसरे का देखते रहे। मेतलित्शा यह जाहिर कर रहा था कि उसे काइ परवाह नहीं है और लडके के मन मे भय सहानुभूति तथा दया के भाव उठ रहे थ। उसके बाद लडके ने अपनी नजर स्क्वैड्रन कमाण्डर की तरफ घुमायी, कुछ देर तक गावदी की तरह वह उसकी ओर देखता रहा। आखिर मे उसने उस आदमी को देखा जो उसकी बाह पकडे और उसके ऊपर झुका हुआ उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था। उसन एक गहरी और दद-भरी साँस ली और फिर मेतेलित्शा को पहचानन से इनकार करते हुए अपना सर हिला दिया। भीड इस बीच इतनी शात हो गयी थी कि दूर के किसी के ओसारे म बँधे बछडे की कुलबुलाहट तक साफ सुनायी दे रही थी। छोकरे के इनकार को देख कर उसमे फिर से थोडी सी जान आयी और क्षण भर बाद फिर वह निर्जीव जैसी होकर निस्तब्ध हो गयी ।

"डरो मत! मुझ वही है! डरा मत!" आहिस्ता से उस आदमी ने गडरिए से कहा, यद्यपि वह खुद भी अब भयभीत होता जा रहा था और घबडाहट मे बारम्बार अपनी अंगुली से मेललिरशा की तरफ इशारा कर रहा था। 'अगर यह नहीं था तो और कौन था? मान जाओ, ठीक ठीक बतला दो! वरना, वरना तेरी दुर्गति हो जायगी!" यकायक अपनी पूरी ताकत से उस छोकरे की बाँह पकड कर जोर से उसने उसे झकझोर दिया और कडकता हुआ बोला, 'हुजूर, यह वही आदमी है! इसके अलावा और हो ही कौन सकता था!' इस बात को वह ऐसे कह रहा था जैसे कि अपनी सफाई दे रहा था। भय और चिन्ता से अपनी टोपी को वह अपने हाथों मे मसल डाल रहा था। "हुजूर! बात यह है कि यह छोकरा डरता है! लेकिन जब कि घोडे पर जीन कसी हुई है और उसके थैले मे पिस्तौल दान बना हुआ है तो इसके अलावा और कौन हो सकता था? घोडे पर सवार यह आदमी शाम के वक्त अलाव के पास बैठे इस लडके के पास पहुँचा था। वहाँ पहुँच कर लडके से उसने कहा था मेरे घोडे को देखना। इसे थोड़ा चरा देना। मैं अभी आता हूँ। यह कह कर फिर यह गाँव की तरफ रवाना हो गया था। यह लडका निरंतर इस आदमी की बाट जोहता बैठा रहा था। यह सुबह तक बैठा इसकी राह देखता रहा था। जब सुबह हो गयी तब घोडे को लेकर यह मेरे बाडे मे लौट आया। घोडे पर जीन कसी हुई थी और जीन के थैले मे पिस्तौल-दान मौजूद था! फिर आप ही बतलाइए वह आदमी इसके सिवा और कौन हो सकता था?

उसकी बात को समझने की कोशिश करते हुए कमाण्डर ने उससे पूछा, 'कौन घोडे पर सवार हो कर आया था? पिस्तौल-दान कैसा?' इस पर वह आदमी और भी घबडा गया तथा और भी अधिक क्रोध और परेशानी से अपनी टोपी को ऐंठने और मसलने लगा। फिर रुक रुक कर और हकलाते हुए कमाण्डर को उसने दोबारा बतलाया

कि उस दिन सुबह उठ कर गडरिया एक अजनबी ऐसे घोडे को लेकर किस भांति उसके पास आया था जिस पर जीन कसी थी और जिसकी जीन के थैले मे रिवाल्वर रखने की एक छोटी थली बनी हुई थी।

"ओ हो, तो यह बात है क्यो ?" स्क्वैडन कमाण्डर ने बातको समझते हुए कहा। फिर लडके की तरफ देख कर और सर हिलाते हुए उसने पूछा, "लेकिन यह कबूल नही करना चाहता ? क्या ? अच्छी बात है, उसे यहाँ ले आओ, हम लोग अपने तरीके से उससे पूछेंगे ।"

लडके को पीछे से ढकेला गया तो बरसाती के पास तक तो वह पहुँच गया, लेकिन उसके आगे ऊपर चढने मे वह हिचकिचाने लगा। तेजी मे कदम बढाता हुआ कमाण्डर खुद तब नीचे उसके पास पहुँच गया और उसके पतले पतले कापते कधो को पकड कर अपनी पैनी भय पैदा करने वाली आखो से वह उसके घबडाये हुए चेहरे को घूरने लगा।

लडके ने यकायक रोना चिल्लाना और अपनी आखो को इधर उधर घमाना शुरू कर दिया।

एक औरत जब इस दृश्य को बर्दाश्त न कर सकी तो हाफते हुए उसने कहा 'क्या इसी को इन्साफ कहते हैं ?"

किन्तु ठीक उसी क्षण एक लचीला फुर्तीला छरहरा-सा शरीर तेजी से बरसाती से आगे की ओर झपटा। इस दृश्य को देखकर भीड जोर-जोर से हाथ हिलाने लगी और एकदम पीछे की तरफ हटने लगी।

एक ही भयकर प्रहार के झटके से स्क्वैडन कमाण्डर नीचे गिर गया था और जमीन पर पडा तिलमिला रहा था।

तभी उस खूबसूरत अफसर ने जसे बेबसी से हाथो को मलते हुए चिल्ला कर हुक्म दिया 'गोली चलाओ ! मार दो ! अरे, खडे खडे तुम लोग क्या देख रहे हो ?" घबडाहट और मूर्खता मे इस बात को वह भूल गया कि खुद भी मेतेलित्शा को गोली से वह मार दे सकता था !

घुड़सवार दौड़ने लगे। उनमें से कुछ भीड़ में घुस कर अपने घोड़ों से लोगों को इधर-उधर ढकेलने लगे। मतेलित्शा अपने पूरे शरीर के वजन से अपने दुश्मन को दबाये हुए उसके गले को पकड़ने की कोशिश कर रहा था। कमाण्डर उसकी पकड़ के अन्दर दर्द से छटपटा रहा था। बकरे की खाल का उसका लबादा किसी बड़े पक्षी के काले डैना की तरह जमीन पर फैला पड़ा था। उसका एक हाथ अपनी पेटी से रिवाल्वर निकालने की कोशिश कर रहा था। आखिरकार, अपने रिवाल्वर दान को खोलने में कमाण्डर कामयाब हो गया और मतेलित्शा जिस समय उसके गले को पकड़ कर कसकर दबा रहा था उसने उसके शरीर में तड़तड़ करके कई गोलियाँ उतार दीं।

कज्ज़ाक चारों तरफ से उन लोगों की तरफ दौड़ पड़े। नज़दीक पहुँच कर मतेलित्शा को जब उसकी टाँगें पकड़ कर कमाण्डर के शरीर से दूर खींचने की उन्होंने कोशिश की तो उस वक्त भी मैदान की घास को वह मजबूती से अपनी मुट्ठी में पकड़े था। उसने दाँत किटकिटाये और अपने सर को एक बार फिर ऊपर उठाने की कोशिश की, किन्तु तभी निर्जीव होकर वह लुढ़क गया। कज्ज़ाक उसे जमीन पर खींचते हुए दूर ले जाने लगे।

खूबसूरत अफसर ने फिर चिल्लाकर हुक्म दिया, 'नेचीताइलो! स्क्वैड्रन को पार्क में खड़ा करो!" फिर आदरपूर्वक, उसकी आग्र बचाते हुए स्क्वैड्रन कमाण्डर से उसने पूछा, 'आप भी चलेंगे?'

हाँ!'

"स्क्वैडन कमाण्डर का घोड़ा ले आओ!'

आध घण्टे बाद लड़ने के लिए पूरे तौर से तैयार होकर कज्ज़ाकों का स्क्वडन गाँव से निकल पड़ा। वह पहाड़ी के ऊपर जाने वाले उसी रास्ते पर बढ़ने लगा जिस रास्ते से उतर कर पिछले दिन की शाम को मतेलित्शा नीचे आया था।

वसेवालोद इवानोव

वसेवालोद इवानोव (१८९५-१९६३) साइबेरिया के निवासी थे। अपनी युवावस्था उन्होंने उस विशाल प्रदेश के गावो और कस्वा म घूमते फिरते विताई थी। अपने घुमक्कड जीवन के दौरान कई बार अपना पेशा उन्होंने बदला था और अनेक काम किये थे।

उन्होंने दूकान के कमचारी का काम किया था, नाविक की हैसियत से जगह जगह गये थे, प्रेस मे कम्पोजिग का काम किया था, घूमते फिरते कलाकारा की एक टोली के सदस्य की हैसियत से काम किया था, और फिर एक सकस मे भी शामिल हो गये थे। उन्हान गृह-युद्ध मे भी भाग लिया था।

लिखना उन्होंने मैक्सिम गोर्की के पथ प्रदशन मे क्रान्ति के बाद के प्रारम्भिक वर्षो म उस समय आरम्भ किया था जिस समय कि गोर्की रूस के बुद्धिजीवी वग को एकत्रित और सगठन-बद्ध कर रह थे।

इवानोव ने जब अपनी रचना, छापेमारों की कहानियाँ प्रकाशित की ता उनका नाम चारा तरफ फैल गया। बाद म उनका उपन्यास, "पार्खोमेन्को" छपा। इसमे उन्होन गृह युद्ध म भाग लेन वाले लाल सेना के एक प्रमुख कमाण्डर की कहानी बतलायी थी। इवानाव की एक कहानी पर आधारित एक नाटक, "बख्तरबद रेलगाडी १४ ६९" को मास्को आर्ट थियेटर न रगमच पर प्रस्तुत किया था। उसके बाद से उनके इस नाटक का सोवियत के उत्कृष्ट नाटय कोष म एक स्थायी स्थान बन गया है।

निम्न लघुकथा 'अक्षर स' मे, इवानोव ने गृह युद्ध की एक घटना का चित्रण किया है।

अक्षर "स"

अपने साधारण बेफिक्री के ढग मे इवान पक्रातोव अक्सर कहा करते थ कि वे टाइपा के केस के सामने खडे खडे ही मरेंगे और कम्पोजिग के कक्ष से उनके शव को उसी प्रकार बाहर ले जाया जायेगा जिस प्रकार कि किसी अक्षर को टाइपो की शैली स बाहर निकाला जाता है। अक्षर की ही तरह उनका चेहरा दीवाल की तरफ रहेगा, छत की तरफ नही !

इवान के साथी उनके बफिक्री के ढग उनके खुश दिल और मजाकिया स्वभाव और उनके सफेद होते मस्त मौला सर को बहुत पसन्द करते थे। वे उनकी उन पाँच झुरियो को भी बडे स्नेह और सम्मान से दखते थे जो उनके सारे चिटटे और प्रफुल्लित चेहरे पर गहरे दागो की तरह दिखलायी देती थी। उनसे दुनिया को यह आभास मिलता था कि वह एक ऐसे व्यक्ति थे जो जीवन का बहुत ऊँच नीच देख चुके थ और जो अनेक कष्टो से गुजरे थे।

इवान को काफी दिनो स यह लगने लगा था कि उनकी आखो की ज्योति कम हो रही है मस्त बादलो स भरा चमकता आकाश अब पहले जैसा चमकीला नही लगता था और सायकाल का धुधलका जल्दी छा जाता था। कम्पोजिग के काम स हटाकर उन्हे थियेटर के बिल बनाने का काम द दिया गया था किन्तु इसम भी उनसे बहुत गलतियाँ होती थी। प्रबधको ने उनसे माफी मागते हुए उन्हे तीसरा काम दिया था यह था दूसरे कम्पोजीटरो के पास 'कापी' पहुँचाने का और

इस्तेमाल हो चुके टाइपो को डिस्टीब्यूट (वितरित) करने का। इवान इससे भी हताश नही हुए। उन्होने केवल यह कहा था कि सम्भवत उम्र अधिक हो जाने के कारण उनका हाथ हिलने लगा था। अपनी आखो के बारे मे उन्होने कुछ नही कहा था। उनके जीवन मे ऐसी अनेक चीजें आयी थी जिनके बारे मे वह चुप ही रहे थे।

उनकी आशावादिता तथा जिन्दादिली के कारण और इस कारण भी कि वे अपनी असमर्थता के लिए दुखी थे, उस समय जिस समय कि किसी इस्तेमाल हो चुके फर्मे के टाइपो को वह 'डिस्टीब्यूट (वितरित) करने लगते, उनके मजदूर साथी टाइप के खानो के सामने उनकी सहायता के लिए काले कागज के टुकडे लगा देते थे। इवान अपने हिस्से के टाइपो को दिन भर डिस्ट्रीब्यूट करते। अगले दिन उनके दूसरे साथी काले कागज के टुकडो को हटा देते तथा अक्षरो को निकालकर उनके उचित खानो मे रख देते—क्योकि इवान की आखो की ज्योति इतनी मद्धिम पड चुकी थी कि टाइप को जब वह उनके खानो मे रखते तो वे पास पडोस के खानो मे पहुच जाते—जैसे कि 'क' 'ख' के खाने मे पहुँच जाता, 'र' 'ल' के खाने मे पहुँच जाता। प्रेस मे भरती होने वाले नये मजदूरो से इवान को डर सा लगता था क्योकि उन्हे पहचानने मे उन्हे कठिनाई होती थी, उनके चेहरे उन्हे धुधले धुधले से दीखते थे।

उस दिन, जिस दिन से हमारी कहानी का श्रीगणेश होता है प्रेस मे मिश्का ब्लैगोवेश्चेन्स्की ने काम करना शुरू किया था। वह अभी बच्चा ही था, उसकी आयु सोलह वर्ष से अधिक नही थी, किन्तु इसी आयु मे उसने बहुत अनुभव प्राप्त कर लिया था। अपने इस छोटे से बघरबार के जीवन मे, एक कोने से दूसरे कोने तक वह पूरे रूस मे घूम चुका था। वह रूस के अधिकाश बडे शहरो मे भी हो आया था। मिश्का जब काम करने आया तब उसकी भावावस्था अच्छी नही थी।

लेकिन बादल अब भी घहरा रहे थे और वातावरण में मनहूसियत
हुई थी। बालू के नीचे से सडी हुई घास और मिट्टी ऊपर निकल
। थी और उनकी वजह से सडाध भरी बदबू फैल रही थी।

बोल्ना रिवोल्यूत्सी नामक स्टीमर (छोटा जहाज) आमू दरिया पर
धीरे 'क' नामक एक छोटे से कस्बे की तरफ बढ रहा था। उस
लाल सैनिकों की दो कम्पनिया, कुछ तोपें और गोला बारूद लदा
स्टीमर उस कस्बे की मदद के लिए जा रहा था—क्योंकि यह
अफवाह नही थी, बल्कि वास्तविकता थी कि बासमाची लोग
स्तान की दिशा से उस कस्बे की तरफ बढते आ रहे थे।

आमू दरिया बलुवे रेगिस्तान के बीच से बहता है और उसकी
। बारम्बार अपना रुख बदलती रहती है, उसके अन्दर बहुत से
ले स्थान तथा बालू के टील भी हैं। इसके अलावा, उसका प्रवाह
तेज और खतरनाक है। इसलिए, स्टीमर उस पर धीरे धीरे चल रहा
। बालू के ढेरो से आगाह करने के लिए दरिया मे पैराक पीप लगा
गये थे किन्तु बासमाचियो ने उन्हे नष्ट कर दिया था—और,
उन्होने नष्ट न किया होता तब भी उनकी देखभाल करने के
वहा कोई रह नही गया था। हर रात को स्टीमर लगर डालकर
जाता था और इस बात को लेकर हर रात गाली गलौज होता
क्योंकि सैनिक चाहते थे कि वह रात को भी चलता रहे।
की जगह उनकी बात ठीक ही थी, क्योंकि चलते रहना सो जाने
कम खतरनाक था। बासमाचियो की छोटी छोटी चौडे पदे
ी नावो के चलने की आवाज पवन मे नरकुलो की सरसराहट
वजह से सुनाई नही देती थी स्टीमर की सारी
नियाँ गुल कर दी गयी थी। नाविक दल के लोग अपनी राइ-
ताने सतर्क बैठे थे। आखिरकार, वह समय भी आ गया जब

इसके अतिरिक्त, कस्बे मे यह भी अफवाह फैल रही थी कि बासमाचियो* और ह्वाइट-गार्डों न रेगिस्तान की तरफ से हमला बोल दिया है। और वे कस्बे की तरफ बढते आ रहे हैं। कहा जाता था कि उन लोगो का नेतत्व अटामान काशीमिरोव कर रहा था। वह एक कज्जाक अफसर था जो अपनी क्रूरता के लिए कुख्यात था। और मिश्का कायर था। वह अपनी कायरता की डीग हाकता था, और इसलिए इस बात का कोई विश्वास नही करता था। मिश्का बहुत सुबह ही प्रेस पहुँच गया था। उस समय एक अपरेंटिस लडका इवान पकरातोव द्वारा इधर-उधर ग़लत रख दिये गये अक्षरो को निकाल निकाल कर उनके सही खानो मे रख रहा था और अपन इस रद्दी काम के बारे म बडबडा रहा था। उसकी बात सुनकर दुर्भावनापूर्ण हँसी हँसत हुए मिश्का ने इवान का अभिनन्दन किया। इवान निर्द्वन्द्व भाव से चले आ रह थ। प्रेस क फाटक के पास जब वह रुके तो सफेद बालो वाला उनका सर-द्वार के चौखटे स भी ऊँचा था।

प्रेस म "मेक अप" का काम यशोव करता था। उसन मिश्का को प्रेस की एक मशीन के पीछे ऐसी जगह बुलाया जहाँ स वह किसी और को दिखाई नही दता था। वहाँ टरपेन्टाइन के तेल से सन अपन हाथ को कसकर भीचकर उसने मिश्का की नाक के पास रखा और अपनी छोटी छोटी आँखो से गुस्से से उसको ओर दखते हुए उस सख्त चेतावनी दी। इसके बाद मिश्का न कभी कुछ नही कहा और इवान भी समझ गये कि दूसरो न डाट डपटकर उसकी बोलती बन्द कर दी थी।

दो हफ्ते तक लगातार वर्षा होती रहन के बाद पानी आज रुका

---

* बासमाचियों मध्य एशिया म लुटेरो और डकैतो के जो गिरोह सोवियत सत्ता के विरुद्ध लड रहे थे उन्हे इसी नाम म पुकारा जाता था।—अनुवादक

ाकिन बादल अब भी घहरा रहे थे और वातावरण में मनहूसियत
हुई थी। बालू के नीचे से सड़ी हुई घास और मिट्टी ऊपर निकल
थी और उनकी वजह से सडाध भरी बदबू फैल रही थी।

घोल्ना रिवोल्यूत्सी नामक स्टीमर (छोटा जहाज) आमू दरिया पर
धीरे क' नामक एक छोटे से कस्बे की तरफ बढ रहा था। उम
ाल सनिका की दो कम्पनिया, कुछ तोपें और गोला-बारूद लदा
स्टीमर उस कस्बे की मदद के लिए जा रहा था—क्योकि यह
अफवाह नही थी, बल्कि वास्तविकता थी कि बासमाची लोग
तान की दिशा से उस कस्बे की तरफ बढते आ रह थे।

आमू दरिया बलुवे रेगिस्तान के बीच से बहता है और उसकी
बारम्बार अपना रुख बदलती रहती है, उसके अन्दर बहुत से
। स्थान तथा बालू के टीले भी हैं। इसके अलावा, उसका प्रवाह
तज और खतरनाक है। इसलिए, स्टीमर उस पर धीरे धीर चल रहा
बालू के ढेरो से आगाह करन के लिए दरिया मे पैराक पीप लगा
गये थे किन्तु बासमाचियो ने उन्ह नष्ट कर दिया था—और
उन्होने नष्ट न किया हाता तब भी, उनकी देखभाल करन के
वहा कोई रह नही गया था। हर रात को स्टीमर लगर डालकर
जाता था और इस बात को लकर हर रात गाली गलौज हाता
क्योकि सनिक चाहते थे कि वह रात को भी चलता रहे।
ो जगह उनकी बात ठीक ही थ', क्योकि चलते रहना सो जाने
म खतरनाक था। बासमाचियो की छोटी छोटी चौडे पदे
। नावा के चलने की आवाज पवन मे नरकुला की सरसराहट
वजह से सुनाई नही देती थी स्टीमर की सारी
नियाँ गुल कर दी गयी थी। नाविक दल के लोग अपनी राइ-
ताने सतक बैठे थे। आखिरकार वह समय भी आ गया जब

सैनिकों को बतलाया गया कि वह कस्बा केवल दस पंद्रह वस्ट* ही दूर रह गया था। किन्तु तभी मूसलाधार वारिश शुरू हो गयी और पूरा आकाश एक काले घटाटोप से ढक गया। आमू दरिया का उफनता हुआ प्रवाह दोनों तटों की भूरी पीली बलुई पहाड़ियों से टकराता तेजी से आगे बढ़ रहा था।

बालू के एक बड़े टीले पर एक विशालकाय, फल फूल पत्ती विहीन दरख्त खड़ा था जिसकी चोटी पर किसी कौए का एक घोंसला था। मांझी लोग तट पर उतर कर पहाड़ी पर चढ़ गये। पहाड़ी कौआ उन्हें पेड़ पर चढ़ने नहीं दे रहा था और बारम्बार उन पर हमले कर रहा था। (पेड़ के नीचे कछुआ के बच्चा के घाघ पड़े थे। साफ था कि कौए के बच्चों ने उन्हें खा डाला था)। तभी बिजली कड़की और एक सतर्क नाविक ने कौए पर गोली चला दी। गोली की आवाज बिजली की गड़गड़ाहट में डूब गयी। उनके सामने एक लम्बा चौड़ा अन्तहीन नीला भूरा मैदान पड़ा था जो कंकरीली रोड़ी से ढका था। काफी फासले पर उन्हें बैंगनी रंग की कुछ पहाड़ियां दिखलायी दे रही थीं, किन्तु शहर जैसी किसी चीज का कहीं कोई चिह्न नहीं दिखलाई देता था। मार्गीगण के दिलों में निराशा भरने लगी। वे बहुत देर तक आहिस्ता आहिस्ता आपस में तर्क वितर्क करते रहे। अन्त में, उन्होंने वहीं लंगर डालने का निर्णय किया। तभी नदी के दोनों तटों से सड़ांध का एक झोंका आया और उनकी नाकों में भर गया। मजबूती से बंधी होने के बावजूद, लंगर की जंजीर नदी की छोटी छोटी किन्तु भीषण लहरों के टकराव से हिलती हुई जोरों की आवाज कर रही थी। गन्दी, पीली भारी और बर्फीली नदी स्टीमर को धकियाती हुई उद्दाम वेग में भागी जा रही थी।

---

* वस्ट दूरी का एक प्राचीन रूसी नाप जो लगभग दो तिहाई मील के बराबर होता है।—अनु०

कस्बे मे क्रान्तिकारी समिति की ओर से स्टीमर की एक लम्बे काल से प्रतीक्षा की जा रही थी। दो दिन से तो स्टीमर के रुकने के स्थान पर एक मच भी बना दिया गया था जिसे छोटी-छोटी लाल पताकाओ से खूब सजाया गया था (वास्तव मे, पताकाओ का रग फीका होने लगा था और उनमे से कुछ को तो तीव्र वर्षा ने फाड भी दिया था)। आधे कस्बे म कज्जाक रहते थे। क्रान्तिकारी समिति को डर था कि उनमे से अनेक बासमाचियो और ह्वाइट गार्डो का साथ देगे इसलिए कस्बे की शेष सारी आबादी को मुकाबला करने के लिए लामबन्द कर लिया गया था। कज्जाको से कस्बे की रक्षा करने की बात कहने म क्रान्तिकारी समिति डरती थी। बारिश के बावजूद, कज्जाक लोग हथियारो से अच्छी तरह लैस होकर गाते हुए तथा लडाई के मोर्चो से लाये मुह के अपने बाजो को बजाते हुए इधर-उधर घूम रहे थे। इससे भयानकता और बढ जाती थी। कस्बे के बाहर रेगिस्तान की तरफ खाइयो म पडे जो लोग पहरा दे रहे थे वे अधिकाशतया कस्बे की तरफ आशा से देखते थे और उसमे उठने वाले शोर गुल को उदास भाव से सुनते रहते थे। रेगिस्तान सीलन भरा और अधकारपूर्ण था।

कस्बे से लगभग बीस वस्ट के फासले पर, बासमाचियो ने पहाडियो म अपना पडाव डाल रखा था। झाडियो के ऊपरी हिस्सो को एक-दूसरे के साथ बाध कर और घोडो के कम्बलो तथा उनकी जीनो के कपडो से उन्हे ढक कर उन्होने अपने सोने के लिए शिविर बना लिये थे। इन्ही 'छप्परो' के नीचे वे सोते थे। सोने वालो मे उनका अटामान (मुखिया) जनरल काशीमिरोव भी था। वे किजिल कुम के लगभग पूरे रेगिस्तान को पार कर आये थे। कस्बा अब दूर नही था और कस्बे के उस पार आबू दरिया था और आबू दरिया के उस पार पवित्र और सुगधमय खीवा था। किन्तु बासमाचियो और अटामान का खयाल था कि कस्बे की सुरक्षा पाँत बहुत मजबूत थी। बहुत कुछ इन्तजार के बाद आखिर मे उन्होने एक किरगिज युवा की—एक घूमते फिरते गवैये को—

पकड लिया। वह खीवा से बुखारा जा रहा था। इस गवैये फकीर ने उन्हे बतलाया कि रूसी लोग पिछले तीन दिन से आमू दरिया के पानी के रुख को बदल रहे है। उसने उनसे कहा कि रूसियो की शक्ति इतनी विशाल है कि उसका वणन गीतो मे भी नही किया जा सकता। उसने उनसे कहा कि रूसी ता अदभुत शक्ति सम्पन्न वहत्काय मानव है। अटामान काशीमिरोव से और आगे नही सुना गया। उसने गायक के मुह को एक गोली से बद कर दिया। इसके बाद बासमाचियो न फैसला किया कि वह यूयाची वास्तव मे एक जासूस था जिसे दुश्मनो ने उसके पास भेजा था। फिर क्या था—उनके गीले कोडे तडप उठे और फिर उनकी रकाबो की झनकार सुनाई दी। बासमाचियो का घुडसवार दल कस्बे की दिशा मे रवाना हो गया ।

कस्बे मे, मूसलाधार वर्षा के बीच, पानी और कीचड मे खडे वहाँक लोग वास्तव मे एक नहर खोद रहे थे। जिस रात बोल्ना रिवोल्यूत्सी नामक स्टीमर कस्बे से लगभग पद्रह वस्ट की दूरी पर रुका था उसी रात के मध्याह्न म ज़ोर से हिलकर अचानक वह एक ओर को झुक गया था। उनीदे नाविक घबडाकर उठ खडे हुए थे और गोलिया चलाने ही वाले थे कि उन्हे लगा कि उनके आस पास पानी की छपछपाहट बद हो गयी थी। अगले दिन उन्होने वर्षा की झडी के बीच देखा कि दरिया जहाज़ स लगभग २०० गज़ दूर चला गया था। स्टीमर दरिया के पाट के कीचड म धँसा हुआ आडा तिरछा भौडे ढग से खडा था। घुटनो तक कीचड म धँस कर नाविक एक नाव को नदी तक ढकेलते हुए ले गये। उनके चारो तरफ काले काले और कीचड म लद फद पुराने पडो के चिपचिपे ठूठ दलदल के ऊपर निकले थे। बडी बडी मछलिया जिन्हे दरिया के पानी के साथ भागने का मौका नही मिला था, छोटे छोटे गडढो मे पानी स भीगती हुई इधर उधर भागने की कोशिश कर रही थी। नाविक अपनी नाव को खेकर शहर तक ल गये। वहाँ क्रान्तिकारी समिति न और अधिक

लोगा को जुटा कर लामबन्द किया और उनसे कहा कि कुदालो और फावडो को लेकर वे तैयार हो जायें।

शहरियो के दल अनाडी ढग से लाइन लगा कर खडे हो गये और नहर खोदने के लिए मार्च करते हुए रवाना हो गये। नहर के द्वारा नदी के पानी को वे स्टीमर तक ले आना चाहते थे। फुहार अब भी पड रही थी और स्लेटी रग के बादलो का घटाटोप छाया हुआ था ।

छापेखाने मे बडी ठण्ड थी। टाइप चिपचिपा रहा था, क्योकि उसे धोने के लिए न टरपेण्टाइन थी और न मिट्टी का तेल। स्याही सूख-सूख जाती थी और प्रेस की मुद्रण पट्टिका के घूमते रहने पर भी कागज़ पर टाइपो की कोई छाप नहीं पडती थी। प्रेस के मजदूरो को भी नहर खोदने के लिए भेज दिया गया था। प्रेस मे केवल इवान पकरातोव और मिश्का रह गये थे।

इवान हमेशा की ही तरह फुर्ती के साथ टाइपो के केसो के बीच इधर से उधर आ जा रहा था। चिरपरिचित ढग से उसके हाथ उसके पीछे बँधे हुए थे। चलता हुआ वह खासता जाता था। उसे इस बात का दुख था कि अभी अभी उसे एक रोचक कहानी याद आयी थी किन्तु वहाँ कोई ऐसा नहीं था जिसे वह उसे सुना सकता। मिश्का ने लामबन्दी से बचने के लिए अपने पाँवो मे एक कील से घाव कर लिया था और लगडाता और मुह ही मुह गालियाँ बकता हुआ घूम रहा था। वह कागज़ की छोटी छोटी सकरी पट्टियाँ खिडकियो पर तिरछी तिरछी चिपकाने के लिए तैयार कर रहा था जिससे कि गोलाबारी से खिडकियो के काच न टूटने पायें। इवान पकरातोव ने प्रेस मे आते-जाते खिडकियो के शीशो पर नज़र डाली और बोला कि उनकी अच्छी तरह सफाई की जानी चाहिए क्योकि उनके अन्दर से ज़रा भी प्रकाश अन्दर

नहीं आ पाता था। मिश्का ने उसे तड़ से जवाब देते हुए कहा कि उस दिन सुबह ही उन्हें अच्छी तरह से साफ किया गया था किन्तु बरसात ने उन्हें फिर धुंधला बना दिया था। बूढ़ा इवान बिना किसी परेशानी के निश्चिन्त भाव से खिड़कियों को देखता रहा—यद्यपि वे उसे मुश्किल से ही दिखलायी पड़ती थीं। यकायक कस्बे का सैनिक कमाण्डर, तुलुम्बाएव प्रेस के द्वार पर आ पहुँचा।

तुलुम्बाएव कुछ झुका हुआ, एक पक्के इरादे वाला आदमी मालूम पड़ता था। अपने हाथ से साफ सुथरे अक्षरों में लिखा हुआ कागज़ का एक ताव वह हाथ में लिये था। उसमें कहा गया था कि सूचना मिली है कि जनरल कासीमिरोव के नेतृत्व में बासमाची और अटामान (कज्ज़ाकों के मुखिया) की फौज रेगिस्तान के रास्ते से नगर की तरफ बढ़ती आ रही है। डेढ़ या दो घण्टे के अन्दर वे हमारी खाइयों के पास पहुँच जायेंगी। क्रान्तिकारी समिति प्रेस मजदूरों से कहना चाहती है कि नगर का भाग्य उन्हीं के हाथों में है। कज्ज़ाकों के क्लब में एक मीटिंग बुलायी गयी थी, किन्तु कज्ज़ाकों ने उसमें आने से मना कर दिया था। उन्होंने कहा कि जब तक केन्द्रीय सरकार के पास से आये तार में की गयी घोषणा को छपवा कर सारे नगर में नहीं चिपकवा दिया जाता तब तक ऐसी किसी मीटिंग में वे नहीं आयेंगे। केन्द्रीय सरकार की घोषणा में कहा गया था कि समस्त चरागाहों और गोचर भूमियों पर कज्ज़ाकों तथा तुर्कमीनियाइयों का बराबर अधिकार होगा। अब इतना समय नहीं है कि स्टीमर तक जा कर छापाखाने के कर्मियों को वापस लाया जाय। और, दरअसल तो, ऐसा भी कोई आदमी नहीं था जिसे स्टीमर तक भेजा जा सके। उन्हें तो फ़ौरन बात करनी थी, फ़ौरन कदम उठाने थे। तुलुम्बाएव ने बूढ़े प्रेस मजदूर को घोषणापत्र का मूल पाठ पकड़ा दिया।

तुलुम्बाएव ने पूछा "इसको मैं कितनी देर में आऊँ?"

"चालीस मिनट बाद !" इवान पकरातोव ने जवाब दिया।

कमाण्डर ने उससे हाथ मिलाया, सलाम के लिए सादर अपनी टोपी का स्पर्श किया, और तेजी से वहाँ से चल दिया। उसके प्रत्येक हाव-भाव से दृढ संकल्प झलक रहा था। बाहर अब भी फुहार पड रही थी! ऊपर से सन्नाटा था, किन्तु नगर म गडबडी शुरु हो गयी थी। व तय नही कर पा रहे थे कि मशीनो को कहा लगायें—कार्यकारिणी समिति की इमारत पर या नगर के बाहर की बनी खाइया म! सडको पर रास्ता रोकने के लिए तार खीचा जा रहा था।

इवान पकरातोव घोषणा पत्र को अपन हाथो मे लिये चुपचाप खडे थ। सामने उन्ह ठोस धूम वर्णी कागज का केवल एक एसा ताव दिखलायी द रहा था जिस पर सुदृढ अक्षरो मे कुछ लिखा था। यकायक और अकारण उनकी गदन मे दद होन लगा और उनकी कनपटिया तीव्र पीडा से फटने लगी। दद इतना तेज था कि पीछे मुडना भी उनके लिए कठिन हो गया। मिश्का उनके सामने भयभीत मुद्रा म खडा घिघिया रहा था और जोरो से हाथ मल रहा था। खुद अपने घिघियान की आवाज से आतंकित होकर उसन पर पटकने शुरु कर दिय थ। चिल्ला चिल्ला कर वह कहने लगा कि वह नही चाहता कि इस बूढे शतान की वजह से उसे गोली मार दी जाय। इस बूढे शैतान की वजह से—जो हमेशा इस बात का दिखावा करता था कि वह कम्पोज कर सकता है! उसे इस बात का दुख था कि उसने खुद कम्पोज करना नही सीखा था। आज उस इसी की सजा मिल रही थी! काश, टाइपो को कम्पोज करने के बारे में थोडा भी कुछ वह जानता होता! क्रोध से तिलमिलाते हुए और रुँधे गले से मिश्का ने इवान पकरातोव की बाँह मे अपन लम्बे और मजबूत हाथ को डाल कर जोर स उसे झकझोरा। उसे पकडे पकडे वह टाइप के केस के पास ले गया और तेजी से मेज का चक्कर काट कर वह ठीक उसके सामने खडा हो गया। कोहनियो के

सहारे स्याही लगी लकड़ी की मेज़ पर टिकते हुए इवान पकरातोव की तरफ वह झुका और ज़ोर से बोला,

"तुम्हारी वजह से हम मारे जायेंगे ! खुद हमारे ही लोग हमें गाली मार देंगे   इसे फौरन कम्पोज करो !"

कागज़ जो इवान के हाथ में था, मुड़ गया। उसमें लिखे अक्षर अन्तर्धान हो गये। अचानक उसे अपनी बूढ़ा की याद आ गयी जो कुछ ही दिन पहले स्वर्ग सिधार गयी थी। अपने आखिरी क्षणों में, दयनीय भाव से उसकी ओर टकटकी लगाये हुए वह बोली थी   इवान पकरातोव, तुम गैडफ्लाई (गोमक्षी) की तरह हो   तुम चिड़िया की तरह उड़ते हो, शेर की तरह गरजते हो   ।' वह और भी कुछ कहती, किन्तु उसकी आँखों में आँसू भर आये। उस समय उन आँसुओं को देख कर इवान सचमुच आश्चर्य चकित हो गया। उसने यह मतलब लगाया था कि बूढ़ा मरना नहीं चाहती थी कि जीवन से विदा लेने में उसे दुःख हो रहा था। और अब, जबकि कम्पोज करने के लिए लिखी उस कापी को जिसे वह पढ़ नहीं पा रहा था, हाथ में लिये वह खड़ा था—उसने अनुभव किया कि वह बहुत दिनों से अपने को धोखा देता आया था और दूसरों ने भी उसके साथ सहानुभूति दिखलाते हुए उसको धोखे में रखा था। विभिन्न अवसरों पर हुई बातचीत के जो टुकड़े उसके कानों में पड़े थे उनके अर्थ उसे स्पष्ट हो गये और वह समझ गया कि डिस्ट्रीब्यूट (वितरित) करने के लिए क्यों सदा ही इतना कम टाइप रहता था और क्यों उसके कम्पोजीटर साथी उसके कहते रहते थे कि काम बहुत थोड़ा है। और, इसलिए वह आराम से बैठा रह सकता है, अथवा घर जाकर आराम कर सकता है ! इवान पकरातोव कभी-कभी बाहर चला भी जाता था और यह सोचता हुआ शहर में घूमता फिरता था कि जिन्दगी भर उसने बहुत काम किया है और अपनी वृद्धावस्था में अब अच्छी तरह अर्जित की हुई छुट्टी का उपभोग करने का उसे कुछ

अधिकार है। और अब पता चला कि उस, उस बकवासी और डींग मारने वाले बूढ़े को, उसके साथियों ने बिना किसी कारण ही प्रेस में रख रखा था, उसके एवज में उन्होंने काम किया था और उसे खाने पीने को दिया था और अब उसकी असहायावस्था के कारण, उसके कारण उसका थका हुआ दिल धड़कने लगा। उसकी वजह से नगर शत्रुओं के हाथ में चला जाय यह किसी तरह नहीं होने दिया जा सकता!

मिश्का की चीख पुकार का कोई अन्त नहीं था।

वह फिर चिल्लाया, "इसे फौरन कम्पोज करो!" उसके मुँह से गालियों की बौछार जारी थी।

इवान पकरातोव ने टाइप के एक केस का—ऊपर से तीसरे नम्बर पर रखे केस को—पूरी ताकत लगाकर बाहर खींचा। मेज झटके से हिल उठी। इवान ने अपनी स्टिक को हैंड बिल की चौड़ाई के बराबर फिट किया और टाइप के केस को मेज की तरफ घसीटा। केस जोरों से मेज पर आ गिरा। उसने तुरन्त "स" अक्षर को केस से निकाला—सारे घोषणा-पत्र 'स" अक्षर से ही आरम्भ होते थे। लेकिन तभी उसे ऐसा लगा कि उसने 'स' को नहीं, बल्कि उसके पहले या बाद के अक्षर का केस से निकाल लिया था। उस अक्षर को वह घूर-घूर कर देखने लगा। वह एकदम धूमिल, मैला-कुचैला ऐसा दीख रहा था जैसे कि बिलकुल छिन गया है, घिस गया है। असहायावस्था में इवान ने खिड़की की तरफ दृष्टि डाली। उसे लगा कि उसे भी किसी ने घिस कर मटमैले गुलाबी रंग का बना दिया है। अक्षर को उठाकर वह अपनी आँखों के और नजदीक ले गया। अक्षर की स्पष्ट और अपठनीय रूपरेखा उसकी अँगुलियों के बीच में दमक उठी, उसके इर्द गिर्द जो कोहरा छाया हुआ था उसके अन्दर से वह कुछ अजब ढंग से चिकना और नया मालूम पड़ने लगा। किन्तु वह अक्षर कौन सा था यह वह नहीं बतला सकता था उसे उसका कोई आभास नहीं था! 'स्टिक' (कम्पोजिंग की चाब) उसके हाथों में काँप उठी।

कोई आभास नहीं था ? इसका अर्थ था कि वह कुछ नहीं कर सकता था ! उन मजदूरों और गरीब किसानों की मदद के लिए, जो समाजवादी क्रांति की हिफाजत कर रहे थे वह, प्रेस मजदूर, एक पुराना मजदूर, कुछ भी नहीं कर सकता था ! क्या वह, एक पुराना मजदूर, अक्षरों को देखने पहचानने की इतनी भी शक्ति नहीं बटोर सकता था ? क्या इन क्षणों में जिनमें अनेक सोवियत नागरिकों के भाग्य का निर्णय होने जा रहा था, वह कुछ भी नहीं कर पायेगा ? उसकी इच्छा-शक्ति क्या सचमुच इतनी कमजोर हो गयी है ? यह नहीं हो सकता ! ऐसा नहीं होने दिया जा सकता !

उसका मस्तिष्क तेजी से काम कर रहा था। उसके बदन में एक कँपकपी भर गयी। उसका माथा जल रहा था। गला सूख गया था। वह काम को जरूर पूरा करेगा ! चाहे जिस तरह हो, उसे जरूर पूरा करेगा ! अक्षरों को देखने की शक्ति वह जरूर अपने में पैदा करेगा !

फिर जैसे उसके मस्तिष्क में अचानक लपटें उठने लगीं। सृजनात्मक प्रयास की खुशी से अचानक उसकी कमर सीधी हो गयी। आँखों से अश्रु बहने लगे। लगा कि उन आँसुओं के साथ उसकी आँखों में छाया हुआ कुहासा भी धुल गया। टाइपों का केस और अक्षर सब अब उसे एकदम स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे ... ।

"साथियो !" अपनी जिंदगी में यही पहला शब्द था जो उसे कम्पोज करना था। इसे वह सबसे बड़े टाइपों में कम्पोज करेगा।

जिस अक्षर को वह हथेली पर लिये था वह अब उसकी अँगुलियों में पहुँच गया। उसकी अँगुलियाँ अचानक बहुत तेजी और फुर्ती से काम करने लगी थीं। उनपर उसकी नजर पड़ी तो उसे लगा कि उनपर जो झुर्रियाँ पड़ गयी थीं उन्हें उसने देखा ही नहीं था। किन्तु यह समय झुर्रियों के बारे में सोचने का नहीं था। जब उसे स्पष्ट नहीं दिखलायी दे रहा था तब "स" अक्षर के बजाय उसने उसके बगल के खाने से

दूसरा अक्षर उठा लिया था। अब उस अक्षर को उसने उसके खाने मे वापस डाल दिया।

'गल्ती हो गयी थी," उसने कहा। उसके हाथ ने टाइप के केस और स्टिक के बीच एक अर्द्ध चक्र-सा बनाते हुए 'स" अक्षर को उसके खान से मजबूती से पकड कर निकाल लिया। उसमे मात्रा जोडकर उसने सा' बनाया। उसके बाद 'थि' कम्पोज किया, और फिर 'या' को।

मिश्का टाइप केस के पास मे टहलता हुआ डरते–डरते प्रेस मे इधर-उधर नजर दौडाने लगा। घबडाहट मे अचानक उसने अपने बालो पर हाथ फेरा और उन्हे ठीक किया, और फिर छापने के लिए फर्मा तयार करने मे जुट गया। इवान की गैली से घोषणा-पत्र के कम्पोज किये हुए अंशो को वह फर्मे मे बठाने लगा। फर्मे को तैयार करके छाप की मशीन मे फिट कर देने के बाद ही छपाई के काम को शुरू किया जा सकता था। प्रारम्भ म मिश्का न सबसे साफ सुथरे फर्मे का ढूढ कर काम करना प्रारम्भ किया। फिर द्वेषपूर्ण ढग से आँख मार कर वह मन ही मन बुडबुडाया, 'मैं जानता हूँ यह बूढा काहिल हो गया है वह सिर्फ मक्कर करके हम सब को मूख बना रहा था।" मिश्का ने बढिया फर्मे को रखकर अब सबमे गन्द और जग लगे फर्मे को उठा लिया। किन्तु इवान पकरातोव तो आनन्द और उल्लास की एक नयी ही दुनिया मे पहुँच गया था। खुशी के मारे उसे एक प्रकार का दर्द हो रहा था (उसकी छाती म मीठा–मीठा–सा दद पैदा हो गया था और उसकी कनपटियाँ फडक रही थी)। टाइपो की एक स्टिक के बाद दूसरी वह तेजी से गैली म बैठाता जा रहा था। एक बार उसे लगा कि वह एक शब्द छोड गया है, उसने उसे चेक किया, घोषणा पत्र के पाठ से मिलाया और पाया कि सब-कुछ सही था। उसने फिर स्टिक मे टाइप जमाना आरम्भ कर दिया। उसे फिर लगा कि उससे कोई बहुत

महत्वपूर्ण शब्द छूट गया है। उसने फिर चेक किया। फिर गैली में लग टाइप को मजबूती से बाँध दिया, गैली को हैंड प्रेस में फिट किया, और प्रेस के हैंडिल को खींचा। रोलर घूमा और टाइपों पर स्याही लग गयी! इवान के हाथ पसीना-पसीना हो रहे थ, उसका चेहरा गर्मी और पसीने से तमतमा रहा था।

दीवालों म चिपकाने वाले कागज के एक ताव को हैंड प्रेस म लगाते हुए (घोषणा पत्र को छापने के लिए उनके पास केवल दीवालो पर चिपकाने वाला यह वाल पपर ही था) मिश्का जोर से चिल्लाया, चलाओ!

इवान पकरातोव ने खुद अपने द्वारा कम्पोज की गयी गैली का प्रूफ निकाला और उस देखने लगा। आज वह कितने वर्षों के बाद प्रूफ देख रहा था? किंतु आज उसके पास पुरानी बातों को याद करने का समय नहीं था! मिश्का बराबर जल्दी करने के लिए चिल्ला रहा था।

इवान काका जल्दी स प्रूफ देखो!'

प्रूफ मे उसे एक गल्ती मिली—'इ" की जगह 'ए" लग गया था। वह उसे चिमटी से निकाल कर बदल देना चाहता था, किंतु तभी अचानक उस लगा कि चिमटी की नाक दिखलाई नहीं दे रही है। हैंड प्रेस का हैंडिल दीख नहीं रहा है। पहले उसकी अंगुलियाँ और फिर उसका पूरा हाथ कुहासे म खो गया ह। चिमटी को उसन प्रेस पर डाल दिया और प्रेस की मुठिया को मजबूती से पकडकर छापे खाने म चारो तरफ वह नजर दौडाने लगा। लेकिन अब तो छापा खाना भी कहीं नहीं दिखलाई दे रहा था! एक धुंधले लाल लाल कुहासे क अलावा उसे और कुछ नहीं अब दीख रहा था।

उसने कहा, "मिश्का, कागज लगा दो।'

मिश्का न हल्के से सीटी बजायी और इवान स कहा प्रेस को चालू करो।' इसी समय घोषणा पत्र को लेने के लिए कुछ सैनिक दौडते हुए

छाप खाने के अन्दर आ गये । उन लोगो ने छपे **घोषणा पत्र** की सारी प्रतिया—सत्तर प्रतियाँ—सैनिकों को सौंप दी । एक प्रति अपने लिए रखना भी वे भूल गये ! आध घण्टे बाद खाइया कज्जाका से भर गयी । मशीनगनों को रेगिस्तान की तरफ लगा दिया गया ।

बासमाचियों के गिरोह पीछे की ओर भागने लगे । पाच घण्टे बाद वह स्टीमर भी नयी नयी खोदी गयी नहर के द्वारा आमू दरिया मे पहुँच गया । सारे नगर मे खुशिया मनाते हुए स्टीमर का अभिनन्दन किया गया । लोगो ने इवान पकरातोव की बाहो को पकडा और उसे स्टीमर का स्वागत करने के लिए ले गये (वे उसे क्या और किस प्रकार वहा ले जा रहे थे इसकी तरफ इवान का ध्यान ही नही गया) । स्टीमर को देखकर कज्जाका ने एक आवाज मे और किसी कदर अकड के साथ, "हुर्रा !" कहा । पानी अब भी बरस रहा था और उसकी छोटी छोटी बूदें इवान के चेहरे पर पड रही थी ।

"देखते हो वह कितना बडा जहाज है ?" किसी ने उससे पूछा ।

हा, देखता हूँ ।" इवान ने उत्तर दिया—यद्यपि उसके सामने कोहरे का अन्तहीन सागर ही फैला था । उसके बीच मे उसे केवल नन्हा सा चमकता हुआ एक गोला दिखलायी दे रहा था—सूरज का गोला ।

अब्दुल्ला कहार

अब्दुल्ला कहार एक फेरी वाले लुहार के बेटे थे। उनका जन्म उज़्बेकिस्तान के एक प्राचीनतम नगर काकांद में १९०७ में हुआ था। उनका बचपन फरग़ाना की घाटी के गाँवों में बीता था। उनका पिता, जो एक खानाबदोश था, वहीं काम करता था।

अब्दुल्ला अपने पिता से अधिक सौभाग्यशाली थे, क्योंकि वहाँ पर खुलने वाले पहले देहाती सोवियत स्कूल ने—जिसका अत्यन्त आकर्षक नाम 'भविष्य' था—उन्हें एक नये जीवन की राह पर लगा दिया था।

पत्र-पत्रिकाओं में अब्दुल्ला की रचनाएँ सबसे पहले १९२८ में प्रकाशित हुई थीं। बाद में उन्होंने अखबारों में काम किया। उनकी कहानियाँ सोवियत साहित्य नामक पत्रिका में छपीं। अनेक वर्षों तक वह उज़्बेक लेखकों के संघ के अध्यक्ष थे।

उनकी कहानियों का सोवियत संघ की अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

अब्दुल्ला कहार अनुवादक के रूप में भी बहुत प्रसिद्ध हैं। गोर्की, पुश्किन, गोगोल की रचनाओं का तथा लेव तोलस्ताय के महान उपन्यास 'युद्ध और शान्ति' का उन्होंने अनुवाद किया है। उन्हें सोवियत संघ तथा उज़्बेक गणतन्त्र के अनेक साहित्य पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

अन्धे को ज्योति देने वाला

मुल्ला उमर, क्या यह तुम ही हो ?
क्या वह तुम ही हो—शिकारी का तीर जिसकी प्रतीक्षा कर रहा है ?
—एक पुराने गीत की पंक्तियाँ

और इस तरह अहमद पहलवान मौत की प्रतीक्षा कर रहा था। शायद यह कहना ज्यादा सही होगा कि मौत अहमद पहलवान की प्रतीक्षा कर रही थी । उसकी परलोक जाने की रत्ती भर भी ख्वाहिश नहीं थी लेकिन मुश्कें बाँध कर और एक गट्ठे की तरह लपेट कर एक भेड की भाँति उस उस सार्जेंट के बगल में रख दिया गया था जिसे हुक्म दिया गया था कि उसे जान से मार दे। फिर वह कैसे 'हाँ या नहीं' कह सकता था ? उसे प्राण दण्ड देने के लिए जो आदमी तय किया गया था वह ठिगना, किन्तु गठे हुए बदन का एक नौजवान था। पहलवान को जब उसने धक्का दिया तो एक पतले नरकुल की तरह वह दूसरी तरफ झुक गया और पीठ के बल लुढ़क गया। पीठ की तरफ बँधी मुश्कें उसके शरीर के नीचे दब गयीं।

जल्लाद ने जोर में लात मारते हुए उससे कहा, 'उठ, खडा हो।"

लडखडाता हुआ पहलवान खडा हुआ तो अपने कंधों को हिला-डुलाकर उसने यह जानने की कोशिश की कि कुछ टूट तो नहीं गया है। लेकिन तभी कडुवाहट भरे मन से अचानक उसने सोचा कि अब किसी

अग में मोच आ जाने या उसके टूट जाने का मतलब ही क्या रह गया है।

जल्लाद ने पहलवान को फिर एक धक्का दिया। यह धक्का उतने ज़ोर का नहीं था, लेकिन इतने ज़ोर का तो था ही कि लडखडाता हुआ वह मिट्टी के उस चबूतरे के सामने पहुंच गया जहाँ गाव तकिये के सहारे गिरोह के सरगना—खान कुर्बाशी का सर टेढा तिरछा टिका हुआ था। कुर्बाशी एक धारीदार, निहायत गन्दा और चिकनाई से सना चोगा पहने था। उसके दाहिने गिरोह का मजहबी गुरु आलिम बैठा था और उसके बायें था पीले चेहरे वाला हिन्दुस्तानी डाक्टर, तबीब। गाव-तकिये के पीछे थोडी सी जगह निकाल कर मकान का मालिक जम गया था। मकान मालिक एक छोटा, नाटा, परेशान सा एक बुड्ढा था जो चमगीदड की तरह दिखलायी देता था।

कुर्बाशी ने थोडी ही देर पहले पुलाव एक पूरा थाल साफ कर दिया था। उसके चेचक के दागों से भरे गालों पर अब भी पुलाव की चर्बी जगह-जगह लगी थी और उसकी घनी बेतरतीब और गन्दी दाढी में चावल के दाने चिपके हुए थे। उसकी खूखार नजर के सामने बहादुर से बहादुर इन्सान भी भय से कांप उठता था, लेकिन इस वक्त जब कि खाने से उसकी तोंद फूल रही थी वह बेजान जैसा हो गया था और उसमें कोई दम खम नहीं मालूम पडता था। उसके आधे शरीर की सारी मांस पेशियाँ जबरदस्त नींद की गिरफ्त में था। अपने निढाल, पसरते हुए शरीर में पूरी ताकत लगाकर उसने अपने सोये गुस्से को जगाने की कोशिश की लेकिन सब बेकार!

बड़ी कठिनाई से उसने अपनी अच्छी आंख का खोलने की कोशिश की, लेकिन उसे कुछ भी नजर न आया। फिर भी कुर्बाशी ने अपने फेफड़ों में हवा भरी और गला फाडकर ज़ोर से चीखता हुआ बोला

अब आ नर के कीड़े! अपने साथियों के नाम बताने के लिए कितनी देर और हमसे इंतज़ार करवायेगा?"

अहमद पहलवान पहले की ही तरह खामोश रहा। जो कुछ कहा जा चुका था उससे ज्यादा वह बतला ही क्या सकता था ? इसम काइ शक नही कि इस्माइल अफेदी को उसन मार दिया था, लेकिन इस जुम मे उसकी कुल्हाडी के सिवा और उसका साथी कौन था !

इस्माइल को कुर्बाशी अपना खास मददगार मानता था और, इसम सदेह नही कि, वह इस गिद्ध का दाहिना डैना था ! अल्कार मजार क नजदीक लाल सितारे वाले घुडसवार की एक गोली जब इस्माइल अफेदी के सीने को चीरती हुई उसके अन्दर घुस गयी थी तब कुर्बाशी ने उस घमासान लडाई के बीच भी उसे उठाकर अपन घोडे की जीन पर रख लिया था और उसे लेकर सरपट पहाडो की तरफ निकल गया था। अगर लाल सितारे वाले घुडसवार इस बुरी तरह उसका पीछा न करते होते तो यकीनन अपन वफादार नायक को कही उतार कर कुर्बाशी उसके घावो को बाध देता, लेकिन लोहे के नुकीले टोप पहने लाल घुडसवार, इस तरह उसका पीछा कर रहे थे कि एक लम्हे के लिए भी कही रुकना—अपने साथ साथ अपने दूसरे साथियो को भी मौत का निमन्त्रण देना होता !

कुर्बाशी जब पहाडो के बीच के उस गाव मे पहुचा जिसम अहमद पहलवान रहता था तब तक अच्छी खासी रात हो गयी थी और उसके आधे घुडसवार सिपाही खेत आ चुके थे। इस्माइल अफेदी के बदन मे बराबर खून बह रहा था। उसने कुर्बाशी से दरखास्त की कि अब और आगे कही वे लोग उसे न ले जायें बल्कि वही किसी भरोसे के आदमी के घर म उसे छोड दें।

उस गाव म कुर्बाशी के दो तीन ऐसे अनुयायी थे जिन पर उसका बहुत भरोसा था। लेकिन अफेदी को उनमे किसी के घर मे नही रखा जा सकता था, क्योकि वे सब रईस सरदार थे और कुर्बाशी इस बात को बखूबी जानता था कि लाल सितारे वाले सैनिक उस वक्त सभी

रईसों और सरदारों के खिलाफ थे। कुर्बाशी ने अक्लमन्दी से सोचा कि अफेन्दी को छिपाने के लिए सबसे महफूज जगह किसी गरीब आदमी का मकान होगी। तभी उसने तय किया कि मरते हुए अपने साथी को पहलवान की मुफलिस झोंपड़ी में वह रख दे।

अहमद पहलवान ने अफेन्दी को कुर्बाशी के हाथों से अपने हाथों में सम्हालते हुए उससे वादा किया कि वह उसकी देखभाल करेगा बल्कि वह इस बात का भी इन्तज़ाम करेगा कि वह चुपचाप शांतिपूर्वक आराम कर सके। रात के घने अंधकार में कुर्बाशी और उसके घुड़सवार साथी दूसरी सुरक्षित जगहों की तलाश में निकल गये। अभी उनके घोड़ों के टापों की आवाज़ कानों में आ ही रही थी कि पहलवान ने अपने वादे को पूरा कर दिया।

अहमद पहलवान ने अफन्दी के निरोग होने या मरने का इन्तज़ार नहीं किया। डरते हुए कि कहीं कुर्बाशी अपने दोस्त को ले जाने के लिए घर न लौट आये उसने घायल आदमी को पूरे तौर से शान्त कर दिया। अपनी भारी कुल्हाड़ी के एक ही वार से उसने उसे हमेशा हमेशा के लिए शान्त कर दिया।

अफेन्दी की लाश को एक गहरी खाई में दफना दिये जाने के सैंतीस दिन बाद कुर्बाशी फिर गाँव में आया। गाँव के एक सरदार ने उसे पहलवान की कारगुज़ारी की जानकारी करा दी थी। उसने अहमद पहलवान को पकड़ा, उसकी मुश्कें और शरीर को अच्छी तरह बाँधा, और एक बोरे की तरह अपने घोड़े की ज़ीन पर लटका लिया। दो दिन तक घोड़े पर इस तरह लटके लटके सफर करने से अहमद पहलवान का शरीर चूर-चूर हो गया था। लेकिन उसने लुटेरों के गिरोह के मुखिया कुर्बाशी के वफादार दोस्त और सहायक का खून कर दिया था और अब उसके ठीक चालीस दिन बाद उसे उसके जुर्म की सज़ा मिलने जा रही थी।

अब वह अपने दुश्मन के एक्दम सामन खडा हुआ उसके हुक्म का इतजार कर रहा था ।

किन्तु कुर्बाशी कुछ नही बोला, क्योकि बदला लने की भावना स जब उसने अपना भयकर क्रोध दिखलाया था तब उसने जो तनाव अनुभव किया था उससे जैसे उसके शरीर स सारी शक्ति निकल गयी थी । नीद से पराजित होकर उसका सर उसके शरीर पर नीचे झुक गया और उसके खर्राटे कुबडे आलिम, पील चेहरे वाले तबीब और छोट स चमगीदड जसे उस बूढे तक पहुचने लग ।

चबूतरे पर बैठे आलिम, तबीब और परेशानी स बराबर हिलता-डुलता वह बुडढा मालिक एक दूसरे की तरफ घबडाहट भरी नजरा से दखत रह । लेकिन उस जल्लाद और घोडो स नीचे उतर कर सामन खडे घुडसवारा की नजरा से उन्होने आख बचान की काशिश की । वे इतजार के इस खेल से थक कर परेशान हा उठे थे ।

और तब आलिम न हिम्मत बटोर कर जार से कुर्बाशी का हिलाया । वह एकदम काप उठा, उसन अपना सर सीधा किया और आसमान की तरफ नजर डाली । उसे याद आया कि सूरज डूबते डूबते उसे अपने घुडसवारो को लकर पास के एक गाव पर धावा करना है । उस गाव म कुछ विरोधी किसान है जिन्हे ठीक करने की बात वह बहुत दिना स साच रहा था, लेकिन अभी तक सजा देन के लिए समय नही निकाल पाया था । सूय काफी नीचे आ गया था और शाम होने म दो-तीन घट से अधिक देर नही थी । इसलिए कुर्बाशी ने तय किया कि उस गद्दार का सफाया करन मे अब और दर नही करनी चाहिए । उसकी जो आँख अच्छी थी वह भेडिये की आख की तरह चमकती हुई अहमद पहलवान के चेहरे को घूरने लगी ।

पहलवान डरा नही और न अपनी थकी, किन्तु सकल्प से दढ आँखो को उसन नीचा किया । वह निभय भाव से उसकी तरफ देखता रहा ।

अपने भारी शरीर को पूरी ताक्त स सीधा करत हुए कुर्बाशी ने चीख कर कहा

अवे, ओ गन्दे दहरिये ! क्या तू सोचता है कि तेरी ज़िन्दगी बच जायेगी ? तू दखता नही कि तेरे पीछे जल्लाद खडा हुआ है ! '

पहलवान न अपनी सूजी हुई अँगुलिया को, जा हाथा क साथ उसके पीछे बँधी हुई थी मोडने की कोशिश की और डाकुओ के सरगना कुर्बाशी की आँख म आँख डाल कर अपलक और अडिग भाव से उसकी तरफ दखने लगा। थोडी दर बाद वह बोला, "मेरे शाहशाह ! मुझे जो कुछ कहना था मैंने कह दिया और अब कुछ बाकी नही है। अफग़ानी गरीबा की जान लता था मैंने उसकी जान ल ली और अब तुम मरी जान लन जा रहे हो लेकिन, इसस पहल कि मेरी ज़िन्दगी का चिराग बुझ मैं एक एसा काम करना चाहता हूँ जिसस अल्लाह खुश होगा और मरे ऊपर करम क -- ।'

"अबे, जो गधे ! खबरदार अगर तूने उस पवित्र नाम को अपनी गन्दी ज़बान पर आन दिया तो ! कुर्बाशी न धमकाते हुए उससे कहा।

नही शाहशाह ! कुफ की बात मैं कस साच सकता हू ? अपने आखरी वक्त म अब मुझे कुछ और ही सोचना चाहिए। आ समझदार शाहशाह मैं तुझ स दस्तबस्ता दर्खास्त करता हूँ कि मुझे एक ऐसा काम करन की तू इजाजत दे जिससे अल्लाह को खुशी होगी और जिससे तेरा भी फायदा होगा।" पहलवान ने उदास भाव स मुस्कराते हुए कहा।

कुर्बाशी खूखार लहजे मे दहाडा मरा तू क्या फायदा कर सकता है ? '

'मेरे शाहशाह तू बबर शेर की तरह बलवान है और मैं मधुमक्खी की तरह कमजोर हूँ। लेकिन तुझे क्या याद नही कि मधुमक्खी

की पर्वाह न करने की वजह से बबर शेर मरते-मरते बचा था ? ओ, बनी बादशाह ! मेरा तिरस्कार मत कर । मैं तुझे एक रहस्य बतलाऊँगा।"

कुर्बाशी का चेहरा विकृत हो उठा—इसका पता लगाना मुश्किल था कि गुस्से से या हँसी से। लेकिन अपने को सम्हालते हुए वह जम्हाई लेने लगा। कुर्बाशी अब और बात नहीं करना चाहता था। गुस्से भरे स्वर मे उसने कहा,

'अबे कुत्ते, मैं तेरी चाल अच्छी तरह समझता हूँ ! '

'अभी तू मुझे एक आँख मे देखता है, लेकिन खुदा ने चाहा तो तू मुझे दोनों आँखों से देख सकेगा! ! " पहलवान ने आहिस्ता, पर मजबूती से उसे टोकते हुए कहा।

कुर्बाशी के चेहरे के गुस्से और परेशानी को देखकर उसने जोड़ा, 'मेरे शाहंशाह, तेरी बाँयी आँख की ज्योति इसलिए चली गयी है कि उस पर काला पानी पड़ गया था। लेकिन मैं तेरी अंधी आँख मे फिर ज्योति वापस ला सकता हूँ, क्योंकि अंधों को चंगा करने का रहस्य मुझे मालूम है।"

भारतीय तबीब (चिकित्सक) ने जब 'चंगा करने" की बात सुनी तो वह एकदम चौकन्ना हो गया। उज्बेक जवान को वह ठीक से नहीं समझता था, इसलिए बगल मे बैठे आलिम से उसने पूछा कि यह आदमी क्या कह रहा है।

उज्बेक भाषा मे अरबी के शब्दों को जोड़ते हुए आलिम ने उसे पहलवान की बात समझाई। उसकी बात सुनते ही तबीब का उपेक्षा-भाव एकदम दूर हो गया और वह पहलवान की तरफ ध्यान पूर्वक देखने लगा। उसने सोचा कि, "बिला शक, यह आदमी झूठ बोल रहा है।" लेकिन फौरन ही उसे अपने शक पर शक होने लगा।

उसने अपने से पूछा, 'मान लो, इस झूठे आदमी की बात में कोई सचाई हुई तो ?'

कुर्बाशी यकायक तबीब की तरफ मुखातिब हुआ। उसने कहा,

"तबीब, इस आदमी के रहस्य को मैं तुम्हें इनाम में देता हूँ। लोगों को निरोग करने के हुनर को तुम बहुत नहीं जानते क्योंकि अपने शरीर से ही तुम उस मर्ज को दूर नहीं कर पाते जो हफ्ते में तीन बार कपकँपी के साथ तुम्हें धर दबोचता है और शैतान जैसे किसी गुनहगार को हिलाये उसी तरह तुम्हें हिलाता है। अंधों को आँख देने के इस रहस्य को तुम जान लो—हो सकता है इससे तुम्हारी काबलियत कुछ बढ़ जाय।'

यह कह कर कुर्बाशी ठहाका मार कर हँसने लगा। हँसते हँसते वह उन गाव-तकिया पर वहीं लुढ़क गया जो उस घर के मालिक ने ठीक वक्त पर उसकी पीठ के पीछे लगा दिये थे। कुर्बाशी को इतने जोर से हँसी आ रही थी कि उसकी भारी तोंद और भी फूल उठी और अगर टिकने के लिए उसे तकिया का सहारा न मिल गया होता तो सम्भव था कि उसका पेट फूट ही जाता। कुर्बाशी को हँसी का जो दौरा आया था उसका दूसरा पर भी असर पड़ा। कठोर मुद्रा बनाये रखने वाले आनिम के चेहरे पर भी एक मुस्कराहट फैल गयी। घर के छोटे, ठिगने, बूढ़े मालिक ने, जिसकी शक्ल चमगीदड़ जैसी लगती थी मुँह खोला तो वह खुला ही रह गया। इस बेहूदा हँसी में सिर्फ तबीब नहीं शामिल हुआ। आखिरकार, कुर्बाशी शान्त हुआ। उसका हाँफना रुका तो उसने कहा, इस कमीने जाहिल की बकवास सुनते सुनते मैं थक गया हूँ। तबीब अब तुम मुझसे बात करो।

'कुर्बाशी ने तकिया को ठीक करके आराम से अपने बदन को फैला लिया, रूमाल से अपने चेहरे के पसीने को पोंछा, और फिर तिरछी तथा

बन्मजर से देखते हुए कहा, 'चूहे को पकड लेने के बाद बिल्ली फौरन नहीं उस मार डालती ! वह पहले उसके साथ खेल करती है　　इसी तरह हम भी इसके साथ थोडा-बहुत खेल कर सकते हैं, क्यो तबीब '

उत्तर मे तबीब ने हुँकारी भरी और फिर वह पहलवान की तरफ मुडा। सख्ती स उसने उससे पूछा,

'तुमन एक भी अधे आदमी की आँख कभी अच्छी की है ?

"नही, अहमद पहलवान ने साधारण भाव स जवाब दिया।

'मन खुद कभी किसी आदमी की आँख नही अच्छी की है लकिन मर पुराने उस्ताद न जरूर एक अधे आदमी की आंख में रोशनी फिर स वापस ला दी थी। वह अन्धा आदमी देखने लगा था और मेरे उस्ताद क आख की राशनी चली गयी थी और वह मर गये थ।"

वह मर किसलिए गय ?"

"वह मर गय थ, क्योकि अपनी आख की ज्योति उन्होने उस अधे का दे दी थी।"

अहमद पहलवान अपनी ठिठुरी हुई अगुलियो को फिर सहलान लगा। इसके बाद शान्त भाव से उसने कहा 'शाहजादे की अधी आँख को अपनी ज्योति दन के बाद मैं भी अन्धा हो जाऊँगा।"

तबीब न यह जतलाने की कोशिश की कि पहलवान के इस उत्तर स उस जरा भी आश्चय नही हुआ था। फिर उसने और भी अधिक कठोरता स पूछा, "तुम्हारे उस्ताद का क्या नाम था ?"

पहलवान ने कहा कि अपने उस्ताद का नाम बाद मे उस वक्त वह बतलायेगा जबकि सबके सामने यह साबित हो जायेगा कि वह, अहमद पहलवान, सचमुच आख की खोई ज्योति को फिर वापस ला सकता है।

तबीब ने फिर सर हिलाया और अपने विचारो में खो गया।

यद्यपि थोड़ी-बहुत डाक्टरी करना उसे आता था, किन्तु उस वक्त ज्ञान के बजाय अंध विश्वास ही अधिक उसके दिमाग पर छाया हुआ था।

उसे लगा कि पहलवान जो कुछ कह रहा था वह हो नहीं सकता था, वह बिल्कुल ग़लत चीज थी, किन्तु उसे याद आया कि उसके उस्तादों ने उसे बहुत पहले ही इस बात की ताकीद की थी कि प्रकृति में मुमकिन और नामुमकिन के बीच कोई मजबूत विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती। सिर्फ उस बे दिमाग़ कुर्बाशी की तरह का ही कोई मूर्ख आदमी यह कह कर तबीब का मजाक उड़ा सकता है कि जब खुद अपने को मलेरिया के मर्ज से वह नजात नहीं दिला सकता तो दूसरा का वह क्या इलाज करेगा। बीमारी के सामने तो बड़े से बड़े हकीम भी सर झुकाने के लिए मजबूर होते हैं। किन्तु जो चीज जानकार और ज्ञानी लोगों को नहीं मालूम है, वह क्या किसी अजानकार और अशिक्षित आदमी को मालूम हो सकती है?

तबीब ने पहलवान के ऊपर एक नजर डाली। फिर उसने एकदम फैसला कर लिया कि चाहे जो हो इस अवसर को हाथ से वह जाने नहीं देगा।

एक ऐसी भाषा में रुक-रुक कर बोलते हुए जो उसके लिए अजनबी थी पहलवान से उसने पूछा, 'कुर्बाशी की आँख को अच्छा करने के लिए तुम्हें किन जड़ी-बूटियों की—जरूरत होगी?'

पहलवान ने उत्तर दिया कि दवा के लिए उसे छै "फारगेट मी-नाट" नामक फूलों की दो पर्णाभ (परसिमन) नामक फलों की, एक अण्डे की, और एक चम्मच दही तथा कुछ सफेद जीरे की जरूरत होगी। उस बूढ़े सामन्त के घर में "फारगेट मी-नाट" के फूलों के अलावा सब कुछ मौजूद था। एक घुड़सवार को तुरन्त 'फॉरगेट-मी-नॉट" के फूलों को लाने के लिए रवाना कर दिया गया।

तबीब ने पूछा, "इनके अलावा और किसी चीज की तो तुम्हें जरूरत नहीं है?"

पहलवान ने कहा, "हां। मुझे एक तांबे की डेगची और। मोमबत्ती की भी जरूरत होगी।"

बुड्ढा सामन्त इन सब चीज़ों को ले आया। पहलवान ने क कि मोमबत्ती को ऐसी जगह रख दो जहाँ वह कुर्वाशी की अंधी आख एकदम सामने हो। उसने आदेश दिया कि डेगची को चूल्हे पर र दिया जाय और उसमें दो प्याला पानी डाल दिया जाय।

इस काम को भी कर दिया गया।

डेगची का पानी जब उबलने लगा तो पहलवान ने तबीब से क कि उसमें वह शहद और अण्डे को तोड कर डाल दे और बाद में पर्णा के फूल तथा सफेद ज़ीरे को भी उसमें मिला दे।

पहलवान ने कहा कि डेगची के पास जो घुडसवार बैठा हुआ क्ष को तैयार कर रहा था उस "फॉरगट मी-नॉट" फूलों को भी दे दि जाय। "फॉरगेट मी नॉट' के फूल जब उस घुडसवार के हाथ में पहु गये तो पहलवान ने उसे हुक्म दिया, 'छै फूलों को गिनकर काढे डाल दो।"

तबीब बहुत सावधानी से पहलवान के कामों पर नज़र रख रह था। वह मन ही मन इस बात को याद करने की कोशिश कर रह था कि पहलवान कौन सा काम किस क्रम से करता है। किन्तु, उसक मन में अभी सन्देह भरा हुआ था।

वह सोचने लगा, 'काश यह आदमी सचमुच कुर्वाशी की आख की ज्योति वापस लाकर यह साबित कर दे कि वह इस हुनर क जानता है।" इसके बाद वह गिनने लगा कि इस हुनर के रहस्य को जान जाने के बाद उसे क्या क्या फायदे होंगे। सबसे पहले तो फिर उसे कुर्वाशी के रहमोकरम पर नहीं जिन्दा रहना होगा। बिना किसी के खंजर या गोली की मदद लिए हुए, जहर देकर वह उस कम्बख्त से छुटकारा पा लेगा। इतना महान रहस्य जानने वाले इन्सान के लिए

हिंदुस्तान के किसी भी नगर के द्वार खुशी-खुशी खुल जायेंगे। जिस भी शहर में मैं जाऊँगा वह अपने को खुशकिस्मत समझेगा। तब फिर मुझे इस क्रूर डकैतराज का आश्रय लेने की क्या जरूरत रह जायगी? इतना ही नहीं, तब तो वह अपने वतन को भी लौट जा सकेगा—उस वतन को जहां से दूसरे तबीबों ने कुत्सित षडयन्त्र करके उसे नक्काल और नीम हकीम के रूप में बदनाम करके देश निकाला दिलवा दिया था। जब वह इस तरह शक्तिशाली और प्रसिद्ध होकर दुनिया के सबसे बड़े तबीब के रूप में अपने वतन को लौटेगा तब वे तमाम बदजात ईर्ष्यालु तबीब क्या कहेंगे? अपने को दुनिया में सबसे काबिल समझने वाले हकीमों का क्या हाल होगा? वे सबके सब अपनी बेशर्म नजरों को कहाँ छिपायेंगे?

कड़ाह से नीली नीली भाप ऊपर उठने लगी थी। उसे देखते हुए उस हिंदुस्तानी तबीब के मन में इसी तरह के खयाल उठ रहे थे।

पहलवान भी कड़ाहे को देख रहा था।

नीली-नीली भाप जब ऊपर उठ कर सफेद बादलों के रूप में बदलने लगी तो पहलवान ने मुलाजिमों को हुक्म दिया कि कड़ाह को वे उतार लें और उन पत्थरों को पास ले आयें जिन्हें पानी ने कभी नहीं छुआ था।

'पत्थरों को ले आओ," कड़क कर कुर्बाशी ने हुक्म दिया। यकायक उसने महसूस किया कि पड़ोस के गाँव पर हमला करने से पहले उसे अपने घुड़सवारों को उत्तेजित और उत्साहित करने के लिए कुछ ऐसा ही अचम्भे का दृश्य दिखलाना पड़ेगा जिससे कि उन्हें अपने कुर्बाशी की अद्भुत क्षमता और शक्ति का फिर अहसास हो जाय।

तीन घुड़सवार अपने चोगों के ऊपर खुरदरे पत्थरों को उठा लाये और उन्हें अहमद पहलवान के कदमों पर रख दिया।

पहलवान ने उन्हें हुक्म दिया कि हर पत्थर को अलग अलग

उठाकर वे उसे दिखायें। अन्त में, उसने सात-आठ पौण्ड के वजन के एक पत्थर को चुना।

उसने कहा, "मैं पक्के तौर से नहीं कह सकता कि इस पत्थर का पानी ने कभी स्पर्श नहीं किया है।" फिर उसने घुड़सवारों से कहा कि इसे घिस कर इसकी नाक को हल के नुकीले फाल की तरह बना दो।

कुर्बाशी ने पहलवान के हुक्म को दोहराते हुए कहा "जैसा वह कह रहा है वैसा ही करो।"

एक तगड़ा नौजवान घुड़सवार आगे आ गया और एक बड़ा सा हथौड़ा लेकर वह पत्थर को ठीक करने लगा।

तब पहलवान ने तबीब की तरफ देखा और कहा, "हकीम साहब अब मुझे किसी इन्सान का खून चाहिए।"

'इन्सान का खून मैं कहाँ से ला सकता हूँ ?" यह कह कर तबीब ने चिन्ता के साथ कुर्बाशी की तरफ नजर डाली।

कुर्बाशी ने पहलवान की तरफ नजर घुमाई और उसे घूरता हुआ देखने लगा।

कुर्बाशी की नजर से नजर मिलाते हुए पहलवान ने उससे कहा, "मैं तुझे खून दूंगा! शाहज़ादे, अपने जल्लाद को हुक्म दे कि मेरी अंगुली को काट दे।"

पूरे अहाते में लोग खुसर फुसर करने लगे। फिर उनकी आवाजें बंद हो गयी।

कुर्बाशी ने अपनी घुंघराली दाढ़ी को खुजलाया और फिर, जैसे कि वह जोर से सोचने की कोशिश कर रहा हो, उसने कहा "तब तो तुम्हारे हाथों को खोलना पड़ेगा!'

"क्या! शाहज़ादे, तुझे मुझसे डर लग रहा है ?' पहलवान ने उससे पूछा और निर्भीक भाव से उसकी तरफ देखने लगा।

कुर्बाशी की अंगुलियां ने जोर से अपनी दाढ़ी को पकड़ लिया

और उसे खीचने लगी । उसके बाल लाल हो गये जिससे कि उसके चेहरे के चेचक के दाग और भी उभर आये । जोर से हुक्म देते हुए कुर्बाशी ने अपने सिपाहियों से कहा सुअर को खोल दो ! सुअर के हाथों को छुट्टा कर दो ! दो आदमी खुली तलवार लेकर उसके दोनों तरफ खड़े हो जाओ और जल्लाद ! तुम भी अपनी तलवार म्यान से निकाल लो और इस पर कड़ी नज़र रखो !

अपनी अपनी म्यानों से तलवारें निकाल कर तीनों सिपाही पहलवान के इर्द गिर्द खड़े हो गये । एक ने चाकू से उसके हाथ में बँधी रस्सी को काट दिया । रस्सी कट कर ज़मीन पर गिर गयी । पहलवान ने अपनी भुजाओं को ऊपर उठाया और अगड़ाई लेते हुए अपनी हड्डियों को चटखाया । अपनी कलाई के घावों को सहलाते हुए उसने सिपाहियों को आदेश दिया

'लकड़ी का एक कुंदा और एक बड़ा कटोरा ले आओ !' वे कुंदा और कटोरा ले आये । पहलवान ने इशारों से उन्हें बतलाया कि उन्हें कहाँ रखना है । फिर आहिस्ता से जल्लाद से उसने कहा, 'तैयार हो जाओ जल्लाद ! मैं जब आवाज़ दूँ काटो!' तो तुम मेरी अंगुली को काट देना !

जल्लाद मन ही मन कुछ बुड़बुड़ाया ।

तब पहलवान ने तबीब को आवाज़ दी, "हकीम साहब ! यहाँ खड़े होकर इस कटोरे को पकड़िये !

तबीब मंच से नीचे उतर आया और कटोरे को लेकर जहाँ उसे बतलाया गया था वहाँ खड़ा हो गया ।

पहलवान झुका, अपने बायें हाथ की चार अंगुलियों को मोड़ कर अपनी तर्जनी को उसने कुंदे के ऊपर रख दिया ।

पूरे मकान और आँगन के अहाते में ऐसा सन्नाटा छा गया कि दूर

से गुजरती हुई तितली के पखो के फडफडाने तक की आवाज़ साफ सुनाई पडती थी।

कुबडे आलिम को गश सा आने लगा। उसका चेहरा पीला पड गया। उसने अपने दोनो हाथो से चेहरे को ढक लिया। कदाचित उसने तो, 'काटो।" की आवाज़ सुनाई दी, और न हवा को काटती हुई तलवार की सनसनाहट।

जब उसने आखें खोली तब तक पहलवान उठकर फिर तन कर खडा हो गया था और तबीब खून को बद करने के लिए उसके हाथ के घाव पर कोई चूरा डाल रहा था। पहलवान के चेहरे पर पसीने की बडी बडी बूदे चमक रही थी और वह तक्लीफ के साथ ज़ोर ज़ोर से सांस ले रहा था।

आलिम ने देखा कि अब वह कटोरा खाली नही था। उसमे कुछ भर गया था। उसने अपनी आख जल्दी से दूसरी तरफ कर ली। उसी समय पहलवान की अधमुदी पलकें काप उठी। उसने अपने हाथ पर नज़र डाली और देखा कि खून का निकलना कम हो गया था।

उसने पूछा, "पत्थर तयार है ?"

'पत्थर तैयार हैं ?" पहलवान की बात को दोहराते हुए कुर्बाशी ने पूछा। उसने अपने हाथ मे इशारा करते हुए बेसब्री से फिर कहा, "उसे उठा लाओ।"

अभी तक कुर्बाशी को ज़रा भी इस बात मे सदेह नही था कि मौत से बचने के लिए ही पहलवान उसे बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन अब जैसे उसे यकायक यकीन हो गया कि यह अजीबो गरीब आदमी उसकी अधी आख की खोई ज्योति को वापस ले आयेगा। कुर्बाशी के क्रूर दिल मे पहलवान के प्रति दया थी, अथवा यह कहना चाहिए कि, दया की छाया जैसी एक अस्पष्ट भावना

पैदा हुई। पहलवान की तरफ देखते समय उसकी नजर में अब पहले जितना क्रोध नहीं था।

पहलवान एक के बाद एक आदेश जारी करता रहा। उसके आदेशों का लोग इस तरह पालन करने लगे जैसे कि वे आदेश खुद कुर्बाशी द्वारा ही दिये जा रहे थे।

वह विशालकाय घुड़सवार पत्थर को लाकर सामने खड़ा हो गया। उसकी नोक हल के फाल की तरह तीक्ष्ण बन गयी थी। पहलवान के आदेशों के अनुसार तबीब ने उसे हाथ में लेकर बगदाद के मसाले से अच्छी तरह पोत लिया। अपने महत्व के अनुसार अभी तक तबीब धीरे-धीरे बहुत शालीन ढंग से काम कर रहा था किन्तु अब उसकी वह गंभीर शालीनता समाप्त हो गयी और उसने असाधारण फुर्ती से काम करना शुरू कर दिया क्योंकि उसे अब विश्वास हो गया था कि अंधी आंखों में ज्योति वापस ले आने का महान रहस्य उसे मालूम हो जायेगा और कुर्बाशी के डकैतों के गिरोह की कठिन और खतरनाक सेवा में लगी उसकी जिन्दगी का वह दौर जिसमें वह पूर्णतया थक गया था, समाप्त हो जायेगा।

तबीब ने पत्थर को अच्छी तरह हाथ में लिया और उसे एक ऐसी खुली जगह में ले गया जहां हवा आ रही थी, क्योंकि पहलवान ने कहा था कि पत्थर पर लगे मसाले को सुखा दिया जाना चाहिए। इसी समय तबीब को याद आ गया कि पहलवान कह रहा था कि जो अंधों की आंखों को रोशनी देगा वह खुद अपनी आंख की रोशनी खो बैठेगा। इस विचार के दिमाग में आते ही तबीब इतना डर गया कि लगा कि वह लड़खड़ाकर गिर पड़ेगा। पत्थर उसके कांपते हाथों से गिरते-गिरते बचा। तभी उसके दिमाग में एक दूसरा विचार आया। उसने सोचा, "मैं सिर्फ धनी-मानी लोगों का ही इलाज करूँगा। इससे मैं खुद धनी हो जाऊंगा और तब मेरे पास इतना रुपया होगा

कि अपनी जगह मैं किसी भी भिखारी को खड़ा करने के लिए राजी कर लूंगा और मेरे बजाय वही अंधा हो जायेगा।"

इस विचार से उसका मन फिर प्रसन्न हो उठा। उसने पत्थर को हुक्का के रास्ते में एक खुली जगह पर रख दिया और यह जानने के लिए पहलवान की तरफ़ देखने लगा कि आगे उसे क्या करना है।

अहमद पहलवान ने उससे कहा, 'बाकी सब काम मैं खुद करूँगा।' तबीब फिर डायस (मंच) पर चढ़ गया। उसके हाव-भाव से ऐसा लगता था कि उसने बहुत भारी काम पूरा कर लिया था। पहलवान उसकी तरफ देखता रहा फिर उसने अपने क्षत विक्षत हाथ को नीचा किया। अब उसकी कटी अंगुली से खून बहना बन्द हो गया था। कुर्बाशी को संबोधित करते हुए उसने सम्मानपूर्वक कहा "बादशाह सलामत इजाज़त दे दें तो जब तक पत्थर सूख रहा है तब तक मैं थोड़ा आराम कर लूं।"

'बैठ जाओ, बैठ जाओ!'' कुर्बाशी ने कहा। उसकी आवाज़ अगर इतनी बेवश न होती तो उसके आस-पास जो लोग खड़े थे उन्हें लगता कि उसके अन्दर कुछ दया भाव जाग उठा था।

पहलवान तलवार-धारी अपने तीनों पहरेदारों के बीच एड़ियों पर बैठ गया। थकान से वह चूर-चूर हो रहा था। उसने अपना सर नीचा कर लिया। अगर उसका कटा हुआ हाथ उसके घुटने के ऊपर रखा न दिखलाई दे रहा होता तो बाहर से देखने वाले किसी आदमी को लगता कि वह कोई ऐसा किसान था जो अपने खेत में काम करते करते थक कर बैठ गया था और थोड़ी देर में उठ कर फिर काम शुरू कर देगा। पहलवान की मौत सामने खड़ी थी लेकिन वह शान्त था। उसके इस अजीबो गरीब रवैये से कुर्बाशी को आश्चर्य हो रहा था। वह मन ही मन घबड़ा भी रहा था।

अभी तक उसे इस बात का विश्वास था कि वह मनुष्य की आत्मा

अपनी दाढी पर हाथ फेरता हुआ कुर्बाशी इन्ही खयालो मे खोया हुआ था। तभी आलिम उसकी तरफ झुका और आहिस्ता से उसने उसके कान मे कहा, "शाहजादे, वक्त निकला जा रहा है।" कुर्बाशी जैसे गहरी नीद से हडबडा कर जाग उठा। धमकाते हुए पहलवान से उसने कहा, 'ऐ! तू कर क्या रहा है? क्या अभी तक तेरा वक्त नही हुआ?'

धीरे धीरे अपने सर को ऊपर उठाते हुए पहलवान ने उत्तर दिया "जी, बादशाह सलामत! पत्थर अब सूख गया होगा यह लोग उसे उठा लायें।"

वह विशालकाय घुडसवार तेजी से पत्थर की तरफ बढा और उसे उठा लाया। पहलवान ने उसे उसके हाथ से ले लिया और उसकी तीन कोन वाली तेज नोक पर हाथ फेर कर देखा।

पत्थर को अपने पैरो के पास रखते हुए उसने शुरु किया, "जहाँपनाह! इलाज शुरू करने से पहले मैं आप से दरख्वास्त करना चाहता हूँ कि ।"

'कि मैं तुम्हे तुम्हारी जिन्दगी बख्श दू?" कुर्बाशी ने उसे बीच मे ही टोकते हुए कहा। दुर्भावनाभरे विजयोल्लास से उसकी देखने वाली आख चमक उठी। "लेकिन, मेरे जोकर! यह नामुमकिन है! यह बात नामुमकिन है, क्योकि तुम्हारे हाथ अफन्दी के खून से सने हुए हैं'

'हुजूर आप सही फर्माते है!" विनीत भाव मे इस तरह पहलवान ने कहा जैसे कि कुर्बाशी ने जो बात कही थी उसकी सचाई को वह स्वीकार कर रहा था। लेकिन हुजूर क्या आप मुझे यह बतलाने की मेहरबानी करेंगे कि आपका दाहिना हाथ बनने से पहले अफन्दी क्या करता था?'

'अल्लाह को मानने वाला वह एक सच्चा मुसलमान था और एक

के अन्तरतम तक की बात को अच्छी तरह समझ ले सकता था। उसने लडाइयो मे न जाने कितने सिपाहियो को और खेतो मे न जाने कितने किसानो को मौत के घाट उतारा था। काफिलो के रास्तो की बालू को उसने लोगो के लहू से रग दिया था, न जाने कितने गाँवो को रौंद कर उसने लहू लुहान किया था, न जाने कितने पुरुषो और स्त्रियो को बहुत बार बिना यह सोचे ही जीवन लीला उसने समाप्त कर दी थी कि उनका कोई कसूर था या नही ! इस तरह कुर्बाशी ने हजारो लोगो को मार डाला था। जिस तरह आज यह प्रौढ किसान उसके सामने खडा था, इसी तरह सैकडो बन्दी न जाने कितनी बार उसके सामने खडे किये गये थे, किन्तु उसे उनमे से बहुत ही कम को याद थी क्योंकि मरने से पहले बहुत ही कम लोग उनमे ऐसे निकले थे, जिन्होने उसे श्राप या चुनौती देने की हिम्मत की थी।

लेकिन अहमद पहलवान न तो उसे गाली दे रहा था और न उससे दया की ही भीख माँग रहा था, बल्कि बहुत समझदारी से और सम्मान पूर्वक उसके साथ तर्क कर रहा था। इसलिए उसको समझना और भी कठिन हो रहा था।

जब कुर्बाशी ने देखा कि वह अजीबोगरीब आदमी किस शान्त भाव से बैठा हुआ आराम का आनन्द ले रहा है तो वह सोचने लगा कि ऐसी कौन-सी यातना हो सकती है जिससे पहलवान की इस जैसी धारण शान्ति मय अक्षुब्धता को समाप्त किया जा सकता है। पर वह ऐसी किसी भी यातना को सोचने मे असमर्थ रहा।

कुर्बाशी के मन मे तभी यह ख्याल उठा कि अगर यह सगठित शैतान मेरे घुडसवारो की सेना मे शामिल होने के लिए तैयार हो जाय तो वह दस सैनिको के बराबर काम कर सकेगा !'' उसका दिल प्रशसा के साथ-साथ क्रोध से भी भर उठा, क्योंकि वह जानता था कि पत्थर को तोडा तो जा सकता है लेकिन मोडा नही जा सकता !

अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ कुर्बाशी इन्ही खयालो मे खोया हुआ था। तभी आलिम उसकी तरफ झुका और आहिस्ता से उसन उसके कान मे कहा, "शाहजादे, वक्त निकला जा रहा है।" कुर्बाशी जसे गहरी नीद से हडबडा कर जाग उठा। धमकाते हुए पहलवान स उसने कहा, 'ऐ! तू कर क्या रहा है? क्या अभी तक तेरा वक्त नही हुआ?'

धीरे धीरे अपने सर का ऊपर उठाते हुए पहलवान न उत्तर दिया "जी, बादशाह सलामत! पत्थर अब सूख गया होगा यह लोग उसे उठा लाये।'

वह विशालकाय घुडसवार तजी से पत्थर की तरफ बढा और उस उठा लाया। पहलवान ने उसे उसके हाथ से ले लिया और उसकी तीन कोन वाली तज़ नोक को हाथ फेर कर देखा।

पत्थर को अपन पैरा के पास रखते हुए उसन शुरु किया, जहा-पनाह! इलाज शुरु करने से पहल मैं आप से दरखास्त करना चाहता हूँ कि ।'

'कि मैं तुम्हे तुम्हारी जिन्दगी बख्श दू?" कुर्बाशी ने उसे बीच म ही टोकते हुए कहा। दुर्भावनाभरे विजयोल्लास स उसकी देखन वाली आख चमक उठी। "लेकिन मेरे जाकर! यह नामुमकिन है! यह बात नामुमकिन है, क्योंकि तुम्हारे हाथ अफेन्दी के खून से सन हुए हैं"

'हुजूर आप सही फर्माते हैं!' विनीत भाव से इस तरह पहल-वान ने कहा जैस कि कुबाशी न जो बात कही थी उसकी सचाई को वह स्वीकार कर रहा था। लकिन हुजूर क्या आप मुझे यह बतलान की महरबानी करेंगे कि आपका दाहिना हाथ बनन स पहल अफेन्दी क्या करता था?"

"अल्लाह को मानने वाला वह एक सच्चा मुसलमान था और एक

मुसलमान बादशाह का सिपाही था ।" शान से और रोब डालने की कोशिश करते हुए कुर्बाशी ने जवाब दिया ।

पहलवान ने सरल भाव से कहा, "हुजूर, यह बात मैंने सुनी थी। लेकिन मैंने यह भी सुना था कि जब उस विदेशी बादशाह को समुद्र तट पर स्थित श्वेत महल से निकाल कर भगा दिया गया था तो अफन्दी भी अपने वतन में वापस नहीं आना चाहता था।"

कुर्बाशी ने सतर्क भाव से सर हिला कर हामी भरी।

पहलवान उसी सादा ढंग से बोलता गया "तो हुजूर, यही बात थी अफन्दी ने अपने वतन को छोड़ दिया था और विदेश में, यानी हमारे देश में रह गया था। आप जवाब देने की फिक्र न करें। आगे की बात मैं खुद आपको बतलाता हूँ उसके बाद अफन्दी आपके साथ हो लिया था हुजूर। वह आपके साथ साथ घोड़े पर चलने लगा और आप ही के साथ साथ उसने हमारे गाँवों में आग लगायी हमारे लोगों को हजारों की तादाद में मौत के घाट उतारा और उन्हें लूटा ।

अपने निचले स्थान से पहलवान ने ऊपर कुर्बाशी की तरफ नजर उठाई और तेजी से बोलते हुए कहने लगा, इसीलिए मैंने उसकी हत्या की थी।"

'कुत्ता कहीं का! सुअर का बच्चा!' कुर्बाशी भर्राई हुई आवाज में ज़ोर से चीखा। उसका हाथ बगल में लगे खंजर की मूठ को ढूँढने लगा।

"इलाज! आप इलाज की बात भूल गये!" तबीब ने, जो उसकी बाँयी तरफ बैठा था, उससे कहा। आलिम कुर्बाशी की दाहिनी तरफ बैठा था। उसने पहलवान की तरफ अपने पीले पीले हाथ से इशारा करते हुए और खुशामद के स्वर में कहा,

"हुजूर ! यह आदमी आपको धोखा देने की कोशिश कर रहा है। यह बदमाश बिना तकलीफ के मरने की कोशिश कर रहा है ।'

जोर जोर से साँस लेते हुए कुर्बाशी ने कहा, 'आलिम साहब, आप ठीक कह रहे है। और तबीब, तुम भी ठीक कह रहे हो लेकिन इस कुत्ते से कहिए कि उस छुरी के साथ जरा होशियारी से खेल करे ! क्या बे, शैतान के बच्चे ! तुझे सुनाई पड रहा है ? '

पहले ही की तरह इज्जत के साथ पहलवान ने कहा 'आप की बात मैं खूब अच्छी तरह सुन रहा हूँ, जहापनाह ! मुझे आप माफ करें। मैं तो सिर्फ यह जानना चाहता था कि आप का गुस्सा अब भी बरकरार है या नही ?"

'यह बात तू किसलिए जानना चाहता है।" कुर्बाशी से बिना पूछे रहा न गया।

'क्योकि, जहापनाह ! मैं आप के गुस्से से इतना नही डरता जितना आपकी मेहरबानी से ।"

कुर्बाशी से फिर न रहा गया। उसने ताज्जुब से पूछा, मैं तेरी बात समझ नही पा रहा हूँ ।"

पहलवान ने कहा, आप जल्दी ही समझ जायेंगे ! मैं आपकी आँख को ठीक करने जा रहा हूँ है ना ? इसी से मुझे डर लगता है कि कही ऐसा न हो कि जब आपकी अंधकार भरी आँख प्रकाश की जगमगाहट से आलोकित हो उठे तो आप कृतज्ञता के भाव से भर कर मुझे जीवन-दान दे दें ।

कुर्बाशी ने क्रोध से काँपते हुए पहलवान से कहा, 'ओ जानवर के बच्चे ! क्या तेरा दिमाग खराब हो गया है ? '

'बादशाह सलामत ? जरा रुकिए तो मैंने अपनी बात अभी पूरी नहीं की ।

अच्छा कहो, और क्या कहना चाहते हो ! लेकिन थोडे मे।'

'बहुत अच्छा मेरे जहापनाह ! यह मेरा कटा हुआ हाथ है और यह मेरी आँखे है। जब इनकी रोशनी आप को दे चुका तब ।'

"मैं समझता हूँ !" उस टाकते हुए कुर्बाशी ने कहा, और फिर पूछा "इसके आगे क्या है ?"

मैं नही चाहता कि आप मेरी जिन्दगी मुझे बख्शें मेरे जैसे भिखारी की जिन्दगी ही क्या जिसे भीख माँगने के लिए दर-दर की खाक छाननी पडती है ?"

'तुम्हारी बातें अक्ल की लगती है," कहते हुए कुर्बाशी ठहाका मार कर हँसने लगा। फिर वह बोला, 'लेकिन तुम्हे यह कैसे गुमान लता हुआ कि मैं तुम्हे तुम्हारी जिन्दगी बख्श दूगा ?"

पहलवान, जो अब तक अपनी एडियो के बल बैठा हुआ था, उठ कर खडा हो गया और घूरता हुआ कुर्बाशी के मुस्कराते चेहरे को देखने लगा। उसने कहा "बादशाह सलामत ! मुझे शक है कि ।'

कुर्बाशी ने उसे आश्वासन देते हुए कहा, 'नही जी, तुम्हे शक करने की जरूरत नही है। तुम शक नहीं करते। तुम जानते हो कि मेरी आख ठीक होते ही मैं तुम्हे मरवा दूगा इसी वजह से इलाज करने मे तुम देरी लगा रहे हो, है ना ?"

"नही जहाँपनाह ! यह बात नही है। मैं इलाज करने के लिए तैयार हूँ, लेकिन पहले मुझे विश्वास हो जाना चाहिए कि ।'

'किस बात का ?'

'कि आप मुझे मरवा देंगे ।'

'क्या मैंने इस बात को तुमसे कहा नही ?"

"जहापनाह ! मैं आप की बात सुन रहा हूँ ।'

'तब फिर और क्या चाहते हो ?'

"मैं आप के सैनिकों से दो चार शब्द कहना चाहता हूँ।"

"किसलिए ?"

"जिससे कि आप नाराज़ हो जायं।

"मैं तो पहले ही से नाराज बैठा हूँ।"

"मैं चाहता हूँ कि आप और भी ज्यादा नाराज हो उठें।"

"और अगर अपने आदमियों के सामने बकवास करने की इजाज़त मैं तुम्हें न दूं, तो ?"

पहलवान मुस्कराया। इसका उत्तर उसने एक दूसरा सवाल पूछ कर दिया, 'क्या आप मेरी बकवास से डरते हैं ?"

कुर्बाशी क्रोध से तिलमिला उठा। उसका चेहरा लाल हो गया। उसने अपने रक्षकों की तरफ इशारा किया और, जैसे कि वह अपने ही से कुछ सवाल कर रहा था, उसने कहा,

"और अगर मैं अपने सिपाहियों को हुक्म दे दूं कि अपनी तलवारों से वे तुम्हारी मूर्खता से भरी खोपड़ी को दुरुस्त कर दें, तो ?"

'और अगर एक अंधी आंख हमेशा अंधी ही बनी रहे तो?" पहलवान ने पूछा।

कुर्बाशी गाव-तकिया को फेंक कर गुस्से से उठ खड़ा हुआ। उसकी कड़कदार आवाज़ से पूरा अहाता कांप उठा। उसने कहा, शैतान के बच्चे ! बोल तू क्या कहना चाहता है ? अपनी गन्दी बात को जल्द से जल्द कह डाल !'

'बहुत अच्छा, जहाँपनाह।" अहमद पहलवान ने कहा। चालाकी से अपने ढीठ स्वर को उसने फिर विनीत बना लिया। इसके बाद वह एक कदम पीछे की तरफ़ हट गया।

"मुझसे कोई बात मत करना, मैं तेरी बकवास नहीं सुनना

चाहता !" बुर्वाशी ने गुस्से से दहाड़ते हुए कहा। इतना कहने के बाद उसने हाथ हिलाकर अपने सिपाहियों की तरफ इशारा किया। सिपाही अत्यन्त ध्यानपूर्वक इन सब बातों को सुन और देख रहे थे।

पहलवान सिपाहियों की तरफ मुड़ा। कंधे से कंधा मिलाये हुए वे जमीन पर बैठे थे। पहलवान जब उनकी तरफ मुखातिब हुआ तो उन्होंने देखा कि सूरज की तिरछी किरणों से उसका चेहरा दमक रहा था। दृढ़ और स्पष्ट स्वर में वह बोला,

'लोगो! बिरादरो! तुम लोग मेरी तरफ देख रहे हो और सोच रहे हो कि यह कैसा मूर्ख है जिसने अपनी अंगुली कटवाकर दे दी है और अब अपनी आँखों की ज्योति भी अपने सबसे भयंकर दुश्मन को, बादशाह को देने जा रहा है! लोगो! तुम लोग इस बात पर ताज्जुब मत करो, क्योंकि मैं तो सिर्फ अपनी एक अंगुली और अपनी आँखों की ज्योति दिये दे रहा हूँ किन्तु तुमने तो खुद अपने को दुश्मन के हवाले कर दिया है जिससे कि वह काट कर तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दे। जब तुम अपने बुजुर्गों और अपने भाइयों की जान लेते हो और स्वयं अपने गाँवों को जलाकर खाक कर देते हो तब तुम खुद अपने को ही गोली से मार लेते हो। यह न सोचना कि मैं डर की वजह से पागल हो गया हूँ। वे मेरी बोटी-बोटी काट ले सकते हैं मेरी हड्डियों को पीस कर चूरा बना ले सकते हैं मैं डरता नहीं हूँ। मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ, बशर्ते कि मेरी बात तुम सुनना चाहो। चन्द ही मिनटों में मैं खत्म हो जाऊँगा मर जाऊँगा लेकिन मरने से पहले मैं यह जानना चाहता हूँ कि राइफिल कंधे पर लटकाकर देश के इस कोने से उस कोने तक तुम किसके लिए दौड़ते फिरते हो? खुद अपने भाइयों को अपने जैसे गरीब लोगों को, तुम किसकी खातिर मौत के घाट उतारते हो? लोगो! मुझे बतलाओ कि किसान के सच्चे हल को छोड़ कर इन झूठी बन्दूकों को तुम किसकी खातिर लिये घूमते हो?"

कुर्बाशी गला फाडकर चीखा 'अब हरामजादे ! जबान बन्द कर !" लेकिन पहलवान ने उसकी तरफ देखा तक नहीं। वह और भी जोर से और सफाई के साथ बोला,

'हमारे लोग तमाम शान्ति विरोधी लुटेरों के गिरोहों का जब सफाया कर देंगे तब तब पैसे वाले लोगों को मोटी मोटी तोंद वाले नवाबों और सामन्तों को, सांप सूंघ जायगा डर के मारे उनकी जान निकल जायगी लेकिन तुम, तुम्हारे पास तो कुछ नहीं है तुम्हें किस चीज का डर है ?"

कुर्बाशी का चेहरा गुस्से से काला हो गया। जल्लाद को उसने इशारा किया कि पहलवान को मार दो। लेकिन धार की तरफ से नहीं, बल्कि उल्टी तरफ से। जल्लाद ने तुरन्त उसके हुक्म की तामील की। पहलवान के पैर लडखडा गये, लेकिन वह गिरा नहीं। अपने को उसने किसी तरह खडा बनाये रखा।

तब कुर्बाशी ने एक झटके से तबीब और आलिम के हाथों से अपने को मुक्त कर लिया। वह उठ खडा हुआ। आगे बढ कर वह डायस (मंच) के किनारे तक पहुँच गया। पहलवान के चेहरे के एकदम सामने खडा होकर वह बोला,

"तुम्हारी बकवास बहुत देर से सुन रहा हूँ ! अब तुम मेरी बात सुनो। तुम्हारी सुअर-जैसी गर्दन अब तलवार से नहीं धड से अलग की जायगी—जैसा कि पहले मैंने तय किया था। अब तुम्हें कुन्द चाकू से हलाल किया जायगा। लेकिन तुम्हारे मरने से पहले तबीब तुम्हारी सारी चमडी निकाल लेगा। उसे मैं एक नगाडे पर मढवाऊँगा। तब तुम सुनोगे कि मेरे हाथ के प्रहारों से वह नगाडा कैसी आवाज करता है। उसके बाद तुम उस चाकू के दर्शन करोगे जिससे जल्लाद तुम्हारा गला काटेगा। मुझे जो कुछ कहना था, कह दिया। और कुछ कहने की जरूरत नहीं है। तुम अपना भौंकना बन्द करके अपना काम पूरा करो ! "

पहलवान ने सर झुका लिया। इशारे में उसने कहा कि कटारा उसके हाथों में रख दिया जाय। इशारा समझ लिया गया। पहलवान ने पत्थर को कटारे के मसाले का लेप लगाकर गीला कर दिया। दूसरे इशारे वह जो कर रहा था उन्हें कोई नहीं समझ पाया। पहलवान ने बहुत कोशिश की लेकिन उसकी बात किसी के पल्ले न पड़ी। तब कुर्बाशी ने उसे कुछ कोश गालियाँ दीं और उसे हुक्म दिया कि वह जो कुछ कहना चाहता हो उसे वह शब्दों में कहे।

पहलवान ने सिपाहियों को आदेश दिया कि भूसा ले आओ और उसकी पूलियाँ बना डालो। इसके बाद उसने तबीब और घर के मालिक को अपने पास आने के लिए कहा।

जब वे नजदीक आ गये तो पहलवान ने उनसे कहा, "मालिक तुम एक पूली को हाथ में ले लो! और हकीम साहब आप इस पत्थर को उठा लीजिये!

जब यह दोनों चीजें हो गयीं तो मकान के मालिक—उस छोटे से बूढ़े आदमी से उसने कहा कि पूली में आग लगाकर आप उस कुर्बाशी के चेहरे के पास लिये रहियेगा।

बुड्ढे ने कहा, उससे बादशाह की अच्छी आँख को न कहीं कोई नुकसान पहुंच जाय।'

'तब फिर उनकी अच्छी आंख को एक रूमाल से बांध दो!' पहलवान ने आदेश दिया। जब यह काम हो गया तो तबीब और बुड्ढे मकान मालिक को उसने हुक्म दिया कि कुर्बाशी के सामने वे घुटनों के बल बैठ जायें।

जब वे बैठ गये तो उसने फिर कहा, 'अब मोमबत्ती को जला लीजिये और इस बात का ध्यान रखियेगा कि वह बराबर जलती रहे बुझ न जाय।

उन्होंने मोमबत्ती को जला लिया। पहलवान उसकी झिलमिलाती

लों को देखने लगा। फिर तबीब की ओर मुखातिब होकर उसने कहा "हकीम साहब, पत्थर के नाक वाले हिस्से को हुजूर की खराब आँख की तरफ करके उसे इस तरह आगे पीछे करो।"

अपने हाथ से झूला जैसा झुलाते हुए पहलवान ने तबीब को बतलाया कि पत्थर को कैसे हिलाना है। तबीब ने एक दो बार पत्थर को ऊपर-नीचे किया और फिर कुर्बाशी की आँख के सामने उसे आगे पीछे झुलाने लगा।

पहलवान ने उसे रोक कर कहा कि, "और भी आहिस्ता से, धीरे-धीरे! जैसे मा अपने बच्चे को झुलाती है।"

ऐसा लगता था कि तबीब ने कभी किसी मा को अपने बच्चों को झुलाते हुए नहीं देखा था, क्योंकि पहलवान लगातार उसे टोक-टोक कर कह रहा था, "और धीरे से, और धीरे धीरे से, हौले हौले।"

तबीब ने बहुत कोशिश की कि पहलवान जिस तरह बतला रहा था उसी तरह पत्थर को झुलाये, लेकिन पहलवान को संतोष नहीं हो रहा था और वह बराबर कहता जा रहा था "इस तरह नहीं, इस तरह नहीं! हकीम साहब! फिर से शुरू कीजिये, इस तरह कीजिये!"

इस दरम्यान ठिगने से उस बुड्ढे ने चौथी पूली जला दी थी जलते हुए भूसे के धुएँ से कुर्बाशी का, जो कि भीतर से अपनी दूसरी आँख के अच्छे होने की प्रतीक्षा कर रहा था, दम घुटने लगा। धुआँ जब उसकी बर्दाश्त के बाहर हो गया तो तबीब के भोंडेपन से क्रुद्ध होकर, वह गुस्से से चिल्लाया,

'तबीब पत्थर इसी के हाथ में दे दो! वह जिस तरह से उसे झुलाना चाहता है खुद झुलाये।"

आलिम फिर कुर्बाशी की तरफ झुका और आहिस्ता से उसके कान में उसने कुछ कहा। सम्भवतः वह अपने स्वामी को यह बतला

चाहता था कि वह काफी सावधानी नही बरत रहा है—क्योंकि उसकी बात सुनते ही कुर्बाशी न उस डाट कर चुप कर दिया।

इस मूख से मुझे क्या डर हो सकता है ?' क्रोध म उसन कहा। जल्लाद और तलवार धारी मेरे दो सिपाही आखिर किसलिए ह ? उनसे कहो कि वे और नजदीक आ जाय और उस यहा ल आयें।" उसन जोडा।

पहरावान को व लोग डायस क पास ल आय। तलवार धारी रक्षक भी उसके पास आकर खड हो गय।

पहलवान कुर्बाशी के सामन घुटना पर बठ गया और बोला,

'जहापनाह ! आपके दानिशमन्द आलिम के मन म कोइ शका न रह जाय इसलिए इन लोगो को हुक्म दीजिय कि य मेरी आँखो पर भी पटटी बाध दें।'

धुए क कारण खासत हुए कुर्बाशी न हुक्म दिया, 'इसकी आँखो पर पटटी बाध दो।

जब पहलवान की आखो पर अच्छी तरह पटटी बाध दी गयी तो तबीब स उसने कहा हकीम साहब ! पत्थर मेरे हाथ म दे दीजिय।

तबीब ने पत्थर को सामन करत हुए उसके हाथो पर रख दिया और एक तरफ को खडा हो गया। उसकी समझ म नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है !

पहलवान न कहा, 'हकीम साहब ! मोमबत्ती की तरफ ध्यान दीजिय। और देखियगा पत्थर का नुकीला कोना हमेशा खराब आँख की तरफ रह।' इसके बाद कुर्बाशी म उसन कहा, 'हुजूर अब मैं इलाज शुरू कर रहा हू !'

धीरे धीरे और सावधानी स पहलवान पत्थर को कभी आग, कभी पीछ झुला रहा था। पत्थर और उसके हाथ म इस तरह

आगे पीछे आने जाने की वजह से घास की पूलियाँ और भी जोर से जलने लगी। फलस्वरूप धुआ अधिकाधिक घना होता गया। अहमद पहलवान और कुर्बाशी के सर धुए स ढक कर दृष्टि स ओझल हो गये। मामबत्ती की लौ शफा करने वाले पहलवान के पीछे झिलमिल कर रही थी। तबीब और दूसरे वे तमाम लाग जो वहा मौजूद थे लौ की तरफ टकटकी लगाये देख रहे थे। साथ ही साथ, उनकी नजर पहलवान के हाथों पर भी थी।

इसके बावजूद कि पहलवान की आखो पर पट्टी बँधी हुई थी और उसको कुछ दिखलायी नही दे रहा था, उसके हाथो की गति इतनी सही थी कि पत्थर का नुकीला कोना निरन्तर कुर्बाशी की अधी आँख की ही दिशा म बना रहता था। एक बार जब उसका नुकीला कोना थोडा सा गलत दिशा म हो गया तो तबीब का इतना भी मौका नही मिल पाया कि वह पहलवान को उसके बारे म सचेत कर दे, क्योकि पहलवान एकदम स चिल्ला उठा, 'मामबत्ती! मोमबत्ती का ठीक करो!" क्षण भर के लिए तबीब समेत सबकी नजरे मोमबत्ती की तरफ घूम गयी।

ठीक इसी क्षण मे पत्थर का तेज नुकीला कोना कुर्बाशी की कनपटी की तरफ बढा और बिजली की तेजी से उसके अ दर घुस गया।

दूसरे ही क्षण जल्लाद की तलवार झनझना उठी और मृत कुर्बाशी के शरीर पर मृत पहलवान का कटा धड भी जा गिरा।।

जल्लाद अपनी तलवार मे लगे खून को पोछे इससे पहले ही एक घुडसवार की गोली आयी और सनसनाती हुई उसके कलेजे को चीर गयी।

इस पहली गोली के बाद दूसरी गोली आयी तीसरी गोली आयी और गोलियो का चलना शुरू हो गया। मरे हुए कुर्बाशी के अनुयायियों

ने एक दूसरे को मारना शुरू कर दिया। यह खूखार लडाई लगभग आधी रात तक चलती रही।

अर्द्ध रात्रि के समय उस छोटे से बूढ़े के घर मे, जिसकी शक्ल एक चमगादड-जैसी लगती थी, आग लग गयी। उसका मकान धाय धाय करके जलने लगा। उसके जलते मकान से जो ऊँची ऊँची लपटें उठी उनसे पास पडोस के गावो को भी सूचना मिल गयी कि कुर्बाशी का, जिसे बहुत से लोग काना शेर के नाम से पुकारते थे खात्मा हो गया !

वीरा इनबर

वीरा इनबर सोवियत संघ की एक कवियित्री थी । वह अपने गद्य के लिए भी प्रसिद्ध हैं । उनका जन्म ओडेसा मे १८९० मे हुआ था । उनकी संकलित रचनाओं को चार खण्डों म प्रकाशित किया गया है इनम उनके गीत, लम्बी कविताएँ तथा हर प्रकार की कहानियाँ संग्रहीत हैं । उनम बच्चों की भी कहानियाँ हैं । उनकी लम्बी कविता,"पुलकोवो का मध्याह्न" तथा लेनिनग्राद की उनकी डायरी, जिसे "लगभग तीन वर्ष" के शीर्षक से प्रकाशित किया गया है, बहुत प्रसिद्ध हैं । 'लगभग तीन वर्ष' मे उन्होंने लेनिनग्राद के घेरे के दिनों के जीवन का हृदय-स्पर्शी विवरण डायरी के रूप म प्रस्तुत किया है ।

वीरा इनबर की गद्य रचनाओं मे सोवियत तुर्कमेनिया, उज्बकिस्तान, तथा ताजिकिस्तान के जीवन से सम्बंधित कहानियों का प्रमुख स्थान है । वीरा इनबर अनेक वर्षों तक इन गणतन्त्रों म रही थी ।

'नूर बीबी का जुर्म" नामक इस कहानी मे—जो यहा दी जा रही है, एक नौजवान स्त्री के जीवन के बारे मे बतलाया गया है । सोवियत की नयी सरकार ने उसे मुक्त किया था । उसके बाद कैसे उसने स्वतन्त्रता और सुख की प्राप्ति की थी—यही इस कहानी की विषय-वस्तु है ।

नूर बीबी का जुर्म

नूर बीबी छत से लटकते हुए पालने में सो रही है। उसकी माँ आहिस्ता आहिस्ता लोरी गाती हुई कह रही है

बेटी प्यारी, सो जा, सो जा !
बढ़ेगी तू सयानी होगी,
तेरे पास सिलाई की दो मशीनें होंगी,
एक हाथ से चलने वाली।
सो जा बेटी, मेरी प्यारी बेटी ! !

मीठी प्यारी बेटी सो रही है तू ?
तेरी चोटिया किरणों जसी चमकेंगी,
मीठे से मीठे मेवे तश्तरियों मे
खाने के लिये तेरे सामने हाजिर होंगे !
सो जा बेटी मेरी प्यारी बेटी ! !

अपने नन्हे नन्हे हाथो से तू
स्वादिष्ट से स्वादिष्ट पकवान खायेगी।
ऐसा खाना नहीं जसा मैं देती हूँ,
मैं जिसके भरपेट कभी रोटी भी नही होती !
सो जा बेटी, मेरी प्यारी बेटी ! !

अपने खाये पिये बच्चों को खेलने देना,
जैसे नन्हे नन्हे मेमने खेता मे फुदकते हैं।
और वे सुखी रहेंगे उस तरह नहीं मरेगें,
जसे मेरे बच्चे मरते हैं !'
सो जा बेटी, मेरी प्यारी बेटी।

नूर बीबी का अब्बा समरकन्द के बाजार मे छोटी छोटी लौकि के सूखे खोलो का बेचता था। उनमे घोडे के बालो की झालर ल रहती थी और उनके अन्दर पिसी हुई खाने की तम्बाकू भ रहती थी।

जब लौकिया छोटी होती थी मुलायम होती थी, ता उनको च तरफ एक डोरे मे बाँध दिया जाता था, जिससे कि जब वे बढे ता उ शक्ल की हो जायँ, जिसकी तम्बाकू भरने के लिए जरूरत होती थी

नूर बीबी का अब्बा अक्सर कहा करता था 'हम लोगा का यही हाल है! गरीबी हम मजबूती स जकडे रहती है और जै चाहती है वैसा बना देती है।'

नूर बीबी बडी हो रही थी। जल्दी ही वह आठ साल की या लगभग शादी लायक उम्र की हो गयी। वह पढ नही सकती थी अ न जिन्दगी मे और ही कुछ उसने देखा था। सिर्फ एक बार उस अब्बा उस बाजार ल गया था--टोपी बनाने वालो की गली मे। ब उसी को उसने देखा था। सारे वक्त वह अपने परिवार के साथ ही र थी। उसका परिवार समरकन्द स लगभग चार किलोमीटर के फास पर, होजा अहरार' की मस्जिद के पास रहता था। उसका घर अग लिक के रास्ते पर पडता था। उसका घर मस्जिद के नजदीक (लेकिन मस्जिद के अन्दर आने की उसे मनाही थी)।

मस्जिद के अन्दर का हिस्सा बहुत खूबसूरत था। मस्जिद से उ

"सिल्क के कीड़े के" उस "रुपये" की नूर बीबी की मा को कितनी अधिक जरूरत थी। गरीबी के मारे इस परिवार की सारी आशाएँ रेशम कोष की इसी फसल पर केन्द्रित थी। यह सच है कि उन्हे उसका बहुत कम दाम मिलता था। खरीदने वाले रेशम कोषो को मिट्टी के मोल खरीद कर विदेशो को भेज देते थे और वहाँ से विदेशी ठप्पे के साथ वे कच्ची सिल्क के नाम से रूस वापस आ जाते थे। लेकिन यह सब चीजें तो ऐसी थी जो आगे कभी दूर भविष्य मे होने वाली थी। इस वक्त तो नूर बीबी के मा-बाप की चिन्ता का विषय केवल यह था कि उन पुराने रीति रिवाजो पर वे कैसे अमल करें जिनमे उनके भाग्य के सुधरने की आशा हो सकती थी।

बाजार के दिन नूर बीबी के अब्बा ने रेशम के कीडो के अण्डो की एक चुटकी ली और उसे तिपतिया घास के मैदान में ले गये। वहा उन्होंने जमीन मे छिटका दिया जिससे कि उतने ही रेशम-कोष पैदा हो सकें जितने कि बाजार मे लोग थे या जितनी कि मैदान मे घास थी।

रेशम के कीडे तेजी से बढते हैं। वे चार बार सोते है। हर बार उनकी नीद चौबीस घटे की होती है। नीद के अपने उन कालो मे वे अपनी केंचुल या अपनी मृत त्वचा को फेंक देते हैं और तेजी से बढने लगते हैं। अपने जीवन के अतिम काल मे पहुँचते पहुँचते वे अण्डो से बाहर निकलने के समय की तुलना मे दस हजार गुना बडे हो जाते हैं।

उन्हे खास तौर के तख्तो पर रखा जाता है। ये तख्ते आलमारियो मे एक के ऊपर एक लगे रहते हैं। पूरा कमरा उनसे भर जाता है। परिवार को इस समय घर छोड कर अहाते मे एक छप्पर के नीचे चला जाना पडता है। बाहर की चमकीली धूप मे उनकी गरीबी और भी नुमायाँ हो उठती। उनकी फटी हुई रजाइयो मे से गन्दे कपडे के टुकडे लटकते दिखायी देने लगते हैं उनके गुमघान यानी खाना पकाने के ताँबे के बरतन टेढे मेढे और धुएँ से काले होते हैं। उनके मिट्टी के बरतन —घडे, आदि भी टूटे फूटे होते हैं।

हुए मदरसे की कोठरियो के सामने एक साफ-सुथरा सहन था जिसमे पूरी खामोशी रहती थी । इन कोठरियो मे वे सख्त दिखने वाले मजहबी नौजवान रहते थे जो इमाम बनने वाले थे । सहन के बारे म दिलचस्प चीज यह थी कि उसके एक किनारे पर अगर, हल्के से भी कोई आवाज की जाती तो दूसरे किनारे पर खड़े आदमी को भी वह साफ-साफ सुनायी दे जाती थी । यह कोई इत्तफाकिया चीज नहीं थी । मस्जिद के होशियार बनाने वाले ने उसको बनाया ही इस तरह था कि मुल्ला जब अल्लाह के बारे मे लोगो को उपदेश दे तो उसे अपने नाजुक गले पर ज्यादा जोर न डालना पड़े ।

नर बीबी जब दस साल की हुई तो उसे स्त्रियोचित शिल्प और कलाओ की शिक्षा दी जाने लगी । उसे सिखलाया जाने लगा कि अपने बालो की पतली पतली अनेक चोटियाँ किस तरह बनानी चाहिए किस तरह विनीत और आज्ञाकारी बनना चाहिए अपनी भौंहो को कैसे रंगना चाहिए कबाब बनाने के लिए प्याज कैसे बारीक काटना चाहिए, बच्चो का कैसे लालन पालन करना चाहिए, और किस तरह सिल्क के कीडो को खिलाने मे अपनी मा की उसे सहायता करनी चाहिए ।

वसन्त ऋतु मे जब शहतूत के दरख्तो की पत्तियाँ अपनी कलियो के अन्दर सरकने लगती थी तब उसकी मा वही काम करती थी जो उससे पहले उसकी मा किया करती थी और उसकी मा से पहले उसकी मा की मा । वह एक थैले मे सिल्क के कीडो को रख कर अपने शरीर पर बाँध लेती थी जिससे कि उसके शरीर की गर्मी से सिल्क के कीडे नन्हे नन्हे अण्डो मे जान आ जाती थी । सिल्क के कीडो के थैलों को अपनी काँख के अन्दर बाँध कर जहाँ भी वह जाती थी उन्हे अपने साथ सावधानी से ले जाती थी और अण्डो की निगरानी करती रहती थी । सिल्क के कीडो के अण्डे खस खस के बीजों से बडे नहीं होते । उनका रंग जब हल्का पडने लगता था तो वह समझ जाती थी कि अब जल्दी ही छोटे छोटे कीडे बाहर निकल आयेंगे ।

"सिल्क के कीडे के" उस "रुपये" की नूर बीबी की मा को कितनी अधिक जरूरत थी ! गरीबी के मारे इस परिवार की सारी आशाएँ रेशम कोर की इसी फसल पर केन्द्रित थी ! यह सच है कि उन्हें उसका बहुत कम दाम मिलता था। खरीदने वाले रेशम कापो को मिट्टी के मोल खरीद कर विदेशो को भेज देते थे और वहाँ स विदेशी ठप्पे क साथ वे 'कच्ची सिल्क' के नाम से रूस वापस आ जाते थे। लेकिन यह सब चीज तो ऐसी थी जो आगे कभी दूर भविष्य म होने वाली थी। इस वक्त ता नूर बीबी के मा-बाप की चिन्ता का विषय केवल यह था कि उन पुराने रीति रिवाजा पर वे कैसे अमल करें जिनसे उनके भाग्य के सुधरने की आशा हो सकती थी।

बाजार के दिन नूर बीबी के अब्बा ने रेशम के कीडा के अण्डा की एक चुटकी ली और उसे तिपतिया घास के मैदान म ले गये। वहा उन्हें उन्होंने जमीन मे छिटका दिया जिससे कि उतने ही रेशम-काप पैदा हो सकें जितने कि बाजार मे लोग थे या जितनी कि मैदान मे घास थी !

रेशम के कीडे तेजी से बढते हैं। वे चार बार सोते है। हर बार उनकी नींद चौबीस घटे की होती है। नींद के अपने उन कालो म वे अपने केंचुल या अपनी मृत त्वचा को फेंक देते हैं और तेजी से बढने लगते हैं। अपने जीवन के अन्तिम काल मे पहुँचते पहुँचते वे अण्डा से बाहर निकलने के समय की तुलना मे दस हजार गुना बडे हो जाते हैं !

उन्हें खास तौर के तख्तो पर रखा जाता है। ये तख्ते आलमारियो म एक के ऊपर एक लगे रहते है। पूरा कमरा उनसे भर जाता है। परिवार को इस समय घर छोड कर अहाते मे एक छप्पर के नीचे चला जाना पडता है। बाहर की चमकीली धूप मे उनकी गरीबी और भी नुमायाँ हो उठती। उनकी फटी हुई रजाइयो से गन्दे कपडे के टुकडे लटकते दिखलायी देने लगते हैं उनके गुमधान यानी खाना पकाने के ताँबे के बतन टेढे मेढे और धुएँ से काले होते हैं। उनके मिट्टी के बतन —घडे, आदि भी टूटे फूटे होते हैं।

मा भविष्य के सिल्क को डरते-डरते और चिन्ता के साथ निगरानी करती थी। लेकिन जब उसके बिना नहाये शरीर की कष्ट-दायक सीलन और पसीने मे अण्डे पके तो उनसे सिल्क के जो कीड़े निकले वे कमजोर और बीमार-बीमार थे।

हर बार जब सिल्क के कीडे अपनी मृत त्वचा का परित्याग करते तो मा आहे भर कर कहती "हमारी किस्मत ही खराब है। ये बार-बार सो जाते हैं और ठीक समय पर उठते नही। और बेशक ये एक जैसे भी नही है अलग-अलग किस्म के हैं। इन कम्बख्तों को देख कर रोना आता है। तय समझो कि इनमे से बहुतेरे चित्तीदार होने वाले हैं और बहुत से ऐसे जुड़वाँ होगे जिन्हे फिर अलग नही किया जा सकेगा।

इस सबका नूरबीबी से कोई ताल्लुक नही था। उसका काम तो केवल शहतूत की पत्तियो को इकट्ठा करना था। वह पेड पर चढ जाती, शाख के पतले वाले छोर को एक हाथ मे पकड़ लेती और दूसरे हाथ मे उसकी पत्तियो को तोड तोड कर खपची की एक टोकरी मे रखती जाती थी। जब उसके हाथ थक जाते तो एक चिडिया की तरह डाल पर बैठ कर वह सुस्ताने लगती। वहाँ बैठी-बैठी वह एक दूसरी चिडिया को, एक सारस को देखने लगी। वह पास के ही एक पुराने काले-काले सफेदे के पेड पर रहता था। वह पखो वाले उस परवार की गति विधियो का रुख देख कर सोचने लगी कि उसकी जिन्दगी भी बहुत मानो मे उसकी अपनी जिन्दगी की ही तरह थी। सारसो के भी कई बच्चे थे और वे भी हमेशा भूखे रहते थे। बच्चो की मा सारसी सारे समय घर पर ही बैठी रहती थी। फर्क बच्चो के बाप मे था। सारस पिता शायद ही कभी खाली मुह घर आता था। वह हमेशा पडोस के तालाब से किसी न किसी मेढक को लेकर ही आता था। नूर बीबी अपने पिता के बारे मे सोचने लगी। कल्पना की आखों मे वह देखने लगी कि

उसका अब्बा अपने पतले, चिन्ताओ से भरे चेहरे को लिए हुए हवा म उडता चला आ रहा है। उसकी बाहे उसे आगे ढकेल रही है उसका धारीदार लबादा हवा मे फैल रहा है और उसकी एक कोख म गोश्त का एक टुकडा दबा हुआ है ! खुशी म जोर जोर स आवाज देता हुआ वह मिट्टी की दीवाल म घिरे उनके घर के आगन मे आया और जमीन पर उतर पडा । इसी बीच उसने देखा कि उसकी मा पुलाव बनान के लिए बैठी-बठी चावल बीन रही है । कैसी अच्छी परिया जैसी कथा थी यह ।

लेकिन परिया की कथाओ का समय बीता जा रहा था । नूर बीबी बारह साल की हो गयी थी । अब हम देखते है कि दूसरी हम उम्र लडकियो के साथ आगन म बैठी हुई वह अपनी भौहा का रग रही है । लडकिया नहर म एक टूट प्याले म पानी लेकर उसमे रग मिला दती है । एक छोटी सी सीक लेकर वे उसे रग मे डुबोती हैं और फिर अपनी नाक क ऊपर दोना भौहो को रग कर एक म मिला देती ह । वे अपने सरा का झुकाती हैं पहले दाहिनी तरफ और फिर बायी तरफ । रग की नीली नीली पतली धारें उनके गालो पर बहने लगती है, लेकिन भविष्य की अपनी खूबसूरती को खराब कर देने के डर से उन्ह कोई पोछता नही है। टान म जडा एक छोटा-सा आइना है जिसे बारी-बारी स लेकर वे अपना चेहरा दखती है । उनकी बाते चलती रहती हैं ।

'सारा खान, तू यहाँ धूप म बठ । छाँह मे मत बठ, वरना सारा रग बह जायगा और बेकार हो जायेगा ।'

'गुलखार जरा आइना मुझे तो दे ! मैं सबस सुन्दर लगन वाली हूँ । अपनी चोटियो को मै कल फिर ठीक करूँगी ।

लडकियो ! मैंन सुना है कि एसी भी औरतें होती है जिनक भौंह नही होती ! उनकी आँखे नगी होती हैं ! ऐसी औरतें कितनी बशम होती होगी ? मैं उन्ह नही समझ सकती । "

"नूर बीबी, थोडी रोटी लोगी ? तुम तो उसकी तरफ ऐसी भूखी आखो से देख रही हो जैसे कि '

'ओ अदालत जरा आइना मुझे तो दे।"

'शरीफा आइना पहले मुझे दे दो'

जब उनका रईस पडोसी मीर शाहिद उसे देखने आया तो नूर बीबी की शक्ल ऐसी ही बनी हुई थी। उसके गाल नील-नील हो रहे थे और उसके हाथो मे रोटी का एक टुकडा था। और चूकि वह खूबसूरत थी, उन सारी लडकियो मे सबसे खूबसूरत थी और उसका अब्बा गरीब था इसलिए मीर शाहिद ने उसे अपनी बीबी बनाने के लिए खरीद लिया।

इस तरह उसकी जिन्दगी मे पहली बार नूर बीबी का चेहरा एक चाचवान से घोडे के बालो की झालर वाले एक मोटे बुरके मे ढक दिया गया। उस झालर से ही थोडा-बहुत वह कुछ देख सकती थी। थोडा देर के लिए नूर बीबी को यह सब अच्छा लगा उसे लगा कि वह बडी हो गयी है। लेकिन जब घोडे के बालो वाली झालर के पीछे से उसने खूबानी के दरख्त को देखा तो वह उसे पहचान ही नही पायी। बसन्त की ऋतु थी और खूबानी का पेड फूलो से लदा हुआ था, लेकिन टहनियो पर लदे हुए वौर भूरे भूरे ऐसे दीख रहे थे जैसे कि वे राख और धूल से बनाये गये हो। नूर बीबी ने चाचवान आंखो के सामने से हटा दिया तो क्षण भर के लिए खूबानी का दरख्त जैसे लाल लाल लपटो से दमक उठा और उसके ऊपर फैला नीला आकाश मन मोहने लगा। कपास की भाँति सफेद मारसी मा अपने पेड की हरियाली के बीच बैठी हुई थी और उसकी लाल लाल चोच चमक रही थी। लेकिन ज्यो ही चाचवान को झालर को उसने नीचा किया त्यो ही सारे रंग फीके पड गये।

और अब नूर बीबी एक शादीशुदा औरत है। जैसा कि उसकी

अम्मी ने कहा था उसके पास सिलाई की दो मशीनें, एक हाथ से चलने वाली और एक पाँव से चलने वाली है। इन सबके अलावा उसके पास एक तीसरी मशीन भी है–गाने वाली एक मशीन। इसे ग्रामोफोन कहा जाता है। लेकिन इन सबसे उसे क्या खुशी हो सकती है जबकि उसका शौहर बूढ़ा है और वह उससे मोहब्बत नहीं करती! तो, यही औरत की खराब किस्मत है। जब से दुनिया बनी है औरत की किस्मत तो तभी से खराब रही है। जहाँ तक मीर शाहिद की पहली बीवी की बात है तो वह तो इस बात को कभी की भूल चुकी है कि वह भी कभी बारह साल की थी! नौजवान लड़कियों की जवानी उसे फूटी आँखों नहीं सुहाती है। उसका दिल दरअसल बहुत दुष्टता से भरा हुआ है।

मीर शाहिद बहुत शक्की है। एक बार उसने देख लिया कि उसकी नौजवान बीवी पाँव की उँगलियों के बल खड़ी होकर पड़ोस के सहन की तरफ झाँक रही थी। उसने तुरंत अपने मजदूरों को हुक्म दिया कि घर के सहन की दीवारों को और ऊँचा कर दें। नूर बीबी चाहे जितनी जल्दी बड़ी होती और लम्बी होती जाती उसके घर के सहन की दीवारें उससे भी जल्दी ऊँची उठ जातीं।

नूर बीबी के पैर फुर्तीले हैं, चपल हैं। उसे इधर उधर दौड़ना अच्छा लगता है। आहाते के अन्दर वह एक गधे के बच्चे के पीछे दौड़ती हुई खेलती है, लेकिन मीर शाहिद की पहली बीवी उसे कस कर डाँट पिलाती है।

"मैं देख रही हूँ कि तुम अपने शौहर की औलाद को उस तन्दुरुस्त बच्चे को जो तुम्हारे पेट में है, मार देना चाहती हो! दरवाजे के तरफ मत झाँको, वरना लड़के के ओंठ मोटे होंगे। बारिश में बाहर मत निकलो वरना बेटे के चेहरे पर चेचक के निशान बन जायेंगे। वाह री मेरी खूबसूरत भिखारिन! क्या घर पर तुझे तेरे माँ बाप ने कुछ नहीं सिखलाया था?"

मीर शाहिद बेटा चाहता था, लेकिन उसके बेटी हुई।

उसकी पहली बीवी ने झूठा विलाप करते हुए कहा, "मैं जानती थी मैं तो जानती थी! मैंने तुमसे कहा न था! मीर शाहिद, मेरे मालिक, तुम देखोगे कि यह केवल बेटियां ही जनेगी! ये बेशर्म ठग-नियां ऐसी ही होती हैं!"

नूर बीबी की बेटी अपने पालने में पड़ी सो रही है। आस पास जब कोई नहीं होता तो उसकी मां लोरी गाने लगती है

सो सो, सो! मेरी मीठी बेटी तू सो!
तू बढ़ेगी और हृष्ट पुष्ट होगी,
और फिर जब तू शादी करना, तो
ऐसा आदमी चुनना
जो चाहे गरीब हो पर जवान हो।
ओ मेरी बेटी तू सो, तू सो, मेरी मीठी बेटी,

तू उसके दिल में अकेली होगी पहली होगी,
तू दूसरी या तीसरी नहीं होगी!
और तेरे चाहे बेटा हो या बेटी,
वह उसे एक भेंट के सामान स्वीकार करेगा!
ओ मेरी बेटी तू सो तू सो! ओ मेरी
—मीठी बेटी

क्या श्रीफल और सेब को दोष दिया जा सकता है
कि वे आड़ुओं की तरह खूब सूरत नहीं हैं?
बोल मेरी बेटी! ओ मेरी मीठी बेटी!
क्या तू किसी भी फल या सेब से भी खराब है?

समय बीतता जाता है। एक बार ऐसा हुआ कि वहां लड़कियां

जो कुछ साल पहले एक साथ बैठ कर अपनी भौंहों का रग रही थी, एक सहन मे फिर जमा हो गयी। उन सबकी शादी हुए काफी अरमा बीत चुका है और उनमे से कुछ बूढ़ी लगने लगी है। उनके बच्चे उन्ही के आस पास खेल रह हैं। थोडी देर म सूरज डूबन लगेगा और उनके बच्चो की परछाइया क्षण क्षण लम्बी होती जायेंगी। औरतें उदास ह। समय से पहल ही उन्ह बुढापे ने आ जकडा है और अब उनके सामने उसी की लम्बी परछाई फैली हुई है। वे बात करने लगती है।

"सारा खान ! आओ, यहा धूप म बैठो। तुम कितनी पीली पीली दिख रही हो ! क्या तुम बीमार हो ?'

नूर बीबी, क्या तुम मेरे बेटे को गोद मे लेकर खेलना चाहती हो ? तुम उसकी तरफ इस तरह देख रही हो '

मैंने सुना है कि कुछ ऐसी भी औरतें ह जो अपना चहरा उघाडे हुए सडको पर घूमती है। मैं ऐसी औरतो को नही समझ सकती ! '

'लेकिन मैं उन्ह समझती हूँ,' यकायक नूर बीबी बोल उठी।

'तुम चुप रहो ! तुम चुप रहो ! नूर बीबी, तुम तो हमेशा ही बागी रही हो। तुम दीवाल के बाहर झाका करती थी। तुम कभी कभी अपने खाविन्द की भी बात को काट देती हो और पहली बीवी से लडती हो। यह सच है ना ?'

नूर बीबी खामोशी से उसकी बात को सुनती है। नही, यह सच नही है ! वह भी दूसरो ही की तरह आज्ञाकारिणी है। और उन्ही की तरह बेबस और मोहताज भी !

उसकी पडोसिन डरते डरते दोहराती है, 'तुम चुप रहो ! चादवान का भला बुरा मत कहो। वह तुम्हारे चेहरे को ढक लेता है और फिर कोई नही जान सकता कि उस पर क्या लिखा हुआ है। औरत के लिए यह एक अच्छी चीज है। चादवान न पहनो तो बहुत खराब होता है। याद है तुम्हे कि गुलजमाल को क्या हुआ था।'

पास ही जिजाख की एक औरत बैठी थी। उसे मुकामी नसीहत की जानकारी नही थी। उसने कौतूहल से पूछा, "क्या हुआ था गुल जमाल को ?'

'क्या तुम्हे मालूम नही है ? अच्छी बात है, हम तुम्हे बतलाते हैं। गुलजमाल हमारी दोस्त थी। एक दिन शाम को सहन से वह अपने घर के अन्दर गयी। उसे अगर यह मालूम होता कि इसका नतीजा क्या होगा तो वह अन्दर कभी न जाती। लेकिन इन चीजों को जानता कौन है ? जाडे के दिन थे और बाहर सर्दी पड रही थी। कमरे के अन्दर एक अंगीठी जल रही थी। अंगीठी के पास उसके शौहर का भाई बैठा आग ताप रहा था। गुलजमाल जाडे को दूर करने के लिए अंगीठी के पास जाकर बैठ गयी। गर्मी से उसका चेहरा तमतमा उठा। जब उसका आदमी लौटा तो उसका चेहरा लाल बेरी की तरह दमक रहा था। उसके पास उसके शौहर का भाई बैठा था। उसके शौहर ने उसे देखा तो बोला, 'एक मिनट के लिए बाहर आ जाओ, मैं तुम्हे दिखलाऊँ कि मैंने क्या खरीदा है।' वह उसके साथ सहन में चली गयी। वहां उसने उससे कहा, अब मैं तुम्हे बतलाऊँगा कि मेरे भाई के साथ कैसे इश्क लडाना चाहिए।' यह कह कर उसने चार बार उसके पेट में छुरा भोंक दिया। वह गिर पडी और वहीं उसका दम टूट गया।

जिजाख से आयी औरत ने कुछ नहीं कहा। दूसरी औरतें भी कुछ नही बोलीं। बोलने-कहने को था ही क्या ?

और वक्त बीत गया। १९१७ आया। रूस में चारों तरफ हलचल मची हुई थी। लेकिन अग्रालिक के रास्ते पर स्थित हाजा अहरार की मस्जिद की छत मे बनी हुई तस्वीरों के रंग चमक रहे थे और हमेशा की ही तरह, रईस खानदानों के लडके वहां कुरान पढ रहे थे। मदरसे का सहन शानदार था। उसके बीचोबीच बैठे सफेद दाढी वाले मुल्ला के शब्द हर एक को साफ-साफ सुनायी पड रहे थे।

क्राति विरोधियो के खिलाफ सघष का सग्रहालय—जिसम पूव म हुए गह युद्ध की पूरी कहानी बतलायी गयी है, बहुत वष बाद ताशकद मे खुलन वाला था। उसमे जो सामग्री रखी जाने वाली थी वह अभी तक तयार नही हुई थी। सघष मे प्रदर्शित की जाने वाली चीजें व भी पूरे इलाके मे इधर-उधर बिखरी हुई थी। आधुनिक ब्रिटिश राइफिलें और चकमक पत्थर से चलन वाली बासमाची की पुरानी तोपें, कारतूसो के बटुए, पुरानी शमशीरें, अगुलित्र—जिनमे से कुछ तो स्थानीय लुहारा द्वारा ही बनाये गए थे और कुछ लीज़ की एक फक्टरी द्वारा—घाडा की काठियाँ, चमडे की खोलो मे बद सिकुड कर छाटे हो जाने वाले प्याले, वद नजरो और गोलियो म रक्षा करने वाले गण्डे-तावीज, फीरोजा से जडी हुई मूठा म बन्द कटारें काशगर की छरिया - जिनमे वह छूरी भी शामिल थी जिसम बासमाची के मशहूर मुखिया न एक औरत का पेट फाडा था—यह सब चीजें अभी तक इधर उधर बिखरी पडी हुई थी। जिस छुरी का ज़िक्र किया गया उससे बासमाची के उम सरदार न उस औरत के पेट को काटन म पूरा एक घटा लगाया था। वह उसके पट को आहिस्ता आहिस्ता तब तक काटता रहा था जब तक कि उसके धडकते हुए दिल का एक हिस्सा खुलकर उसकी आँखो के सामने नही आ गया था। औरत के गाव के लाग डाकुआ के उस सरदार कुर्बाशी स आरज़ू मिन्नत करते रहे कि वह रहम कर, उसे एक बारगी ही मार दे—लकिन कुर्बाशी न उस मरने नहीं दिया। वह जानता था कि ऐसे कैसे काटा जाय जिसम कि उसका शिकार फौरन न मर जाय। इस फन मे वह माहिर था। और जब उसका चाकू धीरे धीरे पट से ऊपर गले की तरफ बढ रहा था तो वह उसम कह रहा था

'*जो औरत अपना चेहरा उघाडती है वह अपने दिल को उघाड* कर रख देती है! इसलिए, दुख्तर मरी मैं तुम्हारे ही काम को पूरा कर रहा हूँ।'

औरत के गाँव वालों से यह दर्दनाक दृश्य न देखा गया। वे उसके पैरों पर पड़कर गिड़गिड़ाने लगे, 'नानी मालिक! आप भूल कर रहे हैं! हुजूर, आपको गलतफहमी हो गयी है! यह वह औरत नहीं है। हम कसम खाकर कह सकते हैं कि इसने कभी अपना बुरका नहीं उतारा था।

कुर्बाशी ने चिल्लाकर जवाब दिया, 'अगर इसने ऐसा नहीं किया था तो किसी और ने किया होगा। मेरे लिए इसमें क्या फर्क पड़ता है।।'

(२)

वक्त गुजरता जाता है। छोटी और बड़ी घटनाओं का क्रम जारी है। छोटी घटनाओं में एक जो जिक्र करने योग्य है यह है कि मीर शाहिद के सहन को चारों तरफ से जो दीवार घेरे हुए थी वह कई जगह से टूट कर गिर गयी है। बारिश ने उसे तबाह कर दिया था और मीर शाहिद उसकी मरम्मत करवाने से डरता है।

अपनी पहली बीवी को समझाते हुए उसने कहा, 'मैं इसकी मरम्मत करवाऊँगा तो वे लोग समझेंगे कि मीर शाहिद रईस है। वे कहेंगे कि अगर अपनी जायदाद को छिपाने की उसे इतनी जल्दी है तो वह बहुत ही रईस होगा। मैं तो मुफ्लिस हूँ। एक भिखारी बन गया हूँ। मेरे पास सिर्फ एक मजदूर है, लेकिन जहाँ तीन मजदूर थे वहाँ एक से क्या बनता है? सिलाई की एक मशीन क्या होती है? एक जमाना था जब मेरे पास तीन मशीनें थीं—दो सिलाई करने वाली और एक गाने वाली। कामरेडो मैं रईस नहीं हूँ। आकर तुम खुद देख लो। मैं तो एक भिखारी हूँ।''

नूर बीबी अब पच्चीस साल की हो गयी है। वह तीन बच्चों की माँ है और अपने को अधेड़ समझती है। उसके तीन दूसरे बच्चे मर गये हैं गोकि बद नजरों से उन्हें बचाने के लिए उनके कटापों पर काफी

उनके पंख लगाये गये थे। लेकिन वह शक्तिशाली रक्षा कवच भी काम न आया। एक साल गर्मियों के दिनों में उन्हें पेचिश हो गयी और वे सब मर गये। नूर बीबी इस बात को कभी न जान सकी कि वे किस वजह से मर गये थे और उन्हें बचाने के लिए क्या किया जा सकता था।

हाँ, चारों तरफ छोटी व बड़ी घटनाएँ घट रही हैं। नूर बीबी अपने घर की दीवार के टूटे हिस्सों से जब भी सड़क की तरफ नजर डालती है तो उसे कुछ न कुछ नया दिखलायी देता है। गाँव में गधे और ऊँट की जगह काम करने के लिए जो पहली मोटर और पहली लारी आयी उन्हें भी उसने देखा। एक दिन उसने देखा कि एक उड़ता हुआ घोड़ा एक हवाई जहाज़ आया और पहाड़ों की तलहटी में उतर पड़ा। लोग कहते हैं कि वहाँ पर उसे रखने के लिए एक बहुत बड़ी अस्तबल—जिसे हवाई अड्डा कहा जाता है—बनायी गयी है।

जागालिक के रास्ते पर चलने वाली औरतों में कुछ ऐसी भी हैं जिनके चेहरे ढके हुए नहीं हैं। मदरसे के अन्दर जिन रईसजादों को छाँह में पढ़ा लिखाकर तैयार किया गया था वे हाजा अहरार की मस्जिद के नक्काशी किये हुए फाटकों से आँखें मिचकाते हुए बाहर निकलते हैं और हमेशा के लिए वहाँ से चले जाते हैं। मोमजामे से जुड़े पट्टों की जिन किताबों को वे अपने बगल में दबाये हैं उनमें चारों तरफ अरबी में लिखा है। नौजवान उज्बेक चायखानों में बैठे अखबार पढ़ते दिखलाई देते हैं। पुरानी मस्जिद के बगल में एक छोटे से सफेद घर में एक शफाखाना खुल गया है। बच्चे स्कूल जाने लगे हैं। किंडरगार्टेन भी खुल गये हैं।

नूर बीबी इन सब चीज़ों को देखती है, लेकिन उसकी जिन्दगी में कोई फर्क नहीं आया! वह पहले की ही तरह रह रही है।

वह सोचती है "नौजवानों के लिए यह सब चीजें ठीक हैं, लेकिन

में   मैं कहा जा सकती हूँ ? मेरे बच्चे ! मुझे उनका पेट भरना है। मेरे पास पैसा नहीं है।"

और नूर बीबी की जिंदगी का ढर्रा पहले की ही नाइ चलता रहता है। गाकि मीर शाहिद के घर के आहात की दीवार टूट गयी है, फिर भी वह अभी बहुत मजबूत है। सोवियत सत्ता के कदमा के सामने वह गिडगिडाता और थर थर कांपता है, लेकिन वह जिन्दा है। उसके पास काम कराने के लिए कोई मजदूर नही है, गधा भी नहीं है अब उसके पास उसकी जायदाद के रूप म केवल उसकी दो बाजियां ही रह गयी हैं।

अपने दिल पर हाथ रखकर वह कहता है 'मैं अब सबसे गरीब अकेला किसान हूँ। मैं पुराना मकडा और बिच्छू हूँ। फिर क्या यह मुमकिन है कि किसी सामूहिक फाम मे, उस महान जमात मे जा उदात्त गरीबों को एक साथ जमा करती है—शामिल होने की मैं जुरअत करूँ ? क्या मरे लिए यह मुमकिन है कि मैं सामूहिक फाम के अध्यक्ष की मानभरी आखों से आखें मिलाने का, अपने पुराने मजदूर के सामने नजर उठाने का दुस्साहस करूँ ? नही ! महरबानी करके ऐसा करने के लिए मुझसे न कहिए ! इस बात पर जोर न दीजिए।

'मैं इसके लायक नहीं हूं। ठेका करके रेशम के कोयों को उचना मेरी आत्मा के खिलाफ है। कितना अच्छा होता अगर हमारी प्यारी सोवियत सत्ता का इन गदे घणित कीडों के काम की जरूरत न होती। उसका काम केवल कोयलों और गुलाबों से चल जाता, क्योंकि वे खुद भी सोवियत सत्ता की ही तरह खूबसूरत हैं ! लेकिन जहा तक मेरा ताल्लुक है–अल्लाह मेरे ऊपर रहम कर ! सिल्क के कीडों का पैदा करने वाले वैज्ञानिक, आजिम जान को कितनी बार मैंने चायखाना मे देखा है। हम समझाने सिखाने के लिए उसे हमारे क्षेत्र में समरकन्द से भेजा गया था। मेरी उससे बहुत दोस्ती हो गयी है। उसके पास बैठ-

लगता है ।। गामरड उग्वाबयेव घूमते फिरते विडर गार्टन म भी पहुच गये । वहाँ सोवियत के छोटे छोटे गुगी बच्चे खेलकूद रह थ । मेरा मेरा बच्चा उनम नहीं था । मैं इसके लायक नहा हूँ । व बच्चे फुदकते हुए इधर उधर दौडते हैं और फूलो के बारे म गाने गा न हैं । खुशहाल, व खुद फूलो की तरह हैं । इससे अधिक और क्या किसी को चाहिए ? उन लोगो के साथ एक लडकी रहती थी । उसे म बहुत दिनो से जानता था । लेकिन गामरेड उरवाबयेव न उस हुक्म दिया कि वह वहाँ से चली जाय । किसलिए ? प्यारे दोस्तो, यह सब मुसीबतें किसलिए ।।

सब कुछ ठीक वैसा ही था जैसा मीर शाहिद बतला रहा था ।

लेकिन उरवाबयेव की भी बात जरा हम सुन लें ।

वसन्त की ऋतु म एक दिन अपने एक दोस्त और मास्को के दो महमानो के साथ वह समरकन्द के पुराने शहर और उसकी खूबसूरत इमारतो को देखने गया था ।

उरवाबयेव और उसके दोस्त रेगिस्तान की तरफ निकल गये । वहाँ एक झरोखे म उन्होने एक शिला-लेख पढा । यह शिला लेख शीर-दार मस्जिद के पश्चिमी हिस्से के प्रवेश माग पर स्थित था । शिला लेख म मस्जिद के मेमार (बनाने वाले कारीगर) ने सिर्फ खुद अपनी तारीफ की थी । उसम लिखा था

'उसने एक ऐसे मदरसे का निर्माण किया जिससे कि पृथ्वी आकाश के शिखर बिन्दु तक पहुँच गयी । उस उकाब के अभ्यस्त डैनों की शक्ति और उडान भी जिसे मस्तिष्क कहा जाता है प्रवेश माग के शिखर तक वर्षो तक नही पहुच सकेगी । सदियाँ बीत जायँगी, लेकिन वह कुशल नट, जिसे विचार कहा जाता है कल्पना की कडी रस्सी पर चल कर भी उसकी उन्नत वर्जित मीनारों की चोटी पर नहीं पहुँच पायेगा । जब शिल्पी ने प्रवेश

माग की मेहराब का एकदम नाप तौल कर बनाया तो आकाश-वासियो को भी भ्रम हो गया था कि वह कोई नया चाद था और आश्चय से भर कर उहान अपनी अँगुली काट ली थी।'

शिला लेख को पढकर ठण्डी सास लते हुए उरकाबयेव ने कहा, 'आत्म आलोचना का तो कही नाम ही इसमे नही है !

शिला लख को पढ लेन के बाद व सब एक लाट के ऊपर चढने लग। उसम चढा के लिए ईंटा की घुमावदार सीढ़िया बनी हुई थी। उसकी सीढियाँ इतनी ऊँची ऊँची थी कि उनक पावा की मांस पशियाँ बहुत दिन बाद तक भी दद करती रही। आखिर म सीढ़ियो क अधेर-भर रास्ते स निकल कर ऊपर व एक चबूतर पर पहु च गये जा चारा तरफ से खुला हुआ था। नीच स मजदूरो की बातचीत और ठाक-पीट की अनक स्वरा से भरी आवाजें धीरे-धीरे ऊपर पहुँच रही थी। दूरी की वजह स मद्धिम हान क बावजूद आवाजे साफ-साफ आ रही थी। लोहारा के हथौडा की भारी आवाज, ठठेरा की खट खट टाके वाला की ठुक ठुक, गधा क रेंकन ऊँटा क गला की घटिया के बजन, तार वाले किसी वाद्ययंत्र की झनकार तथा किसी क नौग्म गान क मिल जुले स्वर हवा मे तैरत हुए ऊपर तक पहु च रह थ। उनमे तरहवी, चौदहवी और पद्रहवी शताब्दियो की ध्वनिया मौजद थी ! अचानक किसी एक तरफ से एक नयी ध्वनि सुनाई दी। यह निरन्तर तज होती जाती आवाज बिल्कुल नइ हा तरह की थी—यह एक आती हुद मोटर गारी की आवाज थी। उसे सुनकर उरकाबयव की आखा म स्नेह भर आया और उसके चेहरे पर एक मुस्कराहट आ गयी। वह द्वितीय पँचवर्षीय योजना का प्राणी था।

मास्को से आय उसके अतिथि उत्सुकता क साथ चारो तरफ नजर दौडा रहे थे। दूर तियेन शान के शैल बाहु ऐस दीख रहे थे जैसे कि आकाश म उन्हें किसी ने काट कर सजा दिया हो। चौरस पीला शहर

उनमे से हर एक अपनी बाँयी कोहनी को दाहिने हाथ से पकडे था और लगडाता-लगडाता चलता था। इन भले आदमियो की बाँखो मे कोई फोडा है या कुछ और है—मैं सोचने लगा। और जानते हैं वहाँ क्या था? वे अपनी बाँखो के नीचे अण्डे सेने का एक यन्त्र दबाये हुए थे! उसी को दबाये हुए वे उस शिल्पक के पास जा रहे थे जो सिल्क के कीडा के अण्डो को अण्डा स्फोटन यन्त्र के अन्दर रख कर सेने की प्रक्रिया सिखलाने के लिए उनके पास भेजा गया था। शिल्पक का नाम आजिम जान था। वह एक सन्देहास्पद व्यक्ति मालूम पडता था। उसे वहाँ इसलिए भेजा गया था कि और दूसरा कोई आदमी सुलभ नहीं था। उसने सिल्क संघ ने अण्डे सेने के घरों मे लगाने के लिए थर्मामीटर दे दिये थे। आप लोग शायद न जानते हो कि यहाँ सब कुछ तापमान पर निर्भर करता है। सिल्क के कीडे ठण्ड नही बर्दाश्त कर सकते। तापमान अगर २३ डिग्री सेण्टीग्रेड से नीचे पहुँच जाता है तो कीडे सुस्त पड जाते हैं और खाना बन्द कर देते हैं। सिल्क के कीडो को पैदा करने के काम में सुधार करने के लिए हम हर सम्भव तरीके से कोशिश कर रहे हैं। अण्डो के शिल्पक को यह काम दिया गया था कि जिन घरो मे उन्हें यानी सिल्क के कीडो को पैदा किया जाता है उनमे दिन मे दो बार जाकर वह देखे कि काम किस तरह पूरा हो रहा है। लेकिन, इसके बजाय कि वह खुद उनके घरो मे जाय, उसने किसानो को हुक्म दिया कि वे स्वयं चायखाने मे आकर उससे मिलें और आते समय अपनी काँखो के नीचे थर्मामीटर लगाये लायें जिससे कि तापमान उसके पास खुद आ जाय और उसे तापमान देखने न जाना पडे! उस आज़िम जान ने थर्मामीटरो को देखा और पाया कि तापमान ३७ डिग्री के आस पास था। शरीर का साधारण तापमान इतना ही होता है। तापमान को देख कर वह बोला यह तो बहुत ज्यादा है। गर्मी बहुत है! हवा खोल दो। नतीजा हुआ कि सिल्क के सारे कीडे मर गये!"

सब लोग हँसने लगे। उरखाबयेव ने दुखित भाव से कहा, "दरअसल,

मीनार के नीचे से लेकर दूर की पर्वत मालाओं तक फैला था। बीच बीच में फूलों से लदे बाग दिखलाई दे रहे थे। मिट्टी के उस लहराते सागर में से बीच बीच में ऊँची-सी एक नीली लहर उठती दिखलाई पड़ जाती थी। लहरों जैसी दीखने वाली ये ऊँची-ऊँची इमारतें थीं। गुर अमीर बीबी खानम शाह जिन्देह तथा और भी अधिक दूरी पर स्थित उलूग बेक की वेधशाला थी। उलूग बेक तैमूर लंग का प्रसिद्ध पोता था। दक्षिण की तरफ कुछ और भी अधिक फासले पर होजा अहरार की मस्जिद की इमारत थी।

मास्को वासियों ने सराहना करते हुए कहा " कैसी खामोशी है कितनी शान्ति है।'

उस्मानयेव ने उत्तर में केवल एक गहरी सांस ली।

"बहुत अच्छी जगह है! क्योंकि आप लोग कुछ जानते नहीं!! आप नीचे की तरफ देखते हैं—सामने एक सुंदर दृश्य दिखलाई देता है। जगह जगह पर प्राचीन वस्तुएँ दिखलाई देती हैं आदि। लेकिन इस सबके नीचे आग लगी हुई है। ज़मीन कड़ाहे की तरह खौल रही है। उधर देखिए वह होजा अहरार की मस्जिद है। उसके इर्द गिर्द एक गांव फैला है। मैं आपको एक कहानी सुनाऊँगा।' उसके चेहरे पर एक चमक जैसी दौड़ गयी, लेकिन इस चमक में गहरी उदासी थी। वह बोला उन ईंटों पर झुकिए मत वे बहुत मज़बूत नहीं हैं ता, मैं उस जगह को देखने गया। मुझे बतलाया गया था कि वहां के सिल्क के कीड़े पैदा करने वाले सारे लोग टेढ़े मेढ़े हो गये हैं वे सब एक तरफ को झुक गये हैं। मैं सोचने लगा कि यह कैसी अजीबोगरीब बीमारी है और इसके शिकार सिर्फ सिल्क के कीड़े पैदा करने वाले लोग ही क्या होते हैं?

"मैं चायखाने की तरफ चलने लगा। मैंने देखा कि किसान उसकी तरफ जा रहे थे वे वास्तव में सबके सब टेढ़े-मेढ़े और पंगु लगते थे।

उनमे से हर एक अपनी बायी कोहनी को दाहिने हाथ मे पकडे था और लगडाता-लगडाता चलता था। इन भले आदमियो की काँखो मे कोई फोडा है, या कुछ और है—मैं सोचने लगा। और जानते है वहा क्या था ? वे अपनी काखो के नीचे अण्डे सेने का एक यत्र दबाये हुए थे। उसी को दबाये हुए वे उस शिक्षक के पास जा रहे थे जो सिल्क के कीडो के अण्डो को अण्डा स्फोटन यत्र के अदर रख कर सेने की प्रक्रिया सिखलाने के लिए उनके पास भेजा गया था। शिक्षक का नाम जाज़िम जान था। वह एक सन्देहास्पद व्यक्ति मालूम पडता था। उसे वहा इसलिए भेजा गया था कि और दूसरा कोई आदमी सुलभ नही था। उसने के सिल्क सघ ने अण्डे सेने के घरो मे लगाने के लिए थर्मामीटर दे दिये थे। आप लोग शायद न जानते हो कि यहा सब कुछ तापमान पर निर्भर करता है। सिल्क के कीडे ठण्ड नही बर्दाश्त कर सकते। तापमान अगर २३ डिग्री सेण्टीग्रेड से नीचे पहुँच जाता है तो कीडे सुस्त पड जाते है और खाना बन्द कर देते हैं। सिल्क के कीडो को पैदा करने के काम मे सुधार करने के लिए हम हर सम्भव तरीके से कोशिश कर रहे हैं। अण्डो के शिक्षक को यह काम दिया गया था कि जिन घरो मे उन्हे यानी सिल्क के कीडो को पैदा किया जाता है उनमे दिन मे दो बार जाकर वह देखे कि काम किस तरह पूरा हो रहा है। लेकिन इसके बजाय कि वह खुद उनके घरो मे जाय, उसने किसानो को हुक्म दिया कि वे स्वय चायखाने मे आकर उससे मिले और आते समय अपनी काखो के नीचे थर्मामीटर लगाये लायें जिससे कि तापमान उसके पास खुद आ जाय और उसे तापमान देखने न जाना पडे ! उस जाज़िम जान ने थर्मामीटरो को देखा और पाया कि तापमान ३७ डिग्री के आस पास था। शरीर का साधारण तापमान इतना ही होता है। तापमान को देख कर वह बोला यह तो बहुत ज्यादा है। गर्मी बहुत है ! हवा खोल दो। नतीजा हुआ कि सिल्क के सारे कीडे मर गये !"

सब लोग हँसने लगे। उस्मानबेव ने दुखित भाव से कहा, 'दरअसल,

दुश्मन की बात नही है। यह बहुत ही दुख की बात है। आग सुनिए। लौटते समय रास्ते मे मैं ज़िले के किंडरगार्टेन को देखने चला गया। वहाँ मुझे उसकी प्रिंसिपल मिला—वह एक ऐसी चिकनी चुपडी स्त्री लड़की थी। बोली, हमारे पास सब कुछ है। सब कुछ बहुत बढ़िया है। हम सब बहुत सुखी हैं। बच्चो, आओ, एक पाँत मे खडे हो जाओ, बच्चे आकर सामने खडे होने लगे। दुबले, पतले काटों-जैसे सूखे वे दीख रहे थे। उनकी एक एक हड्डी दिखाई दे रही थी। सामने खडे हो कर धीरे धीरे जीवन हीन स्वर मे वे उज्बेक भाषा मे गाने लगे

हम एक अद्भुत खेत की खिलती हुई कुमुदिनियाँ है
हम सूरज और हवा के सहारे जीते हैं "

इस गीत को याद करते-करते उस्काबयेव इतने जोर से उन लोगो की तरफ घूमा कि लाट की दीवार से उसकी कोहनी टकरा गयी और चूने का एक गुबार उठ खडा हुआ। वह बोला,

बच्चे जो गा रहे थे वह सचमुच सही था। वे झूठ नही कह रहे थे। वे सचमुच सूर्य और हवा के ही सहारे टिके हुए थे क्योंकि उनके खाने के राशन का चुरा कर गायब कर दिया जाता था। मैंने खुद जाकर इस बात की जाँच पडताल की थी। आप सोच भी नही सकते कि इस तरह की एक औरत कितना अधिक नुकसान कर सकती है। मेरा मतलब केवल बच्चो को पहुँचाये गये नुकसान से नही है। उन्हें तो खिला पिला कर हमने फिर ठीक कर लिया है। लेकिन बडे हो गये बच्चे ऐसी बातो को जल्दी नही भूलते। औरतो के बीच सोवियत सत्ता के पक्ष मे प्रचार करने के लिए किण्डर-गार्टेन और नरसरियाँ सबसे अच्छे साधन होती हैं। यहाँ की स्त्रियाँ अपने गलो मे बच्चो के हार पहनती हैं।"

मास्को से आए एक अतिथि ने कहा, 'आपने कितनी सुंदर बात कही। आप तो पूरे कवि हैं।'

उसकेबमेव ठण्डी साँस लेकर चुप हो गया ।

अच्छा सेन की ट्रेनिंग देने वाली नयी 'रूसी आँखों वाली' शिक्षिका लड़की का नाम शूरा पोतापोवा था । वह वोल्गा की तरफ के एक कृषि विशेषज्ञ की बेटी थी । वोल्गा की तरफ के लोग कुकुरमुत्तों और जंगली बेरों के बारे में तो सब कुछ जानते हैं लेकिन सिल्क के कीड़ों का तो उन्होंने नाम तक नहीं सुना है ।

पोतापोव की पत्नी को टी० बी० (क्षय) की बीमारी थी । वह मोम के उस सेव की तरह दिखलाई देने लगी थी जो खान के कमरे की किनारे वाली छोटी मेज पर पड़े ऊनी मेजपोश के ऊपर रखा था । पोतापोव ने जब अपनी पत्नी के पीले पीले तमतमाये गालों को देखा तो उसे शक हो गया और वह चुपचाप खाँसता और आँखें बचाता हुआ इधर-उधर भटकने लगा । डाक्टर ने बतलाया कि बीमारी अपना साधारण क्रम पूरा कर रही है ।

फिर एक दिन जब पानी बरस रहा था डाक्टर ने उसे देखा तो उसे भी शक हुआ । उसने कहा

'इसे दक्षिण की तरफ, क्राइमिया या काकेशश में ले जाया जाना चाहिए ।"

पोतापोव ने बड़बड़ाहट से पूछा "डाक्टर फिर हम लोग खायेंगे क्या ?"

इस सवाल का जवाब उनमें से किसी के पास नहीं था । शूरा उस समय एक साल की थी और फर्श पर पड़े एक अखबार के ऊपर पेट के बल खिसकने की कोशिश कर रही थी । उस अखबार में लिखा था कि मारना नदी के तट पर स्थित माँथी का मकान एक लम्बी लड़ाई के बाद अन्त में मित्र राष्ट्रों की फौजों के हाथों में चला गया था ।

पोतापोव ने कुछ देर बाद कहा, "अगर तुर्किस्तान की बात होती और वहा जाने से कुछ फायदा होता तो शायद मैं कुछ इन्तज़ाम कर लेता। मेरे एक दोस्त ने एक चिट्ठी में मुझे लिखा था कि ताशकंद मे कृषि विशेषज्ञों की जरूरत है।'

डाक्टर उसकी बात सुनकर खुश हो उठा। उसने कहा, "बहुत बढिया! वह भी तो दक्षिण में है। खूब धूप है वहाँ और इसे उसी की तो जरूरत है। आप फौरन वहा चले जाइए। तीन चार महीने बाद आपके लिए अपनी बीवी को पहचानना भी मुश्किल हो जायेगा।"

डाक्टर की यह बात एकदम सही निकली। छै महीने बाद पोतापोव जब अपनी पत्नी के ताबूत के पास खडा था तो सचमुच उसे पहचानने में उसे कठिनाई हो रही थी। ऊष्ण कटिबंधीय धूप और लायस की मुलायम चीनी मिट्टी ने उसके शरीर को इतनी निर्दयता से खा डाला था कि उसे पहचाना नही जा सकता था।

लीजा की कब्र पर चिनार का जो पेड लगाया गया था वह इतनी तेजी से बढ रहा था कि लगता था कि ताशकन्द के उन चिनार के वृक्षों के साथ वह होड कर रहा था जिन्हें उस क्षेत्र में जनरल कॉफमैन ने उस वक्त लगाया था जब उसने वहां कब्ज़ा किया था। शुरू शुरू में तो केवल चिनार के इस पेड की ही वजह से पोतापोव ताशकन्द मे टिका रहा। बाद मे उसे वह क्षेत्र अच्छा लगने लगा। अब मन पत्नी की याद उसे इतनी अधिक नही सताती थी। किन्तु एक बार जब वह चिमगान के पहाडी सैनीटोरियम मे काफी दिन से रह रहा था उसने उसके बारे में शूरा से बात की।

'डाक्टर ठीक कहता था। पहाडों की आबोहवा बहुत बढिया है। क्रान्ति से पहले हम इनके आस पास भी कभी नही फटक सकते थे और अब जब क्रान्ति हो गयी है तो मां ही हम लोगों के बीच नही रह गयी।'

हर वसन्त के मौसम मे पोतापोव अपनी बेटी के कद को नाप लेता था। उसका सुदर सर जब अपने पिता के कन्धे के बराबर तक पहुँचा तब तक सिल्क के कीडा को पैदा करने वाली एक अच्छी इन्स्ट्रक्टर (शिक्षिका) वह बन गयी थी। पोतापोव स्वय भी सिल्क के सस्थान मे काम करने लगा था। वह रेशम कोषा के सकरण के सम्बन्ध म शोध काय कर रहा था।

जब प्रश्न आया कि शूरा को जरूरी काम से समरकन्द भेजना होगा तो पोतापोव का मन उदास हो उठा।

पोतापोव के पास शूरा के अलावा कुछ नही था। अभी तक वे कभी एक दूसरे से अलग नही रहे थे। सिल्क सस्थान की शहतूत की पौधशाला (नर्सरी) भी वे साथ ही साथ जाया करते थे। वसन्त के प्रारम्भिक दिन थे। शहतूत के पेड की सारी किस्म--साधारण, बौनी, झाडी जसी, स्तूपीय मण्डलाकार और सर्पिल---सभी तरह की किस्म भरी पूरी कलियो से लदी खडी थी। उन सब के बीच बडी पत्ती वाली किस्म का शहतूत का पेड खूब खिल रहा था। यह एक बहुत ही खूबसूरत किस्म थी जिसे जापान से मँगाया गया था।

बाप और बेटी धीरे धीरे सिल्क सस्थान के रास्ते पर टहलने लगे। लेकिन वे उस छोटे से सफेद घर तक नही गये जिसमे प्रयोग के लिए सिल्क के कीडा का अलग रखा जाता था। सिल्क के इन कीडा मे पेबरीन नामक छत की बीमारी लग गयी थी। उनकी देखभाल का भार कर्मिया के एक विशेष दल पर था।

"डैडी, तुम्हे उस वक्त की याद है जब मुझे डिफ्थीरिया (कठ की सक्रामक बीमारी) हो गया था और मुझे सबसे अलग रख दिया गया था?" शूरा ने हँसते हँसते पूछा।

पोतापोव ने गमगीन भाव से सर हिला कर हुकारी भरी।

"डैडी, मैं जा रही हूँ इसलिए तुम दुखी हो, हो ना?" शूरा ने

पूछा, और फिर बोली "लेकिन मुझे तो जाना ही पडेगा । कम्सोमोल (तरुण कम्युनिस्ट संघ) की कमी सदस्या मैं हूँगी अगर मैं जाने से इन्कार कर दू ? और, मैं जाना भी चाहती हूँ । यह मेरा पहला स्वतन्त्र काम होगा । वहाँ दो सौ पैंतालीस घानी खराब गल्ला पडा है जिसे ठीक कर के खाने योग्य बनाना है ।"

'मैं समझता हूँ कि तुम्हे जाना चाहिए और तुम जाना भी चाहती हो । लेकिन यह क्या जरूरी है कि तुम फौरन किसी दूसरे जिले मे ही चली जाओ ? अगर तुम यही काम करना शुरू कर दो तो क्या यह अधिक अच्छा नही होगा ?

डैडी तुम देखते नही कि यह कैसी अवसरवाद वाली बात तुम कह रहे हो ?'

पोतापोव ने अपनी बेटी की तरफ ध्यान से देखा । फिर उसने कहा, 'शायद तुम ठीक ही कह रही हो ।

बहुत अच्छा । जब तुम खुद उसे मान रहे हो तो तुम भी ऐसी बात को गलत ही समझते होगे ।

हा । बस अब मुझे इतना ही कहना है शूरा कि तुम चिट्ठियाँ मुझे जल्दी जल्दी लिखना और ज्यादा से ज्यादा लिखना । हर चीज के बारे मे लिखना । बोलो, वादा करती हो ?'

शूरा अपने पिता की तरफ एकदम चुप हो कर देखने लगी । थोडी देर बाद बोली, मैं वादा करती हूँ ।'

(२)

समरकन्द मे जब यह बात सबको मालूम हो गयी कि यह तय करने के लिए कि किसे परिचय पत्र दिया जाय, शहर के हर मुहल्ले मे एक कमेटी बनायी जायेगी तो बहुत से लोग ऐसे थे जिन्हे यह बात

अच्छी नही लगी । मीर शाहिद भी उन्ही मे से एक था ।

उसने कहा, 'दोस्तो, मुझे डर है कि उस छोटी-सी किताब की वजह से जिस पर कहा जाता है कि छै भाषाओ में 'पासपोर्ट शब्द लिखा जायेगा, हम छै ही बार पुराने अच्छे दिनो की याद कर-कर के ठण्डी सासे लेनी पडेगी । मिसाल के लिए, मुझे ही ले लो । जब कि यह बात मेरे दिल के पर्दे पर लिखी हुई है कि मैं एक सच्चा और दयालु हृदय उज्बेक हूँ तो इसे कागज मे लिखने की क्या जरूरत है ' सच है कि कभी मै रईस था । लेकिन वह बात तो पुरानी हो गयी है और जो चीज बीत चुकी है उसके बारे म अब और बात करने म फायदा क्या ? लेकिन बात सिर्फ इतनी ही नही है । मान लीजिए कि हमारी बीवियाँ अपना अलग पासपोर्ट बनवाना चाहती है? तब क्या होगा ? अगर हमारी चिंतित सोवियत सरकार हर औरत को उसका नाम, उसकी उम्र और उसके शरीर के शिनाख्त के विशेष निशानो का एक किताब म लिखकर दे देती है, तो फिर कौन बीवी अपने शौहर का हुक्म मानेगी ? फिर तो वह बीवी क्या एक ऐसी भेड बन जायेगी जिसके बारे मे हर एक को यह मालूम होगा कि उसके थनो की हालत क्या है और कौन सा उसका पैर लगडा है ।"

मीर शाहिद जब इस तरह की बातें कर रहा था तो वह अपनी दूसरी बीवी, नूर बीवी के विषय मे सोच रहा था । पिछले दिनो नूर बीवी की आखो मे एक विचित्र प्रकार की चमक दिखलाई दी थी जिससे उसे चिन्ता होने लगी थी ।

कुछ दिन और बीत जाने के बाद मीर शाहिद ने अपनी उसी मित्र मडली मे जो उसकी इन इन बातो को शौक से सुनती थी, फिर कहना शुरू किया

"हाँ, मेरे अजीज दोस्त ! मुझे इत्तफाक से पता चल गया था कि मेरी बीवी, नूर बीवी, मुहल्ला कमेटी के पास गयी थी और वहाँ

उसने अपने लिए अलग पासपोर्ट की माग की। बेशक, जब मुझे मालूम हुआ तो मुझे बहुत बुरा लगा कि बिना मुझ से कोई सलाह मशविरा किये ही उसने इस तरह का फैसला कर लिया था। जब वह घर वापस आयी तो मैंने उससे कुछ बात की। अब मेरा खयाल है कि उसने अपना इरादा बदल दिया है। मै नही समझता कि उसे किसी पासपोर्ट की जरूरत है। खुदा करे कि वह हजार साल जिये लेकिन खुदा ना खास्ता अगर वह मर गयी तो बिना पासपोर्ट के भी अल्लाह उसे पहचान जायेंगे, क्योकि शिनाख्त के उसके सारे खास निशान उसके शरीर मे मौजूद है क्योकि, एक अत्यन्त मेहनती लिपिक की तरह, उसके चमडे पर मैंने खुद वह सब कुछ लिख दिया है जिसके लिखने की जरूरत हो सकती थी। इसलिए, मेरे दोस्तो! उसे कोई दूसरी औरत समझने की गल्ती नही कर सकेगा। ऐसा असम्भव होगा।"

लगभग इसी समय पोतापोव को शूरा का पहला लम्बा पत्र मिला। उसमे लिखा था,

प्यार डैडी

वह आजिम जान, जिसे मेरे आने से पहले काम से निकाल दिया गया था, एकदम पक्का तोड फोड करने वाला था। रेशम के तमाम कीडो को उसने सर्दी से मरवा दिया था। वसन्त ऋतु मे जबकि जैसा कि तुम जानते हो काफी ठण्ड होती है, उसने हुक्म दे दिया था कि रेशम के कीडो के घरो को गरम न किया जाय। खिडकियो तक को उसने खुलवा दिया था।

सबसे बुरी बात तो यह है कि अब जब कि खिडकियो का खोला जाना जरूरी है, कोई भी खोलना नही चाहता। लोग मेरी बात का विश्वास नही करेंगे। हमेशा ऐसा ही होता है—एक रद्दी काम करने वाला आदमी न सिर्फ अपने

का नुकसान पहुँचाता है, बल्कि दूसरा के गलो की भी फासी बन जाता है। यहा के लोग क्या कह रहे हैं यह मुझे बतलाया गया है। वे कह रह है कि जब यहाँ अण्डे सेन के यत्र नही थे तब सिल्क के कीडे खूब अच्छी तरह पैदा होत और बढत थे। इससे तुम समझ सकते हो कि यहा कसी हालत है और इसकी वजह मे मर ऊपर कितनी बडी जिम्मेदारी आ गयी है। और देखो, इसी हालत में तुम मुझे यहा आन से रोकना चाहते थे।

अब मैं तुम्हे यह बतलाना चाहती हूँ कि मैं रह कहा रही हूँ। मैं एक मस्जिद मे रह रही हूँ। इस चीज की तो मैंने कभी कल्पना तक नही की थी। तालिब इल्मा (छात्रा) की पुरानी कोठरिया को ठीक-ठाक करके अण्डे सन के यत्रो को रखने के स्थानो मे बदल दिया गया है। मैं भी इन्ही कोठरिया म से एक म रह रही हूँ। इस कोठरी मे एक कोना है जो धुएँ से काला हो गया है। यहाँ आग रहती थी। इसके अलावा, किताबो के लिए एक आलमारी भी इसम है। उसी मे एक छोटी सी जगह है जिसमे मैं सोती हूँ। मुझसे पहले एक मुकामी छात्र इसम सोया करता था। रेशम के कीडे पैदा करन वाला हमारा केन्द्र सामूहिक खेती करन वाले किसानो और अलग-अलग खेती करन वाले किसानो दोनो की मदद करता है। उनम स कुछ को मैं अण्डे दे देती हूँ। लेकिन म पसन्द यही करती हूँ कि उन्ह तैयार कीडे ही दिये जायें। मुसीबत यह है कि आम तौर से काम क बाद य सारे के सारे किसान कीडा क लिए एक ही समय आ धमकत ह। वे सब आकर अपनी छोटी छोटी टोकरिया का लिये हुए लाइन म खडे हो जाते हैं और फिर मेरे सहायको की और मेरी हालत खराब हो जाती है। मेरी मदद के लिए यहा तीन लडकियाँ हैं। दो को सामूहिक फाम न भेजा है और एक गाँव की सोवियत की तरफ़ से आयी है। मैं काफी अच्छी उजबेक जबान मे उनसे बात कर लेती हूँ।

उसने अपने लिए अलग पासपोर्ट की मांग की। बेशक, जब मुझे मालूम हुआ तो मुझे बहुत बुरा लगा कि बिना मुझ से कोई सलाह मश विरा किये ही उसने इस तरह का फैसला कर लिया था। जब वह घर वापस आयी तो मैंने उससे कुछ बात की। अब मेरा खयाल है कि उसने अपना इरादा बदल दिया है। मैं नही समझता कि उसे किसी पासपोर्ट की जरूरत है। खुदा करे कि वह हजार साल जिये, लेकिन खुदा ना खास्ता अगर वह मर गयी तो बिना पासपोर्ट के भी अल्लाह उसे पहचान जायेंगे क्योंकि शिनाख्त के उसके सारे खास निशान उसके शरीर मे मौजूद है क्योंकि, एक अत्यन्त मेहनती लिपिक की तरह उसके चमडे पर मैंने खुद वह सब कुछ लिख दिया है जिसके लिखने की जरूरत हो सकती थी। इसलिए, मर दास्ता ! उसे कोई दूसरी औरत समझने की गल्ती नही कर सकेगा। ऐसा असम्भव होगा।"

लगभग इसी समय पोतापोव को शूरा का पहला लम्बा पत्र मिला। उसमे लिखा था,

प्यारे डैडी

वह आजिम जान, जिसे मेरे आने से पहले काम से निकाल दिया गया था, एकदम पक्का तोड फोड करने वाला था। रेशम के तमाम कीडो को उसने सर्दी से मरवा दिया था। वसन्त ऋतु मे जबकि जैसा कि तुम जानते हो काफी ठण्ड होती है, उसने हुक्म दे दिया था कि रेशम के कीडो के घरो को गरम न किया जाय। खिडकियो तक को उसने खुलवा दिया था।

सबसे बुरी बात तो यह है कि अब जब कि खिडकियो का खोला जाना जरूरी है, कोई भी खोलना नही चाहता। लोग मेरी बात का विश्वास नही करेंगे। हमेशा ऐसा ही होता है—एक रद्दी काम करने वाला आदमी न सिर्फ अपने

को नुकसान पहुँचाता है बल्कि दूसरा के गलो की भी फासी बन जाता है। यहाँ के लाग क्या कह रहे हैं यह मुये बतलाया गया है। वे कह रहे है कि जब यहाँ अण्डे सेने के यत्र नही थे तब मिल्व के कीडे खूब अच्छी तरह पैदा होते और बढत थे। इससे तुम समझ सकते हो कि यहा कैसी हालत है और इसकी वजह से मरे ऊपर कितनी बडी जिम्मेदारी आ गयी है। और देखो, इसी हालत में तुम मुझे यहा आने से रोकना चाहते थे।

अब मैं तुम्हे यह बतलाना चाहती हूँ कि मैं रह कहा रही हूँ। मैं एक मस्जिद म रह रही हूँ। इस चीज की ता मैंने कभी कल्पना तक नही की थी। तालिब इल्मो (छात्रा) की पुरानी कोठरियो का ठीक-ठाक करके अण्डे सेने के यन्त्रो को रखने के स्थानो मे बदल दिया गया है। मैं भी इन्ही कोठरिया मे स एक मे रह रही हूँ। इस कोठरी मे एक कोना है जो धुएँ से काला हो गया है। यहा आग रहती थी। इसके अलावा, किताबो के लिए एक आलमारी भी इसम है। उसी मे एक छोटी सी जगह है जिसमे मैं सोती हूँ। मुझस पहले एक मुकामी छात्र इसम सोया करता था। रेशम के कीडे पैदा करन वाला हमारा केन्द्र सामूहिक खेती करने वाले किसाना और अलग-अलग खेती करने वाले किसानो दोनो की मदद करता है। उनम स कुछ को मैं अण्डे द देती हूँ। लेकिन मैं पसन्द यही करती हूँ कि उन्हे तैयार कीडे ही दिये जायें। मुसीबत यह है कि आम तौर स काम के बाद ये सारे के सार किसान कीडा के लिए एक ही समय आ धमकते हैं। वे सब आकर अपनी छोटी-छोटी टोकरियो को लिये हुए लाइन मे खडे हो जाते हैं और फिर मेरे सहायको की और मेरी हालत खराब हो जाती है। मेरी मदद के लिए यहा तीन लडकिया हैं। दो को सामूहिक फार्म ने भेजा है और एक गाव की सोवियत की तरफ से आयी है। मैं काफी अच्छी उज्बेक जबान मे उनसे बात कर लेती हूँ।

उसन अपन लिए अलग पास पोट की माग की। बेशक, जब मुझे मालूम हुआ तो मुझे बहुत बुरा लगा कि बिना मुझ से काई सलाह मश विरा किये ही उसा इस तरह का फैसला कर लिया था। जब वह घर वापस आयी ता मैंने उससे कुछ बात की। अब मेरा खयाल है कि उसन अपना इरादा बदल दिया है। मै नही समझता कि उसे किसी पासपाट की जरूरत है। खुदा कर कि वह हजार साल जिय, लेकिन खुदा ना खास्ता अगर वह मर गयी तो बिना पासपाट के भी अल्लाह उसे पहचान जायेंगे, क्याकि शिनाख्त के उसके सारे खास निशान उसके शरीर मे मौजूद है क्योकि, एक अत्य त महनती लिपिक की तरह उसके चमडे पर मैंने खुद वह सब कुछ लिख दिया है जिसके लिखने की जरूरत हा सकती थी। इसलिए मरे दास्ता। उस कोई दूसरी औरत समझने की गल्ती नही कर सकेगा। ऐसा असम्भव होगा।

लगभग इसी समय पोतापाव को शूरा का पहला लम्बा पत्र मिला। उसम लिखा था,

प्यारे डैडी,

वह आजिम जान, जिसे मेरे आने से पहले काम से निकाल दिया गया था, एकदम पक्का तोड फोड करने वाला था। रेशम के तमाम कीडा को उसने सर्दी स मरवा दिया था। वसन्त ऋतु म, जबकि जैसा कि तुम जानत हो काफी ठण्ड होती है, उसने हुक्म दे दिया था कि रेशम के कीडो के घरा को गरम न किया जाय। खिडकियो तक को उसन खुलवा दिया था।

सबसे बुरी बात ता यह है कि अब जब कि खिडकिया का खाला जाना जरूरी है कोई भी खोलना नही चाहता। लोग मेरी बात का विश्वास नहीं करेंगे। हमेशा एसा ही हाता है—एक रद्दी काम करन वाला आदमी न सिर्फ अपने

का नुक्सान पहुँचाता है बल्कि दूसरो के गलो की भी फाँसी बन जाता है। यहाँ के लोग क्या कह रह हैं यह मुझे बतलाया गया है। वे कह रहे हैं कि जब यहाँ अण्डे सन के यत्न नही थे तब सिल्क के कीडे खूब अच्छी तरह पैदा हाते और बढते थे। इसस तुम समझ सक्ते हो कि यहाँ कैसी हालत है और इसकी वजह स मेरे ऊपर कितनी बडी जिम्मेदारी आ गयी है। और देखो, इसी हालत में तुम मुझे यहा आन से रोकना चाहते थे।

अब मै तुम्हे यह बतलाना चाहती हूँ कि मैं रह कहा रही हूँ। मैं एक मस्जिद मे रह रही हूँ। इस चीज़ की तो मैंने कभी कल्पना तक नही की थी। तालिब इल्मा (छात्रा) की पुरानी कोठरियो का ठीक ठाक करके अण्डे सन क यत्रा को रखन के स्थाना मे बदल दिया गया है। मैं भी इन्ही कोठरियो म स एक म रह रही हूँ। इस कोठरी मे एक कोना है जा धुएँ स काला हा गया है। यहा आग रहती थी। इसके अलावा, किताबा क लिए एक आलमारी भी इसम है। उसी मे एक छोटी सी जगह है जिसमे मैं सोती हूँ। मुझस पहले एक मुकामी छात्र इसमे सोया करता था। रेशम के कीडे पैदा करन वाला हमारा केन्द्र सामूहिक खेती करने वाले किसाना और अलग अलग खेती करन वाले किसानो दोनो की मदद करता है। उनमे स कुछ को मैं अण्डे दे देती हूँ। लेकिन म पसन्द यही करती हूँ कि उन्हे तैयार कीडे ही दिय जायँ। मुसीबत यह है कि आम तौर स काम क बाद य सार के सार किसान कीडा के लिए एक ही समय आ धमकते ह। वे सब आकर अपनी छोटी-छोटी टोकरिया का लिये हुए लाइन मे खडे हो जाते है और फिर मेरे सहायको की और मेरी हालत खराब हो जाती है। मेरी मदद के लिए यहा तीन लडकियाँ हैं। दो को सामूहिक फाम न भेजा है और एक गाव की सोवियत की तरफ से आयी है। मैं काफी अच्छी उज्बेक ज़बान मे उनसे बात कर लेती हूँ।

शहतूत के पेड भी यहा से दूर नही है। लेकिन वे झाडी की किस्म के नही हैं। वे बहुत ऊचे ऊचे है। उन पर चढना कठिन होता है। मुकामी बच्चे मेरे लिए पत्तिया बटोर लाते हैं। जो भी मेरे पास पत्तियो का अच्छा खासा गटठर लाता है उसे एक खाली बक्सा, जिसमे सिल्क के कीडो के अण्डे रखे जाते है दे दिया जाता है। इसलिए सारे बच्चे खूब मेहनत कर के मेरे लिए पत्ते बटोर लाते हैं।

एक चीज बुरी है—लगभग सबके सब पेड सडक के किनारे लगे हैं। वे धूल से लदे रहते हैं। धूल मिट्टी से सनी हालत मे उनकी पत्तियाँ बेकार होती हैं। मुझे डर लगता है कि अगर उन्हे धोकर मैं गीली हालत मे रेशम के कीडो को दे दू तो उन्हे पेचिश हो जायगी। कृपा कर मुझे फौरन लिखना कि इस स्थिति मे मैं क्या करूँ?

मुझे कमरे मे हवा पहुँचाने के सबध मे भी फिक्र लगी हुई है। यहाँ खिडकियाँ नही हैं। सिर्फ दरवाजे हैं और वे भी अन्दर के सहन की तरफ खुलते हैं और यह सहन भी इस अजीबो-गरीब तरीके से बनाया गया है कि अगर उसके एक किनारे पर आप जरा सी भी आवाज करें तो वह हर जगह सुनाई पड जायगी।

एक बात बताना मैं भूल गयी। एक कोठरी मे उज्बेक सिल्क सघ द्वारा प्रकाशित किये गये पोस्टरो का एक पूरा गटठर मुझे पडा मिला है। ये पोस्टर पीले और हरे रग के है। उनके बीचो बीच एक खूब बडा सा सिल्क का कीडा बना है और उसके चारो तरफ उज्बेक भाषा मे हिदायतें लिखी हैं। मुझे पता चला है कि आजिम जान ने इन पोस्टरो का कभी किसी को नहीं दिया था। उसने इन सबको उठा कर बस एक अधेरी कोठरी मे बन्द कर दिया था।

जिले का शिक्षक मेरे पास आया था, लेकिन मैं चाहती हूँ कि इही

तुम बताओ कि मुझे क्या करना चाहिए। तुम पार्टी के सदस्य नहीं हो, लेकिन तुम एक पुराने विशेषज्ञ हो और इससे भी ज्यादा खास बात यह है कि तुम मेरे पिता हो।

अच्छा डैडी, गुड बाई। मुझे सारी रात जागना है। सुबह होते होते तक शायद कीड़े सेने के यन्त्रों से निकलने लगेंगे। 'इक्के दुक्के भेदिये तो बाहर निकल भी आये हैं। और हाँ—क्या तुमने कभी इस बात पर गौर किया है, कि सेने के यन्त्रों से निकले नये कीड़े जब जाल के अन्दर से आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं तो वे एक दूसरे के साथ उसी तरह धक्कम धुक्का करते हैं जिस तरह कि ट्राम पर चढ़ने वाले लोग अक्सर किया करते हैं? उनकी पूरी की पूरी भीड़ एक ही छेद के अन्दर से घुसने की कोशिश करती है। यह बात मैंने यों ही तुम्हें याद दिलाने के लिए लिख दी है।

आशा है तुम अच्छी तरह होगे।

तुम्हारी बेटी,
शूरा

दूसरी चिट्ठी

प्यारे डैडी,

एक लम्बे अरसे से मैं तुम्हें चिट्ठी नहीं लिख पायी—मैं बहुत मसरूफ रही हूँ। लेकिन अब हालात कुछ बेहतर हैं। मिल के कीड़ों के मुख्य भाग को बाँटा जा चुका है। मैंने जो कीड़े पैदा किये थे, वे बहुत तंदुरुस्त थे चित्तीदार की संख्या उनमें बहुत थोड़ी थी। कल से मैंने उन स्थानों का दौरा शुरू कर दिया है जिनको कीड़े दिये गये थे। मैं अपनी एक सहायक के साथ गयी थी। वह सामू

हिक फाम की तरफ से मुझे मदद करने के लिए दी गयी है। उसका नाम मोहब्बत है। वह बहुत अच्छी महिला है। पार्टी की सदस्य है। वह जवान नहीं है उसके ता नाती पोते तक हैं लेकिन वह कभी हिम्मत नही हारती। उसकी जिन्दगी बहुत सख्त रही है, लेकिन जब भी वह उसके बारे म मुझे बतलाती है तो हँसने लगती है। मिसाल के लिए, उसकी शादी को ही ले लो। उसका जन्म एक गरीब परिवार म हुआ था। अपने मा-बाप की वह सातवी सन्तान थी। जब उसकी शादी हुई तो वह सोलह साल की, एक बुढ़िया हो गयी थी क्योंकि उसकी गरीबी की वजह स उससे कोई शादी करने के लिए तैयार नही होता था। आखिर म उसके घर वालो ने उसके लिए एक शौहर ढूंढ लिया। ऊपर से देखने मे वह खुशहाल लगता था। उसके पास कालीन थे लिहाफ थे और, और भी कपडे थे यहाँ तक कि एक समावार भी था। मोहब्बत ने उससे शादी कर ली और तीन दिन तक उसके धन-दौलत का उपयोग किया। खास तौर से समोवार का उसने अच्छी तरह मजा लिया। फिर पता चला कि उनम से कोई भी चीज़ उसकी अपनी नही थी। उसने उन सबका उधार लेकर जमा किया था। पहले उसके शौहर का एक दोस्त आया और कालीनो को उठा ले गया दूसरा दोस्त लिहाफो को ले गया तीसरा कुछ और चीजो को ले गया। समोवार के अलावा घर म कुछ नही बचा। बाद मे लोग उसे भी लेने आ गये।

मोहब्बत कहने लगी कि 'समोवार मुझ से नही दिया जा रहा था, इसलिए मैं उसके पास बैठ गयी और उसे छाती से लगा लिया। मैंने अपना गाल उस पर रखा। वह ठण्डा था और मैं गर्म थी। मैं रोने लगी, लेकिन वह चुप ही रहा। इसके बावजूद वे लोग उसे उठा ले गये। अब वह सब कुछ हास्यास्पद लगता है। मैं नादान थी, और गरीब और अजानकार थी। मैं हँसती थी

और रोती थी, लेकिन यह नही जानती थी कि मैं ऐसा क्यो करती हूँ।"

उसने मुझे ठीक इसी तरह बतलाया था।

बहरहाल, हम लोग साथ साथ निकले और एक किसान के घर पहुँचे। हमने उसका दरवाजा खटखटाया, लेकिन अंदर मे कोई जवाब नही मिला। खूब अच्छी धूप थी। सन्नाटा छाया था। और कैसा सन्नाटा! केवल उसके घर की मिट्टी की छत के ऊपर खसखस (पोस्ता) के पौधे सिर हिला रहे थे और हवा में मधुमक्खियां भिन भिन कर रही थी। आखिरकार, दरवाज़ा खुला और हम लोग अन्दर घुसे। एक सौ वर्ष की औरत हमे मिली। वह एकदम भूरी भूरी लग रही थी। उसके शरीर पर बिल्कुल फटा हुआ चीथडो जैसा एक बुरका था। वह जीवित कम मुर्दा ज्यादा लग रही थी। पडोस के सहन से एक और बूढी औरत आ गयी। फिर एक और बुढिया आ पहुँची। इसके बाद, करीब करीब उसी उम्र का एक बुड्ढा आदमी आ पहुँचा और, आखिर मे बच्चो का एक झुण्ड दौडता हुआ सहन के अन्दर घुस आया। इस तरह वहाँ एक पूरी बडी मीटिंग हो गयी।

"और सब लोग कहाँ हैं? क्या काम पर गये हैं?' मोहब्बत ने पूछा।

उन्होने जवाब दिया 'काम पर गये हैं। बागीचो और सब्जी के खेतो में काम कर रहे हैं।' (हमारे इस सामूहिक फाम में फल और सब्जियाँ भी होती हैं)

यकायक एक लडकी, जो दूसरों से कुछ बडी लगती थी, रूसी मे बोल उठी। उसने कहा,

हमारे सब लोग अंगूर के बाग मे हैं। खाद के लिए वे कही से नाइट्रोजन ले आये है।"

और तब उन सब बुढ़ियो और बुड्ढो न सर हिलाये और, मुस्कराते हुए 'अज़ोट,' "अज़ोट (नाइट्रोजन नाइटोजन) शब्द को दोहराया। वे केवल इसी रूसी शब्द को समझ पाये थे। चलते वक्त मैंने चिल्ला कर उनसे कहा

"खुदा हाफ़िज़! अज़ोट, अज़ोट!

उन्होंने भी मुझे उत्तर दिया, 'अज़ोट!

लेकिन वहा से चलने से पहले हम लोगो ने सिल्क के कीडो पर एक नज़र डाल ली थी। कीडो को चारो तरफ से अच्छी तरह बन्द एक कमरे के अन्दर छत से लटकती हुई एक टोकरी मे उन्होंने रख छोडा था! टोकरी को उन्होंने रुई भरी रज़ाई से ढक दिया था। कीड़े सर्दी मे ठिठुर गये थे और घुटन महसूस कर रहे थे। मैंने टोकरी के ऊपर से रज़ाई हटा दी और कमरे की खिडकी को खोल दिया। मोहब्बत ने फिर मुझे बतलाया

तुम सोच भी नही सकती कि सिल्क की हमारी औरतो के लिए क्या अहमियत है। उनकी आजादी इसी से शुरू होती है। सिल्क का रुपया औरत का रुपया होता है। बस इस बात का बन्दोबस्त होना चाहिए कि रेशम कातने वाली औरतें खुद ले आयें जिससे कि रुपया उन्हें मिल जाय—क्योंकि ऐसा भी हो सकता है कि काम तो सारा वे करें और रुपया मर्दों की जेब मे पहुँच जाय।'

खुदा हाफ़िज़, डैडी।

तुम्हारी बेटी
शूरा

तीसरी चिट्ठी

डैडी

सुनो ! काश, तुम इस बातका जानते होते । मैं तुम्हे बतलाती हूँ कि यहा क्या हुआ है । माहब्बत और मै फिर रेशम के कीडा को देखन के लिए निकले थे ।

जब हम दानो एक घर के पास से गुजर रहे थ तो माहब्बत ने कहा, "चलो, हम लोग इस घर म चले । इसमे मीर शाहिद नाम का एक बहुत खराब आदमी रहता है । उसकी दूसरी बीवी अब भी बहुत दुःखी है । उस गली मे ता नई जिन्दगी आ गयी है, लेकिन उसके सहन के अन्दर वह नही घुस पाती ! उसके तीन बच्चे हैं । तीसरा बच्चा भी छाटा है और बहुत बीमार है । उसे लेकर वह कहा निकल सकती है ? अगर बच्चे को वह घर पर छाड कर कही जाय तो पहली बीवी फौरन उसको मार डालेगी । '

हम लोग अन्दर घुस गये । एक अच्छा बडा सा कमरा था जिसकी दीवारा को रुपये पैसे की जाच करन वाल इन्स्पेक्टर की रिपाट के पन्ना मे चिपका कर सजाया गया था ! कमरे मे सभी कुछ बहुतायत से था—पानी पीने के बहुत से प्याल तश्तरियाँ, काँच के मतबान और लिहाफा का भी एक पूरा ढेर ! घर का आदमी झुक झुक कर खुशामद करता हुआ हम लोगो से मीठी मीठी बातें कर रहा था । वह एक अच्छा सा कमरबद बाधे था । इसका मतलब था कि उस अब भी उम्मीद थी कि औरतें उस पर रीझेंगी ! और अपने सर के पिछले हिस्से पर जिस तरह वह टापी रखे था उससे उसके आत्म सतोष की झलक मिलती थी । बच्चे भी वहीं थे । सबसे छोटे बच्चे की टाँगें धनुप की तरह टेढी थी ।

और तब उन सब बुढ़िया और बुड्ढों ने सर हिलाये और, मुस्कराते हुए "अज़ोट,' 'अजोट (नाइटोजन नाइट्रोजन) शब्द को दोहराया। वे केवल इसी रूसी शब्द को समझ पाये थे। चलते वक्त मैंने चिल्ला कर उनसे कहा

'खुदा हाफ़िज़! अजोट अज़ोट!'

उन्होंने भी मुझे उत्तर दिया, 'अज़ोट!'

लेकिन वहां से चलने से पहले हम लोगों ने सिल्क के कीड़ों पर एक नज़र डाल ली थी। कीड़ों को चारों तरफ से अच्छी तरह बन्द एक कमरे के अन्दर छत में लटकती हुई एक टोकरी में उन्होंने रख छोड़ा था। टोकरी को उन्होंने रुई भरी रजाई से ढक दिया था। कीड़े सर्दी में ठिठुर गये थे और घुटन महसूस कर रहे थे। मैंने टोकरी के ऊपर से रज़ाई हटा ली और कमरे की खिड़की को खोल दिया। मोहब्बत ने फिर मुझे बतलाया,

'तुम सोच भी नहीं सकती कि सिल्क की हमारी औरतों के लिए क्या अहमियत है। उनकी आज़ादी इसी से शुरू होती है। सिल्क का रुपया औरतों का रुपया होता है। बस इस बात का बंदोबस्त होना चाहिए कि रेशम कातने वाली औरतें खुद ले आयें जिससे कि रुपया उन्हें मिल जाय—क्योंकि ऐसा भी हो सकता है कि काम तो सारा वे करें और रुपया मर्दों की जेब में पहुँच जाय।'

खुदा हाफ़िज़ डैडी।

तुम्हारी बेटी
शूरा

तीसरी चिट्ठी

डैडी,

सुनो ! काश, तुम इस बानको जानते होते । मैं तुम्हे बतलाती हूँ कि यहा क्या हुआ है । मोहब्बत और मैं फिर रशम के बीडो को देखने के लिए निकले थे ।

जब हम दोनो एक घर के पास से गुजर रहे थे तो मोहब्बत ने कहा, 'चलो, हम लोग इस घर मे चले । इसमे मीर शाहिद नाम का एक बहुत खराब आदमी रहता है । उसकी दूसरी बीवी अब भी बहुत दु खी है । उस गली मे तो नई जिन्दगी आ गयी है, लेकिन उसके सहन के अन्दर वह नही घुस पाती । उसके तीन बच्चे है । तीसरा बच्चा भी छोटा है और बहुत बीमार है । उसे लेकर वह कहा निकल सकती है ? अगर बच्चे को वह घर पर छोड कर कही जाय तो पहली बीवी फौरन उसको मार डालेगी । '

हम लोग अन्दर घुस गये । एक अच्छा बडा सा कमरा था जिसकी दीवारो को रुपये-पैसे की जाँच करने वाले इन्स्पेक्टर की रिपोट के पन्नो से चिपका कर सजाया गया था । कमरे मे सभी कुछ बहुतायत से था—पानी पीने के बहुत से प्याले तश्तरियाँ, काँच के मर्तबान और लिहाफो का भी एक पूरा ढेर । घर का आदमी झुक झुक कर खुशामद करता हुआ हम लोगो से मीठी मीठी बातें कर रहा था । वह एक अच्छा सा कमरबद बाधे था । इसका मतलब था कि उसे अब भी उम्मीद थी कि औरतें उस पर रीझेंगी । और अपने सर के पिछले हिस्से पर जिस तरह वह टोपी रखे था उससे उसके आत्म सतोष की झलक मिलती थी । बच्चे भी वहीं थे । सबसे छोटे बच्चे की टागें धनुष की तरह टेढी थीं ।

बच्चे की तरफ इशारा करते हुए मैंने कहा, "इसे आपको डाक्टर के पास ले जाना चाहिए। इसे सूखे की बीमारी है।'

उसने अपने हाथ को सीने पर रखा और मुझे धन्यवाद देने लगा। वह रूसी शब्द 'राखिन' (सूखे का रोग) और उज्बेक शब्द राखमत' (शुक्रिया) को मिला कर खिलवाड़ करता हुआ मेरा मज़ाक बनाने की कोशिश करने लगा। उसके बग़ल में एक औरत खड़ी थी।

"क्या यही नूर बीबी है? मैंने मोहब्बत से धीरे से पूछा।

'नहीं यह वह नहीं है। यह उसकी पहली बीबी है। जरा ठहरो, मैं इससे पूछूँगी कि वह कहाँ है?'

लेकिन उसे इस बात का पूछने का वक्त नहीं मिला। इसके बाद जो हुआ वह मैं तुम्हें बतलाती हूँ।

मैं सिल्क के कीड़ों का पेखन अन्दर गयी। ये लोग खुद अपने अण्डे सेते हैं। कीड़े अभी-अभी अण्डा को तोड़कर निकले थे। पहली बीबी उन्हें एक मामूली कागज़ के पन्ने पर इकट्ठा कर रही थी।

'आपा, ऐसा न करो! इस तरह तो तुम उन्हें कुचल दोगी। उन्हें तुम्हें मुर्गी के पंख से इकट्ठा करना चाहिए। मैं अभी लौटकर तुम्हारे लिए एक पंख ला देती हूँ।

यह कह कर मैं सहन की तरफ दौड़ी। मैं सोचती थी कि उनके यहाँ मुर्गियाँ ज़रूर होंगी। सहन में मैंने देखा कि एक पेड़ के ठूँठ के पास मैना का एक पंख पड़ा था। मैंने सोचा कि उससे काम चल जायेगा। उसे उठाने के लिए ज्योंही मैं झुकी त्योंही मुझे उस ठूँठ के नीचे से किसी के कराहने की आवाज़ सुनायी दी। मैं ठूँठ के और नज़दीक गयी तो मैंने देखा कि वह नीचे बनी एक इमारत के दरवाज़े पर रखा था। मैं नहीं जानती कि क्यों, लेकिन

मुझे एकदम लगा कि नूर बीवी बीमार है और उसे इन लोगा न इसी मकान मे नीचे छिपा दिया है। मुझे और कुछ सोचन का वक्त नही मिला (यह सब कुछ इतनी जल्दी, एक मिनट स भी कम के समय मे हो गया था) क्याकि मेरे पीछे पीछे मीर शाहिद भी सहन मे आ गया था।

अपने शब्दो मे ज्यादा से ज्यादा शहद लपटते हुए उसन मुझसे कहा, शिक्षक आपा, आप कितनी दयालु है, हमारे इन घणित रेशम के कीडो के पीछे आप को कितनी परेशानी उठानी पड रही है! लेकिन मुर्गियाँ बहुत दिना से हमारे पास नही है।" मैंन भी उसी तरह मिठास भरे लफ्जा मे कहा कोई बात नही, मीर शाहिद आका। मैना के घृणित पख से भी काम अच्छी तरह चल जायेगा।" मैंने उसको यह नही जानने दिया कि मैंन कोई चीज़ सुनी थी।

डडी अब इस वक्त मैं और नही लिख सकती। मुझे ऐसा लगना है कि उडती हुई ततैयो की आवाज आ रही है। ततैया स मुझे मकडा या चूहो मे भी ज्यादा डर लगता ह, गाकि सिल्क के कीडा को य भी बडे शौक से खा जाती हैं। लेकिन ततैया सबसे ज्यादा खतरनाक हाती है। मैं जाकर दखती हूँ कि वे इतना शार क्यो मचाती हैं। *लौटकर मैं बाकी चिट्ठी लिखूगी और बतलाऊँगी कि इसके बाद क्या हुआ*

उन्हान जो देखा वह निम्न प्रकार था।

सामूहिक फाम के तरुण कम्युनिस्ट सघ (कोम्सामोल) का सचिव कुर्बान निज़ामोव अगूर की बेला की कतारा के बीच ट्रैक्टर से जमीन जोत रहा था जिससे कि अगूर की बेला के बीच लौंग और मटर को

लगाया जा सके । अंगूर की बेलों की कतारों के बीच की जमीन का इस्तेमाल करने का उस समय यह एक नया तरीका था । यह ऐसा तरीका था जिसका बहुत से लोग विरोध करते थे । विरोधी लोग कहते थे कि अंगूर की बेलों की कतारों के बीच अगर कोई चीज लगायी गयी तो वह जमीन का सब कुछ हड़प जायेगी और फिर अंगूरों के लिए रस नहीं रह जायेगा । उनके इस विरोध की वजह से यह तय किया गया था कि इस नये तरीके का प्रयोग सिर्फ एक ही जगह किया जाय ।

कुमास अपने ट्रैक्टर को बहुत सावधानी से चला रहा था । वह जानता था कि उसका फोर्डसन ट्रैक्टर इस काम के लिए बहुत चौड़ा था और उससे अंगूर की बेलों को नुकसान पहुंच सकता था । दरअसल, उसे इंटरनेशनल ट्रैक्टर की जरूरत थी जो काफी सँकरा होता है लेकिन इण्टरनेशनल कहीं था नहीं और इसलिए उसे चिन्ता लगी थी । उसकी टोपी पसीने से भीग गयी थी और उसके कान के पीछे जो न्यात्रा का फूल लगा था वह उसके जलते हुए गाल की गर्मी से एकदम सूख गया था ।

शूरा धूल में से दौड़ती हुयी ट्रैक्टर के पास पहुंच गयी । उसने जोर से आवाज देकर कहा कुर्मास, रुक जाओ !

लेकिन कुर्मास तब तक ट्रैक्टर चलाता रहा जब तक कि वह पूरी लीक पूरी नहीं हो गयी । हल रेखा के खत्म हो जाने पर वह उसकी तरफ मुड़ा और पूछने लगा,

'क्या बात है ? धूल के बादलों के अन्दर से किसी के चीखने की आवाज तो मुझे सुनायी दे रही है लेकिन मैं पहचान नहीं पा रहा हूँ कि बादलों के बीच कौन है । तुम्हें क्या चाहिए ? यहाँ एक एक मिनट कीमती है । तुम वहाँ खड़ी-खड़ी चिल्ला रही हो ।'

"जरा रुको मैं जिस मिनट की बात करती हूँ वह और भी ज्यादा कीमती है ।'

ट्रैक्टर के पहिये को उसने इस तरह पकड़ लिया था जैसे कि वह उसे अपने हाथों से रोके रखना चाहती थी। पहिए की धातु धूप में आग की तरह जल रही थी जिससे शूरा के हाथ जल गये। उसने कुर्मास को पूरी कहानी सुना दी।

मीर शाहिद ने सच बतलाया था। नूर बीबी नूर बीबी थी। उसकी जगह और कोई औरत नहीं ले सकती थी। उसके 'शिनाख्त' के निशानों पर खून जमने से पपड़ियां पड़ गयी थीं। सबसे गहरा घाव उसके माथे पर था जो आँखों से ऊपर उसके उलझे बालों तक चला गया था।

नूर बीबी एक छोटे से ओसारे में एक फटे कम्बल पर बैठी था। अपनी बाहों से अपने घुटनों को पकड़े हुए वह ज़मीन की तरफ देख रही थी।

मीर शाहिद ने काँपते हुए कहा, साथियो, इसे बुखार है। इसे वह बुखार है जिससे कँपकँपी पैदा होती है आदमी बेहोश हो जाता है और तकलीफ की वजह से इतना सर पटकता है कि खून निकलने लगता है क्या, नूर बीबी मेरी प्यारी बीवी, तुम्हें बुखार है न ?"

नूर बीबी कुछ नहीं बोली। कुर्मास शूरा मोहब्बत और ज़िले का जन सैनिक भी चुप रहे। खामोशी को तोड़ा अस्पताल की महिला डाक्टरनी ने। वह बोली,

हमने बहुत अच्छा किया जो अपने साथ स्ट्रेचर लेते आये। लेकिन साथियो इसे बहुत सम्हाल कर उठाना।'

जब नूर बीबी को वहाँ से लेकर लोग चले गये तब ज़िले के जन-सैनिक, उरनव ने (जो कि खुद भी अपने कान के पीछे लाला का एक फूल लगाये था, क्योंकि मध्य एशिया में बसन्त का मौसम लाला के फूल का मौसम होता है) मीर शाहिद की तरफ मुखातिब होकर कहा,

"तुम्हारी बीवी बच जायेगी, वह डाक्टरनी उसे अच्छा कर देगी और यह अच्छी बात है। अफसोस की बात तो सिर्फ यह है कि उसकी वजह से तुम भी जिन्दा बच जाओगे। लेकिन, चलो, आगे बढ़ो, जो जगह वर्षों से तुम्हारा इन्तजार करती आयी है वहां के लोगों को अब और अधिक इन्तजार मत कराओ।'

होजा अहरार की मस्जिद का वह पुराना मदरसा जिसने सामन्तों के न जाने कितने बेटों को पढ़ाया और तैयार किया था, आज औरतों से भरा था। यह मीटिंग एक तरह से अपने आप ही हो गयी थी। किसी ने उसकी कल्पना नहीं की थी, और न किसी ने उसके लिए कोई खास तैयारी ही की थी।

बात यूं हुई कि एक दिन अचानक यह खबर चारों तरफ फैल गयी कि नूर बीबी बिल्कुल अच्छी हो गयी है और उसे अस्पताल से रिहा कर दिया गया है। साथ ही यह बात सबको मालूम हो गयी कि अस्पताल से छूटते ही नूर बीबी सीधे ताशकन्द से आयी शिक्षिका के पास गयी और उन दोनों ने खूबानी के पेड़ के नीचे बैठ कर चाय पी।

इन बातों को सुनते ही गांव की तमाम औरतें, सामूहिक फार्म के किसानों की स्त्रियां तथा व्यक्तिगत रूप से अलग अलग खेती करने वाले किसानों की बीवियाँ, अर्थात वे तमाम औरतें जिनके पास उस समय कोई काम नहीं था मस्जिद की तरफ चल पड़ीं। देखते देखते मस्जिद का लम्बा चौड़ा सहन ठसाठस भर गया। यह सब इतने अचानक हुआ कि शूरा सकते में पड़ गयी। मुश्किल से उसे इतना ही समय मिल पाया कि मस्जिद के सामने वह आज़िम जान के केवल उन पोस्टरों को लगा दे जो बांटने से उसके पास बच रहे थे।

पत्थर का चौकोर सहन हरे और पीले रंगों से दमकने लगा।

लकड़ी के नक्काशी किये हुए दरवाजों के बीच की दीवारों पर खूब बड़े बड़े सिल्क के कीड़े रेंगते मालूम हो रहे थे। सबसे महत्वपूर्ण पोस्टर (जो अपनी तरह का केवल एक ही था) वह था जिसमें नारंगी रंग में एक नौजवान उज़्बेक स्त्री की तस्वीर बनी थी। उसकी सूरत शक्ल कुछ कुछ नूर बीबी से मिलती थी, लेकिन वह कम्युनिस्ट तरुण अन्तर्राष्ट्रीय संघ का एक बिल्ला लगाये थी। इस पोस्टर को स्वागत के लिए सहन के द्वार पर लटका दिया गया था।

तीन बार ताली बजाकर माहब्बत ने सभा की कार्यवाही शुरू की। सहन की ध्वनि सम्बन्धी बनावट बहुत अच्छी थी, उसने तालियों की आवाज़ की पुनरावृत्ति कर दी। महिलाओं के कपड़ों की सरसराहट हुई और फिर उनके शालों और दुपट्टों के ठीक किये जाने की धीरे-धीरे आवाज़ आयी। इसके बाद सन्नाटा हो गया।

वसन्त के दिन थे और सूर्यास्त होने वाला था। होजा अहरार के मदरसे के ऊपर, सजे बुर्जों और तारों से अलंकृत नीले चौकोर आकाश में, दूज का चाँद अपनी पूरी छटा के साथ चमक रहा था।

नूर बीबी सहन के बीचों बीच लगे खूबानी के पेड़ के नीचे एक बेंच पर बैठी थी।

माहब्बत ने कहना शुरू किया, 'बहिनो ! आप देखती हैं कि आप के सामने नूर बीबी बैठी हुई है। इसे हम सब जानते हैं। हम ज़रा विचार करें कि इस महिला को किस तरह की ज़िन्दगी बितानी पड़ी है।'

फिर कपड़ों के हिलने की सरसराहट सुनायी दी, फिर खामोशी छा गयी। माहब्बत ने पूछा,

पुराने ज़माने में हमारी स्त्रियों के पाँच पाँच मालिक होते थे—क्या यह जुर्म नहीं है ? पहला मालिक उसका खुदा होता था। दूसरा

अमीर। तीसरा वह जो उसे काम देता था—यानी जो जमीन और पानी का मालिक होता था और उन्हें अपनी मर्जी के मुताबिक लागा का देता था। उसका चौथा मालिक मुल्ला होता था और पांचवां उसका शौहर। बहिनो हम लोग नूर बीबी के खिलाफ इस जुर्म में मुकदमा चलाने जा रहे हैं कि इसने अपने चार मालिकों से नजात पा ली है और सिर्फ पांचवें को रखे हुए है। क्रान्ति से पहले रुपया या चावल लेकर हम बेच दिया जाता था या फिर किसी भी तरह के सामान के बदले में दे दिया जाता था। हम बच्चे ही होते थे जब बुड्ढों के साथ हमारी शादी कर दी जाती थी (नूर बीबी, तुम रो किसलिए रही हो?)—ऐसे बूढ़ों के साथ जिनके हमारे अलावा भी बहुत सी बीबियां होती थीं। वे हमसे हमारा बचपन छीन लेते थे और हम खामोश रहते थे। नूर बीबी तुम्हारा जुर्म यह है कि तुम इतने दिन तक चुप रही हो! बहिनो यह इस जुर्म की अपराधिनी है या नहीं?

"है। बहिनों ने उत्तर दिया और उन सबकी आंखों से टप टप आंसू बहने लगे।

माह्वत ने उसे हुक्म देते हुए कहा 'नूर बीबी उठ कर खड़ी हो जाओ और हमारी आंखों से आंखें मिलाओ। तुम्हारा जुर्म यह है कि तुमने खुद अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं किया। तुम्हें अपने शौहर को छोड़ने में डर लगता था, तुम्हें डर था कि सोवियत सत्ता तुम्हें मँझधार में ही छोड़ देगी तुम सोचती थी कि सरकार कोई बहुत बड़ी और बहुत दूर की चीज है। वह भला तुम्हारी छोटी छोटी तकलीफों को कैसे दूर कर सकेगी। लेकिन सोवियत सत्ता सब कुछ देखती है, सबकी तकलीफों पर नजर रखती है—क्योंकि सोवियत सत्ता में हूँ हम सब हैं खुद तुम हो। नूर बीबी याद रखो तुम अभी जवान हो। तुम्हारी तन्दुरुस्ती अच्छी है तुम काम कर सकती हो।'

नूर बीबी ने आहिस्ता से अत्यन्त मुलायम स्वर में कहा

'माहब्बत, अब मैं कुछ नही कर सकती। उस अद्भुत सहन म उमक धीर स कह गए शब्दा को इतना साफ साफ दोहरा दिया कि उ ह हर एक न सुन लिया।

'तुम कुछ नही कर सकती ?", मोहब्बत ने यह कहते हुए अपनी नजर पूरे सहन पर इधर उधर दौड़ानी शुरू कर दी जैसे कि अपने प्रश्न का उत्तर वह वहा ढूढ रही थी   ।

शूरा न बाद म इस सम्ब ध म अपने डैडी का जो लिखा वह इस प्रकार है

नूर बीबी बहुत धीर स बाली, तेकिन उसकी बात का सबन सुन लिया।

उसन कहा, अब मैं क्या कर सकती हूँ—कुछ नही।

उसकी बात सुनकर खूबसूरत और होशियार मोहब्बत न जवाब की तलाश म सहन म चारा तरफ फिर नजर दौडाना शुरू कर दी। यह स्त्री बहुत ही बढ़िया और योग्य है   उसका उत्तर चारा तरफ मौजूद था। आखिम जान के पोस्टर उसकी आखा क सामन आकर खड़े हो गय—खास तौर स वह पोस्टर जिस पर रशम कोशो को हाथ म लिय हुए एक उज्जक लडकी खडी है। मोहब्बत न अपनी गठी हुई भूरी अगुली उस लडकी की तरफ करत हुए नूर बीबी से पूछा,

'तुम यह काम तो कर सकती हो, कर सकती हो ना? तुम इस बात को भूल रही हो कि अब तुम्हारे सामने सारे रास्त खुल गय हैं।"

डैडी मुझे दुख है बहुत दुख है कि तुम उस वक्त मौजूद नही थे जिस वक्त उन लोगा ने नूर बीबी के सम्ब ध मे फैसला लिया और सजा म उसे आजादी और खुशी दी !

वालेन्तीन कतायेव

वालेंतीन कतायेव (जन्म १८९७) के लगभग सभी उपन्यासों और कहानियों का विषय क्रांति और गृह युद्ध रहे हैं। उनके सबसे अधिक प्रसिद्ध उपन्यासों में एक है, "एक श्वेत पाल चमक रहा है"। इसका अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है और उसे फिल्माया भी जा चुका है।

कतायेव का जन्म उक्रेन के दक्षिण में, ओडेसा में हुआ था। क्रांति से सम्बन्धित जो तूफानी घटनाएँ रूस के उस भाग में घटी थी उन्हें उन्होंने देखा था। बीसवी शताब्दी के तीसरे दशक के प्रारम्भिक वर्षों में जब रूस में गृह-युद्ध का अन्त हो रहा था—मार्शल बुदयोनी की पहली घुड़सवार सेना उक्रेन में एक किनारे से दूसरे किनारे तक लड़ती और जीतती चली गयी थी। उस प्रसिद्ध घुड़सवार सेना के विषय में अनेक कहानियाँ और गीत लिखे गये हैं। न जाने कितनी कल्पित कथाएं भी उसके सम्बन्ध में फैल गयी हैं।

कतायेव की यह छोटी सी कहानी, 'नील' भी उसी सेना के जीवन से सम्बन्धित एक घटना को लेकर लिखी गयी है।

नींद

मनुष्य के जीवन का तिहाई भाग नीद मे चला जाता है, किन्तु वैज्ञानिक यह हमे अभी तक नही बतला पाये है कि नीद है क्या ? एक पुराने विश्वकोष मे लिखा है कि, "इस स्थिति के प्रारम्भ होने के तात्कालिक कारण का जहा तक प्रश्न है, तो उसके विषय म केवल कुछ कल्पनाएँ ही मौजूद है।

उस भारी भरकम ग्रन्थ को बद करके मैं रखने ही वाला था क्योकि नीद के बारे म उसस कुछ भी ठीक ठीक जानकारी मुझे नही हो पायी थी कि, उसी समय समीप के ही एक स्तम्भ म नीद के सम्बन्ध मे कुछ बहुत बढिया पक्तिया पर मेरी नजर पड गयी।

उनमे कहा गया था कि, 'कला की दुनिया म नीद को एक ऐसी मानवीय प्रतिमा के रूप म चित्रित किया जाता है जिसके कधो पर तितली के पख होते है और हाथ म पोस्त का एक फूल।'

इस सरल, किन्तु सुन्दर रूपकालकार को पढकर जस मेरी कल्पना के पख खुल गये।

इसीलिए नीद के सम्बन्ध म एक ऐसी विस्मयपूर्ण घटना का मैं उल्लेख करना चाहता हूँ जिसे इतिहास के अमिट पृष्ठो पर अकित किया जाना चाहिए।

यह ३० जुलाई, १९१९ की घटना है। उस दिन लाल सेना की

टुकडिया ने जारित्सिन खाली कर दिया था और अस्त व्यस्त हालत म वह उत्तर की तरफ पीछे लौटन लगी थी। पीछे की तरफ हटन का उसका यह क्रम पैतालीस दिन तक चला था। अच्छी तरह लड सकने वाली जो सैन्य शक्ति उस वक्त बच गयी थी वह पाँच हजार पाच सौ सैनिको की वह घुडसवार सेना थी जिसके सेनापति सीमियन मिखाइलोविच बुद्यानी थ। किन्तु दुश्मन के पास जो सैन्य शक्ति थी उसके मुकाबले म बुद्यानी का यह सैन्य दल नगण्य जसा ही था।

इसके बावजूद, बुद्यानी को आदेश दिया गया कि पीछे पलायन करती हुई लाल सेना की टुकडियो की वह रक्षा कर। इसलिए दुश्मन के तमाम हमलो का उन्ही के घुडसवारो को सामना करना पडा था।

दरअसल, वह एक लम्बी लडाइ थी जो अनेक दिनो और रातो तक लगातार चलती रही थी। लडाई के दौरान बीच बीच म जो छोटा मोटा विराम होता था उसम इतना समय नही मिलता था कि लोग ठीक से खा सकें सो सक नहा धो सकें अथवा घोडो की जीन उतार कर उन्ह कुछ सुस्ताने का अवसर द सकें।

उस साल की गर्मी असाधारण तौर स बहुत भयानक थी। यद्यपि लडाई वोल्गा और दोन नदियो क बीच म स्थित भूमि की अपेक्षाकृत सँकरी पटटी पर हो रही थी, कि तु इसक बावजूद अक्सर सनिको को चौबीस चौबीस घण्टे तक एक बूद भी पानी नही नसीब होता था। स्थिति ऐसी थी कि उनके लिए यह भी सम्भव नही था कि आधा घण्टा निकाल कर कुछ ही मील के फासले पर स्थित कुओ तक जाकर वे अपनी प्यास बुझा सकें।

पानी रोटी से भी अधिक मूल्यवान था और समय पानी स भी अधिक बेशकीमती था।

पीछे हटते समय पहले तीन दिनो और तीन रातो के दौरान उन्ह बीस आक्रमणो का सामना करके उनस निपटना पडा था।

बीस आक्रमणा का ।

सैनिकों की आवाजे गुम हा गयी थी । अपनी शमशीरा से दुश्मना के सर वे काट रह थे किन्तु अपन सूखे गला स वे जरा भी आवाज नही कर पात थे ।

वह बहुत ही भयावह दश्य था । घुड़सवार हमल पर हमले कर रह थ, दुश्मनो से सम्पक स्थापित करक तलवारा स उन्हे काट रह थे । उनक चेहरे गन्दी गद और पसीन क कारण विकृत हा रह थे और, इस सबक बीच, कही किसी तरफ भी मनुष्य की ज़रा भी आवाज़ नही सुनायी दे रही थी

उनकी प्यास भूख और असहनीय गर्मी की यत्रणा क साथ जल्दी ही नीद से जूझन की यत्रणा भी जुड गयी ।

एक सदेशवाहक सवार जो महत्वपूण खबर लकर गर्दोगुबार के बीच सरपट दौडता हुआ निकल आया था, अपन घाडे की ज़ीन स गिर पडा और उसी की टाँगा के पास लुढक कर सो गया ।

आक्रमण के खत्म हो जाने के बाद सनिका के लिए अपनी ज़ीनो पर बैठा रहना असम्भव हो जाता था । नीद दुर्निवार थी, उस पर काबू पाना असम्भव हो रहा था ।

शाम आ गयी । उन सबकी आखें नीद से शीशे की तरह भारी हो रही थीं । उनकी आखा की पलके चुम्बको की तरह बद हो गयी और खात न खुली । उनके दिला का खून पारे की तरह भारी और स्थिर हा गया । उनकी नाड़िया की गति धीमी हा गयी भुजाएँ अकड गयी और फिर सहसा, भारी लकडी के कट टुकडा की तरह, गिर गयी । अँगुलिया की पकड खत्म हा गयी सिर झुकन और डोलन लग और टोपियाँ आगे की तरफ खिसक कर माथा पर आ गयी ।

ग्रीष्म ऋतु की रात्रि के नील स धुधलके ने धीरे-धीरे उन साडे

पाच हजार घुडसवारो का अपने ाचल म ढक लिया जा अपनी काठिया पर बैठे हुए पेण्डुलमा की तरह आग पीछे झूल रह थे।

रेजीमण्टा के कमाण्डर आदश प्राप्त करन के लिए अपन घाडा का दौडाते हुए बुद्योनी के पास जा पहुचे।

बुद्योनी न कहा, हर सनिक सो जाय!' हर सनिक शब्द पर उन्होने विशेष रूप से जोर दिया और अपने आदेश को दोहरात हुए कहा मैं हुक्म देता हूँ कि सब लाग आराम करे!"

'लेकिन कामरेड जनरल　　　　फिर

पहर पर कौन रहेगा? गश्त कौन लगायेगा?'

'सबको आराम करना ह सबको　　　　.."

फिर चौकसी कौन करगा　　　　?

"मैं करूँगा कहत हुय बुद्योनी न अपन बाये हाथ का ऊपर उठाया और अपनी घडी म समय देखन लग।

उन्होने गौर से समय दखा। शाम के धुधलक मे भी घडी की फास्फारसी सुइया और अक जगमगा रहे थे।

अपनी आवाज को कुछ ऊँचा करत हुए और खुशमिजाजी से उन्होन कहा 'बिना किसी अपवाद के आज हम सब को सोना है, पूरे सैन्य दल को सोना है। तुम्हारे पास आराम करने के लिए ठीक दो सौ चालीस मिनट हैं!

उन्होन चार घण्टे नही कहे। चार घण्टे बहुत थोडे लगते हैं। उन्होन दो सौ चालीस मिनट कहे। उस समय की परिस्थितिया म विश्राम के लिए अधिक स अधिक जितना समय दिया जा सकता था, उतना अपन सिपाहियो को उन्होन दे दिया।

फिर स सात्वना देत हुए रजीमण्ट क कमाण्डरो से उन्होन कहा "तुम लोग किसी बात की चिन्ता मत करो। मैं सनिको की खुद रख-

वाली करूँगा। यह मेरी अपनी जिम्मदारी होगी। लेकिन सुनो ठीक दो सौ चालीस मिनट—एक भी सेकेण्ड ज्यादा नही ! जगाने का काम खुद मरी पिस्तौल की गोली करेगी। उसकी आवाज तूयनाद का काम करगी।"

उन्होने अपनी मोजर पिस्तौल के पिस्तौलदान पर हाथ लगाकर उसे थपथपाया और अपन चितकबरे घाडे काज्वक को हल्के स एडी लगाकर आग बढन का आदेश दिया।

सोते हुए पूर सैन्य दल की निगरानी केवल एक व्यक्ति कर रहा था और वह एक व्यक्ति था सन्य दल का सेनापति। मना क क यद कानूनो और अनुशासन के यह चीज एकदम खिलाफ थी लेकिन दूसरा कोई रास्ता नही था। प्रत्यक सबकी रक्षा करे और सब प्रत्यक की देखभाल करें—क्रान्ति का यही अनघ्य नियम था।

पहाडी घाटी की लहलहाती घास पर साढे पाच हजार सनिक एक आदमी की तरह एक साथ लेट दीख रह थे। कुछ मे अभी इतनी शक्ति बाकी थी कि अपन घोडो की जीन को खोलकर और उनके पावो को बाँध कर वे उ ह घूमने के लिए छुट्टा छाड दें। ऐसा करन क बाद ये लोग अपन घाडो की जीनो पर सर रखकर सो गय। दूसर अपन घाडा के पास या ही भय स गिर गय और काठी कस अपन घाडे के तस्मे का पकडे पकडे ही इस तरह सो गये जसे की अचानक मर कर व गिर गये हा !

वह पहाडी घाटी जिसमे चारो तरफ सोते हुए सैनिको की आकृतिया दिखलायी दे रही थी, एक ऐसे युद्ध स्थल की तरह मालूम हो रही थी जिसम सार लोग खेत हो गय थे।

बुद्योनी अपने घोडे पर सवार धीरे धीर फौजी पडाव की गश्त कर रहे थे। उनके पीछे सत्रह साल की उम्र का उनका अर्दली ग्रीशा कोवालियोव था। सावले से उस लडके के लिए अपने घाडे की जीन

पर बैठा रहना बहुत मुश्किल हो रहा था। उसका सर झुक झुक जाता था। उसे सीधा रखने की वह जी-जान से कोशिश कर रहा था, लेकिन वह गागे की तरह भारी हो गया था और उसके कन्ट्रोल से बाहर था।

इसी तरह वे दोनों, सवार दल के सेनापति और उनका सईस पड़ाव की गश्त लगाते रहे। सारे पाँच हजार सोते हुए लोगों के बीच केवल यही दो आदमी जाग रहे थे।

इस समय सिमियन बुदानी बहुत जवान थे। गालों की ऊँची ऊँची हड्डियों वाले उनके किसान चेहरे पर लम्बी, घनी एकदम काली मूँछें और काली काली भौंहें चमक रही थीं और धूप खा खा कर उनका चेहरा लगभग नारंगी रंग का हो गया था।

फौजी पड़ाव की गश्त करते हुए बीच बीच में ऊपर आते हुए चाँद की रोशनी में अपने कुछ सैनिकों को वे पहचान लेते थे। जब वे उन्हें पहचान जाते तो उनके चेहरे पर एक वात्सल्य पूर्ण मुस्कराहट दौड़ जाती और ऐसा लगने लगता कि एक पिता पालने में सोते हुए अपने बेटे को देख देख कर स्नेह से मुस्करा रहा है।

उनकी नजर ग्रीशा वाल्डमैन पर पड़ी। वह एक विशालकाय आदमी था। अपने घोड़े की जीन पर सर टिकाये हुए वह घास पर पीठ के बल सो रहा था। मोटे कड़े रंग के उसके गन मुच्छे साफ दिख लाई दे रहे थे। अपने माउजर पिस्तौल को अपनी मुट्ठी में वह इस तरह कस कर पकड़े था जैसे कि कोई बकरे की रान को पकड़े हो। सोते रहने पर भी पिस्तौल पर से उसकी अंगुलियों की मजबूत पकड़ को ढीला नहीं किया जा सकता था। उसका सीना चौड़ा और किसी बड़ी पर्दे की तरह विशाल था। इस समय उसका रुख तारों की तरफ था। वह इतने जोर से खर्राटे भर रहा था कि उसके आस पास की घास तक हिल रही थी। उसका सीना उसके भयंकर खर्राटों की लय के साथ ऊपर-नीचे हो रहा था। उसका दूसरा विशाल हाथ ऊपर

धरती पर फैला था। किसम हिम्मत थी कि उस धरती को ग्रीशा वाल्ड-मैन के हाथो से छीन ले !

और उधर वह इवान बेले की मुर्दे की तरह पडा था। वह दोन के इलाके का कज्जाक था। उसकी बंद आँखो के ऊपर उसके मामने के बालो का एक हिस्सा आ गया था। कज्जाको की तेज़ शमशीर के बजाय अपनी कमर मे वह एक विशालकाय पुरानी तलवार बाधे था। इस तलवार को उसने एक एसे जमीदार के घर से आर्डर देकर मँगवा लिया था जिसे पुराने हथियारो को रखने का बहुत शौक था। यह लम्बी चौडी तलवार सैकडो साल तक एक साम त के दीवानखाने की दीवार पर लगे फारस के एक कालीन पर मजी लटकती रही थी। अब वह दोन के एक कज्जाक इवान बेलेकी के पास थी। उसने उस पर अच्छी तरह सान चढा ली थी और श्वेत गार्डो के खिलाफ लडाइयो मे वह उसका डटकर इस्तेमाल कर रहा था। पूरे स य दल मे इवान बेलेकी की तरह की लम्बी और मज़बूत भुजाएँ और किसी की नही थी। एक बार एक बडी दिलचस्प घटना घटी। इवान अपने घोडे के लिए चारे की तलाश म एक बार एक धनी किसान के घर गया। उसने उस किसान से कहा कि उचित कीमत लेकर कुछ चारा वह उसे दे दे।

घर की स्त्री ने कहा, "हमार पास है ही नही। बस, सूखे भूसे की एक छोटी सी टाल बच गयी है।'

इवान ने आजिजी से कहा, मुझे ज्यादा की जरूरत नही है सिफ थोडा सा चारा अपने घोडे को खिलाने के लिए चाहता हूँ। म अपने हाथ मे ही उठा कर ले जाऊँगा।'

स्त्री ने कहा, 'अच्छी बात है। हाथ भर कर सूखी घास तुम ले सकते हो। जाओ टाल मे से ले लो।'

'मालकिन मैं आपका बहुत शुक्रगुज़ार हूँ।

इसके बाद दोन का वह कज्जाक, इवान बेलेकी भूसे की टाल के

पास गया और अपनी लम्बी भुजाओं में उसने उस पूरी टाल को ही उठा लिया ! स्त्री ने यह दृश्य देखा तो उसकी सांस फूल गयी—इतनी लम्बी भुजाओं वाला आदमी पहले कभी उसने नहीं देखा था। लेकिन अब वह कर ही क्या सकती थी। इवान थोड़ा सा घुड़घुड़ाया और भूसे की टाल को हाथ में लिए हुए पड़ाव की तरफ चल दिया। लेकिन जब वह अपने पड़ाव पर पहुंचा तो ज़िन्दा से अधिक वह मरा हुआ था और उसके हाथों में भूसा नहीं था। उसके हाथ कांप रहे थे। उसके दांत किटकिटा रहे थे और वह इस तरह हांफ रहा था कि उसके मुख से बोल नहीं फूट पाता था।

क्या बात है इवान ? तुम्हें क्या हो गया है ?'

'अरे पूछो मत ! मैं इतनी बुरी तरह डर गया नाश हो उस बदमाश का ।

सैनिकों को ज़बरदस्त ताज्जुब हुआ ! ऐसी कौन सी चीज़ हो सकती थी जिससे उनका सबसे निडर आदमी, इवान बलकी डर जाय ?

वह उनके सामने चुपचाप खड़ा था। उसके औसान अब भी गुम थे।

'हरामज़ादा जहन्नुम में जाय। वह कोई फौजी भगोड़ा था मुझे उसने डरवा दिया। हरामज़ादा जहन्नुम की आग में जले !'

"इवान, तुम कह क्या रहे हो ? हुआ क्या ?

मैं बतला रहा हूँ वह फौज से भागा हुआ कोई गद्दार था। मैंने भूसे की वह टाल उठा ली और उसे लेकर इधर आने लगा और तभी उस भूसे के अन्दर कोई चीज़ हिलने डुलने लगी। उसकी आत्मा जहन्नुम में जाय ! वह कोई बज्ज़ात भगोड़ा था !'

लगता है कि एक भगोड़ा भूसे की टाल में छिप गया था और इवान ने भूसे के साथ उसे भी हाथ में उठा लिया था। रास्ते में

वहहिलन डुलने और चूह की तरह निकल भागने की कोशिश करन लगा। फिर वह भूसे के अन्दर से कूद कर भाग गया और बेलेन्की जैसे निडर योद्धा को भी उसने इतनी बुरी तरह डरवा दिया।

वे सब ठहाका मार कर हँसने लगे !

उसे इस तरह मुर्गे की तरह पडा देखकर बुद्योनी के चेहरे पर फिर एक मुस्कराहट दौड गयी—स्नेहपूर्ण पिता जैसी मुस्कराहट ! सावधानी से वह अपने इस बहादुर सिपाही इवान बलकी के सर के पास से और उसकी उस तेज तलवार के पास मे धीरे धीरे निकल गये जिसम नीना-नीना पूरा चांद शीशे की तरह चमक रहा था।

रात बीत रही थी। स्टेपी प्रदेश की रात्रि की सितारा वाली घडी चलती हुई सर के ऊपर पहुच रही थी। थोडी ही देर म सैनिकों को जगाने का समय हो जायगा।

यकायक याज्बेक ठिठक कर खडा हो गया। उसने अपने कान ऊपर कर लिये। बुद्योनी ध्यानपूर्वक सुनने लगे। फिर उन्होने अपनी खाकी टोपी को, जो पडाव की आग की वजह स एक तरफ थोडी झुलस गयी थी, सीधा किया।

घाटी के ऊपर के रास्ते स बहुत से घुडसवार चले जा रहे थे। जाती हुई उनकी आकृतियों से चाद बार बार छिप जाता था। बुद्योनी बिल्कुल खामोश खडे रहे। घुडसवार उतर कर फौजी पडाव म आ गये। उनमे जो सबसे आगे था उसने अपने घोडे की लगाम खीच ली और उस एक सिपाही की तरफ झुका जो समय से कुछ पहले ही जाग गया था और आग की मद्धिम रोशनी मे अपने पैर की पट्टियाँ बदल रहा था। घुडसवार के हाथ मे एक सिगरेट थी और उसे जलाने के लिए वह आग माँग रहा था।

घुडसवार ने सिपाही से कहा, "ये, तुम किस गाँव के हो ? जरा मेरी सिगरेट सुलगा दो।'

'और तुम कौन हो ?'

क्या तुम्हें दिखलायी नहीं पड़ता ?"

घुड़सवार ने सिपाहियों को दिखलाने के लिए अपना कंधा झुका लिया। चाँदनी रात में उसके कंधे की पट्टी पर लगा कर्नल का अधिकार चिह्न दमक उठा। अफसरों के रक्षकों की एक टुकड़ी भूल से लाल सेना के फौजी पड़ाव के पास पहुंच गयी थी और उसे अपना पड़ाव समझ रही थी। इसका मतलब था कि श्वेत गार्ड गद्दार कहीं बहुत नजदीक ही थे। ध्यान के लिए अब जरा भी समय नहीं था। बुद्योनी सावधानी से छाया से निकलकर सामने आ गये और अपने माउज़र को उन्होंने हाथ में ले लिया। खामोशी को चीरती हुई एक गोली निकल गयी। कर्नल धराशायी हो गया। बुद्योनी के सैनिक एकदम कूद कर खड़े हो गये। अफसरों के रक्षक दल को बंदी बना लिया गया।

बुद्योनी ने आवाज़ दी, "घोड़ों पर सवार हो जाओ !'

देखते देखते साढ़े पाँच हजार सैनिक अपने घोड़ों पर सवार हो गये। दूसरे ही क्षण स्टेपी प्रदेश के आसमान पर सूर्य की प्रथम किरणों *के प्रकाश में उन्होंने देखा कि श्वेत गार्डों के घुड़सवारों के दल के आने* की वजह से धूल के बादल उठ रहे थे। बुद्योनी ने अपने सैन्य दल को घूम जाने का आदेश दिया। घुड़सवार सेना के तीन तोपखानों ने गोली *दागना शुरू कर दिया। युद्ध आरम्भ हो गया।*

यह कहानी मुझे स्वयं बुद्योनी ने बतलायी थी।

विचारमग्न ढंग से मुस्कराते हुए उन्होंने मुझसे कहा था, 'साढ़े पाँच हजार सैनिक एक आदमी की तरह सो रहे थे। काश तुम उनके खर्राटों को सुन सकते ! उनके भयंकर खर्राटों की वजह से घाटी के जिस मैदान पर वे सो रहे थे उसकी घास तक हिल रही थी।

दीवाल पर लटकते नक्शे पर उन्होंने कनखियों से देखा और फिर

मन ही मन खुश होते हुए उन्होंने दोहराया "सचमुच, उनके खर्राटो से घाटी की घास तक काँप रही थी !

उस समय सैनिक क्रान्तिकारी समिति के उनके कार्यालय में मैं उनके पास बैठा था। बाहर मास्को की मशहूर कामकाजी ढंग की बर्फ गिर रही थी और शहर सफेदी की चादर में ढकता जा रहा था।

किन्तु कल्पना की आँखों में मैं उस अद्भुत दृश्य को देख रहा था। स्तपी की विस्तृत वीरानगी फैली हुई है। रात्रि का समय है। नील निस्तब्ध आकाश में चाँद चमक रहा है। फौजी पड़ाव गहरी निद्रा में सो रहा है। बुद्यानी अपने चितकबरे घोड़े काज्बेक पर सवार हैं और चौकसी करते हुए गश्त कर रहे हैं। उनके पीछे पीछे असह्य नींद से संघर्ष करता हुआ कृष्ण वर्ण का एक लड़का चल रहा है। लड़के के कान के पीछे रास्ते के मुरझाये हुए लाल फूलों का एक गुच्छा लगा हुआ है। और उसके गर्म धूल भरे कंधे पर एक तितली सो रही है।

बोरिस लाव्रेन्योव

बारिस लाव्रे योव का नाम सोवियत साहित्य और सोवियत थियेटर के प्रारम्भिक दिनो के साथ अभिन रूप से जुडा हुआ है। अपने सबध म लिखते हुए उ हाने स्वय कहा था 'मेरा साहित्यिक ज म क्राति के बाद हुआ था"। ध्वस नामक उनके नाटक को सबस पहले १९२७ म प्रदर्शित किया गया था। मास्को आट थियटर तथा सोवियत के दूसर अनेक थियटरा म उस आज भी दिखलाया जा रहा है।

लाव्रे योव (१८९१—१९५९) बहुत ही विलक्षण लखक ह। उनकी कहानिया म, लम्बी और छोटी दोना तरह की कहानियो म ड्रामा का भारी अश होता है। उनकी रचनाएँ क्रा तिकारी युग की शायपूण रामानियत से ओत प्रोत होती है। इकतालीसवा उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध कहानिया म से है।

इकतालीसवाँ

पावेल दमीत्रियविच ज़ूकोव की स्मृति में

पहला अध्याय

**जो केवल इसलिए लिखा गया कि
इसके बिना काम नहीं चल सकता था**

मशीनगन की गोलियों की अबाध बौछार से कज्जाकों की चमकती तलवारों का घेरा थोड़ी देर के लिए उत्तरी दिशा में टूट गया। गुलाबी कमिसार येव्स्युकोव ने अपनी पूरी ताकत बटोरी, जोर लगाया, और सनदनाता हुआ उस दायरे से बाहर निकल गया।

रेगिस्तानी वीरान में मौत के इस घेरे से जो लोग निकल भागे थे उनमें गुलाबी येव्स्युकोव, उसके तेईस आदमी, और मर्यूत्का थी।

बाकी उनके एक सौ उन्नीस फौजी और लगभग सभी ऊँट साँप की तरह बल खाये हुए सक्सौल की जड़ों और तामारिस्क की लाल टहनियों के बीच ठण्डी रेत पर निष्प्राण पड़े थे।

कज्ज़ाक अफसर बुरीगा को जब यह सूचना दी गयी कि बचे हुए दुश्मन भाग गये हैं तो भालू के पंजे जैसे अपने हाथ से उसने अपनी घनी मूँछों को ताव दिया और जम्हाई लेते हुए गुफा जैसे अपने मुँह को खोल कर धीरे धीरे बड़े इतमीनान से कहा,

"जहन्नुम में जाने दो उन्हें! कोई जरूरत नहीं उनका पीछा करने की! बेकार हमारे घोड़े थकेंगे! रेगिस्तान खुद ही कमबख्तों से निपट लेगा!"

इसी बीच गुलाबी यब्ल्युकोव, उसके तेरह आदमी और मयत्का, घायल गीदड़ों की तरह हाथ पाँव मारते मरुस्थल की अन्तहीन गहराइयों में अधिकाधिक घुसते जा रहे थे।

पाठक निश्चय ही यह जानने को बेचैन होंगे कि येव्स्युकोव को "गुलाबी" क्यों कहा गया है।

मैं आपको बताता हूँ।

कोल्चाक* ने चमकती-नुकीली संगीनों और इन्सानी जिस्मों से ओरनबुर्ग की रेलवे लाइन की जब नाकाबन्दी कर दी और इंजनों को खामोश कर के साइड लाइनों पर खड़े खड़े जंग खाने के लिए छोड़ दिया, तब तुर्किस्तान के जनतन्त्र में चमड़ा रंगने के काले रंग का एकदम अकाल हो गया।

और यह जमाना उन्हीं गोलों की धाँय धाँय, मारकाट, और चमड़े की पोशाकों का था।

लोगों की घरेलू आराम की जिन्दगी खत्म हो चुकी थी। उन्हें सामना करना पड़ता था बरखा और चिलचिलाती धूप का, गर्मी और सर्दी का। इसलिए तन ढाँकने के लिए उन्हें मजबूत पोशाकों की जरूरत थी।

इसलिए वे चमड़ा ही पहनते थे।

सामान्यत उनकी वर्दियों को नीलगूँ काले रंग से रंगा जाता था। यह रंग उसी तरह पक्का और जानदार था जैसे कि उसके रंगे चमड़े के कपड़े पहनने वाले लोग।

---

* कोल्चाक—ज़ारकी नौसेना का एडमिरल था। साइबेरिया में सोवियत सत्ता के विरुद्ध लड़ाई में उसने सक्रिय भाग लिया था। अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के बाद उसने अपने को रूस का सर्वोच्च शासक घोषित कर दिया था। १९२० में उसकी फौजें पराजित हुई थीं।—स०

मगर तुर्किस्तान में इस काले रंग का कहीं नामो निशान भी नहीं बचा था।

इसलिए क्रांतिकारी सदर दफ्तर को जमन रासायनिक रंगों के निजी सग्रहो पर अधिकार करना पड़ा। फरगाना घाटी की उज्बक औरतें इन्हीं रंगों से अपने बारीक रेशम को रंगती थी। इन्हीं रंगों से पतले-पतले होंठो वाली तुर्कमानी नारियाँ अपने मशहूर तकिन कालीनों पर रंग बिरंग बेल-बूट बनाती थी।

इन्हीं रंगों से अब ताज़ा चमड़ा रंगा जाने लगा। तुर्किस्तान की लाल फौज मे कुछ ही दिनो मे गुलाबी, नारंगी, पीले, नीले, आसमानी और हरे रंग, यानी इन्द्रधनुष के सभी रंग नज़र आने लगे।

सयोग की बात कि एक बेचकर सप्लाईमैन ने कमिसार येव्स्युकाव को जो जाकेट और बिरजिस दी वे भी गुलाबी थी।

खुद येव्स्युकाव का चेहरा भी गुलाबी था और उस पर मुहासों के बादामी दाग थे। रही सिर की बात तो वहाँ बालो के बजाय घुघराले रोयें थे। कद उसका नाटा और शरीर भारी भरकम था—बिल्कुल अंडे की शक्ल जैसा। अब यह कल्पना करना कठिन नहीं होगा कि गुलाबी जाकेट और बिरजिस पहने हुए चलता फिरता वह ईस्टर के रंगीन अंडे की तरह कैसा लगता था।

मगर ईस्टर के अंडे के समान दिखायी देनेवाले येव्स्युकाव को न तो ईस्टर मे आस्था थी और न ईसा मे। उसे विश्वास था सोवियत मे, इटरनेशनल अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट सघ मे, चेका* मे, और उस

---

* चेका क्रांति विरोधियो और तोड फोड करने वालो पर निग-रानी रखने के लिए सोवियत सत्ता द्वारा १९१८ मे नियुक्त किया गया असाधारण आयोग।—स०

काले रंग की भारी पिस्तौल में जिसे अपनी मज़बूत और सुन्दरी ढंग लिया में वह हमेशा दबाये रहता था।

तलवारों के जानलेवा घेराव से येन्स्युकोव के साथ जो तईस फौजी भाग निकले थे वे लाल फौज के साधारण फौजियों जैसे ही फौजी थे। वे बिल्कुल मामूली लोग थे।

इन्हीं के साथ थी वह असाधारण लड़की—मयूत्का।

मयूत्का एक यतीम थी। वह मछुओं की एक छोटी सी बस्ती की रहने वाली थी। यह बस्ती अस्त्रखान के निकट वोल्गा के चौड़े डेल्टा में ऊँचे ऊँचे और घने सरकंडों के बीच छिपी हुई थी।

सात साल की उम्र से उन्नीस साल की होने तक उसका अधिकतर समय मछलियों के खून से रंगी एक बेंच पर बैठ कर हॅरिंग मछलियों के रुपहले चिकने पेटों को चीरते और साफ करते बीता था।

जब यह घोषणा हुई कि सभी शहरों और गांवों में लाल गार्ड भर्ती किये जायेंगे, तो मयूत्का ने भी अपनी छुरी बेंच में घोंप दी, उठ खड़ी हुई और कनवास का वही कड़ा सा पतलून पहने हुए लाल गार्डों में अपना नाम लिखाने के लिए चल दी।

शुरू में तो भर्ती करने वालों ने उसे भगा दिया। मगर उसकी जिद को देख कर जिसकी वजह से वह हर दिन वहां जा पहुँचती थी, वे हँसने लगे और उसे उन्होंने भर्ती कर लिया—उन्हीं शर्तों पर जिन पर आदमियों को भर्ती करते थे।

मयूत्का नदी तट पर उगने वाले सरकंडों की तरह बिल्कुल दुबली पतली थी। उसके बाल कुछ-कुछ लालिमा लिये हुए थे। वह उन्हें सिर के चारों ओर चोटियाँ बना कर लपेट लेती थी और ऊपर से बादामी रंग की एक तुकमानी टोपी पहन लेती थी। उसकी आँखें बादाम जैसी सुन्दर थीं। उनमें बिल्ली की आँखों की तरह पीली पीली चमक और शरारत झलकती रहती थी।

मयूत्का के जीवन में सबसे मुख्य चीजें उसके सपने थे। वह दिन में

भी सपने देखा करती थी । इतना ही नहीं, वह तुकबन्दी भी करती थी । कागज़ का जो भी छोटा मोटा टुकडा उसके हाथ लग जाता, उसी पर पेंसिल के एक छोटे-से टुकडे से वह टेढे मेढे अक्षर घसीटने लगती ।

दस्ते के सभी लोगों को इस बात की जानकारी थी । दस्ता जब भी कभी किसी ऐसे नगर मे पहुँचता, जहाँ से कोई स्थानीय समाचार-पत्र निकलता होता तो मयूत्का तुरन्त लिखने का कागज मांगती कागज़ पा जाने पर उत्तेजना से खुश्क अपने होठो पर वह अपनी ज़बान फेरती और बड़ी मेहनत से अपनी कविताओं की नकल करती । वह हर कविता का शीर्षक लिखती और नीचे अपने हस्ताक्षर करती हुई लिखती—
कवयित्री मरीया बासोवा ।

मयूत्का की कविताएँ क्रान्ति के बारे में, संघर्ष के बारे में और नेताओं के बारे में होती । एक तो लेनिन तक के बारे में थी ।

वह अपनी कविताएँ लेकर समाचार पत्र के कार्यालयों में जा पहुँचती । चमडे की जाकट पहने और कन्धे पर बन्दूक लटकाये उस दुबली पतली छोकरी को देखकर सम्पादक मंडल आश्चर्यचकित हो जाता । सम्पादकगण उससे कविताएँ ले लेते और उन्हे पढने का उसे वचन देते ।

शान्त भाव से सभी को देखती हुई मयूत्का कार्यालय से बाहर चली जाती ।

सम्पादक मंडल का सेक्रेटरी कविताओं को झपट कर ले लेता और बडे चाव से पढता । थोड़ी देर मे उसके कन्धे ऊपर को उठ जाते, काँपने लगते, और जब उसकी हँसी रोके न रुकती तो उसकी शक्ल अजीब सी बन जाती । उसके सहयोगी उसके इर्द गिर्द जमा हो जाते और ठहाकों की गूंज के बीच वह उन्हे कविताएँ पढकर सुनाने लगता । और खिडकियों पर बैठे उसके सहयोगी लोटपोट हो जाते (उस जमाने में कार्यालय में फर्नीचर नहीं होता था, इसलिए लोग ऐसे ही इधर-उधर बैठते थे) ।

अगले दिन सुबह मयूल्का फिर वहीं जा धमकती। सेक्रेटरी के हिलते-कांपते चेहरे को वह बहुत ध्यान से देखती, अपने कागज समेटती और गुनगुनाती सी आवाज में उससे कहती 'अच्छी नहीं है? कच्ची है? मैं जानती थी! मैं तो इन्हें अपना दिल काट-काटकर रचती हूँ, बिल्कुल कुल्हाड़ी चला चलाकर, मगर फिर भी बात बनती नहीं। खैर, मैं और कोशिश करूँगी—किया क्या जाये! न जाने ये इतनी मुश्किल क्या हैं? मछली की फिटकार हो इन पर!"

फिर अपनी तुकमानी टोपी को माथे पर नीचे की ओर खींचती हुई और कंधे झटककर वह कार्यालय से बाहर चली जाती।

मयूल्का से कविता तो ऐसी वैसी ही बन पाती मगर उसकी बन्दूक का निशाना बिल्कुल अचूक था। उसके दस्ते में उसकी निशानबाजी का कोई सानी नहीं था। लड़ाई के समय वह हमेशा गुलाबी कमिसार के निकट ही रहती थी।

येव्स्युकोव अंगुली का इशारा करके उससे कहता

'मयूल्का! वह देखो! वह कोई अफसर है।"

मयूल्का उधर नजर घुमाती अपने सूखे होठों पर जबान फेरती और इत्मीनान से बन्दूक ऊपर उठाती। धड़ाका होता और आदमी धराशायी हो जाता! उसका निशाना कभी खाली न जाता था।

वह बन्दूक नीचे करती और हर गोली दागने के बाद *गिनती करती* हुई कहती

उन्तालिस मछली के राग वाला! चालीस! इस पर भी मछली की फिटकार थी!

'मछली की फिटकार!' —यह मयूल्का का तकिया-कलाम था।

गन्दी गालियाँ उसे पसन्द न थीं। लोग जब उसकी उपस्थिति में गालियाँ देते तो उसके माथे पर बल पड़ जाते, वह चुप रहती और उसका चेहरा तमतमा उठता।

मयूल्का ने भर्ती होते समय सैनिक कार्यालय में जो वचन दिया

था, उसका वह कडाई से पालन कर रही थी। पूरे दस्ते मे एक भी व्यक्ति ऐसा नही था जो मर्यूत्का का प्यार पा जाने की डीग हाक सकता।

एक रात की घटना है। गूचा नाम का एक मगयार सैनिक कुछ दिना से मर्यूत्का की ओर ललचाई नजरो से देखता आ रहा था। एक रात वह चुपचाप वहा पहुँच गया जहा मर्यूत्का सो रही थी। उसके साथ बहुत बुरी बीती। मगयार जब रेंगता हुआ लौटा तो उसके तीन दात गायब थे और माथ पर एक गुमट की वद्धि हो गई थी। पिस्तौल के हत्थे से मर्यूत्का ने उसकी अच्छी तरह खबर ले ली थी।

सिपाही मर्यूत्का से तरह तरह के कलुषहीन हँसी मजाक करते, मगर लडाई के समय व अपनी जान से कही अधिक उसकी जान की चिन्ता करते। इसके पीछे कोई ऐसी अज्ञात कोमल भावना थी जो सम्न और रग बिरगी वर्दिया के नीचे उनके हृदयो की गहराइयो मे कही छिपी बठी थी।

हाँ, तो ऐसे थे ये लाग—गुाबो येव्स्युकोव, मयूत्का और तेईस सिपाही जो उत्तर की दिशा मे आर छोरहीन मरुस्थल की ठण्डी रेत पर भाग निकले थ।

फरवरी के दिन थे, जिनम मौसम अपनी तूफानी तानें छोड देता है। रत के टीलो के बीच के गढो मे फूली फूली बफ का कालीन बिछ चुका था। तूफान और अधकार मे भी अपना सफर जारी रखने वाले इन लोगा के ऊपर का आकाश गडगडा रहा था। अथवा शायद हवा को चीर जाने वाली दुश्मन की गोलिया के कारण एक कोहराम मचा हुआ था।

चलना बहुत कठिन था। उनके फटेहाल जूते रेत और बफ म गहरे धस धस जाते थे। भूखे ऊट बिलबिलाते हुकारते और मुह से झाग निकालते हुए आगे बढने की कोशिश कर रह थे।

तेज हवाओ के कारण सूखी झीलो पर नमक के कण चमकते

दिखलायी देते थे। क्षितिज की रेखा सभी ओर सैंकड़ों मीलों तक आकाश को पृथ्वी से अलग करती नजर आती थी। यह रेखा ऐसी स्पष्ट और सीधी थी कि लगता था कि किसी ने चाकू से काटकर उसे बना दिया था।

सच बात तो यह है कि मेरी कहानी में इस अध्याय की बहुत ही कम भूमिका है। अच्छा तो यही होता कि सीधे सीधे में मुख्य बात पर ही आ जाता। मगर, अन्य बहुत सी बातों के अलावा पाठक को यह जानने की भी जरूरत थी कि गूर्येव के विशेष दस्ते का जो भाग जमतैसे करा कुदुक के कुएं से सैंतीस किलोमीटर के फासले पर उत्तर पश्चिम में पहुंच गया था वह कहां से आया था, उसमें एक लड़की क्या थी और कमिसार यव्स्युकोव को 'गुलाबी' किस कारण कहा जाता था।

चूंकि इसके बिना काम नहीं चल सकता था, इसीलिये मैंने इस अध्याय को लिखा है।

दूसरा अध्याय

जिसमें क्षितिज पर एक काला सा धब्बा दिखायी देता है। निकट से देखने पर पता चलता है कि वह गार्ड का श्वेत लेफ्टीनेन्ट गोवोरूखा-ओत्रोक है

जान-गेलदी कुएं से सोइ-कुदुक कुएं तक ७० किलोमीटर का और फिर वहां से उश्कान नामक चश्मे का बासठ और किलोमीटर फासला था।

सक्सौल के तने पर बन्दूक का कुन्दा मारते हुए येव्स्युकोव ने ठिठुरी-सी आवाज़ में कहा,

'ठहरा ! रात का पडाव यही पडेगा !"

सक्सौल की टहनिया इक्टठी करक उन लोगो ने आग जलाई। वल खाते हुए काले-कात शोले उठन लगे और आग के चारा ओर नमी का एक काला-सा घेरा दिखायी देने लगा।

फौजियो ने अपने थैलो से चावल और चर्बी निकाली। थाडी ही देर मे लोहे के बडे से एक डेग मे ये दोनो चीजें उबलने लगी और भेड की चर्बी की तेज गध फैल गयी।

फौजी आग के इद गिद गड्ड मड्ड पडे थे। सभी चप्पी साधे थे और ठण्ड से उनके दात बज रहे थे। तन को चीरती हुई हवा के बर्फीले झोको से बचने के लिए वे एक दूसरे मे अधिकाधिक सट जाना चाहते थे। पैर गर्माने के लिये वे उन्ह आग मे घुसेडे दे रहे थे। उनके बूटो का सख्त चमडा चटक कर आवाज कर रहा था।

बफ की सफेद धुध म रह रह कर थके हार ऊँटा की घटिया की उदास झकार सुनायी द जाती थी।

येस्युकोव ने अपनी कापती अगुलिया से लपेट कर एक सिगरट तैयार की।

फिर धुए का बादल उडाते हुए कठिनाई से उसने कहा,

"साथियो, अब यह तय करना होगा कि यहाँ से हम कहाँ जाय।'

"हम जा ही कहा सक्ते हैं ? आग के दूसरी ओर से एक मरी सी आवाज सुनाई दी। "हर हालत मे अन्त तो अब एक ही होगा। सब कुछ साफ है। गूर्येव लौटना सम्भव नही है—खून के प्यासे कज्जाक वहा मौजूद है ! और गूर्येव के सिवा कोई ऐसी जगह ही नहीं है जहाँ जाया जा सके "

'खीवा के बारे म क्या सोचत हो ?'

"छि ! खीवा ! इस सख्त जाडे म करा-कुम के पार छ सौ किलामीटर कैसे जाया जायेगा ? हम खायेंगे क्या ? क्या पतलूनो म जुएँ पालकर उन्ही को खायेंगे ?"

ज़ोर का ठहाका गूजा। फिर उसी मुर्दा आवाज़ मे निराशा से भरे य शब्द सुनायी दिये,—"सब कुछ साफ है! हमारा खेल खत्म हो गया!

गुनाग़ी वर्दी के नीचे यव्स्युकोव का दिल बैठ गया। मगर उसने कुछ ज़ाहिर नहीं होन दिया। कड़कती आवाज मे उसने ललकारा,

तुम तो कायर हो! हमार खत्म होन म अभी बहुत देर है! और, मरना तो हर बवकूफ जानता है! जरूरत है इस बात की कि साहस से काम लकर ज़िन्दा रहा जाय और कुछ किया जाय!

हम अलेक्साद्राव्स्की के किले की तरफ जा सकते हैं। वहा हमारी ही तरह के लोग यानी मछुए रहते हैं।

'ऐसा करना ठीक नहीं होगा येव्स्युकोव ने उसकी बात काटते हुए कहा "मुझे सूचना मिली है कि देनीकिन* अपनी फौज लेकर वहा पहुँच गया है। क्रास्नावादस्क और अलेक्साद्रोव्स्की पर भी श्वेत फौजो का अधिकार हो गया है।

कोई नींद म कराह उठा।

यव्स्युकोव न आग से गम हो गय अपन घुटन पर ज़ोर स हाथ मारा। फिर कड़कती हुई आवाज म वह बोला

यह बकवास बन्द करो! एक ही जगह है साथियो जहा हम जा सकते हैं अरल सागर की ओर! जस तस अरल सागर तक हम पहुँच जायेंगे और फिर चक्कर काटकर कज़ालीस्क पहुच जायेंगे। कज़ालीस्क मे हमारा सदर दफ्तर है। वहा जाना तो जसे अपन घर जाना होगा।'

---

* देनीकिन—ज़ारशाही जनरल। अक्तूबर क्रान्ति के दिनो म दक्षिणी रूस म सोवियत विरोधी सेनाओ का वह प्रधान सेनापति था।—स॰

जोरदार आवाज मे यह कह कर वह चुप हो गया। उसे खुद भी इस बात का विश्वास नही था कि अरल सागर तक वे पहुच जायेंगे।

येस्युकोव के निकट लेटे हुए एक व्यक्ति ने सिर ऊपर उठाया और पूछा,

"मगर अरल के रास्ते मे हम खायेंगे क्या ?'

यस्युकोव ने फिर ज़ोर से जवाब दिया

'हिम्मत से काम लेना होगा ! हम राजकुमार नही है ! तुम तो शायद मज़ेदार गोश्त और मधु चाहते हो ! मगर हमे इनके बिना ही काम चलाना पडेगा ! अभी तो हमारे पास कुछ चावल भी हैं, थोडा आटा भी है।'

य चीज़ें तीन दिन स अधिक नही चलेंगी !'

'तो क्या हुआ ? चेरनीश की खाडी तक पहुँचने मे हम दस दिन से अधिक नही लगेंग। हमारे पास छ ऊँट है। रसद खत्म होते ही हम ऊटो को काटना शुरू कर देंगे। वैसे भी अब इनसे कोई लाभ नही। एक ऊट को काटेंगे और दूसरो पर मास लादकर आगे चल देंगे। बस किसी तरह मजिल तक पहुँच जायेंग।'

खामोशी छा गयी। इसके बाद किसी न कुछ भी नही कहा। मर्यूत्का आग के करीब ही लेटी हुई थी। मर को अपन हाथों से पकडे अपनी बिल्ली जसी आखो म वह एकटक लपटो को ताक रही थी। येव्स्युकोव को अचानक बचैनी-सी अनुभव हुई।

वह उठकर खडा हो गया और अपनी जाकेट से बर्फ झाडन लगा।

'बस, मामला तय हो गया ! मरा आदेश है—पौ फटत ही हम रवाना हो जाये। बहुत सम्भव है कि हम सभी वहाँ तक न पहुच पाय,' कमिसार की आवाज यकायक एक चौंक उठी चिडिया की तरह तज़ हो गयी। उसन कहा, "मगर जाना तो हमे होगा ही क्योंकि यह क्रान्ति है साथियो यह सारी दुनिया के श्रमजीवियो क लिय है !"

कमिसार ने बारी-बारी मे तईस के तेईस फौजियो की आँखो म

ताककर देखा। साल भर से—उनकी आँखों में जिस चमक या दमक का वह अभ्यस्त हो गया था, वह आज गायब थी। उनकी आँखों में उदासी थी सन्देह था। झुकी-झुकी उनकी पलकों के नीचे एक उत्साह हीनता थी। वे अपनी नजर छिपाने की कोशिश कर रहे थे।

'पहले कुटा का फिर एक दूसरे को खायेंगे," किसी ने व्यंग किया। फिर खामोशी छा गयी।

येस्युकोव अचानक किसी पागल औरत की तरह चीख उठा

"बक-बक बन्द करो! क्या क्रांति के प्रति अपना कर्तव्य तुम लोग भूल गये हो? बस, खामोश! हुक्म हुक्म है! अब नहीं मानोगे, तो गोली से उड़ा दिये जाओगे!'

खासकर वह बैठ गया।

वह आदमी जो बन्दूक के गज से चावलों को चला रहा था यकायक खुश होता हुआ बोला, 'छिद्रान्वेषण और बकझक बन्द करो और पेट में चावल भरो! बेकार ही झकमारी है क्या मैंने?"

उन्होंने चमचों से गीले चावलों के गोले निकाले और इस कोशिश में कि वे ठण्डे न हो जायें उन्हें जल्दी-जल्दी निगलकर उन्होंने अपने गले जला लिये। फिर भी मोम के समान ठण्डी चर्बी की मोटी सफेद तह उनके ओठों पर जम गयी!

आग ठण्डी पड़ती जा रही थी। रात की काली पृष्ठभूमि में नारंगी रंग की चिटखती चिंगारियाँ उड़ रही थीं। लोग एक दूसरे के और अधिक निकट हो गये ऊँघने लगे खर्राटे लेने लगे, और फिर नींद में कराहने और बड़बड़ाने लगे।

मुँह अँधेरे ही किसी ने कंधा हिलाकर येस्युकोव को जगाया। अपनी चिपकी हुई पलकों को बड़ी मुश्किल से उसने खोला। वह उठकर बैठ गया और अभ्यासवश तुरन्त बन्दूक की तरफ हाथ बढ़ा दिया।

"जरा ठहरो!'

मयूत्का उसके ऊपर झुकी हुई थी। आधी की नीलगू भूरी भूरी फिज़ा म उसकी बिल्ली-जैसी आखें चमक रही थी।

"बात क्या है ?"

"साथी कमिसार, उठो! जब आप लोग सो रह थे तब ऊँट पर सवार होकर में इधर-उधर देखन चली गयी थी। जान गेलदी स एक किर्गीज़ कारवा इसी तरफ आ रहा है।'

येव्स्युकोव न दूसरी ओर करवट ल ली। फिर आश्चर्यचकित शान्त हुए उसने पूछा,

'कारवा ? तुम सपना तो नही देख रही हो ?'

बिल्कुल सच कह रही हूँ मछली की फिटकार! बिल्कुल सच! उसमे चालीस ऊँट हैं!"

येव्स्युकोव उछलकर खडा हो गया और अपनी अगुलियां को मुह म डाल कर उसने सीटी बजाई। सुदस फौजियो क लिये उठना और अपन ठिठुरे हुए हाथ पांवो को सीधा करना कठिन हो रहा था। किन्तु जैसे ही कारवां का नाम उन्हान सुना, व एकदम चौकन्ने हो गय। केवल बाईस सैनिक उठे। तेईसवां जहां का तहा लेटा रहा। वह घाडे की छालदारी ओढकर लेटा था और उसका सारा बदन कांप रहा था।

"इसे तो काली जूडी चढी है।" सैनिक के कालर के अन्दर स उसके तन को छूते हुए मर्यूत्का न कहा।

'अरे, यह तो बुरा हुआ! अब हम क्या करे ? अच्छा इस एक और नमदा ओढा दो और लेटा रहने दो। वापस आकर हम इस ल जायेंगे। हां तो, किधर है वह कारवा ?"

मयूत्का न हाथ स पश्चिम की ओर सकेत करते हुए कहा

'बहुत दूर नहीं! कोई छ किलामीटर दूर होगा। ऊँटो पर बहुत बडे-बडे बुकचे लद हैं!'

'बहुत बढ़िया! बस, उन्हें हाथ स निकलन न देना, सनिको! जस ही कारवां नजर आये हम चारो ओर स उसे घेर लें! तुम्ही न

दिखाना। आधे आदमी बायी तरफ हो जाना, आधे दाहिनी तरफ! चलो बढो!

उन्होने एक ही कतार मे रेत के टीलो के बीच से दायें बायें होते हुए चलना शुरू किया। मेहनत से वे झुक कर दोहरे हुए जा रहे थे मगर उनमे जोश था और तेज चाल से उनके शरीरो मे गर्मी पैदा हो रही थी।

एक टीले की चोटी से सामने के समतल मैदान मे ऊँटो की एक कतार उन्हे दिखाई दी।

ऊँट बुकचो के बोझो से दबे जा रहे थे।

भगवान ने हम पर दया की। उसी ने उन्हे हमारे लिए भेज दिया है!' ग्वोज्दोव नाम के एक चेचकरू सैनिक ने फुसफुसाते हुए कहा।

येव्स्युकोव से चुप न रहा गया। बिगडते हुए उसने कहा,

भगवान ने? मूरख कही के! कितनी बार तुम्हे बताया कि भगवान नाम की कोई चीज नही है। हर चीज का एक भौतिक नियम है!

मगर यह समय वाद विवाद का नही था। हुक्म के मुताबिक सभी सैनिक रेत के हर ढेर, झाडियो के हर झुरमुट का उपयोग करते हुए तजी मे आगे बढते चले। अपनी बन्दूको को वे इस तरह कसकर थामे थे कि उनकी अगुलियो मे दर्द होने लगा था। पर वे जानते थे कि कारवाँ को हाथ से निकलने व नही दे सकते थे! ऐसा हरगिज नही होने दिया जा सकता था, क्योकि उन ऊँटो के साथ तो उनकी आशाएँ, उनके प्राण और उनके बचाव की सारी सम्भावना भी चली जायेगी।

कारवाँ झूमता झामता मस्ती से चला आ रहा था। ऊँटो की पीठो पर लदे रंगीन नमदे अब नजर आने लगे थे। ऊटो के साथ-साथ गर्म लबादे और भेडियो की खाल की टोपियाँ पहने कुछ किर्गीज चल रहे थे।

अचानक येव्स्युकोव एक टीले पर खडा हो गया। उसकी गुलाबी

वर्दी चमक रही थी। उसने बन्दूक तान ली और ज़ोर मे चिल्ला कर कहा,

'जहा हो वही रुक जाओ ! बन्दूकें हा तो उन्ह जमीन पर फेंक दो ! चालबाज़ी करन की कोशिश मत करना, वरना सभी भून दिये जाओगे !"

येव्स्युकोव अपनी बात पूरी न कर पाया था कि डरे सहमे किर्गीज रुक कर रेत पर लेट गये !

तेज़ी से दौडने के कारण हाफते हुए लाल फौज के जवान चारो तरफ से कारवा पर टूट पडे।

"जवानो, ऊँटो को पकड लो !" येव्स्युकोव चिल्लाया।

मगर तभी येव्स्युकोव की आवाज़ कारवा की तरफ स आने वाली गोलिया की ज़ोरदार बौछार मे डूब गयी !

सनसनाती हुई गोलिया मानो कुत्ता के पिल्लो की तरह भौंक रही थी। येव्स्युकोव की बगल म ही एक सैनिक को गोली लगी और वह हाथ फैला कर वही रेत पर ढेर हो गया।

"साथियो लेट जाओ ! अक्ल ठिकाने कर दो इन शैतानो की !" एक टीले की आड मे होते हुए येव्स्युकोव ने चिल्लाकर कहा।

गोलिया की फिर एक ज़बदरत बौछार आयी।

गोलिया ज़मीन पर बिछा दिये गये ऊँटो की आड से आ रही थीं। गोलियाँ चलाने वाले नज़र नही आ रहे थे। किर्गीज़ो के लिहाज़ से गोलिया बडे निशाने से चलायी जा रही थी। किर्गीज़ इतने अच्छे निशाने बाज़ नहीं होते इसलिये यह काम उनका नहीं हो सकता था।

गोलियाँ लाल फौज के लेटे जवानो के चारो ओर रेत पर बरस रही थी। मरुस्थल गूज रहा था। मगर धीरे धीरे कारवा की ओर से गोलियो का आना बन्द हो गया।

लाल फौज के सिपाही छिप छिप कर, और झपट्टे मारते हुए आगे बढने लगे।

जब कोई तीस कदम का फासला रह गया तो येव्स्युकाव का ऊँट के पीछ फर की टापी के ऊपर एक सफेद कनटोप वाला कज्ज़ाक सर दिखनाइ दिया। फिर उसे उसके कन्धे और कधा पर सुनहरी पट्टियाँ दिखनायी पडी!

मयूत्का! वह देखो! अफसर!' उसने पीछे रेंग रेंग कर आती हुई मयूत्का की ओर गदन घुमा कर कहा।

'हाँ, मैं भी देख रही हूँ।"

उसने इतमीनान से निशाना बाधा, और गोली दाग दी।

शायद इसलिय कि मयूत्का की अगुलिया बिल्कुल ठिठुर गयी थी, या इसलिए कि उत्तेजना और दौड धूप के कारण वह काप रही थी, उसका निशाना चूक गया। उसने अभी 'इकतालीसवा! इसे भी मछली की फिटकार!' कहा ही था कि ऊँट के पीछे से सफेद कनटोप और नील कोट वाला व्यक्ति उठ कर खडा हो गया और उसने अपनी बन्दूक ऊँची उठा ली। बन्दूक की सगीन के ऊपर एक सफेद रूमाल लहरा रहा था।

मयूत्का न अपनी बन्दूक रेत पर फेंक दी और फूट फूट कर रोने लगी। गन्दा और हवा से झुलसा उसका चेहरा आसुओ म और भी मैला हो गया।

यव्स्युकाव अफसर की ओर दौडा। लाल फौज का एक सिपाही येव्स्युकाव से पहल ही वहा जा पहुँचा और दौडत हुए उसने अपनी सगीन भी सीधी कर ली ताकि आफसर की छाती पर ज़ोर स प्रहार कर सके।

लेकिन तभी कमिसार न चिल्लाकर हुक्म दिया 'मारना नहीं! उसे ज़िन्दा पकड लो!

नीले कोट वाले को पकड कर जमीन पर गिरा दिया गया।

अफसर के पाँच अन्य साथी ऊँटो के पीछे मर पडे थे।

लाल सेना के सैनिकों ने हँसते और गालियां देते हुए ऊँटों की नकेलें पकडी और उन्हें दो-दो करके बाँध दिया।

ऊँटों वाले किर्गीज येव्स्युकोव के पीछे लग गये और उसकी जाकेट, कुर्ती, पतलून, पटी और तलवार आदि को छूते हुए मिन्नत-समाजत करने और गिडगिडाने लगे। उनकी आखें दया की याचना कर रही थी।

कमिसार ने उन्हें झटक कर दूर कर दिया उनसे दूर हट गया, उन्हें डाटा-डपटा। दयाद्रवित होते हुए भी उसने उनके फूले फूले चौडे चेहरों की तरफ पिस्तौल दिखाते हुए उन्हें डरवाया और कहा 'रुका दूर रहो! मिन्नत समाजत करना बन्द करो!'

सफेद दाढी वाले एक किर्गीज ने, जो औरों की तुलना में अधिक अच्छे कपडे पहने था, येव्स्युकोव की पटी पकड ली।

फुमफुमाते और खुशामद करते हुए जल्दी जल्दी और टूटी फूटी रूसी में उसने कहा,

"अरे हजूर ऊँट न लीजिए! बहुत बुरा होगा! ऊँट तो किर्गीज की जान होता है। ऊँट गया तो किर्गीज की जान भी गयी सरकार, ऐसा जुल्म न करें। रकम चाहिये—यह हाजिर है। चादी के सिक्के जार के सिक्के, कागजी नोट केरेन्स्की के नोट? हुक्म कीजिए कितने चाहिए! बमेहरबानी ऊँट लौटा दीजिए।'

अरे मूर्ख, तू यह क्या नही समझता कि ऊँटों के बिना इस वक्त हम भी मौत के मुह में पहुच जायेंगे? मैं इन्हें चुराकर थोडे ही लिये जा रहा हूँ। इनकी आवश्यकता क्रान्ति के लिए है। वह भी थोडी देर के लिए। तुम लोग तो यहा से पैदल भी अपने घर पहुच जाओगे, मगर हम तो इनके बिना मौत के ही मुह में पहुच जायेंगे!'

'अरे सरकार आप बहुत बुरा कर रहे है। ऊँट लौटा दीजिए। माल ले लीजिए! रकम ले लीजिए" किर्गीज ने फिर गिडगिडाते हुए प्रार्थना की।

"जहन्नुम मे जाओ ! तुम से कह दिया। बस ! अब बकबक बन्द करो। यह लो रसीद और चलते फिरते नजर आओ !"

येव्स्युकोव ने अखबार के एक टुकडे पर पेंसिल से लिखकर क्रिर्गीज को रसीद दे दी।

किर्गीज ने रसीद रेत पर फेंक दी। फिर नीचे बैठ गया और मुह को हाथो से ढांपकर रोने लगा।

उसके साथी चुपचाप खडे थे। उनकी तिरछी काली आँखों मे भी चुपचाप आँसू झर रहे थे।

येव्स्युकोव ने घूम कर बन्दी बनाये गये अफसर की तरफ नज़र डाली। वह दो फौजियो के बीच खडा था। उसका चेहरा शान्त था। सिगरेट पीता हुआ कमिसार की तरफ वह तिरस्कार की दृष्टि से देख रहा था।

तुम कौन हो ? येव्स्युकोव ने उससे पूछा।

'श्वेत गार्डों का लेफ्टीनेन्ट गोवोरुखा-ओत्रोक। और तुम कौन हो ?' धुए का बादल उडाते हुए अफसर ने जवाब मे उससे पूछा।

उसने अपना सिर ऊपर उठाया तो लाल फौज के सिपाहियो और येव्स्युकोव की दृष्टि उसकी आखो पर पडी और वे दग रह गये। उसकी आखे एकदम नीली नीली थी। उन्हे देख कर ऐसा लगता था जैसे कि साबुन की झाग के बीच बढिया फ्रांसीसी नील के दो गोल तैर रहे है।

तीसरा अध्याय

जिसमे ऊँटो के बिना मध्य एशिया के मरुस्थल मे यात्रा करने की कठिनाइयों का उल्लेख किया गया है और कोलम्बस के नाविक साथियो के अनुभव का हवाला दिया गया है

लेफ्टीनेन्ट गोवोरुखा ओत्रोक को मयूत्का की सूची मे इकतालीसवा होना चाहिए था। मगर या तो ठण्ड के कारण, या उत्तेजित होने की वजह से मयूत्का का निशाना चूक गया था।

इस तरह यह लेफ्टीनेन्ट जीवित बच गया था—जीवितो की सूची मे वह एक अतिरिक्त सख्या था।

येवस्युकोव के आदेशानुसार लेफ्टीनेन्ट की तलाशी ली गयी। उसकी खूबसूरत जाकेट के पीछे वाले हिस्से मे एक गुप्त जेब बनी मिली।

लाल फौज के आदमियो ने जब उसकी इस जेब को खोज निकाला तब तो लेफ्टीनेन्ट आग बबूला हो गया और एक जगली घोडे की तरह उछल कूद मचाने लगा। मगर उसे कसकर जकड रखा गया। उसके कापते होठो और चेहरे के उडे हुए रग से ही उसकी जबरदस्त उत्ते-जना और परेशानी का परिचय मिल रहा रहा था।

येव्स्युकोव ने जेब से निकले पैकेट को बहुत सावधानी से खोला और उसके भीतर रखी दस्तावेज़ को बहुत ध्यान से पढने लगा। पढ कर उसने सर हिलाया और फिर गहरे सोच मे डूब गया।

दस्तावेज़ मे लिखा था कि रूस के सर्वोच्च शासक, एडमिरल कोल्चाक ने गार्ड के लेफ्टीनेन्ट गोवोरुखा आत्रोक, वदीम निकोलायेविच को जनरल देनीकिन की कैस्पियन सागर के पार की सरकार के सम्मुख अपनी ओर से प्रतिनिधित्व करने का उत्तरदायित्व सौंपा है। दस्तावेज

के साथ बन्द एक पत्र मे यह भी कहा गया था कि लेफ्टीनेन्ट को कुछ गुप्त बातें बतायी गयी हैं जिन्हे जनरल द्रस्सेन्कों का वह मुह ज़बानी ही बतायेगा।

यव्स्युकाव न पैकेट का बडी सावधानी से लपेटकर अपने कोट की भीतर वाली जेब मे रख लिया। फिर उसने लेफ्टीनेन्ट से पूछा,

"हा, तो अफसर साहब, क्या हैं आपकी गुप्त बातें ? कुछ छिपाये बिना सब कुछ साफ साफ बता देने मे ही आपकी भलाई होगी। आप समझ लीजिए कि अब आप लाल फौज के सिपाहियो के कदी हैं और मै हूँ उनका कमाडर, कमिसार अर्सेन्ती येव्स्युकोव।"

लेफ्टीनेन्ट ने अपनी चचल नीली आखें येव्स्युकोव की ओर उठायी उसकी ओर देखकर मुस्कराया और फिर खटाक स अपनी एडियाँ जोड कर खडा हो गया और बोला, बडी खुशी हुई आपसे मिलकर, श्रीमान येव्स्युकोव। मगर अफसोस है कि आप जैसी शानदार हस्ती से कूटनीतिक बातचीत करने का अधिकार मरी सरकार ने मुझे नही दिया है।"

येव्स्युकाव के फुन्सिया के दाग वाले चेहर का रग उड गया। पूरे दस्ते के सामने यह लेफ्टीनेन्ट उसका मजाक उडा रहा था।

कमिसार ने झट से अपनी पिस्तौल निकाल ली और ज़ोर से उसे डाटते हुए कहा, "अबे, हरामी के बच्चे। बाते न बना। सीधे सीधे सब कुछ बता दे, वरना यह गाली तेरे कलेजे के आर पार हा जायगी।"

लेफ्टीनन्ट ने कधे उचका कर उपेक्षा प्रदर्शित करते हुए उत्तर दिया बेशक, तुम मुझे मार डालोगे तब तो कुछ भी तुम्हार हाथ पल्ल नही पडेगा।"

कमिसार ने भला बुरा कहते हुए अपनी पिस्तौल नीचे कर ली।

'ठहर, मैं अभी तुझे छठी का दूध याद करा दूगा। थोडी देर म सब कुछ बतायगा तू मुझे। वह बडबडाया।

लेफ्टीनेन्ट पहले की ही भाँति होंठ के एक सिरे को दबा कर मुस्कराता रहा।

येव्स्युकोव न थूका और दूसरी तरफ चला गया।

"क्यों साथी कमिसार, आपकी इजाजत हो तो इसकी थोडी मरम्मत कर दें!" लाल फौज के एक सिपाही न उससे पूछा।

कमिसार ने नाखून से अपनी नाक खुजलायी। उसके नाक की चमडी चिटख रही थी। "नही इससे काम नही चलेगा। वह सख्त जान है, बहुत सख्त। इस जैसे-तैसे कज़ालीन्स्क पहुचाना होगा। वहाँ हेड क्वाटर मे वे इससे सब कुछ उगलवा लेंगे।" उसने कहा।

'इसको कहाँ साथ साथ लिये फिरेंगे? हम खुद ही बच कर निकल जायें तो बडा भाग्य समझिएगा' एक सैनिक ने कहा।

"तो क्या अब हमने सफेद अफसरो की भर्ती शुरू कर दी है?" एक दूसर सैनिक ने पूछा।

येव्स्युकोव बिगड कर खडा हो गया और बोला, 'तुमसे मतलब? मैं उस साथ ले चल रहा हूँ, मैं ही उसके लिए जिम्मेदार हूँगा। बस, बकवास बन्द करो!"

जब वह दूसरी तरफ घूमा तो मर्यूत्का पर उसकी नज़र पडी।

'सुनो, मर्यूत्का! यह अफसर तुम्हारी दखरेख मे रहगा! देखो, अपनी आँखें खुली रखना! अगर यह भाग गया तो मैं तुम्हारी खाल खीच लूगा!"

मर्यूत्का ने चुपचाप अपनी बन्दूक कधे पर डाल ली और बन्दी के के पास गयी।

ए खूबसूरत हज़रत, इधर तो आओ! तुम्हे मेरी निगरानी में रहना है! मगर इस भुलावे मे मत रहना कि मैं औरत हूँ, इसलिये तुम निकल भागोगे! तीन सौ कदम पर भागते हुए भी तुम्हे मैं गाली से उडा दूगी! एक बार निशाना चूक गया, दोबारा ऐसा नही होने का। समझे, आ, मछली की फिटकार?"

लेफ्टीनेन्ट ने कनखियों से मर्यूत्का को देखा। शिष्टता का दिखावा करते हुए सिर झुकाकर उसने कहा,

"ऐसी सुन्दरी का बन्दी बनना मेरे लिये गर्व की बात है!" हँसी से उसके कंधे काँप रहे थे।

"क्या? तुम क्या बक बक कर रहे हो?" तिरस्कार की दृष्टि से देखते हुए मर्यूत्का ने उससे पूछा। "ओ पूँजीपति के बच्चे! मानुरका नाच नाचने के सिवा शायद तुम कुछ नहीं जानते? बेकार की बक बक बन्द करो। ज़बान बन्द करो और जहाँ मैं कहती हूँ वहाँ चलो!"

वह रात उन्होंने एक छोटी सी झील के किनारे बिताई। बर्फ की तह के नीचे के खारे पानी से आयोडीन और गली सड़ी चीज़ों की गंध आ रही थी।

किर्गीज़ों के ऊँटों से उतारे कालीनों और नमदों को अपने चारों ओर लपेट कर वे उस रात मुर्दों की तरह सो गये।

रात के वक्त मर्यूत्का ने लफ्टीनेन्ट के हाथ पैर रस्सी से कसकर बाँध दिये और रस्सी को अपनी कमर के गिर्द लपेट कर उसके दूसरे सिरे को उसने अपने हाथ में बाँध लिया।

सैनिक इस दृश्य को देख कर ज़ोर ज़ोर से हँसने लगे।

फूटी आँखों वाले सेम्यानी ने चिल्ला कर कहा,

"अरे भाइयो, मर्यूत्का ने अपने प्रेमी को जादू की डोर से बाँध लिया है। अब वह उसे ऐसी घुट्टी पिलायेगी कि वह लट्टू ही हो जायेगा।

इन हँसोड़ों को घृणा की दृष्टि से देखते हुए मर्यूत्का ने कहा

तुम सब पर मछली की फिटकार! तुम्हें हँसी आ रही है मगर अगर यह भाग गया तो?'

'उल्लू हो तुम! इस रेगिस्तान में भागकर भला वह जायेगा कहाँ?'

'रेगिस्तान हो या न हो, पर यह इसी तरह ठीक है। सो जा तू ओ खबसूरत!'

मयूत्का न लेफ्टीनेन्ट को नमदे के नीचे ढकेन दिया और कुछ हटकर खुद भी लेट गयी।

नमद का कम्बल या चादर ओढकर सोन मे स्वग जैसा आनन्द आता है। नमदे से जुलाई की गर्मी और घास के मैदानो मे और दूर-दूर तक फैली सीमाहीन रेत की अनुभूति होती है। सुख चैन की नीद म डूब कर शरीर एकदम निढाल हो जाता है।

येव्स्युकोव कालीन के नीचे सोता हुआ खर्राटे ले रहा था। मयूत्का के चेहरे पर भी एक स्वप्निल सी मुस्कान थी। लेफ्टीनेन्ट गोवोरुखा ओत्रोक अकडा हुआ चित लेटा गहरी नीद मे सो रहा था। उसके पतले पनल होठ मिलकर एक सुन्दर रेखा जैसे लगते थे।

नही सो रहा था तो सिफ सतरी। वह नमदे के एक सिरे पर बैठा था। उसकी बन्दूक उसके घुटनो पर रखी थी—उसकी वह बन्दूक जो उस अपनी पत्नी और प्रेयसी से भी अधिक प्यारी थी।

सतरी बफ की सफेद धुध के अन्दर से एकटक उधर देख रहा था जिधर से ऊँटो की घटियो की मधुर आवाज सुनायी दे रही थी। वह सोच रहा था—अब हमारे पास चवालीस ऊँट हो गये। मजिल का रास्ता साफ है। भय और शका की जरूरत अब नही है।

तेज, बर्फीला पवन चीखता चिंघाडता जोरो स भाग रहा था। वह सतरी की बाहो के अन्दर घुस घुस जाता था! ठण्ड से ठिठुरते सतरी न शरीर कुछ ढीला किया और सर्दी स बचाव के लिए नमदे को कुछ अपन ऊपर खीच लिया। बर्फीली छुरियो के प्रहार बन्द हो गये और अकडे बदन के अन्दर सुखद गर्मी का नशा छान लगा।

बफ अधेरा, रेत ही रत!

एक अनजाना एशियाइ दश

'ऊट कहा है? तेरा बडा गक हो, अरे ऊँट कहा गये? लानत है तुम पर! सो रहा है? सो रहा है कमबख्त? यह तूने क्या कर डाला, कमीने? मैं तेरी चमडी उधडवा डालूगा!"

बूट की जोरदार ठोकर लगने से संतरी का सिर चकरा उठा। बहकी बहकी नजर से वह चारों ओर देखने लगा।

बर्फ और अंधेरा।

हल्का हल्का धुंधलका, सुबह का धुंधलका। और रेत।

ऊँट गायब थे!

ऊँट जहाँ खड़े थे वहां ऊँटों और आदमियों के पैरों के निशान थे। ये निशान किर्गीजों के नुकीले जूतों के थे।

लगता था कि तीन किर्गीज रात भर दस्ते का पीछा करते रहे थे और जैसे ही संतरी की आंख लगी वे ऊँटों को ले कर उड़न छू हो गये!

लाल फौज के सिपाही छोटे छोटे दलों में चुपचाप खड़े थे। ऊँट गायब थे! ढूंढा भी जाय उन्हें तो कहां? उन्हें पकड़ सकना आसान नहीं था। रेगिस्तान में खोज पाना भी सम्भव नहीं था

'तेरे जैसे कुत्ते के पिल्ले को गोली भी मार दी जाये तो वह कम होगी!' येव्स्युकोव ने संतरी की तरफ घूरते हुए कहा।

संतरी को जैसे लकवा मार गया था। आंसू की बूंदें उसकी आंखों की कोरों में मोतियों की तरह जमकर रह गयी थीं। लेफ्टीनेंट नमदे के नीचे से निकल आया। इधर उधर देखकर उसने धीरे से सीटी बजायी और मजाक उड़ाते हुए कहा

यही है तुम्हारा क्रान्तिकारी अनुशासन!'

"चुप रह पाजी! येव्स्युकोव गुस्से से गरजा और फिर पराई सी अवाज में धीरे से फुसफुसाया यहां खड़े खड़े क्या कर रहे हो भाइयो, चलो! यहां से आगे बढ़ो!।'

अब केवल ग्यारह व्यक्ति एक ही पंक्ति में घसिटते हुए चल रहे थे। वे थक कर चूर थे और रेतीले टीलों को लड़खड़ाते हुए पार कर रहे थे। दस सिपाही इस भयानक रास्ते में दम तोड़ चुके थे। हर दिन सुबह कोई न कोई बहुत बुरी हालत में, अपनी मुंदी हुई आंखों को

आखिरी बार मुश्किल से खोलता, लकडी की तरह सख्त और सूजे अपने पैर फैलाता, और भारी भारी आवाजें निकालता।

गुलाबी येव्स्युकोव, लेटे हुए उस सैनिक के पास जाता। कमिसार का चेहरा अब उसकी जाकेट की तरह गुलाबी नही रह गया था। वह सूख गया था और उस पर दुख मुसीबत की छाप साफ नजर आती थी। चेहरे के मुहासे के दाग ताँबे के पुराने सिक्को जैसे उभर आये थे। कमिसार सैनिक को गौर से देखता और निराशा और दुख से सिर हिलाता। फिर उसकी पिस्तौल की नली उसकी चिपकी सूखी कनपटी मे एक सूराख कर देती। एक काला-सा और लगभग रक्तहीन घाव बाकी रह जाता। झटपट उस पर रेत डालकर फिर वे आगे चल देते। सैनिको की जाकेटें और पतलून तार-तार हो चुके थे। बूट टूट-टूट कर रास्ते मे गिर गये थे। उन्होने पैरो पर नमदे के टुकडे और ठण्ड से सुन्न हुई उँगलियो पर चिथडे लपेट लिये थे।

अब केवल दस आदमी लडखडाते, हवा के झोको मे डगमगाते हुए, आगे बढ रहे थे।

उनमे एक व्यक्ति था, जो शान्त भाव से तनकर चल रहा था। वह था गार्ड का लेफ्टीनेन्ट गोवोरुखा आत्रोक।

लाल फौज के सिपाहियो ने कई बार येव्स्युकोव से शिकायत करते हुए कहा,

'साथी कमिसार! इसे इस तरह साथ साथ कब तक हम लिये फिरेंगे? बेकार ही इसे भी खिलाना पड रहा है! फिर इसके कपडे, इसके जूते भी बढिया है। उन्हे भी बाँटा जा सकता है।"

मगर येव्स्युकोव ने ऐसा करने से उन्हे मना कर दिया।

'इसे या तो सदर दफ्तर पहुचाऊँगा, या फिर खुद भी इसके साथ ही खत्म हो जाऊँगा। यह बहुत-सी बातें बता सकता है। इस आदमी को योही खत्म कर देना ठीक नही। उसे उचित सजा मिलेगी—इसके बारे मे निश्शंक रहो।"

लेफ्टीनेन्ट के हाथ रस्सी से बधे थे और रस्सी का दूसरा सिरा मयूत्का की कमर में बधा था। मयूत्का बहुत मुश्किल से घसिटती हुई चल रही थी। उसके रक्तहीन और सफेद चेहरे पर बिल्ली जैसी पीली और चमकती आँखें अब और भी अधिक बडी बडी लगती थी। मगर लेफ्टीनेन्ट बिल्कुल भला चगा था। उसके चेहरे का रग अवश्य कुछ फीका पड गया था।

येव्स्युकोव एक दिन लेफ्टीनेन्ट के पास गया और उसकी चमकती नीली आखो मे आँखें डालकर घूरता रहा। फिर बडी कठिनाई से उसने उससे कहा,

'अरे ओ मुर्दार! तू आदमी है या कुछ और? शरीर पर मास नहीं रह गया मगर शक्ति अब भी दो के बराबर है!'

लेफ्टीनेन्ट के होठो पर सदा की सी चिढाने वाली मुस्कान फैल गयी। उसने शान्त भाव से जवाब दिया,

"यह राज तुम्हारी समझ मे नहीं आयगा! यह सस्कृति का अतर है। तुम्हारी आत्मा तुम्हारे शरीर की दासी है और मेरा शरीर मेरी आत्मा के इशारे पर चलता है। मैं अपने शरीर को सभी कुछ सहन करने का आदेश दे सकता हूँ।'

"तो यह बात है, कमिसार ने विचार मग्न होते हुए कहा।

दाना और रेतीली पहाडिया सिर उठाये खडी थी—नम नम ढालू और लहराती हुई। तेज हवा में उनकी चोटियो पर रेत सापो की तरह फनफना और लहरा रही थी। लगता था कि रेगिस्तान का कहीं अन्त नहीं था।

चलते हुए कोई न कोई दात भीचकर रेत पर गिर जाता। वह हताश होकर कहता

अब आगे नहीं चला जाता। मुझे यहीं छोड दो जिसमे कि शान्ति से मर सकू।'

येव्स्युकोव उसके करीब जाता, डाटता डपटता और ढकेलते हुए कहता

किर्गीज अपने अपन खेमो के दरवाज़ो पर जमा हो गये। व चलत फिरते इन मानवीय पजरो को दया और आश्चय की दष्टि मे दख रह थे।

बैंठी हुई नाक्वाले एक बूढे ने अपनी बकरदाढी को सहलाते और छाती पर हाथ फेरते हुए उनसे पूछा,

"सलाम अलैकुम ! किधर जा रहे हो जवान ?"

येव्स्युकोव न धीरे से उसके आगे बढे हुए हाथ को अपन हाथ में ले लिया और कहा

"हम लाल फौज क सिपाही है। कज़ालीन्स्क जा रहे हैं। कृपया हमे घर ले चलकर खाना खिलाओ। सोवियत इसके लिये तुम्हारा आभार मानगी।'

किर्गीज न अपनी बकरदाढी हिलायी और होठ चबाते हुए कहा,

"अरे हुजूर लाल सिपाही हैं ! बाल्शेविक ! मास्का स आये हैं ?"

नही बाबा। मास्को से नही। गूर्येव से आ रह हैं।"

गूयव से ? अर हुजुर, अरे हुजूर ! करा कुम को पार करके आये हैं ?"

किर्गीज की तिरछी आखा म इस फीकी वर्दी वाले व्यक्ति क लिय आदर और भय की भावना चमक उठी। यह फरवरी महीन की बर्फीली हवाओ से लोहा लता हुआ, करा कुम का भयानक मरुस्थल पैदल पार करके गूर्येव से अराल सागर तक आ पहुचा था !

बूढे न ताली बजाई। कुछ औरतें भागती हुइ आयी। बूढे न घरघराती आवाज म उन्हे कुछ हुक्म दिया।

उसने कमिसार की बांह थामी और कहा,

चलो जवान, खेमे मे। थोडा सो लो ! फिर उठकर खाना खाना।'

सिपाही खेम म मुर्दो की तरह पड गये और ऐसे सोय कि रात

होने तक उन्होने करवट भी न ली । किर्गीज़ो ने पुलाव तैयार किया और जब मेहमान उठे तो उन्हे खिलाया । उन्होने सिपाहियो के कन्धो की उभरी हुई हड्डियो को सहानुभूति से थपथपाया ।

"खाओ जवान, खाओ ! तुम सूख कर काटा हो गये हो ! खाओ, तगडे हो जाओगे !"

वे खाने पर टूट पडे । चर्बी वाले पुलाव से उनके पेट फूल गये और कुछ की तो तबीयत भी खराब हो गयी । वे भागकर मैदान गये, गले मे अगलिया डालकर उन्हाने अपनी तबीयत हल्की की और लौटकर फिर खाने मे जुट गये । अब उनके पेट भरे हुए थे तन गर्म थे । वे फिर सो गये ।

मगर मर्यूत्का और लेफ्टीनेन्ट नही सोये ।

मर्यूत्का अगीठी मे जलते अगारो के करीब बैठी थी । वह बीती हुई मुसीबतो को भूल चुकी थी । उसने अपने थैले से पेंसिल का एक टुकडा निकाला और सचित्र मासिक पत्रिका के एक पृष्ठ पर कुछ अक्षर लिखे । यह पत्रिका उसने एक किर्गीज़ औरत से माग ली थी । उस पूरे के पूरे पृष्ठ पर वित्त मन्त्री काउन्ट काकोवत्सेव का चित्र अकित था । मर्यूत्का ने काउन्ट के चौडे माथे और सुनहरी दाढी पर अपने टेढे मेढे अक्षरो मे कुछ नोट किया ।

ऊँट वाली वह रस्सी अब भी मर्यूत्का की कमर मे बधी थी और उसका दूसरा सिरा पीठ पर बधे लेफ्टीनेन्ट के हाथो को कसे हुए था । मर्यूत्का ने केवल एक घण्टे के लिए लेफ्टीनेन्ट के हाथ खोले थे ताकि वह भरपेट पुलाव खा सके । उसके बाद लेफ्टीनेन्ट के हाथ उसने फिर कसकर बाध दिये थे ।

लाल फौज के सिपाही हँसते हुए मजाक करते थे, "वह जजीर मे कुत्ते की तरह बधा है ।"

फिर वे कहते, "मर्यूत्का, लगता है कि तुम तो उसे दिल दे बैठी हो ? अच्छी तरह बाँधकर रखो अपने प्रियतम को ! कही ऐसा न हो

कि परी देश की कोई राजकुमारी उडनखटोले पर उडती हुई आये और तुम्हारे साजन को उडा ले जाये।"

मयूरका चुप्पी साधे रहती।

लेफ्टीनन्ट खेमे की एक चोब से टेक लगाये बैठा था। उसकी चचल नीली आखें धीरे धीरे हिलने डुलनेवाली पेंसिल को बहुत ध्यान से देख रही थी।

आगे की ओर झुकते हुए उसने पूछा,

'क्या लिख रही हो ?'

मयूरका ने अपनी लटकती हुई सुनहरी जुल्फ के बीच से उस पर नजर डाली और कहा, 'तुमसे मतलब !'

'शायद तुम पत्र लिखना चाहती हो ? तुम बोलती जाओ, मैं लिख दूगा।'

मयूरका जरा हस दी।

'बहुत चालाक बनते हो ! मतलब यह कि मैं तुम्हारे हाथ खोल दू तुम मुझे एक हाथ जमाओ और नौ-दो ग्यारह हो जाओ ! ऐसी बुद्धू न समझो तुम मुझे ! तुम्हारी मदद की मुझे जरूरत नही है ! मैं खत नही, कविता लिख रही हू समझे सुन्दर ?"

लेफ्टीनेन्ट की आखें आश्चर्य से फैल गयी। उसने चोब से पीठ हटायी और बोला, 'क विता ? तुम कविता लिखती हो ?"

मयूरका ने पेंसिल से लिखना बन्द कर दिया और शर्म से लाल हो गयी।

"घूर क्या रहे हो ? हैं ? तुम समझते हो कि बस तुम ही बडे हजरत हो जो माजूर्का नाच नाचना जानते हो और मैं केवल एक बेवकूफ देहाती लडकी हूँ !'

लेफ्टीनन्ट ने कधे फटके, लेकिन उसके हाथ नही हिले।

'मैं तुम्हे बेवकूफ नही समझता हूँ। सिर्फ हैरान हो रहा हूँ ! कविता करने का भला आजकल कौन सा जमाना है ?

मर्यूत्का ने अपनी पेंसिल एक ओर रख दी और झटके के साथ सिर ऊपर उठाया। उसके हल्के लाल रग के बाल कधे पर फैल गय। उसने कहा

"सचमुच बडे ही अजीब आदमी हो तुम ! तुम शायद यही समझते हो कि राया क नम नम बिस्तर पर लटकर ही कविता रची जा सकती है ? पर अगर मेरी आत्मा बक्रार हा कविता करा का तो ? कैसे हमने भूखे पेट और ठण्ड से ठिठुरते हुए रेगिस्तान पार किया, मैं इसे शब्दा मे व्यक्त करने के सपन दखती हूँ। काश मैं लागा के दिला तक अपनी बात पहुँचा सकती ! मैं ना अपने दिल क खून स कविता रचती हूँ मगर उस काई छापता ही नहीं। वे कहत है कि पहल मुझे पढना चाहिए। पढना ! पर आजकल पढन का वक्त ही कहा है ? मैं ता सीधे सीधे ढग से अपन मन की बात लिखती हूँ !

लेफ्टीनन्ट ज़रा सा मुस्कराया। उसने कहा,

'सुनाओ ता ! मैं तुम्हारी कविता सुनना चाहता हूँ। कविता को थोडा बहुत मैं समझता भी हूँ।"

'तुम्हारी समझ म नही आयेगी यह। तुम्हारी नसो मे अमीरा का खून है, बहुत चिकना चिकना। तुम फूला और सुदरियो के बार म रची कविताएँ ही पसन्द करते हो, और मैं लिखती हूँ गरीबा के बार म, क्रान्ति के बारे मे,' मयूत्का न दुखी होते हुए कहा।

'समझूगा क्यो नही ?" लेफ्टीनन्ट ने जवाब दिया। "बहुत सभव है कि उनकी विषय वस्तु मेरे लिए परायी हो, मगर आदमी-आदमी का समझ तो सकता ही है ?"

मयूत्का ने कुछ झिझकते हुए कोकोवत्सव का चित्र उलटा और आखें झुका ली।

खर, चाहते हा ता सुनो ! मगर हसना नही। तुम्हारे बाप न ता बीस साल की उम्र तक तुम्हारी देखभाल के लिये धाय रख छोडी हागी मगर मुझे ता अपनी हिम्मत से ही इस उम्र तक पहुचना पडा है।'

नही हसूगा ! हसन की बात तो मैं सोच भी नही सकता ।"

"तो सुनो ! मैने सब कुछ ही कविता मे लिख डाला है । कैसे हम कज्जाकों से जूझे, कस बचकर रेगिस्तान में पहुचे ।'

मर्यूत्का ने खासकर गला साफ किया । उसने नीची आवाज मे शब्दो पर ज़ोर दे दकर कविता पाठ शुरू किया । वह भयानक ढग से अपनी आखें नचा रही थी ।

आय, आये हम पर कज्जाक चढकर
ज़ार के थे वे खूनी कूकर
लिया हमन उनस लोहा डटकर
दुश्मनो की सख्या थी भारी ।
हमन बाज़ी जीती, पर हारी ।।
योद्धा की तरह हमारे येव्स्युकोव ने
दिया हुक्म कज्ज़ाको को खत्म करन का ।
रखकर हथेली पर जान हम लडे
थोडे थ बहुत हम, फिर भी अडे ।।
बीस हम बचे, और गये मारे !
मोर्चे से हम हटे, हार ।।

'बस इससे आग यह कविता किसी तरह चल ही नही पा रही है इस निगोडी को मछली का रोग लगे ! समय मे नही आता कि ऊँटो की चर्चा कैस करूँ ?' मर्यूत्का न परेशान स्वर म कहा ।

लेफ्टीनेंट की नीली आखें तो छाया म थी । पर उसकी आखो की सफेदी पर अगीठी की चमकती आग की झाँई पड रही थी । उसने कुछ देर बाद कहा,

'हाँ खासी अच्छी है ! तुम्हारी पक्तिया मे बहुत सी अनुभूतियाँ हैं भावनायें हैं । साफ पता चलता है कि व दिल की गहराई से निकली हैं ।' इतना कहने के बाद उसका सारा शरीर एक बारगी हिला और उसन हिचकी की सी आवाज की । फिर इस आवाज

को छिपाते हुए जल्दी से उसने कहा—"पर, देखो बुरा न मानना ! कविता के रूप मे बहुत कमजोर हैं ये पक्तिया । इन्हे माँजने की जरूरत है, इनमे कला की कमी है ।"

मयूरका ने उदासी से कागज को अपने घुटनो पर रख दिया । वह चुपचाप खेमे की छत ताकने लगी । फिर उसने कंधे झटके और कहने लगी,

"मैं भी तो यही कहती हूँ कि इनमे भावनाएँ है । जब मैं अपनी भावनाएँ व्यक्त करती हूँ तो मेरे अन्दर की हर चीज जैसे सिसकने लगती है । रही यह बात कि इन्हे माँजा नही गया तो सभी जगह यही सुनने को मिलता है, बिल्कुल इसी तरह जैसे तुमने कहा है—'आपकी कविताओ मे मँजाव नही, इसलिए छापा नही जा सकता ।' मगर इन्हे माजा कैसे जाय ? क्या गुर है इसका ? आप पढे लिखे आदमी है शायद आपको यह गुर मालूम होगा ? क्या आप मुझे बता सकते हैं ?"

मयूरका भावावेश मे लेफ्टीनेन्ट को 'आप' तक कह गयी !

लेफ्टीनेन्ट कुछ देर चुप रहा और फिर बोला,

"मुश्किल है इस सवाल का जवाब देना । कविता रचना तो, देखो न एक कला है । हर कला के लिये अध्ययन जरूरी है । हर कला के अपने नियम, अपने कानून होते हैं । मिसाल के तौर पर, अगर इजीनियर को पुल बनाने के सभी नियम मालूम न हो तो वह या तो पुल बना ही नही पायेगा, या फिर ऐसा निकम्मा पुल बनायेगा जो किसी काम-काज का नही होगा ।"

"पर वह तो पुल की बात है । उसके लिये तो हिसाब किताब और समझ बूझ की दूसरी बहुत सी बातो की जानकारी जरूरी है । मगर कविता तो मेरे मन मे बसी है, जन्मजात है । हो सकता है कि यह प्रतिभा ही हो ?"

"हो सकता है ! पर *प्रतिभा के विकास के लिए भी अध्ययन जरूरी* होता है । इन्जीनियर इसीलिये डाक्टर नही, बल्कि इजीनियर है कि

उसमे जन्म से ही इंजीनियरिंग की ओर रुझान था। लेकिन अगर वह पढने लिखने मे दिलचस्पी न ले तो उसका कुछ बन बना नही सकता।"

'अच्छा ? हा, ऐसी बात है ! अच्छा तो लडाई खत्म होते ही मैं ऐसे स्कूल मे भर्ती हो जाऊँगी जहाँ कविता लिखना सिखाते हैं। ऐसे स्कूल भी तो होते होगे न ?"

शायद होते ही होंगे, लेफ्टीनेन्ट ने सोचते हुए कहा।

जरूर जाऊँगी मैं ऐसे स्कूल मे पढने। कविता तो मेरा जीवन बनकर रह गई है। अपनी कविताओ को किताब के रूप मे छपा देखने के लिए मेरी आत्मा तडपती है और हर कविता के नीचे अपना नाम 'मरीया बासोवा' देख पाने के लिए मेरा मन बेचैन रहता है।

अंगीठी बुझ चुकी थी। अन्धेरे मे नमदे के खेमे से टकराती हुई हवा की सरसराहट सुनाई दे रही थी।

सुनो तो' मर्यूत्का ने अचानक कहा। 'रस्सी से तो तुम्हारे हाथो मे दर्द होना होगा न ?'

नही बहुत तो नही। बस, जरा सुन्न हो गये है।"

'अच्छा देखो तुम कसम खाओ कि भागोगे नही। तो मैं तुम्हारे हाथ खोल दूंगी।'

'मैं भागकर जा ही कहा सकता हूँ ? रेगिस्तान मे, ताकि गीदड मुझे नोच खायें ? मैं ऐसा बेवकूफ नही हूँ।

'खैर फिर भी कसम खाओ। दोहराओ मेरे ये शब्द 'अपने अधिकारो के लिये लडने वाले सर्वहारा की कसम खाकर लाल फौजी मरीया बासोवा को मैं वचन देता हूँ कि मैं भागने की कोशिश नही करूँगा।"

लेफ्टीनेन्ट ने कसम दोहराई।

मर्यूत्का ने रस्सी की गाँठ ढीली कर दी, फूली हुई कलाइयों को नजात मिली। लेफ्टीनेन्ट ने आराम से अपनी अंगुलियाँ हिलाइ-डुलाइ।

"अच्छा, अब सो जाओ," मयूत्का न जम्हाई ली। 'अब भी अगर भागोग तो दुनिया म तुम सबस कमीन आदमी होग ! यह लो, नमदा ओढ लो।"

'धयवाद, मैं अपना कोट ओढ लूगा। गुडनाइट, मरीया "

"मरीया फिलातोव्ना" मयूत्का ने बड़ ग़र्व से लेफ्टीनेन्ट को अपना पूरा नाम बताया और नमदे क नीचे दुबक गई।

येव्स्युकोव को फौज के सदर दफ्तर (हेड-क्वाटर) तक अपनी खबर पहुँचाने की जल्दी थी।

मगर यह जरूरी था कि उसके सनिक बस्ती म कुछ दिना तक आराम कर लें, ठण्ड स कुछ मुक्ति पा लें और पेट भर खाना खा ले। एक सप्ताह बाद उसन तट क साथ साथ चलत हुए अराल्स्क की बस्ती तक पहुचने का और फिर वहाँ से सीधे कज़ालीन्स्क जान का निणय किया।

दूसरे सप्ताह के प्रारम्भ म कमिसार को उधर स गुजरने वाले कुछ किर्गीजा की जबानी पता चला कि पतझड के तूफान ने किसी मछुवे की नाव को चार किलोमीटर की दूरी पर एक खाडी के किनारे ला पटका है। किर्गीजा ने उसे बताया कि नाव बिल्कुल सही सलामत है। वह बिना किसी दावेदार के एसे ही तट पर पडी हुई है और मछुवे सम्भवत डूब गये है।

कमिसार नाव का देखने गया।

नाव लगभग नई थी। वह शाहबलूत की मजबूत लकडी की बनी थी। तूफान से उसको कोई हानि नही पहुँची थी। केवल पाल फट गया था और उसकी पतवार टूट गयी थी।

येव्स्युकोव ने लाल फौज के सिपाहिया से सलाह मशविरा किया। फिर समुद्र के रास्ते से सीर दरिया के दहाने तक तत्काल उसने एक टोली

भेजने का फैसला किया। नाव मे आसानी से चार आदमी बैठ सकते थे और रसद की भी साधारण मात्रा उस पर लादी जा सकती थी।

ऐसा ही करना ठीक होगा", कमिसार न कहा। "इस तरह एक तो कैदी को जल्दी से वहाँ पहुँचाया जा सकेगा। आखिर कौन जान, पैदल सफर मे क्या हो जाये ? और उसे हेडक्वाटर तक पहुँचाना जरूरी है। दूसरे, हेड क्वाटर को हमारी खबर मिल जायगी। वहाँ स घुडसवारो के जरिए व हमारे लिए कपडे और कुछ दूसरी चीज़ें भज देग। हवा अनुकूल हुइ तो नाव द्वारा तीन चार दिना मे ही अरल सागर को पार करके पाँचव दिन कज़ाली स्क पहुँचा जा सकता है।"

येव्स्युकोव ने रिपोट लिखकर तैयार की। लेफ्टीनेन्ट से हासिल हुई दस्तावेजो के साथ उसने उस कनवास के एक थैले म सी दिया। इन दस्तावेजो को वह हर समय अपने कोट की अन्दरवाली जेब म सम्भाल कर रखता था।

किर्गीज़ नारियो ने नाव क पाल की मरम्मत कर दी और कमिसार न स्वय टूटे हुए तख्तो स एक नयी पतवार बना दी।

फरवरी की एक ठण्डी सुबह थी। विस्तृत और समतल नीली सतह पर नीचा सूरज पालिश किए हुए पीतल क थाल की तरह लटक रहा था। उसी समय कई ऊँटो न नाव को घसीटकर बफ की सीमा तक पहुँचा दिया।

उन्होने नाव को खुले समुद्र मे डाला और मुसाफिर उस पर सवार हो गये।

येव्स्युकोव न मयूत्का स कहा

'तुम इस दल की नत्री होगी। सारी जिम्मदारी तुम्ही पर होगी। इस अफसर पर नजर रखना। अगर यह निकल भागा तो तुम्हारी भी जान नही बचेगी। जिन्दा या मुर्दा हड क्वाटर तक इसे पहुँचाना ही होगा। अगर खुदा न खास्ता कही सफेद गार्डों के हाथ पड जाओ तो इस जिन्दा मत रहन देना। अच्छा, जाओ !

पाचवां अध्याय

यह सारा अध्याय डान्याल डेफो के उपन्यास 'राबिन्सन क्रूसो' से चुराया गया है। अन्तर केवल इतना ही है कि इसमे राबिन्सन को फ्राइडे के लिए बहुत देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पडी

अरल सागर बहुत आनन्ददायक सागर नही है।

इसका तट एकदम सपाट है जिस पर झाडिया उगी हुई है। रेत ही रत है। और चलती फिरती सी नीची पहाडियाँ हैं।

अरल सागर के द्वीप कडाही मे रखे समोसो की तरह लगते हैं। वे इतने सपाट है कि उनका पता लगाना भी मुश्किल होता है।

उन पर न हरियाली है, न परिन्दे, और न कोई दूसरे जीव-जन्तु। इ सान वहा सिफ गर्मिया म नजर आत हैं।

अरल सागर का सबसे बडा द्वीप है बारसा केलमेस।

इसका क्या मतलब है, कोई नही जानता। मगर किर्गीज इसका अथ मृत्यु का दीप" बताते हैं।

गर्मिया मे अराल्स्क की बस्ती स मछुए इस द्वीप पर आते है। बारसा-केलमेस मे मछलिया बहुत है। समुद्र मछलिया से अटा रहता है। मगर पतझड के दिना मे जैसे ही समुद्र की सतह पर सफेद झाग की टोपिया नजर आने लगती हैं, मछुए अराल्स्क बस्ती की शान्त खाडी मे लौट जाते हैं और फिर वसन्त ऋतु तक वही रहते हैं।

अगर तूफान शुरू होने म पहले मछुए सारी मछलियाँ तट तक ले जाने म सफल नही हो पाते तो नमक लगी मछलिया को जाडे भर के लिए वे लकडी के बाडो में वही द्वीप पर ही छोड जाते हैं।

सख्त जाडे मे जब समुद्र चेर्नीशोव की खाडी से बारसा द्वीप तक जम जाता है, तो गीदडो की चाँद बन आती है। वे बफ पर दौडकर द्वीप पर पहुँच जाते हैं और नमकीन मछलिया को इतनी अधिक मात्रा म

खाते हैं कि फिर उनके लिए हिलना डुलना भी मुश्किल हो जाता है और उनके पेट फटने लगते है। ऐसी हालत मे जब वसन्त आता है तो सीर दरिया की लाल बाढ बर्फ की चादर को तोडती है और मछुए द्वीप पर लौट आते है तो पतझड म वहा छोडी हुइ मछलियाँ उन्हे नही मिलती।

नवम्बर से फरवरी तक इस समुद्र मे बडी हलचल रहती है सभी ओर जोरो के तूफान आते ह। बाकी समय थोडी वर्षा होती है। और गर्मियो मे अरल सागर दपण की तरह शान्त और समतल हो जाता है।

अरल ऊब पैदा करने वाला समुद्र है।

अरल म केवल एक ही आकर्षक चीज है—उसकी नीलिमा, असाधारण नीलिमा।

गहरी नीलिमा, मखमली मुलायम नीलिमा अथाह नीलिमा।

भूगोल की किसी भी पुस्तक स इस बात का पता आपको चल जायगा।

मयूत्का और लफ्टीनेन्ट को रवाना करते समय कमिसार को यह आशा थी कि कम स कम एक सप्ताह मौसम शान्त रहेगा। बस्ती के किर्गीज़ बुजुर्गो न भी यही कहा था कि चिह्न शान्त मौसम के ही मालूम पडते हैं।

इस तरह मयूत्का, लेफ्टीनेन्ट और दो सिपाहियो—सेम्यानी और व्याखिर को लेकर समुद्री रास्ते म कजाली स्क की ओर जाने वाली नाव अपने सफर पर रवाना हो गयी। सम्यानी और व्याखिर को इस-लिए चुना गया था कि उन्हे नौ चालन की कुछ जानकारी थी।

अनुकूल हवा मे पाल फूल रहा था और पानी म प्यारी प्यारी लहरियाँ पैदा हो रही थी। पतवार की छप छप लोरियाँ दे रही थी। नाव के दोनो ओर गाढा गाढा फेन उठ रहा था।

मयूत्का न लफ्टीनेन्ट के हाथ बिल्कुल खोल दिये। नाव स भागकर

भला वह कहाँ जायगा ? लफ्टीनेन्ट अब नाव चलाने में सेम्यान्नी और व्याख्रिर का हाथ बटाने लगा।

वह खुद अपने को कैदखाने की तरफ ले जा रहा था।

जब उसकी बारी न होती तो वह नमदा ओढ़कर नाव के तले में जा पड़ता। किन्हीं गुप्त गहरे रहस्यों का, अफसर के ऐसे रहस्यों का, ध्यान करके, जिन्हें उसके सिवा कोई दूसरा नहीं जानता था, वह मुस्कराता रहता।

मर्यूत्का उसके इस अन्दाज से परेशान हो उठती।

"हर समय क्या यह इस तरह दांत निकालता रहता है ? जैसे कि वह कहीं मजा मौज के लिए जा रहा हो ! उसका अन्त तो बिल्कुल स्पष्ट है—हेड क्वार्टर में पहुंचेगा, वहां उससे पूछ ताछ होगी, और उसके बाद उसका खेल खतम ! तब फिर जरूर इसके कुछ पेंच ढीले होंगे !"

मगर लेफ्टीनेन्ट मर्यूत्का के विचारों से बिल्कुल अनजान पहले की ही तरह मुस्कराता रहा।

मर्यूत्का जब और सब्र न कर पाई तो उसने उससे पूछ ही लिया,

'तुमने नाव चलाना कहाँ सीखा ?"

गोवोरुखा-ओत्रोक क्षण भर सोचता रहा। फिर उसने कहा, 'पीटसबर्ग में मेरा अपना बजरा था—बड़ा सा। मैं उसमें समुद्र में जाता था।'

बजरा ?'

हां, ऐसा ही, पाल वाला बजरा।"

'ओह ! ऐसे बजरों से तो मैं अच्छी तरह परिचित हूँ। अस्त्राखान के बन्दर में बुर्जुवा लोगों के ऐसे बहुत से बजरे मैंने देखे हैं। उनके सभी बजरे हंसों की तरह सफेद और खासे बड़े बड़े थे। मगर मेरा सवाल दूसरा था। क्या नाम था उसका ?"

'नेली।"

"यह क्या नाम हुआ ?"

"मेरी बहन का नाम था यह। उसी के नाम पर मैंने बजर का नाम रखा था।

"ईसाइयों के तो ऐसे नाम नही होते।"

उसका नाम था तो येलेना मगर अंग्रेजी ढग से हम उसे नली कहते थे।"

मयूत्का चुप हो गयी। वह सफेद सूरज को देखने लगी जिसकी ठंडी और सफेद मिठास हर चीज़ का मधुमय बना रही थी। वह पानी की नीलिमा का अपनी बाँहों मे लेने के लिए नीचे उतर रहा था।

मयूत्का न फिर बात चलायी,

'यह पानी कितना नीला है! कस्पियन सागर के पानी जैसा हरा। तुमने कभी कोई चीज़ इतनी नीली देखी है ?"

लेफ्टीनेन्ट न कुछ एस जवाब दिया मानो अपने से बात कर रहा हो खुद का जवाब दे रहा हो

फोरेल के अनुसार इसका नम्बर तीसरा है।" लेफ्टीनेन्ट ने जसे अपने ही से कहा।

क्या कहा ?" मयूत्का चौंककर उसकी ओर घूमी।

'मैं अपने स ही कुछ कह रहा था। पानी के बारे मे। हाइड्रोग्राफी* की किसी किताब म मैंने पढा था कि इस समुद्र का पानी बहुत चमकता हुआ नीला है। फोरेल नाम के एक वैज्ञानिक न विभिन्न समुद्रों के पानी की एक तालिका बनायी है। सबसे अधिक नीला पानी प्रशान्त महासागर का है। उसकी तालिका के अनुसार इस समुद्र का स्थान नीलेपन म तीसरा है।'

मयूत्का ने अपनी आखें कुछ मूद ली मानो पानी की नीलिमा की तालिका को वह अपनी कल्पना मे देख रही हो।

---

* जल-सर्वेक्षण। अनु०

'बहुत ही नीला है यह पानी । इससे भी अधिक नीली किसी दूसरी चीज़ की कल्पना करना कठिन है। यह ऐसा नीला है जैसे कि " अचानक उसकी बिल्ली जैसी पीली आखें लेफ्टीनेन्ट की नीली आखा पर जमकर रह गयी। वह आगे को झुकी, उसका पूरा शरीर इस प्रकार सिहर उठा मानो उसने कोई असाधारण बात खाज ली थी। उसके होठ आश्चय से खुले रह गये। वह फुसफुसाई, "तुम्हारी आखें भी तो बिल्कुल ऐसी ही नीली है इस पानी ही जैसी ! यही तो मै सोच रही थी कि इस समुद्र के सम्ब ध मे कोई जानी पहचानी चीज़ है !"

लेफ्टीनेन्ट खामोश रहा।

क्षितिज नारगी रग मे डूब गया। दूरी पर पानी मे काले, स्याही जैसे धब्बे नज़र आ रहे थे। सागर की सतह से बर्फीली हवा आ रही थी।

'पूर्वी हवा है,' सेम्यान्नी ने अपनी फटी वर्दी को शरीर पर अच्छी तरह लपेटते हुए कहा।

'शायद तूफान आयेगा," व्याखिर बोला।

'आता है तो आये। दो घटे मे हम बारसा के समीप पहुच जायेंगे। हवा तेज़ होगी तो रात को वही ठहर जायेंगे।"

चुप्पी छा गई। उठती हुई काली-काली लहरो पर नाव हिचकोले खाने लगी। आकाश मे बडे-बडे काले बादल दिखलायी देने लगे।

"बेशक तूफान आ रहा है।"

"बारसा द्वीप जल्द ही नज़र आयेगा। बाई ओर को होगा वह। अजीब ऊल जलूल जगह है वह बारसा भी। उस पर चाहे जहाँ भी चले जाओ, सभी जगह रेत ही रेत है। बस हवा फर्राटे भरती रहती है अरे पाल को ढीला करो, जल्दी करो, यह तुम्हारे जनरल का पतलून नही है!"

लेफ्टीनेन्ट समय पर पाल ढीला न कर पाया। नाव ने एक तरफ

पानी म धचका खाया और फेन न मुसाफिरा के चेहरा पर अपना हाथ जमाया ।

"मुंह पर क्या बरस रहे हो ? मरीया फिलाताव्ना स भूल हो गयी थी ।

मुझ स भूल हुई ? क्या कह रहे हो, तुम्हे मछली का रोग लग । पाँच साल की उम्र स पतवार पर मरा हाथ रहा है !"

पहाडकाय ऊँची ऊची काली लहरे नाव का पीछा कर रही थी। व मुह फाडे अजगरा जसी दिखाई दे रही थी। वे नाव के बाजुआ पर टूटी पड रही थी ।

या खुदा ! कब आयेगा वह कम्बख्त बारसा ! अधेरा कैसा है, हाथ को हाथ नही सूझता ।

व्याखिर ने बाई ओर नजर दौडाई । वह खुशी स चिल्ला उठा-

'वह रहा, वह रहा कम्बख्त कहीं का !

झाग और धुध के बीच एक सफेद सी तट रखा साफ चमक रही थी ।

जार लगाकर बढाआ तट की ओर," सम्यात्नी चिल्लाया । "अल्लाह न चाहा ता हम वहाँ पहुँच जायेगे ! '

नाव के पिछले हिस्से चरचराये बल्लियाँ कराही । एक बडी लहर भरभराकर नाव के भीतर आ घुसी और मुसाफिरो के घुटनो तक पानी भर गया ।

'नाव से पानी निकाला ! ' मयूत्का उछलकर खडी हो गई और चिल्लाइ ।

पानी निकाला ? मगर किसम ? अपने सिरस ?'

अपनी टोपिया से ! '

सम्यात्नी और व्याखिर न झटपट टोपियाँ उतारी और तेज़ी स नाव स पानी निकालन लगे ।

लफ्टीनेन्ट घडी भर को हिचकिचाया । फिर उसने भी अपनी फर की टापी उतारी और पानी निकालने म उनका साथ दन लगा ।

वह नीची और सफेद तट रेखा तजी से नाव क निकट आ रही थी, वह वफ से ढके तट का रूप लती जा रही थी। उबलते हुए फेन के कारण वह और भी अधिक सफेद दिखाई दे रही थी।

हवा गरजती और फुकारती हुई उत्तुग लहरा का और भी ऊँचा उठा उठा दती थी।

एक तूफानी झाका पाल से टकराया तो तोप की सी आवाज करता हुआ कनवास का वह जजर पाल फट गया।

सम्यानी और व्याखिर मस्तूल की तरफ भाग।

'रस्से को थामा', पतवार पर पूरी तरह झुकती हुई मयूत्का चिल्लाई।

हहरानी और गरजती हुई एक बडी लहर पीछ स आई। उसन नाव का एक ओर उलट दिया। एक ठण्डी तथा चमकती हुई मोटी सी धार उसके ऊपर से बहने लगी।

नाव जब सीधी हुई तो उसम ऊपर तक पानी भरा हुआ था और सेम्यानी और व्याखिर का कही अता-पता नही था। पानी से सराबोर और फट पाल के टुकडे हवा मे लहरा रहे थे।

लफ्टीनन्ट कमर तक गहर पानी मे बैठा जल्दी-जल्दी सलीब के निशान बना रहा था।

शैतान! लानत है तुझ पर! नाव से पानी निकाल!' मयूत्का न जार स चिल्लाकर उससे कहा।

लफ्टीनन्ट भीग पिल्ले की तरह उछलकर खडा हा गया और नाव से पानी बाहर फेकन लगा।

मयूत्का रात के अन्धकार, शार और हवा म जार-जार से पुकार रही थी

स-म्या-आ न्नी ई! व्या आ खि इर!'

कही म कोई उत्तर नही मिला।

'डूब गये, बिचार!"

हवा ने पानी से भरी नाव को तट की ओर ढकेल दिया। इर्द गिर्द का पानी जैसे मथ गया। पीछे से एक और लहर ने धक्का दिया और नाव ज़मीन से जा टकराई।

'उतरो!' नाव से बाहर छलांग लगाते हुए मयूत्का ने आदेश दिया। लेफ्टीनेन्ट भी उसके पीछे कूदकर नाव से उतर गया।

"नाव को घसीट कर किनारे कर लो!"

पानी के ज़ोरदार छींटों से आँखें मुंदी जा रही थीं। फिर भी उन्होंने नाव को रस्से से तट की तरफ खींचा। वह रेत में मज़बूती में धस गयी। मयूत्का ने भारी बन्दूकें अपने कब्ज़े में ले लीं।

"रसद के बोरों को निकाल लो!'

लेफ्टीनेन्ट ने चुपचाप मयूत्का का हुक्म बजाया। सूखी जगह देखकर मयूत्का ने बन्दूकें रेत पर रख दीं। वहीं लेफ्टीनेन्ट ने रसद के बोरे रख दिये।

मयूत्का ने एक बार फिर अन्धकार में आवाज़ लगायी,

सेम्या आ नी! व्याखिइर!"

कोई जवाब नहीं मिला।

फिर मयूत्का बोरों पर बैठकर औरतों की तरह रोने लगी।

लेफ्टीनेन्ट उसके पीछे खड़ा था। उसके दांत बज रहे थे। पर उसने अपने कंधे झटके और मानो हवा को सम्बोधित करते हुए कहा,

"यह तो बिल्कुल राबिनसन क्रूसो और उसके फ्राइडे जैसी कहानी है '

छठा अध्याय

जिसमे दूसरी बातचीत होती है और यह स्पष्ट किया जाता है कि शून्य से तीन डिगरी ऊपर सेन्टीग्रेड वाले समुद्री पानी मे नहाने से क्या हानि होती है

लेफ्टीनेन्ट न मयूत्का का कधा छुआ। उसन कुछ कहन की कोशिश की, मगर जोरा से बजत हुए उसके जबडे ने उसे कुछ कहन न दिया। उसने मुट्ठी से अपन जबडे को जोर स दबाया और मुश्किल स कहा,

"रोने स कुछ नही हासिल होगा! हमे यहाँ से चलना चाहिए! यही बैठे रहेंगे तो हम जम जायेंगे!"

मयूत्का ने सिर ऊपर उठाया। हताश होते हुए उसने कहा

"हम जायें भी तो कहाँ? हम तो इस द्वीप पर पहुँच गये हैं! हमारे चारो ओर पानी ही पानी है।"

'फिर भी हमे यहा से चल देना चाहिए। हमे कही कोई छप्पर या ओसारा मिल जायगा।'

"तुम्हें कसे मालूम? तुम क्या कभी यहाँ आये हो?"

नही आया तो कभी नही। पर, जिन दिनो मैं हाई स्कूल मे पढता था उन्ही दिनो मैंने पढा था कि मछुए मछलिया रखन के लिए यहा बाडे बनाते हैं। हमे उन्ही म से कोई बाडा खोजना चाहिए।

'अच्छा मान लो कि बाडा मिल जाता है। उसके बाद?"

"यह सुबह देखा जायगा। उठो, फ्राइडे!"

मयूत्का न सहमकर लेफ्टीनेन्ट की ओर देखा कि वह बक क्या रहा था!

"तुम्हारा दिमाग तो नही चल निकला? हे भगवान! क्या करूँगी मैं इसका? आज फ्राइडे नही है, मेरे सुन्दर! बुध है!"

'खैर सब ठीक है ! तुम मेरी बातो की ओर ध्यान न दो। हम इसकी बाद म चर्चा करेंगे। अब उठो !"

मयूत्का उसकी बात को मान कर चुपचाप उठ खड़ी हुई। लेफ्टीनेन्ट बन्दूकें उठाने के लिये झुका मगर मयूत्का ने उसका हाथ पकड़ लिया।

रुको ! गड़बड़ी मत करो ! तुमने वचन दिया है कि भागोगे नही।"

लफ्टीनेन्ट ने अपना हाथ पीछे हटा लिया और ज़ोर-जोर से ठहाके लगाने लगा। वह बोला,

'लगता है कि मेरा नहीं तुम्हारा ही दिमाग खराब हो गया है। ज़रा सोचो तो, क्या मैं इस समय यहां से भागने की बात सोच सकता हूँ? बन्दूके इसलिए उठाना चाहता था कि तुम्हें इन्हें उठाने में तकलीफ होगी। वे भारी है।

मयूत्का शान्त हो गई। मधुर और गम्भीर ढंग से उसने कहा,

सहायता के लिये धन्यवाद ! मगर मुझे हुक्म है कि मैं तुम्हें हेड-क्वाटर तक पहुंचा दूं इसलिये ज़ाहिर है कि तुम्हारे हाथ मे बन्दूक मै नहीं दे सकती।"

लफ्टीनेन्ट ने फिर अपने कंधे मटकाये और बोरे उठा लिये। वह मयूत्का के आगे-आगे चलने लगा।

बर्फ मिली रेत उनके पैरों के नीचे चरमरा रही थी। इर्द गिर्द सुनसान और समतल तट का कोई ओर छोर नहीं दिखलायी पड़ता था।

दूर कोई भूरी सी चीज़ बर्फ मे ढकी हुई नज़र आई।

मयूत्का तीन बन्दूकों के बोझ से दबी जा रही थी।

'कोई बात नहीं मरीया फिलातोव्ना थोड़ी और हिम्मत रखो ! ज़रूर वह कोई बाड़ा ही होगा—हम वहाँ पहुँचने ही वाले हैं'

"काश कि बाडा ही हो ! मेरा तो दम ही निकला जा रहा है। ठण्ड से मैं बिल्कुल ठिठुर गई हूँ।"

वे थुक्कर बाडे म दाखिल हुए। उसके भीतर घुप अंधेरा था। सभी ओर नमक लगी मछली और नमी की सडाध फैली हुई थी।

अन्दर बढते हुए लेफ्टीनेन्ट न मछलिया के ढेरो को हाथ से छुआ।

"ओह ! मछलिया हैं ! कम से कम हम भूखे ता नही मरग।"

"काश थाडी राशनी होती ! हम देख सकते ता मुमकिन है कि हवा से बचने के लिए शायद कोई कोना हमे मिल जाता !" मयूत्का ने आह भरते हुए कहा।

बिजली की तो आशा यहा नही की जा सकती !"

मछलिया जलाई जाय देखा तो इनम कितनी चर्बी है !

लेफ्टीनेन्ट ने फिर ठहाका लगाया।

'मछलिया जलाई जायें ? तुम ता सचमुच पागल हो गई हो !"

क्यों ?" मयूत्का न खीझकर कहा। 'वोल्गा तट पर हमारे इलाके मे तो मछलिया बहुत जलाई जाती है। वे लकडिया से भी बहतर जलती है !"

मैं यह बात पहली बार सुन रहा हूँ मगर इन्हे हम जलायेंगे कैसे ? मेरे पास चकमक तो है, किन्तु चैलिया कहा से आयगी "

'वाह रे सूरमा ! समझ गयी कि मा की ही गाद मे पले हो तुम ! लो इन कातूसा को निकाल लो और मैं दीवार से कुछ चैलियाँ निकालती हूँ।"

बुरी तरह ठिठुरी हुई अपनी उँगलिया से लेफ्टीनेन्ट न बहुत ही कठिनाई स तीनो कार्तूसा को बन्दूका से निकाला। चैलियाँ लाते समय मयूत्का अँधेरे म लेफ्टीनेन्ट पर गिरते गिरते बची।

"कारतूस की बारूद यहा छिडको ! एक ही जगह रखना और चकमक निकालो !'

फट कपडे क एक टुकडे को लपेट कर उन्होंने फलीता बनाया। वह एक छोटी सी नारंगी की तरह के शोले की भाँति अँधेरे म सुलग उठा। मयूत्का न उसे बारूद क ढेर म घुसड दिया। एक फुकार-सी हुई फिर धीरे-से पीली चिंगारियो की फुलझडी सी छूटी और सूखी चैलियो म आग लगनी शुरू हो गयी।

"लो, जल गई आग," मयूत्का ने खुशी से चिल्ला कर कहा। 'कुछ और मछलियाँ ले आओ जिनमे सबसे अधिक चर्बी होती है उन्हें "

जलती हुई चैलियो पर उन्होंने मछलियो की पाँत बिछा दी। शुरू म उनसे सू सू की आवाज निकली और फिर चमकदार और गम गम चिंगारियाँ फूटन लगी।

'अब इस आग मे हमे सिर्फ ईंधन डालते जाना होगा। यहाँ की मछलियाँ छ महीने तक चल सकती हैं '

मयूत्का न सभी ओर नजर दौडाई। मछलियो के बडे-बडे ढेरों पर लपटो की नाचती हुई परछाइयाँ पड रही थी। बाडे की लकडी की दीवारो म अनगिनत दरारें और सूराख दिखायी द रहे थे।

मयूत्का न बाडे का निरीक्षण किया। वह एक कोने से चिल्लाई,

यहाँ एक सही सलामत कोना है। यहाँ की दीवाल में छेद भी नहीं हैं। आग म और मछलियाँ डाल दो जिससे वह बुझन न पाये। मैं यहाँ चारों ओर साफ कर दूंगी। तब यह बिल्कुल कमरे जैसा साफ़ सुथरा कोना बन जायगा।"

लेफ्टीनेन्ट आग के पास बैठा था। उसके कपडे भीगे थे किन्तु ज्यो ज्यों उसके शरीर मे गर्मी दौड रही थी वह चैतन्य होता जा रहा था। मयूत्का कोने से मछलियाँ उठा उठाकर दूसरी तरफ़ फेंक रही थी। आखिर उसने पुकार कर कहा,

"लो, सब तैयार हो गया ! अब रोशनी यहाँ ले आओ।"

लेफ्टीनेन्ट न जलती हुई एक मछली दुम स पकडकर उठा ली और उस कोने की तरफ पहुचा । मयूत्का ने तीन ओर से मछलियो की दीवार बना दी थी और बीच मे थोडी सी लगभग छै बग फुट की खाली जगह रह गई थी।

"यहाँ बैठकर दूसरी आग जला दो। मैंन बीच में मछलियो का ढेर लगा दिया है। मैं तब तक रसद लाती हूँ।'

लेफ्टीनेन्ट ने एक जलती हुइ मछली मछलियो के ढेर के बीच टिका दी। बहुत धीरे धीरे और मानो मन मार कर आग जलने लगी। मयूत्का वापस लौट आइ। उसन बन्दूकें कोने म खडी कर दी और बोरे जमीन पर रख दिय।

'ओह् वे दोनो बिचारे कहाँ डूब गय ?'

"हम अपन कपडे सुखा लेन चाहिए। वरना ठण्ड लग जायेगी।" लेफ्टीनेन्ट ने कहा।

'ता सुखाते क्या नही ? मछलियो की आग खूब तेज है। कपडे उतार दा हम इन्हे सुखा लें "

लफ्टीनेन्ट झिझका।

"पहले तुम अपन कपडे सुखा लो, मरीया फिलातोव्ना। मैं तब तक बाहर जाकर इन्तज़ार करता हू। फिर मै अपन कपडे सुखा लूगा।"

लेफ्टीनेन्ट के काँपते हुए चेहरे को देखकर मयूत्का को उस पर तरस आया।

"देख रही हूँ कि तुम बिल्कुल बुद्धू हो। असली रईसज़ादे हो ! तुम्हे डर किस बात का लगता है ? तुमन क्या कभी कोई नगी औरत नही देखी ?"

"नही, यह बात नही है मैंन सोचा कि शायद तुम्हे अच्छा न लगे।"

'बकवास ! हम सभी एक ही जैसे हाड मांस के बने इन्सान हैं। फर्क ही क्या है ! उतारो कपड़े, बुद्धू जी !" उसने डाँट कर कहा।

'तुम्हारे दांत तो मशीनगन की तरह किटकिटा रहे हैं। तुम तो मेरे लिए पूरी मुसीबत ही हो !"

बन्दूकों पर लटके कपड़ों से भाप उठ रही थी।

लेफ्टीनेन्ट और मर्यूत्का आग के सामने, एक दूसरे के सम्मुख बैठे हुए आनन्द से अपने को गर्मा रहे थे।

"तुम कितने सफेद हो ! लगता है कि तुम्हें मलाई मल मलकर नहलाया जाता रहा है।"

लेफ्टीनेन्ट का चेहरा लज्जा से लाल हो उठा। उसने मर्यूत्का की ओर देखा, कुछ कहना चाहा, मगर मर्यूत्का की गोल-गोल छातियों पर आग की पीली परछाइयों को नाचता देखकर उसने अपनी नीली नीली आँखें नीचे की तरफ झुका लीं। मर्यूत्का ने अपने कंधों पर चमड़े की एक जाकेट डाल ली।

'अब सोना चाहिए। हो सकता है कि कल तक तूफान खत्म हो जाय। यही खुशकिस्मती है कि हमारी नाव डूबी नहीं। शायद कभी न कभी अगर समुद्र शान्त रहा तो हम सीर दरिया तक पहुंच ही जायेंगे। वहाँ मछुए मिल जायेंगे। जब तुम सो जाओ, मैं आग की देखभाल करूँगी। जब नींद से मेरी आखें झपकने लगेंगी तो मैं तुम्हें जगा दूंगी। इसी तरह हम बारी-बारी से आग की रखवाली करेंगे।

लेफ्टीनेन्ट ने अपने कपड़े नीचे बिछाये और ऊपर से कोट ओढ़ लिया। वह गहरी नींद में सो गया और नींद में काँपता बड़बड़ाता रहा। मर्यूत्का उसे टकटकी बांधकर देखती रही। फिर उसने अपने कंधे हिलाकर अपने विचारों को बटोरा।

'यह तो मेरे सिर आ पड़ा है। बड़ा ही बीमार लगता है ! कहीं

ठण्ड न लग गई हो इसे ! घर पर तो शायद कमबख्त मखमल मे ही लिपटा रहता होगा ! ओह, क्या चीज़ है यह ज़िन्दगी भी !"

सुबह को जब छत की दरारो से रोशनी अन्दर झाकने लगी तो मयूत्का ने लेफ्टीनेन्ट को जगा दिया और कहा,

'देखो, अब तुम आग का ध्यान करो। मैं तट की ओर जाती हूँ। देख कर आती हूँ कि कही हमारे साथी तैरकर निकल ही न आये हो और तट पर बैठे हो।"

लेफ्टीनेन्ट बडी मुश्किल से उठा। सिर हाथो मे थामकर उसने डूबती सी आवाज़ मे कहा,

"मेरे सिर मे दर्द है!"

"कोई बात नही —यह तो धुयें और थकान का नतीजा है। ठीक हो जायेगा। बोरे से रोटी निकाल लो, मछली भून लो और छक कर खा लो।"

मयूत्का ने बन्दूक उठाई, जाकेट से साफ की, और चल दी।

लेफ्टीनेन्ट घुटनो के बल रेंगकर आग के पास पहुँचा। उसने बोरे से समुद्र के पानी मे भीगी हुई रोटी निकाली। उसने रोटी का टुकडा काटा, थोडा सा चबाया, और बाकी उसके हाथ से नीचे गिर गया। लेफ्टीनेन्ट खुद भी वही आग के करीब फर्श पर ढह गया।

मयूत्का ने लेफ्टीनेन्ट का कधा झकझोरा और चीखकर कहा,

"उठ ! तेरा नाश हो, मर्दुए ! तूने तो मुसीबत ही कर दी !"

लेफ्टीनेन्ट की आखे फैल गई होठ खुल गये।

"उठो, मैं कह रही हूँ, फौरन उठो ! [मुसीबत आ गई ! लहरे नाव को भी बहा ले गई। हम तो अब कही के न रहे !"

लेफ्टीनेन्ट उसका मुह ताकता हुआ खामोश रहा।

मयूत्का ने उसकी ओर बहुत ध्यान से देखा और हल्की-सी आह भरी।

लेफ्टीनेन्ट की नीली आखें धुधली धुधली और खाली-खाली सी

नज़र आ रही थी। बदहवासी मे उसका गाल मर्यूत्का के हाथ पर आ पडा। वह अगारे की तरह जल रहा था।

"अरे, ओ कायर ! तुझे तो ठण्ड लग गई है ! अब मैं तेरा करूं ता क्या !"

लेफ्टीनेन्ट के होठ फुसफुसाये।

मयूत्का झुक कर सुनने लगी।

"मिखाईल इवानोविच मुझे बुरे अक न दीजियेगा मैं पाठ याद नही कर पाया कल जरूर याद कर लूगा..."

"यह तुम क्या बक रहे हो ? ' मर्यूत्का ने तनिक झिडकते हुए पूछा।

"अरे लेना इसे—इस जगली मुग को" लेफ्टीनेन्ट अचानक फिर चिल्लाया और एकबारगी उछल पडा।

मर्यूत्का पीछे हट गई। उसने हाथो से अपने मुह को ढक लिया।

लेफ्टीनेन्ट फिर बिस्तर पर गिर गया और उँगलिया से रेत खुरचन लगा। वह जल्दी-जल्दी कुछ अट शट बक रहा था।

मर्यूत्का ने निराशा से चारो ओर नजर दौडाई। उसने जाकेट उतार कर ज़मीन पर फेंक दी और लफ्टीनेन्ट के चेतनाहीन शरीर को बडी कठिनाई से घसीट कर जाकेट पर लिटा दिया। फिर उसन लेफ्टीनेन्ट के शरीर को उसके कोट से ढक दिया।

वह अपने को सवथा असहाय अनुभव करती हुई झुक कर वही उसके निकट बैठ गई। उसके दुबले-पतल गालो पर धीरे धीरे आँसू लुढकन लगे।

लेफ्टीनेन्ट करवटें लेता हुआ कोट को बार-बार उतार कर फेंक देता था। मगर मयूत्का हर बार उस उसकी ठाडी तक ढक देती थी।

मर्यूत्का जब भी देखती कि लेफ्टीनेन्ट का सिर एक तरफ को ढुलक गया है तो वह उसे ऊँचा कर क ठीक स टिका देती। फिर उसन ऊपर की ओर देखा—मानो आकाश को सम्बोधित कर रही हो और दर्दभरी आवाज में कहा,

'अगर यह मर गया तो येव्स्युकोव को मैं क्या जवाब दूगी ? हाय यह कैसी मुसीबत है !"

वह बुखार मे जलते लेफ्टीनेन्ट के शरीर पर झुकी और उसने उसकी धधलाई हुई नीली आँखो मे झाकने की कोशिश की।

मयूरका का दिल दया से द्रवित हो उठा। हाथ बढा कर लेफ्टीनेन्ट के उलझे हुए घुघराले बालो को वह धीरे धीरे सहलाने लगी। उसका सिर अपने हाथो मे लेकर कोमल स्वर मे फुसफुसाते हुए उसने कहा,

"अरे, ओ नीली आखो वाले, मेरे बुद्धू !"

सातवाँ अध्याय

शुरू मे तो पहेली, पर अन्त मे बिल्कुल साफ

चादी की नफीरिया पर घटिया लगी हुई है नफीरिया बजती हैं, घटियाँ टनटनाती है—बर्फ जसी कोमल आवाज़ मे,

टन, टनाटन, टन

टन, टनाटन, टन

नफीरिया गूजती है

तू-तू-तू-तड्, तू-तू-तू-तड्।

साफ तौर पर यह कोई फौजी मार्च है। बेशक मार्च है, वही जो हमेशा परेड के समय होता है।

मैदान भी वही है, जिसमे मेपल के वृक्षो की हरी हरी रेशमी पत्तिया म से छनकर आनेवाली धूप फैली है।

बड मास्टर बैंड का निर्देशन कर रहा है।

बड मास्टर बड की तरफ पीठ करके खडा है और उसके लम्बे कोट की काट से दुम बाहर निकली हुई है, लोमडी जैसी बडी लाल

दुम । दुम के सिरे पर एक सुनहरी गेंद है और गेंद मे एक सुर मिलान वाली टिंगली लगी है ।

दुम इधर उधर हिल डुल रही है, टिंगली बाजा को सकेत करती है और यह भी बताती है कि ताशे और बिगुल कब बजें । जब कोई वादक किसी सोच म खो जाता है तो उसके माथे पर लड से टिंगली लगती है ।

बैंडवाले अपनी पूरी कोशिश से बैंड बजा रह है । बैंडवाले बहुत अजीब से हैं । व मामूली और विभिन्न रेजिमन्टो के सिपाही ही हैं । यह पूरी फौज का बैंड है ।

मगर बैंड बजाने वालो के मुह नही हैं । उनकी नाको के नीच बिल्कुल सपाट जगह है । नफीरिया उनके बायें नथना मे घुसी हुई हैं ।

व दाये नथनो से साँस लेते हैं, बाये नथना से नफीरिया बजाते हैं। नफीरियो से विशेष प्रकार की आवाज़ निकलती है—झनझनाती हुई और मन को लुभाने वाली ?

"अटेन्शन ! धुन शुरू करो !"

"बन्दूक–कांधे पर !"

"रेजिमन्ट !'

"बटालियन !"

"कम्पनी !"

'बटालियन नम्बर एक—फारवड माच !"

नफीरियां–तू-तू-तू-तड् । घंटियां–टन-टन टन ।

कप्तान श्वरसोव अपने सुन्दर कम्मैत घाडे पर बडी शान स नाचता है । *कप्तान के कसे हुए और चिकन कूल्ह सूअर के लोथडे के समान* हैं । उसके पांव ताल द रह हैं–धप, धप ।

"बहुत खूब, जवानो !"

'ढम, ढमाढम !"

'लेफ्टीनन्ट !'

'लफ्टीनेन्ट ! जनरल साहब आपको याद कर रहे है।"

'किस लेफ्टीनेन्ट को ?"

"तीसरी कम्पनी के ! लेफ्टीनेन्ट गोवोरखा ओवोक को जनरल साहब याद कर रहे हैं।"

जनरल घोडे पर सवार है, घोडा चौक के बीचोबीच खडा है। जनरल का चेहरा लाल और मूछें पकी हुई हैं।

'लेफ्टीनेन्ट, यह क्या हिमाकत है ?"

ही ही-ही ! हा-हा हा !'

"क्या दिमाग़ चल निकला है ? हँसने की जुरत ? मैं तुम्हारा दिमाग़ ठिकाने कर तुम किससे बात कर रहे हो ?"

'हा-हो हो ! अरे हाँ, आप जनरल नही, बिल्ला है हुजूर !"

मैदान के बीचोबीच खडे जनरल घोडे पर सवार हैं। जनरल कमर तक तो जनरल हैं और उसके नीचे का उनका धड बिल्ले का है। किसी अच्छी नसल के बिल्ले का भी नही, हर घर के पिछवाडे नज़र आने वाले किसी साधारण नसल के मटमैले और धारीदार बिल्ले का।

रकाबो को वह अपने पजो से दबाये हैं।

"मैं तुम्हारा कोट माशल करूँगा, लेफ्टीनेन्ट ! कैसी अनसुनी बात है ! गाड का अफसर और उसकी आँतें बाहर निकली हैं !"

लेफ्टीनेन्ट ने नज़र नीची कर के देखा तो उसका मानो दम ही निकल गया। उसके कमरबद के नीचे से आँते बाहर निकली हुई थी, पतली-पतली और हरी हरी सी। ये आँते आश्चयचकित करने वाली तेज़ी मे घूम रही थी उसने अपनी आँते पकडी मगर वे उसके हाथ से फिसल गइ।

'गिरफ्तार कर लो इसे ! इसने अपनी शपथ तोडी है !"

जनरल ने रकाब से एक पजा निकाला नाखून खोले, और लेफ्टीनेन्ट की तरफ बढाये। पजे मे एक रुपहली एड लगी हुई थी और उसकी एक कडी की जगह एक आख जडी हुई थी।

साधारण आँख । गोल, पीली पुतली वाली और ऐसी पनी कि लगता था कि लेफ्टीनेन्ट के दिल के अन्दर तक उतर जायगी ।

इस आँख ने उसे प्यार से आँख मारी और लगी कुछ कहने । आँख कैसे बोलन लगी, यह कोई नही जानता, मगर वह बोल रही थी।

"डरो नही ! डरो नही ! आखिर तुम होश मे आ गये !"

एक हाथ ने लेफ्टीनन्ट का सिर ऊपर उठाया । लेफ्टीनन्ट ने आँखें खोल दी । सामने उसन एक दुबला पतला-सा चेहरा देखा, जिस पर लाल लटें फैली हुई थी । और आख, प्यार भरी और पीली थी, बिल्कुल वैसी ही जैसी कि उसन एडी म जडी दखी थी ।

'अरे ज़ालिम, तुमन तो मुझे बिल्कुल डरा ही दिया था । पूरे हफ्ते भर से तुम्हारे सिरहाने बैठा परेशान हो रही हूँ । मुझे ता लग रहा था कि तुम चल बसोगे । और इस द्वीप पर हम एकदम अकेले हैं । न कोई दवादारू है न किसी तरह की काई मदद । सिफ उबलते पानी का सहारा था । शुरू मे ता तुम वह भी उगल देते थे । खराब नमकीन पानी को अन्तडियां स्वीकार नही करती थी । उसी की मदद से मैंने तुम्हे बचाया है "

लेफ्टीनेन्ट बहुत ही कठिनाई से प्यार और चिन्ता के इन शब्दों को समझ पाया ।

उसने थोडा सिर उठाया और इस तरह इधर उधर देखा मानो उसे कुछ भी समझ मे नही आ रहा था ।

सभी ओर मछलियो के ढेर थे । आग जल रही थी । एक तिपाई से केतली लटक रही थी । पानी उबल रहा था ।

"यह सब क्या है ? मैं कहाँ हूँ ?"

"अरे भूल गये ? मुझे पहचानत नही ? मैं मयूत्का हूँ !"

लेफ्टीनेन्ट न अपने नाजुक और पीले से हाथ से अपन माथ को रगडा । उसे सब कुछ याद हा आया । वह धीरे स मुस्कराया ।

हाँ याद आया । राबिन्सन क्रूसो और फ्राईडे !"

"लो, फिर बहकने लगे ? यह फ़ाईडे तो तुम्हारे दिमाग मे जमकर बैठ गया है। मालूम नही कि आज कौनसा दिन है। मैं तो इसका हिसाब ही भूल गई हूँ।"

लेफ्टीनेन्ट फिर मुस्कराया।

"मेरा मतलब किसी दिन से नही है ! यह तो एक नाम है एक ऐसी कहानी है जिसमे जहाज़ के टूट जाने के बाद एक आदमी एक वीरान द्वीप पर जा पहुँचा था। वहाँ उसका एक दोस्त था। उसका नाम था फ़ाईडे। कभी नही पढी यह कहानी तुमने ?" वह फिर अपनी जाकेट पर ढह गया और खासने लगा।

"नही, कहानियाँ तो मैंने बहुत पढी है, मगर यह नही। मगर तुम आराम से लेटे रहो हिलो-डुलो नही। वरना फिर बीमार हो जाओगे। मैं कुछ मछलियाँ उबालती हूँ। खाने से बदन मे जान आ जायेगी। पूरे हफ्ते भर पानी के सिवा तुम्हारे मुह में एक दाना भी नही गया। देखो तो तुम्हारे बदन मे ज़रा भी खून नही रह गया, बिल्कुल सफेद हो गये हो, मोम की तरह। लेट जाओ !"

लेफ्टीनेन्ट ने कमज़ोरी अनुभव करते हुए अपनी आखें बन्द कर ली। उसके सिर मे धीरे धीरे बिल्लौरी घटिया बज रही थी। उसे बिल्लौरी घटियो वाली नफीरियो की याद हो आई। वह धीरे से हँस दिया।

"क्या बात है ?" मयूत्का ने पूछा।

'ऐसे ही कुछ याद आ गया सरसाम की हालत मे मैंने एक अजीब सा सपना देखा था।"

'तुम सपन मे बराबर कुछ चिल्ला रहे थे। तुम लगातार आर्डर देते थे, डाटते डपटते थे। मेरी कैसी मुसीबत थी ! तूफानी हवा चारा तरफ सौ-सौ करती थी, सभी ओर वीराना था और मैं द्वीप पर तुम्हारे साथ अकेली थी और तुम होश मे नही थे ! डर के मारे मेरा दम निकला जा रहा था।" वह सिहर उठी। "कुछ समझ मे नही आ रहा था कि क्या करूँ।"

"तो कैसे तुमने काम चलाया ?"

"बस जैसे तैसे चला ही लिया ! सबसे ज्यादा डर तो मुझे इस बात का था कि तुम भूख से मर जाओगे। तुम्हे खिलाने के लिए मेरे पास पानी के सिवा कुछ भी तो नही था। बची बचायी रोटी को ही पानी मे उबाल कर मैं तुम्हे पिलाती रही। जब वह भी खत्म हो गयी तब तो सिर्फ मछली ही बच रही ! नमकीन मछली बीमार के लिये क्या मानी रखती है ? मगर जैसे ही यह देखा कि तुम होश मे आ रहे हो और आँखें खोल रहे हो, मेरे मन का बोझ हल्का होने लगा।'

लेफ्टीनेन्ट ने अपना हाथ बढाया। धूल मिट्टी से लथपथ होने के बावजूद उसकी उँगलियाँ सुन्दर और पतली पतली थी। उनसे उसने मयूत्का की बाँह धीरे से पकड ली। फिर उसकी बाँह थपथपाते हुए लेफ्टीनेन्ट ने धीरे से कहा,

"धन्यवाद, मयूत्का !"

मयूत्का के चेहरे पर लाली दौड गयी। उसने लेफ्टीनेन्ट का हाथ हटा दिया।

"आभार वाभार मत करो। धन्यवाद की कोई आवश्यकता नही है। तुम क्या सोचते हो कि अपनी आखो के सामने आदमी को मरने दिया जा सकता है ? मैं जानवर नही हूँ, एक इन्सान हूँ !"

'मगर, मैं कडेट पार्टी का सदस्य हूँ—तुम्हारा दुश्मन ! मुझे बचाने की तुम्हे क्या पडी थी ? तुम खुद अधमरी हो गयी हो "

मयूत्का घडी भर चुप रही, उलझन म उलझी हुई सी। फिर उसने हाथ हिलाया और हँस दी।

"तुम–दुश्मन ? हाथ तक तो उठा नही सकते ! बडे आये दुश्मन ! शायद, मेरी किस्मत मे यही लिखा था। गोली तुम पर सीधी नही बैठी। निशाना चूक गया, सो भी जिन्दगी म पहली बार। अब तुम्हारे साथ-साथ जिन्दगी भर परेशान होना पडेगा। लो, खाओ !"

मयूत्का ने लेफ्टीनेन्ट की ओर पतीली बढाई। उसमे एक चर्बीवाली

सुनहरी मछली तैर रही थी । मास की हल्की हल्की और प्यारी प्यारी गध आ रही थी । लेफ्टीनेन्ट न पतीली से मछली का टुकडा निकाला और मजा लेते हुए वह उसे खाने लगा ।

'बेहद नमकीन है । जैसे गला जलाये दे रही है ।"

"कुछ भी तो इलाज नही इसका । अगर कही जरा सा भी मीठा पानी होता तो मछली को उसमे डाल कर उसका नमक निकाल लिया जाता । मगर बदकिस्मती कि वह भी नही है । मछली नमकीन–पानी भी नमकीन ! कैसी मुसीबत है!"

लेफ्टीनेन्ट ने पतीली एक तरफ को हटा दी ।

'क्या हुआ ! और नही खाओगे क्या ?"

'नही मैं खा चुका । अब थोडा तुम खाओ !"

"गोली मारो इसे, हफ्ते भर यही तो मैं खाती रही हू । अब गले मे अटक कर रह जायेगी यह मेरे !"

लेफ्टीनेन्ट कोहनी के बल टिक कर लेट गया ।

'काश कही एक सिगरेट होती !" उसने आह भर कर कहा ।

"सिगरेट ? तो कहा क्यो नही मुझसे ? सेम्यान्नी के थैले से मुझे कुछ तम्बाकू मिली है । थोडी भीग गयी थी पर मैंने उसे सुखा लिया है। जानती थी कि तुम तम्बाकू पीना चाहोगे । बीमारी के बाद सिगरेट पीन की चाह और भी बढ जाती है । यह लो ।"

लेफ्टनेन्ट का मन स्नेह से द्रवित हो गया । उसने कापती उँगलिया से तम्बाकू की थैली ले ली ।

'तुम तो हीरा हो, माशा ! किसी धाय से भी बढ कर हो !"

'तुम्हारे जैसे लोग शायद धाय के बिना जी ही नही सकते" उसन रुखाई से जवाब दिया और उसके गाल फिर लाल हो गये ।

अब सिगरेट लपटने के लिये जरा भी कागज नही है । तेरे उस गुलाबी मुहे न मेरे सभी कागज छीन लिय थे और पाइप भी मेरा खा गया है ।"

"कागज ?" मयुत्का सोचने लगी।

फिर निर्णायक झटके के साथ वह उस जाकेट की ओर मुड़ी जिसे लेफ्टीनेन्ट ओढ़े था। जाकेट की जेब में हाथ डालकर उसने एक छोटा सा बंडल निकाला।

बंडल खोलकर उसमें से कुछ कागज उसने निकाले और लेफ्टीनेन्ट की ओर बढ़ा दिये।

'यह लो।'

लेफ्टीनेन्ट ने कागज के टुकड़ों को ले लिया और उन्हें ध्यान से देखने लगा। फिर उसने मयुत्का की ओर नजर की। उसकी आँखों की नीलिमा में एक अजीब सी हैरानी परेशानी चमक रही थी।

"ये तो तुम्हारी कविताएँ हैं! तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या? इन्हें मैं नहीं लूंगा!"

"ले लो ओ शैतान की दुम! मेरा दिल अब और न दुखाओ!" मयुत्का ने झिड़कते हुए कहा।

लेफ्टीनेन्ट ने गौर से उसकी तरफ देखा।

'धन्यवाद मर्यूका! इसे मैं कभी नहीं भूलूंगा!"

उसने कागज के सिरे से एक छोटा सा टुकड़ा फाड़ा, तम्बाकू लपेट कर सिगरेट बनाई और धुआँ उड़ाने लगा। फिर वह लेटकर सिगरेट के नीले धुएँ के घेरे के बीच से कहीं दूर देखने लगा।

मयुत्का टकटकी बाँधे उसे देखती रही। फिर अचानक उसने उससे कहा,

'मैं तुम्हें देखती हूँ तो एक बात किसी तरह भी नहीं समझ पाती। तुम्हारी आँखें इतनी नीली क्यों हैं? जिन्दगी में ऐसी आँखें मैंने कभी नहीं देखी। इतनी नीली हैं तुम्हारी आँखें कि आदमी उनमें डूब जा सकता है।"

'मालूम नहीं,' लेफ्टीनेन्ट ने जवाब दिया। 'जन्म से ही ये ऐसी हैं। बहुत से लोगों ने मुझसे कहा है कि इनका रंग असाधारण है।'

"हाँ, यह सच है ! तुम्हारे बँदी बनाये जाने के कुछ ही देर बाद मैंने सोचा था कि इसकी आखे ऐसी क्या है। ये बहुत खतरनाक हैं !"

"किस के लिये ?"

'औरतो के लिये । अनजाने ही वे मन म घुस जाती है। उसे उत्तेजित कर देती हैं।"

"तुम्हे भी क्या ये उत्तेजित कर पाती है ?"

मयूत्का भड़क उठी।

"देखो तो इस शैतान को ! अपने सवालो को अपने पास रखो ! लेट जाओ, मैं पानी लाने जा रही हू।"

मर्यूत्का उठी, लापरवाही से उसने केतली उठाई, मगर मछलिया के ढेर से आगे जाकर चचलता से हँसते हुए फिर उसकी ओर मुडी और पहले की ही भाँति बोली

"अरे, ओ नीली आख वाले बुद्धू ! तुम निरे बुद्धू हो !"

आठवाँ अध्याय

जिसके लिए किन्हीं व्याख्याओ की आवश्यकता नही हैं

मार्च की धूप है। वातावरण मे वसन्त का रग घुल रहा है।

मार्च की धूप अरल सागर पर फैली हुई है। वह जहाँ तक नजर जाती है नीली मखमल की तरह फैला दिखलायी देता है। चिलचिलाती हुई धूप अपने तेज दातो से जैसे काटती सी लगती है आदमी के खून को गर्मा कर वह उसे अशान्त बना देती है।

अब तीन दिनो से लेफ्टीनेन्ट बाहर निकलने लगा है।

बाड़े के बाहर बैठ कर वह धूप सेंकता है अपने चारो ओर देखता है। उसकी आँखो मे अब खुशी झलकती है, उनमे चमक आ गई है

और व नीले सागर की तरह नीली लगती हैं। इसी बीच मयूत्का ने सारा द्वीप छान डाला है।

इसी छान-बीन के काम के आखिरी दिन वह सूर्यास्त के समय लौटी तो बहुत खुश खुश थी।

सुनते हो ! कल हम यहा स जा रहे है !" उसने कहा।

'कहा ?

'वहाँ ! यहा से कोई आठ किलोमीटर के फासले पर।"

'वहा क्या है ?"

'वहा मछुआ की एक झोपडी मिल गई है। यू समझो कि बस महल है ! बिल्कुल खुश्क और ठीक ठाक है। खिडकिया का शीशा तक सही सलामत है। उसम एक तन्दूर बना हुआ है और मिट्टी के कुछ टूटे फूटे बरतन भी हैं। व सब काम आ जायेंगे। सबसे बडी बात तो यह यह है कि सोने के लिये तख्त जडे है। अब जमीन पर लोटने पोटने की जरूरत नही रहेगी। हमे तो शुरू ही म वही चला जाना चाहिये था। "

"मगर हमे मालूम ही कहा था ?'

"यही तो बात है ! इतना ही नही, एक और खोज कर डाली है मैंने। बहुत बढिया खोज !"

"वह क्या है ?"

"तन्दूर के पीछे खान पीने का भी कुछ सामान है। रसद रखी हुई है। बहुत नही है। थोडे चावल हैं और कोई आठ दस सेर आटा होगा। आटा कुछ खराब हो गया है मगर खैर खाया जा सकता है। मछुए अपनी रसद शायद वही रखते होगे ! लगता है कि पतझर मे जमे ही उन्ह तूफान आता दिखा होगा वैसे ही वहाँ से भागने की जल्दी और हडबडी मे व रसद को समेटना भूल गय होगे। अब हमारे खूब मजे रहेंगे !"

अगले दिन सुबह वे नई जगह के लिये चल दिये। ऊँट की तरह लदी फदी मयूत्का आगे-आगे चल रही थी। उसने सभी कुछ

अपने ऊपर लाद लिया था। लेफ्टीनेन्ट को उसने कुछ भी नही उठाने दिया था।

"नही, नही, तुम नही उठाओगे ! फिर बीमार पड जाओगे। लेने के देने पड जायेंगे। तुम कोई फिक्र न करो ! देखने मे बशक मैं दुबली-पतली लगती हू, मगर हू मजबूत !"

दोपहर तक वे दोनो नयी जगह पहुँच गये। उन्होने रास्ते की बर्फ हटाई और दरवाजे को कब्जा मे लगाकर खडा कर दिया। उन्होने तन्दूर को मछलियो से जलाया और आग तापने लगे। उनके चेहरो पर सुखद मुस्कान खेल रही थी।

"वाह, हमारे क्या शाही ठाठ हैं !"

'बहुत खूब हो तुम भी माशा ! उम्र भर मैं तुम्हारा एहसान मानूगा तुम न होती तो मैं कभी का चल बसा होता "

'सो तो जाहिर ही है, मेरे नाजुक बदन !"

चुप होकर वह आग तापने लगी।

'गम है, खूब गम है हाँ, तो अब हम क्या करेंगे ?"

"क्या करेंगे ? इन्तजार ! और क्या ?"

'इन्तजार—किस चीज का ?"

"वसन्त का ! थोडा ही समय रह गया है—आधा मार्च गुजर चुका है । बस, यही कोई दो हफ्ते की और देर है। सम्भवत तब मछुए लोग अपनी मछलियो के लिये यहा आयेंगे और हम भी निकल कर उस पार ले जायेंगे।"

"काश, ऐसा ही हो। मछलिया और सडे आटे के सहारे अब हम और बहुत दिन जिन्दा नही रह सकेंगे। दो हफ्ते और जी लेंगे, और तब यह सब कुछ हमारे लिये जहर जैसा हो जायगा ! मछली का रोग हमे ले डालेगा !

"यह तुम क्या मुहावरा बोला करती हो हर वक्त—'मछली का रोग' ? कहा सीखा तुमने इसे ?"

"अपने अस्त्राखान मे । वहाँ हमारे सभी मछुए इसी तरह बात

करते हैं। गाली गलौज की जगह मैं इसी से काम चलाती हूँ। गाली वाली देना मुझे पसन्द नही है। जब कभी गुस्सा आता है तो यही कहकर दिल की भँडास निकाल लेती हू।"

उसने बन्दूक के गज से तन्दूर मे रखी मछलियो को हिलाया डुलाया और पूछा,

"अरे हाँ तुमने कभी मुझसे एक कहानी की चर्चा की थी, किसी रेगिस्तानी द्वीप के बारे म फ्राईडे के बारे म। यही ठाले बैठे रहने से यही अच्छा है कि तुम मुझे वह कहानी सुनाओ। मैं तो कहानियो की दीवानी हू। गाँव की औरतें मेरी मौसी के घर जमा होती थी और कहानियाँ सुनाने के लिए वे गुगनीखा नाम की एक बुढिया को भी अपने साथ ले आती थी। सौ बरस या शायद इससे भी ज्यादा उम्र रही होगी उसकी। नेपोलियन के रूस आने तक की याद थी उसे। जैसे ही वह कहानी कहना शुरू करती, मैं इसी तरह कोने मे गुडी मुडी होकर बैठ जाती। साँस तक न लेती थी कि कही कोई शब्द छूट न जाय।"

"तुम राबिन्सन क्रूसो की कहानी सुनाने को कह रही हो न ? आधी कहानी तो मैं भूल चुका हू। एक जमाना हुआ जब पढी थी!"

"याद करने की कोशिश करो। जितना याद आ जाये, उतनी ही सुना दो।'

अच्छा! देखो, कोशिश करता हू।"

लेफ्टीनेन्ट ने आँखें मूद ली और कहानी को याद करने लगा।

मर्यूत्का ने सोनेवाले तख्ते पर चमडे के अपने जाकेट को बिछा दिया और तन्दूर के निकट वाले कोने मे बैठ गई।

'यहा आ जाओ, यह कोना ज्यादा गर्म है।"

लेफ्टीनेन्ट कोने मे जा बैठा। तन्दूर खूब गर्म हो चुका था। उससे सुखद गर्मी आ रही थी।

"अरे, तुम शुरू करो न। और अधिक इन्तजार मैं नहीं कर सकती! जान देती हू मै इन कहानियो पर!'

लेफ्टीनेन्ट ने ठुड्डी पर हाथ रखा और कहानी कहना शुरू किया,

"लिवरपूल नगर मे किसी समय एक अमीर आदमी रहता था। उसका नाम राबिन्सन क्रूसो था "

"यह नगर कहाँ है ?"

"इगलैंड मे। हाँ, जैसा कि मैंने बतलाया, वहा एक धनी रहता था राबिन्सन क्रूसो-'

"जरा रुको! अमीर आदमी कहा न तुमने ? ये सारी कहानिया अमीरो और बादशाहो के ही बारे मे क्या होती हैं ? गरीबो के बारे मे क्या नहीं होती कहानिया ?"

"मालूम नही," लेफ्टीनेन्ट ने हतप्रभ होते हुए जवाब दिया। "मैंने कभी इसके बारे मे सोचा नही है।"

'जरूर इसीलिये ऐसा होता होगा कि अमीरो ने ही ये सारी कहानिया लिखी है! मुझे ही को ले लो। कविता लिखना चाहती हू मगर इसके लिये मेरे पास ज्ञान की कमी है। मैं लिख सकती तो खूब बढिया ढग से गरीबो के ही बारे मे लिखती ? खैर, कोई बात नही। कभी पढ-लिख जाऊँगी, तब लिखूँगी।"

'हाँ तो इस राबिन्सन क्रूसो के दिमाग मे दुनिया का चक्कर लगाने की बात आई। वह देखना चाहता था कि और लोग किस तरह रहते-सहते हैं। वह पालोवाले एक बडे जहाज मे अपने नगर से चल पडा।"

तन्दूर मे आग चटक रही थी और लेफ्टीनेन्ट पूरी रवानी के साथ कहानी सुना रहा था।

धीरे धीरे उसे सारी कहानी, उसकी छोटी छोटी बातें तक याद आती जा रही थी।

मर्यूत्का दम साधे बैठी उसे सुन रही थी। कहानी के सबसे उत्तेजनापूर्ण स्थलो पर वह गहरी सास लेने लगती थी।

लेफ्टीनेन्ट ने जब राबिन्सन क्रूसो के जहाज की दुर्घटना की चर्चा की तो अविश्वास से मर्यूत्का ने अपने कधे झटके और पूछा,

"इसका मतलब कि उसे छोड कर राबिंसन क्रूसो के सभी साथी मर गये थे ?'

'हा, सभी ।'

"तब तो जहाज के कप्तान के भेजे मे जरूर भूसा भरा होगा या फिर दुर्घटना के पहले वह बहुत पी कर धुत हो गया होगा ! म हरगिज यह मानने को तयार नही हू कि कोई भी अच्छा कप्तान अपने सारे जहाजियो का इस तरह कभी मर जाने देगा ! कैस्पियन सागर म कइ बार हमारे जहाज इसी तरह की दुर्घटनाओ के शिकार हुए हैं, पर दो-तीन आदमी से ज्यादा कभी नही डूबे हैं। बाकी सभी लोगो को हमेशा बचा लिया गया है।"

'यह तुम कैसे कह सकती हो ? हमारे सेम्यानी और व्याखिर भी तो डूब गये हैं न ! क्या इसका मतलब यह है कि तुम घटिया कप्तान हो, या दुर्घटना के पहले तुमने भी बहुत चढा ली थी ?"

मयूत्का ने गहरी सास ली।

"चारो शाने चित्त कर दिया तुमने। मछली का रोग लगे तुम्हे ! अच्छा, आगे सुनाओ !"

फ्राईडे से भेंट होने का जब जिक्र आया तो मर्यूत्का ने फिर टोका,

'हा, तो अब समझी कि तुमने मुझे क्या फ्राईडे कहा था ! तुम खुद तो मानो राबिन्सन क्रूसो ही हो न ? तुमने कहा न कि फ्राईडे काला था ? नीग्रो था ? एक बार मने एक नीग्रो को देखा था। हाँ, वह अस्त्राखान के सरकस मे आया था।'

लेफ्टीनेन्ट ने जब समुद्री डाकुओ के हमले का वणन किया तो मयूत्का की आँखें चमक उठी। लेफ्टीनेन्ट से उसने कहा,

"एक पर दस टूट पडे ? बहुत बुरी बात थी न यह तो, कम्बख्तो को मछली का रोग लगे !"

आखिर कहानी खत्म हो गयी।

मयूत्का लेफ्टीनेन्ट के कधे से टेक लगाये मानो जादू की किसी

डोरी से बंधी चुप बैठी रही। फिर जैसे स्वप्न से जागते हुए उसने कहा,

"खूब है यह कहानी। तुम बहुत सी कहानियाँ जानते होगे! तुम हर दिन एक कहानी मुझे सुनाया करो।"

'क्या सचमुच तुम्हें अच्छी लगी?'

"बहुत अच्छी! सुनते सुनते मेरा खून उतरता चढ़ता था! इस तरह हर शाम जल्दी-जल्दी बीत जायेगी। समय का पता भी नहीं लगेगा। रोज मुझे कहानियाँ सुनाया करो।"

लेफ्टीनेन्ट ने जम्हाई ली।

"नींद आ रही है क्या?'

'नहीं। बीमारी के बाद कमजोर हो गया हूँ।"

'हाय बेचारा!"

मयूत्का ने फिर प्यार से उसके बाल थपथपाये। लेफ्टीनेन्ट ने हैरान होकर अपनी नीली आँखों से उसकी ओर आहिस्ता से देखा।

उन आँखों में कुछ ऐसी गर्मी थी, जिसने मयूत्का के हृदय की गहराइयों तक को अपने स्पर्श से आलोडित कर दिया। वह सुध बुध भूल गई। वह झुकी और उसने अपने खुश्क तथा फटे हुए होंठ धीरे से लेफ्टीनेन्ट के कमजोर और खूँटियों से भरे गाल पर रख दिये।

नौवां अध्याय

जो यह प्रमाणित करता है कि हृदय यद्यपि किसी नियम कानून को नहीं मानता तथापि आखिर मे मनुष्य की चेतना यथार्थ से मुह नहीं मोड पाती

मयूत्का के अचूक निशाने का शिकार होने वालो की सूची म सफेद गार्ड के लेफ्टीनेन्ट गोवारुखा-आत्रोक का नम्बर इकतालीसवां होना चाहिये था।

मगर हुआ यह कि मयूत्का की खुशियो की सूची म उसको स्थान पहला हो गया।

मयूत्का लेफ्टीनेन्ट पर जी जान से मर मिटी। उसके पतले पतले हाथो पर, उसकी प्यारी मधुर आवाज़ पर और, सबसे ज्यादा, तो वह उसकी नीली आखो पर लट्टू हो गयी और अपना आपा खो बैठी।

उन आँखो से उनकी नीलिमा से मयूत्का की ज़िन्दगी जगमगा उठी। वह अरल सागर की ऊब को भूल गई नमकीन मछली और सडे हुए आटे के उबकाई पैदा करने वाले ज़ायके का भी उसे ध्यान नही रहा। उस काले विस्तार के पार जाकर जीवन की रेल पेल म हिस्सा लेने की उसकी अदम्य और तीव्र चाह भी अब घट गई। दिन के समय वे वह साधारण काम काज करती—रोटियां पकाती और उबकाई पैदा करने वाली उन मछलियो को उबालती, जिनकी वजह स उनके मसूडे सूज गये थे। कभी-कभी तट पर जाकर वह यह भी देख आती कि लहरो पर कही वह पाल वाला जहाज़ तो उनकी ओर नही आ रहा है जिसका उन्ह इन्तज़ार था।

शाम को जब वसन्त के आकाश से कजूस सूरज अपना किरणजाल समेटने लगता तो वह भी अपने कोने वाले तख्ते पर जा बठती। वह लेफ्टीनेन्ट के कधे पर अपना सिर टिका देती और कहानी सुनने लगती।

लेफ्टीनेन्ट ने बहुत सी कहानिया उसे सुनाई । उसे कहानिया कहने मे अच्छा कमाल हासिल था ।

दिन बीतते गये, लहरो की तरह धीरे धीरे बाझिल बोझिल से ।

एक दिन लेफ्टीनेन्ट झोपडी की देहली पर बैठा धूप सेंकता हुआ मयूत्का की दक्ष अँगुलिया की ओर देख रहा था । वह अपनी स्वभाविक अभ्यस्तता से और बडी फुर्ती के साथ एक मोटी शफरी मछली को साफ कर रही थी । लेफ्टीनेन्ट ने अपनी आखें सिकोडी और कधे झटक कर कहा,

"हुम बिल्कुल बक्वास है ! जहन्नुम मे जाये वह सब !"

"क्या हुआ, प्यारे ?"

"मैं कहता हूँ वह सब बकवास है । वह सारी जिन्दगी फिजूल है । प्राथमिक आदिम सस्कार लादे गये विचार ! बिल्कुल बक्वास ! तरह-तरह के रस्मी नाम, उपाधिन्ग ! जैसे किसी भूचित्र पर निशान अकित कर दिये गये हो ! गाड का लेफ्टीनेन्ट ? भाड मे जाये गार्डो का लेफ्टीनेन्ट ! मैं जीना चाहता हू । मैं सत्ताईस बरस का हो गया लेकिन सच यह है कि जीकर तो जैसे बिल्कुल देखा ही नही ! बेतहाशा दौलत लुटाई । आदश की खोज मे अनेक देश विदेश भटका । मगर मेरे हृदय म किसी कमी की, किसी असन्तोप की जानलेवा आग बराबर धधकती रही । अब सोचता हू कि अगर तब मुझसे कोई यह कहता कि अपने जीवन के सबसे भरे पूरे, सबसे अथपूण न्नि मैं इस बेहूदा सागर के बीच, इस समासे की शक्ल वाले द्वीप पर गुजारूँगा तो मैं कभी इस बात का विश्वास न करता ।"

क्या कहा तुमने, कैसे दिन ?"

"सबसे ज्यादा भरेपूरे सबसे अधिक अथपूण ! नही समझी ? कैसे कहूँ, कि तुम आसानी से समझ जाओ ? ऐसे दिन जब सारी दुनिया के विरुद्ध अकेला ही अपने को मोर्चा लेता मैंने नही अनुभव किया है, जब मुझे अकेले ही सबके खिलाफ़ सघष नही करना पड रहा है !

मैं इस समूचे वातावरण मे खो गया हूँ, इसमे मिल कर एकात्म हो गया हू। "उसने अपनी बाँह फैलाकर मानो समूचे वातावरण की तरफ़ इशारा किया। "ऐसा लगता है जैसे कि मैं इस सारे वातावरण का एक अभिन्न अग बन गया हू। इसकी साँसें, मेरी साँसें हैं। ये दखो ये मौजे भी साँसें ले रही हैं साँय-साँय ये मौजें नही हैं, मेरी अपनी साँसें हैं, मेरी आत्मा की सासें हैं, यह मैं हूँ!—मेरा शरीर और मन है।"

मयूरका ने चाकू रख दिया।

"देखो तुम तो विद्वानो की कैसी ओजस्वी भाषा म बात करते हो! तुम्हारी सब बातें मेरी समझ मे नही आती। मैं तो मीधे सादे ढग से यह कहती हूँ—मैं अब अपने को सौभाग्यशालिनी अनुभव कर रही हूँ। मैं सुखी हूँ!'

'शब्द अलग अलग हैं मगर भाव एक ही हैं। अब तो मुझे ऐसा लगता है कि अगर इस बेहूदा गर्म रेत को छोड कर कही न जाया जाये, हमेशा के लिये यही रहा जाये, इस फैली हुई गर्म धूप की गर्मी मे घुल मिल जाया जाये जानवर की तरह सन्तोष का जीवन बिताया जाये, तो कही अच्छा हो।"

मयूरका टकटकी बाधे रेत को देखती रही मानो किसी चीज़ की याद कर रही हो। फिर उसके होठो पर एक अपराधी की सी हल्की मुस्कान फैल गयी।

नही बिल्कुल नही! मैं यहाँ कभी नही रहूँगी। आलसी बन कर रहना खटकने लगता है। इससे तो आदमी धीरे धीरे खत्म हो जाता है। ऐसा भी तो कोई नही जिसके सामने अपनी खुशी जाहिर की जा सके! सभी ओर सिर्फ मुर्दा मछलियाँ हैं। अच्छा हो अगर मछुए जल्द ही आ जायें! अरे हाँ, अब तो मार्च खत्म ही होने वाला होगा। मैं जिन्दा लोगों को देखने के लिए तडप रही हूँ।

"क्या हम जिन्दा लोग नहीं हैं?'

"हा हैं तो ! मार जैसे ही यह सडा और बचा खुचा आटा भी एक हफ्ते बाद खत्म हो जायेगा और हमारे सारे जिस्म पर खुजली हो जायगी, तब देखूगी कि तुम कौन सी तान अलापते हो ? फिर प्यारे, यह भी तो तुम्ह नही भूलना चाहिए कि आज तन्दूर से लगकर बैठने का जमाना नही है ! हमारे साथी वहा मोर्चा ले रहे हैं, अपना खून बहा रहे है। एक एक आदमी की जरूरत है। ऐसे समय आराम से बैठ कर मैं मजा कसे उडा सकती हू ? फौज मे भर्ती होते वक्त मैंने इसलिए तो नही कसम खाई थी।"

लेफ्टीनेन्ट की आखो मे आश्चय की चमक झलक उठी।

'क्या तुम फिर फौज मे लौटने का इरादा रखती हो ?"

'तो और क्या ?"

लफ्टीनेन्ट दरवाजे की चौखट से उखाडे हुए लकडी की एक चैली से चुपचाप खेलता रहा। फिर तज़ और गहरी आवाज़ मे उसके शब्दो का प्रवाह बहने लगा, 'तुम भी अजीब लडकी हो ! देखो मैं तुमसे यह कहना चाहता था माशा, कि मैं तग आ गया हू इस सारे खून खराबे से ! कितने बरस हो गये खून बहते और नफरत की इस आग को जलते ! जन्म से ही मैं सिपाही नही पैदा हुआ था ! कभी मैं भी इन्सान की तरह अच्छी जिन्दगी बिताता था ! जर्मनी से युद्ध शुरू होने से पहले मैं भाषा विज्ञान का विद्यार्थी था। मैं अपनी प्रिय और विश्वसनीय किताबो की दुनिया मे रहता था। मेरे पास ढेरो किताबें थी। मेरे कमरे की दीवारें तीन तरफ नीचे से ऊपर तक किताबो से अटी पडी थी। बाहर पीटसबर्ग मे शाम का कुहासा जब सडक के राहगीरो को घेर कर अपने पजे मे दबोच लेता था तब मेरे कमरे की अगीठी खूब गर्म होती थी, नीले शेडवाला लैम्प जलता होता था, और मैं आराम कुर्सी पर किताब लेकर बैठा हुआ अपने को बिल्कुल उसी तरह सभी तरह की चिन्ताओ से मुक्त अनुभव करता था जिस तरह कि यहाँ अनुभव कर रहा हूँ ! आत्मा खिल उठती थी, मन

की कलिया के चटखन तक की आवाज सुनाई देती थी जस कि वसत मे वादाम के पडा म फूल खिल उठते हैं ! समझती हो ?"

"हुम ''मयूत्का ने चौकन्ना होते हुए कहा।

'और फिर किस्मत का लिखा वह दिन आया, जब यह सब कुछ खत्म हो गया, टुकडे-टुकडे हो गया, तार-तार होकर हवा में उड गया। वह दिन मुझे एसे याद है जसे कल ही की बात हो। मैं देहात के अपने बँगले के बरामद मे बैठा था और मुझे यह तक याद है कि मैं काई किताब पढ रहा था। एक मनहूस सा सूर्यास्त हा रहा था, सभी ओर खून की सी लाली फैली हुई थी। रेलगाडी द्वारा पिता जी शहर से आय। उनके हाथ म एक अखबार था और वह खुद बहुत परेशान थ। उन्होन सिर्फ एक शब्द कहा मगर वह एक शब्द भी पारे की तरह भारी और मौत की तरह भयानक था वह था युद्ध ! यह था वह शब्द—सूर्यास्त की लाली की तरह खूनी ! फिर पिता जी ने और कहा—वादीम तुम्हारे परदादा, दादा और पिता न हमेशा देश की पुकार को सुना है। मैं आशा करता हूँ कि तुम भी ? 'पिता जी की आशा व्यर्थ नही हुई। मैंन किताबों से विदा ले ली। मैंने सच्चे दिल स सोचा—अनुभव किया था कि मैं सही काम कर रहा था।

"एकदम हिमाकत !"मयूत्का कधो को झटकती हुई बोली ! "यह तो बिल्कुल ऐसी ही बात हुई कि मेरा बाप नशे मे धुत्त होकर दीवार से अपना सिर दे मारे तो मुझे भी ऐसा ही करना चाहिये ? मेरी समझ म यह बात नही आती।'

लफ्टीनेन्ट न गहरी सास ली।

"नही तुम इस बात को नही समझ पाओगी। तुम्हे अपनी छाती पर कुल के नाम उसकी मान प्रतिष्ठा, कर्त्तव्य के इस भारी बोझ को नही उठाना पडा है। हम इन चीजों का बहुत एहसास था !"

'तो क्या हुआ ? मैं भी अपने पिता को बहुत प्यार करती थी। लेकिन अगर उसका दिमाग खराब हो जाता तो जरूरी नहीं था

कि मैं भी पागल बन जाती। पर तुम्हे उनकी बात को मानने से इंकार कर देना चाहिए था।"

लेफ्टीनेन्ट मुह बना कर कटुता से मुस्कराया।

"नही मैंने उनसे इकार नही किया। लडाई ने मुझे अपने खूनी रास्ते पर घसीट लिया। और वहाँ खुद अपने हाथो से अपना यह मानवता-प्रिय हृदय मैंने बदबू के ढेर मे, विश्व के उस मरघट मे दफना दिया। फिर क्रांति हुई। मैं प्रसन्न था। मैंने उस पर पूरा विश्वास किया मगर उसने मैं कितने ही बरसो तक जार की फौज मे अफसर रह चुका था, मगर मैंने कभी किसी सिपाही पर अँगुली तक नही उठाई थी। फिर भी गोमेल स्टेशन पर मुझे लाल सैनिको ने पकड लिया, उन्होने मेरे पद चिन्ह फाड डाले, मेरे मुह पर थूका, चेहरे पर गन्दगी पोत दी। भला क्या? मैं भागा और उराल जा पहुचा। मातभूमि पर मेरा विश्वास तब तक भी बाकी था। मैं फिर से लडने लगा—रौंदी गयी मातृभूमि के लिये, अपने उन पद चिन्हो के लिये, जिनका इतना अपमान किया गया था। मैं जितना ही लडा उतना ही यह अनुभव करने लगा कि मेरी कोई मातभूमि नही रह गयी, सम्मान के चिन्हो के लिये लडने मे भी कोई तुक नही थी। मुझे याद आया कि एकमात्र मानवीय और शाश्वत मूल्य की चीज चिन्तन है। विचारो की दुनिया है। मुझे अपनी किताबो की याद आई। अब बस मैं यही चाहता हूँ कि उनके पास लौट जाऊँ, उनसे क्षमा मागू, उन्ही के साथ रहूँ।"

"समझी! दुनिया टूटकर दो टुकडे हुई जा रही है लोग न्याय के लिये लड रहे हैं, खून बहा रहे है, और तुम नर्म-नर्म सोफे पर लेट कर किताबें पढना चाहते हो?"

'मैं नही जानता—और जानना भी नही चाहता,' लेफ्टीनेन्ट परेशान होकर चिल्लाया और उछलकर खडा हो गया। "सिर्फ इतना ही मैं जानता हूँ कि प्रलय की घडी नजदीक है। तुमने ठीक ही कहा है कि पृथ्वी टूटकर दो टुकडे हुई जा रही है। निश्चय ही यह टुकडे-टुकडे

हुई जा रही है ! सड गल चुकी है, खण्ड खण्ड हो रही है। यह एकदम खाली हो चुकी है, इसकी सारी दौलत लुट चुकी है। यह इसी खोखलेपन की वजह से खत्म हुई जा रही है। कभी यह जवान थी, लहकती महकती थी, उसमे बहुत कुछ छिपा पडा था। इसमे नये नये देशो की खोज अनजानी धन दौलत को ढूढ पाने का आकर्षण था। अब वह सब कुछ खत्म हो चुका। अब नया खोजने का कुछ बाकी नही रहा। आज मानवजाति की सारी समझ-बूझ इसी बात मे लगी हुई है कि उसके पास जो कुछ है उसे ही बचाकर वह रख सके, जैसे तैसे एक शताब्दी और, एक वर्ष और वह अपनी जिन्दगी को आगे घसीट ले जा सके। गणित। और विचार, जिन्होंने इसी गणित ने दीवालिया बना दिया है—ये सभी मानव के विनाश के उपायो की तलाश मे लगे हुए हैं ! अधिक से अधिक लोगों का नाश जरूरी है जिससे कि हम लोग अपनी तोदें और जेबें अधिक फुला सकें। भाड मे जाये यह सब ! अपने सत्य के सिवा किसी दूसरे सत्य की जरूरत मुझे नही है। बस, बहुत हो चुका ! मैंने भर पाया ! अब अपने हाथो को और अधिक खून स नही रगना चाहता !"

"वाह रे, तेरे दूध के धोये हाथ ? वाह रे तुम्हारे कलफदार सफेद कालर ! तुम यही चाहते हो न कि तुम्हारे लिए दूसरे लोग मरें और रास्ते का कूडा-करकट साफ करें ?"

मैं तुम्हारे लिये सब कुछ करूँगा। तुमने मुझे मौत के मुह से निकाला है, इस बात को मैं कभी नही भूलूगा।"

मयूत्का उछलकर खडी हो गई। उसके शब्द तीरो की तरह उस पर बरसने लगे

"तो तुम मुझसे यही कराना चाहते हो, न? कि जब लोग न्याय के लिए अपनी जानें न्योछावर कर रहे हैं, मैं तुम्हारे पास रोयें वाले नम नर्म बिस्तर पर लेटी रहू? कि जब चाकलेट के एक एक टुकडे को किसी के खून से खरीदा जाता है तब मैं तुम्हारे पास पडी पडी चाकलेट चबाती रहू? क्या तुम यही चाहते हो?"

'नहीं, नहीं! ऐसी भौंडी बाते मत करो। क्या जरूरी है कि तुम इसी भाषा म बोलो?' लेफ्टीनेंट न दुखी होते हुए कहा।

"भौंडी बात? तुम्हे तो हर चीज नम और नाजुक ही चाहिये? मीठी मीठी! जरा ठहरो! तुम बोल्शेविको के सत्य पर नाक-भौ सिकोडते हो। कहते हो कि तुम उसके बारे मे कुछ नही जानना सुनना चाहते। मगर उस सत्य को तुमने कभी जाना भी है? जानते हो वह किस चीज से सराबोर है? किस तरह वह लोगो के पसीने और आंसुओ से भीगा हुआ है?"

'नहीं मैं नही जानता,' लेफ्टीनेन्ट न बुझी सी आवाज मे उत्तर दिया। 'मगर मुझे यह बात जरूर अजीब सी लगती है कि तुम्हारी जसी एक लडकी ऐसी कठोर और उजड्ड भाषा म बात करे, ऐसे लोगो के साथ रहे।"

मयूत्का ने कूल्हे पर हाथ रख लिये और जैसे फट पडी,

'उनके तन गन्दे हो सकते हैं, मगर तुम्हारी तो आत्मा गन्दी है! मुझे शर्म आती है कि मैं तुम्हारे जैसे आदमी पर लुट गई। बहुत कमीने बहुत बुजदिल हो तुम! 'प्यारी माशा, आ जाओ! हम-तुम सुख चैन से टागें फैला कर बिस्तर पर लेटेंगे' उसने चिढाते हुए कहा। 'दूसरे लोग खून पसीना एक कर के धरती की कायापलट रहे हैं, और तुम? कुत्ते के पिल्ले हो!"

हुई जा रही है । सड़ गल चुकी है,
खाली हो चुकी है इसकी सारी दौल
पन की वजह से खत्म हुई जा
लहकती महकती थी, उसमें बहुत
देशों की खोज अनजानी धन दौल
अब वह सब कुछ खत्म हो चुका । ट
रहा । आज मानवजाति की सारी
कि उसके पास जो कुछ है उसे ह
एक शताब्दी और, एक वर्ष और व
ले जा सके । गणित । और विचार, ि
दिया है,—ये सभी मानव के विन
हुए हैं । अधिक से अधिक लोगों व
लाग अपनी तोंदें और जेबें अधिक फु
अपने सत्य के सिवा किसी दूसरे सत्
बहुत हो चुका । मैंने भर पाया ।
खून स नहीं रंगना चाहता ।"

"वाह रे, तेरे दूध के धोये हाथ ?
कालर ! तुम यही चाहते हो न कि तुम्
रास्ते का कूड़ा-करकट साफ करें ?"

हां ! बेशक करें । जहन्नुम में जायें
वहीं इस पचड़े में पड़ें । सुनो माशा !
पायेंगे, वैसे ही सीधे काकेशिया चले जायेंगे
एक छोटा-सा बंगला है । हम वहीं चलेंगे । व
जाऊँगा । जहन्नुम में जाये बाकी दुनिया ! मैं चु
जीवन ही अब बिताना चाहता हूँ । मुझे अब न्याय का
मैं शान्ति चाहता हूं । और तुम वहाँ पढ़ो लिखोगी । तु
हो न ? तुम्हीं तो शिकायत करती हो कि पढ़ नहीं पाई

द्वीप को ढकने वाली बर्फ की पतली सी तह कई दिन पहले ही वसन्त के नन्हे मुन्ने और सुनहरे पैरो तले रौंदी जा चुकी थी। सागर के गहरे नीले दर्पण की पृष्ठभूमि मे अब तट से पीला पीला दिखने लगा था।

दोपहर के समय रेत जलने लगती। उसे छूने से हथेलिया जल उठती।

सूरज गहरे नील आकाश मे सोने के थाल की तरह घूमता। वसन्ती हवाओ ने उस पर पालिश करके उसे जगमगा दिया था।

द्वीप पर ये दो व्यक्ति थे, धूप, हवाओ और खुजली की बीमारी के सताये हुए। ये सब उन्हे बेहद परेशान कर रहे थे। ऐसे मे लडाई-झगडा करने मे कोई तुक नही थी।

सुबह से शाम तक वे दोनो रेत पर लेटे रहते और टकटकी बाधकर उस गहरे नील दर्पण को देखते रहते। उनकी सूजी हुई आखें किसी आते हुए पाल को ढूढती रहती।

"मैं अब और नही बर्दाश्त कर सकती! अगर तीन दिन तक मछुए नही आये तो कसम खाकर कहती हूँ कि एक गोली मैं अपने सिर मे मार लूगी!" मर्यूत्का ने एक दिन निराश होकर अन्यमनस्क नीले सागर की ओर देखते हुए कहा।

लेफ्टीनेन्ट ने धीरे से सीटी बजाई।

"मैं समझता था कि मैं ही कमीना और बुजदिल हू। मर्यूत्का, थोडा और सब्र करो। तुम बडी सरदार बन जाओगी। तुम उसी के लायक हो—इसी लायक हो कि लुटेरो के किसी गिरोह की सरदार बन जाओ।"

"तुम फिर क्या इन बीती हुई बातो को उखाड रहे हो? पुरानी बातो को भूल नही सकते? ठीक है कि मुझे गुस्सा आ गया था। इसीलिये तुम्हे भला बुरा कह गयी। उसके लिए काफी कारण था। यह जानकर मेरे दिल को गहरी चोट लगी थी कि तुम इतने निकम्मे

लेफ्टीनेन्ट का चेहरा सुर्ख हो गया। उसके पतले होंठ भिचकर एक रेखा जैसे बन गये।

'ज़बान पर लगाम लगाओ मयूत्का ! तुम अपने को भूल रही हो कमीनी औरत तुम हो !'

मयूत्का एक कदम आगे बढ़ी, उसने हाथ उठाया और लेफ्टीनेन्ट के खूँटियों से भरे कमज़ोर-से चेहरे पर कस कर एक तमाचा जड़ दिया।

लेफ्टीनेन्ट पीछे हटा। वह काँप रहा था और उसकी मुट्ठियाँ कस गयी थी। फुफकारते हुए उसने कहा,

'अपनी खुशकिस्मती समझो कि तुम औरत हो ! अब मैं फूटी आँख भी तुम्हें नहीं देखना चाहता नीच कहीं की !"

वह झोपड़ी में चला गया।

भौचक्की सी मयूत्का अपनी दर्द करती हुई हथेली को देखने लगी। फिर उसने हाथ झटका और मानो अपने आप से ही कहा,

'बड़ा आया नवाबज़ादा ! मछली का रोग लगे इस मदुए का !"

दसवाँ अध्याय

जिसमें लेफ्टीनेन्ट गोवोरुखा ओत्रोक ज़मीन को हिला देने वाला धमाका सुनता है और कहानीकार कहानी का अन्त करने की ज़िम्मेदारी से किनारा कर लेता है

झगड़ा होने के तीन दिन बाद तक लफ्टीनेन्ट और मयूत्का के बीच कोई बातचीत न हुई। मगर सुनसान द्वीप पर उनके लिये एक दूसरे से अलग रहना सम्भव नहीं था। फिर वसन्त भी आ गया था ! सो भी एकदम और खासी गर्मी लेकर !

द्वीप को ढकने वाली बर्फ की पतली सी तह कई दिन पहले ही वसन्त के नन्हे मुन्ने और सुनहरे पैरो तले रौंदी जा चुकी थी। सागर के गहरे नील दर्पण की पृष्ठभूमि में अब तट से पीला पीला दिखने लगा था।

दोपहर के समय रेत जलने लगती। उसे छूने से हथेलियां जल उठतीं।

सूरज गहरे नीले आकाश में सोने के थाल की तरह घूमता। वसन्ती हवाओं ने उस पर पालिश करके उसे जगमगा दिया था।

द्वीप पर ये दो व्यक्ति थे, धूप, हवाओं और खुजली की बीमारी के सताये हुए। ये सब उन्हें बेहद परेशान कर रहे थे। ऐसे में लड़ाई-झगड़ा करने में कोई तुक नहीं थी।

सुबह से शाम तक वे दोनों रेत पर लेटे रहते और टकटकी बांधकर उस गहरे नील दर्पण को देखते रहते। उनकी सूजी हुई आंखें किसी आते हुए पाल को ढूंढ़ती रहती।

'मैं अब और नहीं बर्दाश्त कर सकती! अगर तीन दिन तक मछुए नहीं आये तो कसम खाकर कहती हूँ कि एक गोली मैं अपने सिर में मार लूंगी!" मर्यूत्का ने एक दिन निराश होकर अन्यमनस्क नीले सागर की ओर देखते हुए कहा।

लेफ्टीनेन्ट ने धीरे से सीटी बजाई।

मैं समझता था कि मैं ही कमीना और बुज़दिल हूं। मर्यूत्का, थोड़ा और सब्र करो। तुम बड़ी सरदार बन जाओगी। तुम उसी के लायक हो—इसी लायक हो कि लुटेरों के किसी गिरोह की सरदार बन जाओ!"

"तुम फिर क्या इन बीती हुई बातों को उखाड़ रहे हो? पुरानी बातों को भूल नहीं सकते? ठीक है कि मुझे गुस्सा आ गया था। इसीलिये तुम्हें भला बुरा कह गयी। उसके लिए काफी कारण था। यह जानकर मेरे दिल को गहरी चोट लगी थी कि तुम इतने निकम्मे

लेफ्टीनेन्ट का चेहरा सुर्ख हो गया। उसके पतले होठ भिचकर एक रेखा जैसे बन गये।

"जबान पर लगाम लगाओ मयूत्का! तुम अपने को भूल रही हो कमीनी औरत तुम हो!"

मयूत्का एक कदम आगे बढ़ी, उसने हाथ उठाया और लेफ्टीनेन्ट के खूटियों से भरे कमज़ोर से चेहरे पर कस कर एक तमाचा जड़ दिया।

लेफ्टीनेन्ट पीछे हटा। वह काँप रहा था और उसकी मुट्ठियाँ कस गयी थीं। फुंकारते हुए उसने कहा,

"अपनी खुशकिस्मती समझो कि तुम औरत हो! अब मैं फूटी आँखों भी तुम्हें नहीं देखना चाहता नीच कहीं की!"

वह झोपड़ी में चला गया।

भौचक्की सी मयूत्का अपनी दर्द देती हुई हथेली को देखने लगी। फिर उसने हाथ झटका और मानो अपने आप से ही कहा,

"बड़ा आया नवाबज़ादा! मछली का रोग लगे इस मर्दुए को!"

दसवाँ अध्याय

जिसमें लेफ्टीनेन्ट गोवोरुखा ओत्रोक ज़मीन को हिला देने वाला धमाका सुनता है और कहानीकार कहानी का अन्त करने की जिम्मेदारी से किनारा कर लेता है

झगड़ा होने के तीन दिन बाद तक लेफ्टीनेन्ट और मयूत्का के बीच कोई बातचीत न हुई। मगर सुनसान द्वीप पर उनके लिये एक दूसरे से अलग रहना सम्भव नहीं था। फिर वसन्त भी आ गया था! सो भी एकदम और खासी गर्मी लेकर!

हो। यह देखकर मुझे दु ख पहुँचा था कि तुम ऐसे हो ! तुमने मेरे दिल में घर कर लिया है मेरा दिमाग खराब कर डाला है, ओ नीली आँखो वाले शैतान !"

लेफ्टीनेन्ट ने जोर का ठहाका लगाया और गर्म रेत पर चित लेट कर हवा में अपनी टाँगें लहराने लगा।

तुम्हारा दिमाग तो नही खराब हो गया ?' मयूत्का ने उससे पूछा।

लेफ्टीनेन्ट ने फिर जोर का ठहाका लगाया।

'अरे ओ, गूंगे ! कुछ बोलता क्यो नही ?"

लेकिन लेफ्टीनेन्ट तब तक ठहाके लगाता रहा, जब तक कि मयूत्का ने उसकी पसलियो में अपनी उँगलियाँ नही कस कर चुभो दी।

फिर लेफ्टीनेन्ट उठा और हँसी के कारण आँखो में आ जाने वाले आँसुओं की बूदो को उसने पोछा।

"यह तुम ठहाके किस बात पर लगा रहे हो ?"

'खूब लडकी हो तुम भी मरीया फिलातोव्ना ! किसी को भी तुम इस तरह पागल बना दे सकती हो। तुम्हारे साथ तो मुर्दा भी नाचने लगेगा !"

क्या नही ? तुम्हारे ख्याल के मुताबिक तो शायद उस लट्ठे की तरह भवर में चक्कर लगाते रहना ही अधिक अच्छा है जो न एक किनारे हो न दूसरे ? खुद भी चक्कर में रहे और दूसरे को भी चक्कर में डाले रखे ? क्यो ?"

लेफ्टीनेन्ट ने फिर कहकहा लगाया। उसने मयूत्का के कन्धे को थपथपाते हुए कहा,

'तुम्हारी जय हो, ओ रणचण्डी ! ओ मेरी प्यारी फ्राईडे ! तुमने तो मेरी दुनिया ही बदल डाली है मेरी रगों मे अमृत घोल दिया है। तुम्हारी उपमा के अनुसार मैं अब किसी भवर में लट्ठे की तरह चक्कर नही खाता रहना चाहता ! मैं खुद महसूस कर रहा हू

कि किताबो की दुनिया मे जाने का वक्त अभी नही आया। नही मुझे अभी और जिन्दगी देखनी है। अपन दात और मजबूत करने हैं भेडिय की तरह काटते फिरना है ताकि मेरे इद-गिद के लोग मेरे दाता से डरने लगें।"

'क्या मतलब ? क्या सचमुच तुम्हारी अक्ल ठिकाने आ गई ?'

'हा, मेरी अक्ल फिर ठिकाने आ गई, प्यारी! ठिकाने आ गई मेरी अक्ल! धयवाद, तुमने रास्ता दिखा दिया। अगर हम किताबे लकर बठ जायेंगे और सारी दुनिया की बागडोर तुम्हे सौप देंगे तो तुम लोग ऐसा बेडा गक करोग कि पाच पीढिया खून के आसू रोयेगी। नही मेरी मर्दानी मरका, अभी किताबो की दुनिया म खोन का वक्त नही आया।"

उसन बात बीच म ही छोड दी।

उसकी गहरी नीली आखें क्षितिज पर जमी थी। उनमे खुशी की चिगारिया नाचती लग रही थी!

उसने समुद्र की ओर इशारा किया और धीमी तथा कापती हुई आवाज मे बोला,

'पाल।"

मयूत्का इस तरह उछलकर खडी हो गयी जसे कि उसम बिजली दौड गई हो। वह उसकी अगुली की दिशा मे दखने लगी।

दूर, बहुत दूर, क्षितिज की गहरी नीली रखा पर एक सफ़ेद बिन्दु-सा चमक रहा था, एक पाल हवा म लहरा रहा था!

मयूत्का ने हथेलियो से अपनी छाती दबा ली। चिरप्रतीक्षित इस दश्य पर विश्वास न कर पाते हुए उसने उस पर अपनी आँखें और भी जोर से गडा दी।

लेफ्टीनेन्ट उसकी बगल मे आ गया। उसने मयूत्का के हाथ पकड लिये खीचकर उन्हे छाती से अलग किया, नाचने लगा और मयूत्का को अपने चारो ओर घुमाने लगा।

वह उस रेत पर नाच रहा था और फटे पतलून में से अपनी पतली-पतली टाँगों को ऊपर की ओर उछालता हुआ अपनी कर्कश आवाज़ में गा रहा था,

'सागर के उस नीले, नील कुहासे में,
एकाकी एक पाल श्वेत सी झलक दिखाता
बढ़ता आता है
ता-ता-ता ! ता ता-ता !"

"बन्द करो यह बकवास, ओ मूर्खराज ! मर्यूत्का ने खुशी से हँसते हुए कहा ।

मेरी प्यारी माशा ! पगली ! सुन्दरियों की महारानी ! अब जान बचने की सूरत निकल आई ! अब हम बच गये !"

'शैतान, कम्बख्त ! तुम्हारे अन्दर भी इस द्वीप से इन्सानों की दुनिया में जाने की प्रबल चाह जाग उठी है, है न ?"

"हाँ ! प्रबल चाह हाँ ! कह तो चुका हूँ तुमसे कि मुझे बहुत चाह है !'

"ज़रा ठहरो। हमें उन्हें संकेत करना होगा। उन्हें संकेत करना होगा। उन्हें इस तरफ आने के लिए इशारा करना होगा।"

"इसकी क्या ज़रूरत ? वे तो खुद ही इधर आ रहे हैं।"

"और अगर, अचानक वे किसी दूसरे द्वीप की तरफ मुड़ गये तो ? किर्गीज़ों ने तो कहा था न कि यहाँ अनगिनत द्वीप हैं। हो सकता है कि वे हमारे करीब से निकल जायें। जाओ, झोंपड़ी में से एक बन्दूक उठा लाओ।'

लेफ्टीनेन्ट झपटकर झोंपड़ी में गया। बन्दूक को हवा में ऊँचा उछालता हुआ वह फ़ौरन वापस लौट आया।

"खिलवाड़ बन्द करो !" मर्यूत्का चिल्लाई। हवा में गोलियाँ दाग़ दो।"

लेफ्टीनेन्ट ने बन्दूक था कुन्दा कन्धे से लगाया। शीशे की सी खामोशी का चीरती हुई तीन आवाजें हवा म गूज गयी। हर गोली के दगने पर लेफ्टीनेन्ट लडखडाया। अब उसे एहसास हुआ कि वह बहुत कमजोर हा गया है।

अब पाल साफ नजर आने लगा था। वह वडा, कुछ कुछ गुलाबी और पीला था। वह पानी पर तैरते हुए मस्त पक्षी के पख की भाति मालूम होता था।

यह क्या बला है?" नाव को ध्यान से देखते हुए मयूत्का ने कहा। 'यह कसी नाव है? मछुओ की नाव जैसी तो बिल्कुल नही लगती। उनस तो यह बहुत बडी दिखती है। "

स्पष्ट था कि नाववाला ने गोलियो की आवाज सुन ली थी। पाल लहराकर दूसरी आर झुक गया और नाव मुडकर सीधे तट की आर आने लगी।

"यह नाव तो मछलिया के इन्सपेक्टर की सी लगती है। मगर वे आजकल यहा किसलिय आये है? समझ म नही आ रहा," मयूत्का न धीरे से कहा।

नाव जब कोई सौ मीटर की दूरी पर रह गई तो वह घूमी। उस पर एक आदमी दिखाई दिया। उसने अपने दाना हाथो का प्याला सा बना कर मुह के सामने किया और जोर से पुकारकर कुछ कहा।

लेफ्टीनेन्ट चौकन्ना हुआ। वह आगे की ओर झुका। उसने बन्दूक को रेत पर फेंक दिया और दो ही छलागा म पानी तक जा पहुँचा। उसन अपने हाथ फलाये और खुशी से मस्त होकर चिल्ला उठा—"हुर्रा! ये ता हमारे आदमी हैं! जल्दी कीजिये! जल्दी कीजिये!"

मयूत्का ने नाव को बहुत ध्यान से देखा। उसे पतवार चलानेवाले व्यक्ति के कधो पर सुनहरी फीतिया झलमलाती नजर आयी।

मयूत्का एक डरी-सहमी चिडिया की तरह फडफडाई। फिर एकदम सख्त हो गयी।

उसके स्मतिपट पर एक चित्र उभरा। चित्र यह था

बफ नीना पानी। येम्प्युकोव का चेहरा। उसके शब्द—'अगर सफेद गार्डों के हाथ पड जाओ तो इसे जिन्दा उनके हवाले न करना।

उसने आह भरी अपने होंठ काटे, और झपटकर बन्दूक उठा ली।

वह बदहवास सी चिल्ला उठी,

"अरे कम्बख्त सफेद गार्ड ! लौट वापिस ! मैं कहती हूं तुमसे लौट आ, कम्बख्त ! लौट आ !'

लेफ्टीनेन्ट टखना तक पानी में खडा हुआ हाथ हिलाता रहा।

अचानक उसे अपने पीछे जमीन के फटने के समान जोर का एक धमाका सुनाई दिया। ऐसा धमाका मानो आग और तूफान एक साथ पृथ्वी पर टूट पडे हों। उसकी समझ में कुछ नहीं आया। वह इस मुसीबत से बचने के लिये एक तरफ को उछला और टुकडे-टुकडे हुई जा रही पृथ्वी का धमाका ही वह आखिरी आवाज थी, जो वह सुन पाया।

मयूत्का भौचक्की सी उसकी तरफ देख रही थी।

लेफ्टीनेन्ट सिर के बल पानी में पडा था। उसके फटे सिर से लाल धारें बह-बहकर समुद्र के दर्पण जैसे पानी में घुल रही थी।

मयूत्का आगे की तरफ दौडी और दोजानू होकर उसके पास बैठ गयी। वह चीत्कार कर उठी। उसने अपनी वर्दी को छाती पर फाड डाला और बन्दूक नीचे गिरा दी। उसने उसके बेजान और विकृत सिर को उठाने की कोशिश की। अचानक वह स्वयं उसके शव पर गिर पडी ! वह तडपने लगी।

'यह क्या कर डाला मैंने ? आँखें खोलो मेरे प्यारे ! मेरी तरफ देखो ! अरे ओ, नीली आंखों वाले ! मुझे देखो न ! '

तभी, नाव उथले तट की बालू पर रुक गयी। उस पर बैठे हुए लोग उस लडकी और उस पुरुष को अवाक होकर चुपचाप देखने लगे।

ए० ज़ोरिच

वासिली लोरोट (१८९९-१९३७) ए० ज़ोरिच के छदम नाम से लिखा करते थे। व लेखको की उस पीढी के थे जिसने क्राति के आरम्भिक वर्षों मे साहित्य की दुनिया मे प्रवेश किया था। तीसरे और चौथे दशक म उनकी कहानिया तथा व्यग्य रचनाएँ "प्रावदा" और "इज़्वेस्तिया" के स्तम्भो म प्रकाशित हुई थी। बाद मे ये रचनाएँ पुस्तकाकार भी प्रकाशित हुईं। बहुत-सी उनकी कहानियाँ क्राति, गृह-युद्ध और लेनिन के बारे मे है।

उनकी प्रस्तुत कहानी "अपमान" रूस के एक लब्धप्रतिष्ठ सूक्ष्म-जीव वज्ञानिक, अकदमीशियन डैनिल ज़बोलोतनी के जीवन की एक अत्यन्त नाटकीय घटना पर आधारित है।

अपमान

स्टशन की विशाल, धुधली, लम्बी, व बगैर साफ की गयी खिड-कियाँ घन, विषादमय अँधेरे से आच्छादित थी, शाम हो चुकी थी और ट्रेन अभी तक आयी नही थी।

लम्बी प्रतीक्षा से थकी-ऊबी भीड ने प्लेटफाम की ओर जाने वाली सँकरी सीढ़ियो पर हल्ला बोल दिया। वह १९१९ की पचरगी, बेकाबू और अविस्मरणीय भीड थी। ट्रेन की सीटी उसक लिए जैसे हमला बोलने की सकेत बिगुल थी। चीखो और गालियो के साथ प्लेटफाम पर लगे अवरोधो और पार्टीशनो को तोडती फोडती हुई यह भीड रल के ठेलो तक पहुँचने के लिए आगे की तरफ उमड पडी। उस समय यात्रियो को ढोने के लिए ठेले ही काम मे लाये जाते थ। और इस सारे शोरगुल के ऊपर सुनायी दे रही थी औरतो की चीखें और चीत्कार, भय से व्याकुल बच्चो की चिल्लाहट टोकरियो और बक्सो के टूटने चटखने की आवाजें तथा टूटते हुए काँच की झनझनाहट। एक ही मिनट मे प्रतीक्षालय खाली हो गया।

प्लेटफाम पर सबसे बाद म पहुचने वाला एक वद्ध यात्री था। वह पुराने फैशन का शाल वाले कालर का कोट पहने था। उसके हाथ मे बच का एक बडा-सा सन्दूक था। उसका आकषक चेहरा काफी हद तक प्रसिद्ध रूसी चित्रकार घे द्वारा बनाये गये हर्जेन* के चित्र स मिलता था। उसका माथा किसी चिन्तक की भाँति ऊँचा, सपाट और

---

*रूसी क्रातिकारी और विचारक।—स०

सुंदर था। उसमे विशेष रूप मे गम्भीर, मानसिक जीवन के आदी होन वाले एक व्यक्ति की झलक मिलती थी। चेहरे पर उसके एक रिक्ता का ऐसा भाव था जो अक्सर चिन्तनशील व्यक्तियो के चेहरो पर पाया जा ा है। यह व्यक्ति बहुपरिचित रूसी सूक्ष्म-जीव वैज्ञानिक एक प्राफेसर थ। बुबोनिक प्लेग के सम्बन्ध मे पूर्वी दुनिया मे किये गय महत्वपूण अनुसधान काय ने उनको विश्वविख्यात बना दिया था। बाद म उन्हे अकादमीशियन की उपाधि से विभूषित किया गया, वह अत्यन्त लोकप्रिय बन गये, और कुछ समय पश्चात वह सोवियत सघ के सबसे बडे वैज्ञानिक सस्थान के अध्यक्ष बनाये गये। हर चुनाव म वह गणतन्त्र की सर्वोच्च निर्वाचित सस्था म चुने जाते थे।

पर जिस समय हमारी यह कहानी प्रारम्भ होती है उस समय लोग उन्हे व्यापक रूप से नही जानते थे। और फिर वह १९१९ का वर्ष था। हर चीज जैसे कडाहा मे उबल रही थी, बुदबुदा रही थी। विज्ञान के लिए किसी के पास समय नही था। वैज्ञानिक सेवाओ की ओर उचित ध्यान नही दिया जाता था।

सुबह उन्होने जिस छोटे से नगर म वह काम कर रहे थे उसकी कायकारिणी समिति की मदद से आरक्षण-टिकट प्राप्त करने का प्रयास किया था। इसी नगर के निकट महामारी के विषय मे तीन महीने तक काम करके उन्होने कुछ अत्यन्त लाभदायक सामग्री एकत्रित की थी। पर उस समय कायकारिणी समिति की तूफानी बैठक लगातार चौबीस घटे से चल रही थी। और उनको कोई भी मदद न मिल सकी। दो घण्टे तक प्रतीक्षा कराने रहने के बाद वहाँ के लोगो न उनको, रेल टिकट के बजाय, न जाने क्यो जिला खाद्य समिति से राशन प्राप्त करने का एक आदेश पत्र उनके हाथ मे रख दिया। इस आदेश पत्र के द्वारा दो केस्पियन हैरिंग मछलियाँ, कीटाणु-नाशक दवा का एक बक्सा और विज्ञान के क्षेत्र मे उनकी उल्लेखनीय सेवाओ को

ध्यान मे रखते हुए,अन्दर के कपड़ो के लिए हड्डी के छ बटनो को प्राप्त करने का अधिकार उन्हे दे दिया गया था। आदेश पढ कर वे मुस्कराये, उठ खडे हुए। फिर उन्होने अध्यक्ष मे मिलने का प्रयास किया। पर दरवाजे पर तैनात दरबान ने कहा कि मीटिंग गर्मागर्म चल रही है और उसे आदेश है कि किन्ही भी 'निठल्ले' लोगो का अन्दर न घुसने दिया जाय। इस शब्द से उन्हे गहरी चोट लगी।

गरिमा के साथ खडे होते हुए उन्होने उससे कहा "मैं वैज्ञानिक हूँ।"

"अब यहाँ कोई वैज्ञानिक नही है।" दरबान ने कडाई से जवाब दिया। 'यह कोई पुराना राज्य नही है! "

स्टेशन पहुच कर किसी तरह वह उस कमाण्डेन्ट के पास तक पहुँच गये जो स्टेशन मास्टर की जगह काम करने के लिए आया था। कमाण्डेन्ट की दाढी बढी हुई थी, कपडे अस्त-व्यस्त थ, और वह पसीने मे सराबोर था। लगभग उसके होशो हवास गायब थे। लगातार जागते रहने से उसकी आँखें लाल-लाल हो रही थी और वह उनसे बात तक करने को तैयार नही था।

"नही कामरेड, मैं कुछ नही कर सकता। मरे शरीर के टुकड़-टुकडे हुए जा रहे हैं! मैं प्रधान कार्यालय के मुख्य रसोइए तक के लिये रेल मे जगह का प्रबन्ध नही कर पा रहा हू फिर किसी प्रोफेसर को कहाँ से जगह मिलेगी! समझे? सदर दफ्तर का रसोइया! और सूखी मछली तक को मैं गाडी पर नही लदवा पाया हूँ। आप समझ रहे हैं? सूखी मछली! और आप इस वक्त मुझे सूक्ष्म जीवों (माइक्रोबा) के बारे म बताने की कोशिश कर रहे हैं!'

यह घटना छोटी-सी और अमहत्वपूर्ण थी, किन्तु प्रोफेसर का उसने तत्काल ही विचलित कर दिया। उनमे समाज के प्रति कर्त्तव्य का बडा भाव था और देश म जो कुछ हो रहा था उसस वे पूरी ईमानदारी से

खुश थे। लेकिन उन्हें ऐसा लगा कि विज्ञान, वह विज्ञान जो उनका सम्पूर्ण जीवन था वह विज्ञान जिसकी सेवा में उन्होंने अपने जीवन के इतने वर्ष लगा दिये थे, जिसके लिए उन्होंने इतना परिश्रम किया था, अपना सारा ज्ञान और अपनी जान तक लगा दी थी—वह सब कुछ अब क्रान्ति की इस निष्ठुर अनवरत भँवर में नष्ट होने जा रहा है! चारों ओर जैसे सबकुछ टूट रहा था, विश्वविद्यालय बन्द हो रहे थे, बहुमूल्य पुस्तकालय और प्रयोगशालाएँ नष्ट की जा रही थीं। उन्हें लगा कि ये सब युद्ध की अपरिहार्य, आकस्मिक घटनाएँ नहीं थीं, बल्कि सब कुछ के अन्त का श्रीगणेश था! क्योंकि, इस निरक्षर और बर्बर देश में, जब सत्ता लोगों के हाथ में आ गयी है और ये लोग विज्ञान के महत्व को समझने, उसे संरक्षण देने, या उससे और जो लोग उसकी सेवा करते हैं उनसे प्यार मोहब्बत करने में नहीं सक्षम होंगे। और अब तक की जो उपलब्धियाँ हैं, उन्हें धकिया दिया जायगा, सैकड़ों साल के लिये पीछे फेंक दिया जायगा, अपने भाग्य के सहारे छोड़ दिया जायगा। उन्होंने स्थिति का विवेचन किया और उन्हें लगा कि हर जगह 'उपभोक्ताओं के आदेश ही सर्वोपरि थे। हर स्थान पर किसी न किसी वस्तु का हिस्सा किया जा रहा था, उसे इकट्ठा किया जा रहा था बाँटा जा रहा था, दिया जा रहा था और यही जीवन का दारोमदार बन गया था। संस्कृति से सम्बन्धित समस्याओं का अधिकाधिक पीछे ढकेला जा रहा था और जिन लोगों ने अपना सारा जीवन संस्कृति के विकास के लिए लगा दिया था—वे अजनबी और गैर बनते जा रहे थे। ऐसा कोई नहीं था जो उन्हें समझे या उनकी आवश्यकता महसूस करे। इसी प्रवृत्ति को उन्होंने 'उपभोक्ताओं के आदेश' का नाम मन ही मन दिया था।

कार्यकारिणी समिति के कार्यालय और स्टेशन पर घटित होने वाले इस छोटे से हादसे से वे परेशान हो उठे थे, क्योंकि उससे उनके गमगीन विचारों और आशंकाओं की पुष्टि होती जान पड़ती थी।

ले ली और प्लेटफार्म पर पहुँच गये। पूरी गाडी ठसाठस भरी हुई थी और पाले के बावजूद लोग बाहर लटक रहे थे। देर से आने वाले लोग व्यर्थ मे ही अन्दर जगह पाने के लिए डिब्बो के बन्द दरवाज़ो को खट-खटाते दौड रहे थे।

"यह मुख्यालय का डिब्बा है।" नये मुसाफिरो स बचने के लिये अन्दर से यात्री चिल्लाते। "यह प्रतिनिधियो का डिब्बा है। आगे जाइए।" वे कहते।

उन्होने भी दरवाज़ो को खटखटाने की चेष्टा की, पर हर जगह लोग चिल्लाते हुए कहते–यह स्नान गह है, इसमे टाइफाइड के रोगी भरे हुए हैं इसमे पाखाना बन्द है, यह सरकारी डिब्बा है, या यह डिब्बा बच्चो वाली माताओ के लिए है। डिब्बे सबके सब बहुद भरे थे। हर जगह-जगह की प्रार्थना के बदले म उन्हे गालिया ही मिली। और एक जगह तो जब उन्होने ब्रेक वैगन म चढने की कोशिश की तो बोरे वाली एक नाराजबूढी औरत न उनकी छाती पर एक इतने जोर स धक्का दिया कि उनके लिए अपना सन्तुलन बनाये रखना मुश्किल हो गया। उनका चश्मा गिर गया और गन्दी ठण्ड से जमी जमीन पर अधे होकर देर तक वह उसे ढढते-टटोलते रहे। गाडी पर चढने के लिए उन्हे बल का प्रयोग करना पडेगा और यह वह कर नही सकते थे, ऐसा करना वह जानते ही नही थे। इसलिए चकराये हुए गाडी के एक छोर से दूसरे छोर तक खुद अपने को वह घसीटते रहे। नमूनो के अपने भारी बक्से को, जिससे उनके कधे दुखने लगे थे, वह हाथो मे उठाये हुए थे। उनकी अगुलियाँ पाले से ठिठुर कर कडी हो गयी थी। बर्फ का तूफान शुरू हो गया था और एक ठण्डा चुभने वाला पवन उन्हे छेदे डाल रहा था। प्लेटफार्म पर अँधेरा था। उस पर उनके पैर फिसल रहे थे। वह अपने को बुरी तरह अकेला, असहाय, दुखी और अजनबियो की इस भीड मे एकदम परित्यक्त महसूस कर रहे थे।

"हाँ, यही बात है," उन्होने सोचा। "साफ है कि हम लोग फालतू

वह कोई महात्वाकांक्षी व्यक्ति नहीं थे, और न अपने दरबे में ही बन्द रहने वाले दूसरे प्रोफेसरों की तरह मियाँमिट्ठू ही थे। न उन्होंने, सम्मानों मान्यताओं अथवा किसी की कृतज्ञता की ही माँग अथवा कामना की थी। फिर भी उन्हें लगता था कि उन्होंने जिस तरह अपना जीवन खपाया था उसकी वजह से लोगों को अब उनका खयाल करना चाहिए, उनकी सुरक्षा करनी चाहिए। पर बजाय इसके उन लोगों ने उस निठल्ले' आदमी से छुटकारा पाने के लिए, उसके हाथ में दो नमकीन हैरिंग मछलियाँ और जाँघिया के लिए हड्डी के छै बटनों का परमिट पकड़ा दिया था। उनके जीवन के साठ वर्ष बीत गये थे और ये सारे के सारे वर्ष मानवीय बुद्धि की विजय तथा मुक्ति के संघर्ष में बीते थे। और कोई भी कह सकता था कि उनके नाम, उनकी अवस्था और उनके सफेद बालों का सम्मान मिलना चाहिए। इसके बावजूद, ट्रेन में उन्हें एक जगह देने से इनकार कर दिया गया था—क्योंकि जगह की जरूरत मुख्यालय के एक रसोइए के लिए थी—सूखी मछलियों के बोरों और बक्सों के लिये थी। और उन्हें भिखारियों तथा कालाबाजारियों के साथ डिब्बों की कमानियों पर लटक कर जाने के लिए भेज दिया गया था। यह अनुचित और अवांछनीय ही नहीं था, बल्कि उनका और उस महान उद्देश्य का जिसकी सेवा में वह लगे हुए थे अपमान भी था। उन्होंने स्पष्टता से महसूस किया कि यद्यपि यह एक छोटी सी घटना थी किन्तु विश्लेषण के अपने अनुभव से वह जानते थे कि सूक्ष्मदर्शी बूँदें भी किसी पूरी वस्तु के लाक्षणिक कणों तथा घटना प्रवाहों के चरित्र का प्रतिबिम्बित करती हैं। इसलिए कड़ुवाहट से भरकर उन्होंने सोचा कि इस प्रकार की उपेक्षा और उदासीनता वास्तव में इस बात का स्पष्ट प्रमाण था कि भविष्य में राष्ट्र के विज्ञान का और व्यक्तिगत रूप से स्वयं उनका क्या हश्र होने वाला है।

।[f] भीड़ को उमड़ने के लिए छोड़ते हुए उन्होंने कह (पाँव) में जगह

ने ली और प्लेटफार्म पर पहुँच गये। पूरी गाडी ठसाठस भरी हुई थी और पाले के बावजूद लोग बाहर लटक रहे थे। देर से आने वाले लोग व्यर्थ मे ही अन्दर जगह पाने के लिए डिब्बा के बन्द दरवाजा को खटखटाते दौड रहे थे।

"यह मुख्यालय का डिब्बा है।" नये मुसाफिरो से बचने के लिये अन्दर से यात्री चिल्लाते। "यह प्रतिनिधियो का डिब्बा है। आगे जाइए।" वे कहते।

उन्होने भी दरवाजो को खटखटाने की चेष्टा की, पर हर जगह लोग चिल्लाते हुए कहते—यह स्नान गृह है, इसमे टाइफाइड के रोगी भरे हुए हैं इसमे पागल बन्द है, यह सरकारी डिब्बा है या यह डिब्बा बच्चो वाली माताओ के लिए है। डिब्ब सबके सब बेहद भरे थे। हर जगह-जगह की प्रार्थना के बदले मे उन्हे गालियाँ ही मिली। और एक जगह तो जब उन्होने ब्रेक वैगन म चढने की कोशिश की तो बोरे वाली एक नागजवूढी औरत ने उनकी छाती पर एक इतने जोर म धक्का दिया कि उनके लिए अपना सतुलन बनाये रखना मुश्किल हो गया। उनका चश्मा गिर गया और गन्दी ठण्ड से जमी जमीन पर अधे होकर देर तक वह उसे ढूढते-टटोलते रहे। गाडी पर चढने के लिए उन्हें बल का प्रयोग करना पडेगा और यह वह कर नही सकते थे, ऐसा करना वह जानते ही नही थे। इसलिए चकराये हुए गाडी के एक छोर से दूसरे छोर तक खुद अपने को वह घसीटते रहे। नमूनों के अपने भारी बक्से को, जिसस उनके कधे दुखने लगे थे, वह हाथो से उठाये हुए थे। उनकी अगुलियाँ पाले से ठिठुर कर कडी हो गयी थी। बर्फ का तूफान शुरू हो गया था और एक ठण्डा चुभने वाला पवन उन्हें छेदे डाल रहा था। प्लेटफार्म पर अँधेरा था। उस पर उनके पैर फिसल रहे थे। वह अपने को बुरी तरह अकेला, असहाय, दुखी और अजनबियो की इस भीड मे एकदम परित्यक्त महसूस कर रहे थे।

'हाँ, यही बात है," उन्होने सोचा। "साफ है कि हम लोग फालतू

होते जा रहे हैं। इनके यहाँ वैज्ञानिक के सामान की अपेक्षा, सूखी मछलियों को प्राथमिकता दी जाती है ।'

तभी एक खुशमिजाज नाविक अपने बोरे को बर्फ पर खींचता हुआ उनके सामने से निकला। उसका सर लाल था, गालों की हड्डियाँ उभरी हुई थीं और वह एक फर्ग रोओं की जाकेट पहने था। प्रतीक्षालय में प्रोफेसर ने उसकी सिगरेट जला दी थी। गाडी के पास पहुंचते ही, नाविक ने अपने ताँबे के मग से जोर जोर से दरवाजे को पीटना शुरू कर दिया। अन्दर वालों ने कुछ जवाब दिया तो कर्कश, छेदने वाली आवाज में वह भी उन पर चिल्लाने लगा।

'हम भी टाइफाइड के मरीज हैं। हमारी गोदियों में भी दूध पीते बच्चे हैं। दरवाजा खोलो!

वे एक दूसरे से टकरा गये। नाविक ने कोसा, अपने माथे से पसीना पोंछा और तभी प्रोफेसर को उसने पहिचान लिया। उसने उनसे कहा "प्रोफेसर साहब, बेहतर होगा कि हम पीछे की तरफ चलें। हो सकता है वहाँ हम पर कोई दया कर दे। ये कुतिया के बच्चे तो हिलेंगे नहीं। और आप अपनी इस चीज को जमीन पर रख कर खींचने की कोशिश कीजिए। हाथों में लिए लिए तो आप थक जायेंगे!

"मैं इसे जमीन पर रखकर नहीं खींच सकता' प्रोफेसर ने दुखी भाव से कहा, 'इसमें आले, टोंटीदार बर्तन तथा इसी तरह की अन्य टूटने वाली नाजुक चीजें भरी हुई है।'

'कोई हर्ज नहीं। उससे कोई नुकसान नहीं होगा। मेरे पास खुद भी काफी नाजुक सामान है' नाविक ने उनसे कहा। "शराब की दो बोतलें और आधी बोतल खालिस स्प्रिट की जो लारी ड्राइवरों ने मुझे दी थी। ये सब इसी में हैं। पर बर्फ में उनका कोई नुक्सान नहीं होगा।'

उसने दरवाजों को फिर जोर से पीटना और पागलों की तरह चीखना-चिल्लाना शुरू कर दिया।

उसने कहा! 'हम भी पागल हैं !' फिर वह आगे की ओर दौड़ा।

व एक बार फिर गाडी के अन्त तक दौड़ गये! आखिर मे किसी ने रहम खाकर अन्तिम डिब्बे मे उनको घुस आने दिया। यहाँ भी बहद भीड़ थी बैठने की जगह कहीं भी नहीं थी, झोले तक को रखने की जगह नही थी। एक बेंच के किनारे पर एक दाढ़ी वाला विशालकाय फौजी गुमसुम-सा लेटा हुआ था। उसके सर के नीचे रखा सामान बहुत जगह घेरे था। प्रोफेसर ने उससे थोड़ा सा खिसकने के लिए कहा, पर उसने अपने विशाल कधे भर हिला दिये तथा फिर और भी पसर गया।

'हम जैसे-तैसे ठुसे हुए है। जहाँ खड़े हो वही बैठ जाओ।'

डिब्बे मे ही फर्श के ऊपर लोहे की एक चादर पर जलायी गयी आग के चारो ओर बहुत से लोग अपने हाथ गर्म कर रहे थे। काकेशियन फर (रोआ) की टोपी और घुड़सवारो वाली नीले रग की बिरजिस पहने एक नौजवान पूर्व के लोगों की तरह पालथी मारकर बैठा हुआ अकार्डियन (बाजा) बजा रहा था और उससे घरघराहट भरे स्वरों मे धुनें निकाल रहा था। उसकी कमर पर घुड़सवारो वाली तलवार की पेटी लटक रही थी और वह भेड़ की खाल के कोट पर कच वाले कमखाब की एक कुर्ती पहने हुए था। उसके ढीठ से चेहरे पर साफ नीली आखें चमकती थी। वार्तालाप का सुनकर उसने चारो ओर नजर दौड़ाई।

'क्या फर के कोट वाले सज्जन को यह गाना अच्छा लगता है ?" कह कर उसने दूसरी की ओर आँख मारी। फिर अकार्डियन पर अपनी उँगलियां दौड़ाते हुए मध्यम स्वर मे वह गाने लगा।

चेका ने उसका सफाया कर दिया,

वह कौन था, कौयल, कौन था वह,? हा हा

वे सब अमैत्रीपूर्ण ढग से मुस्करा दिये।

"तुम लोग पूंजीपतियों को क्यों अन्दर आने देते हो ?" उस विशालकाय फौजी ने लेटे ही लेटे पूछा।

'तुम क्यों सोचते हो कि मैं पूंजीपति हूं ?" प्रोफेसर ने उदास भाव से उससे पूछा।

"इसे हम तुम्हारे चश्मे से समझ जाते हैं' उस भारी भरकम इंसान ने अनमने ढंग से जवाब दिया और फिर मुंह फेर कर लेट गया।

पूंजीपति ! प्रोफेसर ने याद किया कि महामारी में पिछले तीन महीने उन्होंने कैसे कष्ट में बिताये थे। खाने की तंगी, सोने की कोई गुंजाइश नहीं, वह एक छोटे-से गन्दे कमरे में रहते थे, ठण्डे आलुओं से पेट भरते थे। इन्हीं परिस्थितियों में उन्हें दिनके चौबीसों घंटे काम करना पड़ता था। अपने स्वास्थ्य की चिन्ता किए बगैर, अपनी उम्र का खयाल किये बिना सूक्ष्म-जीवों और उनके नमूनों पर काम करते हुए हर क्षण अपनी जिन्दगी को वह खतरे में डालते रहे थे। दसियों हजारों लोगों को आसन्न विपत्ति से बचाने, या उनके कष्टों को कम करने के प्रयास में उन्होंने अपने जीवन की कितनी शक्ति, कितना दिमाग लगाया था अपनी शिराओं और तन्त्रिकाओं पर उन्होंने कितना बोझ डाला था और यह तो मात्र एक पृष्ठ था उनके जीवन की कहानी का ! बाकी सब पृष्ठ भी ऐसे ही थे, कठोर अध्यवसायपूर्ण कर्त्तव्य-निष्ठा और निरन्तर परिश्रम से भरे हुए। और अब वह एक 'निठल्ल', एक पूंजीपति, एक परापजीवी ऐसे प्राणी बन गये थे जिन्हें कोई अधिकार नहीं थे ! और वे उन्हें चेका* की याद दिला रहे हैं और बेंच पर बैठने के लिए जरा सी जगह देने से इन्कार कर रहे हैं !

अपमान की पीड़ा को निगलने के लिए उन्होंने फिर एक गहरी

---

*चेका क्रान्ति विरोधियों का मुकाबला करने के लिए सोवियत सरकार द्वारा कायम की पुलिस की विशेष एजेन्सी। स०

उसास भरी। फिर अपने बक्से को नीचे रखकर वह दरवाज़े के पास नंगे फर्श पर बैठ गये।

वह किसी से बात नहीं करना चाहते थे, लेकिन वह खुशमिज़ाज नाविक उनके पास उकड़ू बैठ गया और उनसे एक के बाद एक प्रश्न करने लगा। वह उसको माइक्रोब्स (सूक्ष्म-जीवों) और सरसीना के बारे में बगैर किसी उत्साह के बतलाते रहे। थोड़ी देर तक जम्हाई लेते हुए उसने उनकी बातों को सुना और जब प्रोफेसर ने जीवाणुओं के प्रजनन के सम्बन्ध में 'काच के ब्राथ' के बारे में बताया तो नाविक कुछ उल्टा समझ गया।

वह बोला 'अस्पतालों में खाने के नाम पर वे हमें शोरवा ही देते थे। यह अच्छा नहीं है। हमारे लोगों को गोश्त के साथ गोभी का सूप दिया जाना चाहिए—तभी हम कुछ कर सकते हैं। और साथ ही किसी तेज और जोरदार चीज का एक गिलास।'

"आज का यही आदर्श है," प्रोफेसर ने कड़वाहट से सोचा। काच के ब्राथ (शोरवे) की जगह उन्हें चाहिए गोश्त मिला गोभी का सूप! आखिर ऐसी हालत में जबकि लोगों को सैकड़ों वर्ष से अज्ञानता, गरीबी और असभ्यता की स्थिति में बनाये रखा गया है इसके अलावा और हो ही क्या सकता है? उनको अब उस सब से मुक्ति मिल गयी है और लोगों की सबसे पहली इच्छा यह है कि उनको पेटभर खाने को दिया जाय। उन्हें हवाई बातें नहीं, रोटी चाहिए! यह ठीक ही है! इस पर आपत्ति ही क्या की जा सकती है? मुझे इस बात पर आश्चर्य ही क्यों होना चाहिए कि हमें और हमारे नमूनों को पीछे तीसरे नम्बर पर यहाँ तक कि दसवें नम्बर पर ढकेल दिया गया है और लोगों में विज्ञान के प्रति कोई रुचि या उसके प्रति कोई सम्मान का भाव नहीं है? उन्हें अकस्मात यह रुचि या सम्मान का भाव मिल ही कहाँ से सकता था? उस दाढ़ी वाले सिपाही को या अकार्डियन वाले उस लड़के को जबकि शायद

अ-आ इ-ई तक की पुस्तक उन्होंने कभी नहीं देखी है ? उदाहरण के लिए पैस्चोर* को ही ले लीजिए। वह पहले इन्सान थे जिन्होंने मानव और विज्ञान के लिए माइक्रोकासमास (सूक्ष्म जीवों) की रहस्यमयी दुनिया में प्रवेश करने का मार्ग प्रशस्त किया था। अपने जीवन के दस वर्ष उन्होंने बैक्टीरिया (रोगाणुओं) के प्रजनन के नियम की खोज के लिए अर्पित कर दिये थे। लेकिन इन लोगों के लिए पैस्चोर का क्या अर्थ है ? उनकी प्रतिभा की महानता को वे कैसे समझ सकते हैं ? जबकि वे यह भी नहीं जानते कि भूमि किस जटिल ढंग से अखिल ब्रह्माण्ड में चक्कर लगाती है ? वे तो शताब्दियों से मजबूती से यही विश्वास करते आये हैं कि पृथ्वी तीन ह्वेल मछलियों के ऊपर टिकी हुई है, और वर्षा को स्वर्ग से मसीहा एलिजाह भेजते हैं ! मेण्डलीव ने अपनी महान प्रतिभा से तत्वों की सारिणी तैयार की थी पीढ़ियों-पीढ़ियों तक वह उपयोग में आती रहेगी। लेकिन तत्वों की इस सारिणी का एक निरक्षर व्यक्ति के लिए क्या महत्व हो सकता है ? वह उसकी सराहना कैसे कर सकता है जबकि साधारण गुणा-भाग भी उसके लिए चीनी अक्षरों की तरह अजनबी है ? इन सबको प्यार करने के लिए उनकी रक्षा करने के लिए और उनको नयी बुलन्दियों तक पहुँचाने के लिए उन्हें उस संस्कृति के ज्ञान की आवश्यकता है जिसका सृजन करने में शताब्दियाँ लग गयी हैं। पर इनके पास तो कुछ भी नहीं है। हमारे देश में तो अज्ञान और असभ्यता को ही बढ़ावा दिया गया है और अब सब कुछ तबाह हो जायेगा। विज्ञान का पिछवाड़ा फेर दिया जायगा और हम वैज्ञानिकों को सारे शेष जीवन के लिए रास्ते से दूर कर दिया जायगा। इसमें सन्देह नहीं कि समय आने पर सब कुछ बदलेगा, एक नये पुनर्जागरण के युग का आरम्भ होगा। लेकिन अगर आज मैं यह कहूँ कि मस्तिष्क की विजय पेट की विजय

*लुई पैस्चोर प्रसिद्ध फ्रांसीसी रसायन एवं सूक्ष्म जैविक वैज्ञानिक।

से अधिक ऊँची और मूल्यवान होती है तो वे मौटिया बजाकर और मुझे पूँजीपति बताकर जवाब देंगे। और इस समय अगर मैं यह कहूँ कि यह सब अत्यन्त शर्मनाक है, यह क्रान्ति का अपमान है कि मैं एक बुड्ढा आदमी एक ऐसा प्रोफ़ेसर जिसने अपने जीवन के पचास वर्ष विज्ञान की सेवा मे लगा दिये है यहाँ जमीन पर बैठा हूँ और सदर दफ़्तर का वह बावर्ची तीन आदमियो की जगह घेर कर हाथ और पैर फैलाये पूरी बेंच पर पसरा हुआ है तो कोई भी व्यक्ति मेरी सहायता के लिए उँगली तक नही उठायेगा, मुझे जगह देने के लिए एक इंच भी कोई नही खिसकेगा और लोग चिल्ला-चिल्ला कर मुझे चुप कर देंगे! वे कहेंगे "यह सब ठीक वैसा ही है जैसा कि दरअसल होना चाहिए। हम "कोच का ब्राथ' नही, गोभी का सूप चाहिए, गोश्त के टुकडो के साथ गोभी का बहुत-सा सूप।

उन्होंने दुबारा ठण्डी सांस ली और थकान से अपनी आँखें बन्द कर लीं। रात हो गयी थी। यह १९१९ के तूफानी वर्ष की पहली रात थी। कई वर्षों से, अपनी पुरानी भावुकतापूर्ण आदत के अनुसार नये वर्ष के आरम्भिक घंटों में पिछले वर्ष के अनुभवों का निष्कर्ष निकालने और आने वाले नये वर्ष के लिए कुछ योजनायें बनाने की वह कोशिश करते थे। वह बीते वर्ष का सिंहावलोकन करने लगे और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि पिछले जीवन का जो उनका ढर्रा था उसने उन्हें न तो स्वयं अपने लिए उस समय कुछ करने दिया था, और न भविष्य के लिए ही कोई प्रबन्ध करने का अवसर दिया था। उनकी हर चीज विज्ञान के लिए अर्पित कर दी गयी थी और अब, जब कि विज्ञान स्वयं रसातल को जा रहा है उन्हें अपना सारा भविष्य सूना और निरानन्द दिखलायी देता था—क्योंकि उनके सम्पूर्ण जीवन का अर्थ विज्ञान में ही सकेन्द्रित होकर रह गया था। इस विषय में वे जितना ही अधिक सोचते थे उनका हृदय उतना ही अधिक भारी होता जाता था।

फिर बिना जाने ही उन्हें झपकी आ गयी, और एक या शायद दो

घण्ट इसी भाँति गुजर गय। अचानक उनके चेहरे पर तज प्रकाश पडा और उनकी आखे खुल गयी। उन्होन सुना कि भर्राई हुई आवाज मे कुछ लोग फुसफुसा रहे थ। "डाकू! अराजकतावादी उचक्के!"-तभी उन्होंने महसूस किया कि कोई उनके गम कोट को उनके शरीर से उतारने के लिए खीच रहा है। तीन आदमी हाथो मे लालटन और पटियो मे हथगोले लटकाये हुए उन्हे घेर कर खडे थे। डिब्बे के उस धुधलके मे उनके चेहरे कान काने लग रहे थे और उनकी आखो मे खुशी उन्माद और विजय की एक विचित्र चमक थी।

"सज्जनो! आप यह क्या कर रह है?" सुध-बुध खाकर उनीदी सी स्थिति मे उन्होंने उनसे पूछा। सज्जनो के रूप म उन्होने एक एस शब्द का इस्तेमाल किया जिसका उपयोग अब लगभग बन्द हो चुका था।

"सज्जन लोग खम्भो से लटक रहे है" मजाक उडाते हुए चचकदाग एक छोटे से आदमी न कहा। वह उनका सरदार लगता था। "उन्होने तुमको अपनी शुभकामनाएँ भेजी है और कहा है कि तुम्हारे बग़ैर वे अकेलापन महसूस करते हैं।'

उन लोगो ने उनका फर का कोट उतार लिया और फिर उनकी टोपी जाकेट और जूते तथा घडी भी छीन ली, फिर उनका बटुआ ले लिया और अगुली से शादी की उनकी अँगूठी उतार ली। उन्होने प्रतिरोध नही किया दीनता स झुक गय और सिर्फ इधर-उधर इस तरह दखत रहे जैसे कि वे दूसरो को बुला रहे हैं कि व आकर उनकी तरफदारी करें। उनकी इस वद्धावस्था मे उनका जो इस तरह अपमानित किया जा रहा था उसे रोकें और व मानवोचित गौरव तथा उनके रूप म विधान को जो निन्दित और लांछित किया जा रहा था उसकी प्रताडना करें। लकिन कोई अपनी जगह से नही हिला, सभी चुप्पी साधे रहे।

'वाह ! यह तो बहुत बढिया कोट है, ब्रोकेड की कमीज़ पहने एक घुडसवार न खुशी से फूलते हुए कहा । "बूढे ने इस तीन सौ साल पहले लिया था इसीलिए अब किसी और को पहनन दे !

उसन बडे प्रेम से गाली बकी । उसकी नीली आखें और भी साफ और पारदर्शी लगने लगी ।

और बुजुग प्रोफेसर को एक बार फिर लगा कि वह एक बाहरी व्यक्ति है जिन्हे तिरस्कृत ही कर दिया गया है । उन्होंने सोचा कि उनकी जगह अगर कोई रसोइया होता तो दूसरा न उसकी तरफदारी जरूर की होती । इस डिब्बे मे बचा उस जिन्दगी मे जो उन्हे पीछे छोडकर चली गयी थी वह किसी के लिये उपयोगी नही थे । "निठल्ला कही का !" उन्हे याद आया और वे काँप उठे जसे कि उन्हे कोई शारीरिक पीडा हो गयी हो ।

तब उन लोगो ने उनसे बक्सा खोलने के लिए कहा । उन्हे अपनी व्यक्तिगत चीजो के चले जाने की चिन्ता नही थी, मनोदशा ही उनकी एसी थी कि उनकी उन्होने चिन्ता नही की । हर वस्तु को उन्होने उदासीन भाव से उन लोगो को दे दिया । लेकिन उस बक्से के उन टोटीदार बतनो और मतबानो मे और उनकी नोट-बुको मे महामारी के सम्बन्ध मे किये गये उनके अमूल्य अन्वेषण काय के निष्कष बन्द थे । वह जानते थे कि विज्ञान के लिये वे सब अमूल्य थे, तथा कौच, लिस्टर तथा लौफलर द्वारा किये गये काय जितने ही महत्वपूण थे । उन्होन महसूस किया कि उनका शरीर रोष से काप रहा था । वे भयभीत थे कि एक ही मिनट मे, बूट की एक ही ठोकर से सब कुछ नष्ट हो जायेगा । अपना सब-कुछ दे दिया था उन्होंने, लेकिन यह सब वह उन्हे सौंप नही पा रहे थे—क्योकि ये चीजें उनकी नही, विज्ञान की थी । इन चीजो को उनके हवाले कर देना गद्दारी होगी, दगा देना होगा, यह एक ऐसी हरकत होगी जिसके लिए वह जीवन भर शमसार रहेंगे । काँपते हाथो से उन्होने वह बक्सा अपनी ओर खींच कर अपने

घण्ट इसी भाति गुजर गय। अचानक उनके चेहरे पर तज प्रकाश पडा और उनकी आख खुल गयी। उन्होने सुना कि भर्राई हुई आवाज म, कुछ लोग फुसफुसा रहे थे। "डाकू ! अराजकतावादी उचक्के !" तभी उन्होंने महसूस किया कि कोई उनके गम कोट को उनके शरीर स उतारने के लिए खीच रहा है। तीन आदमी हाथो मे लालटेन और पटियो मे हथगोले लटकाये हुए उन्हे घेर कर खडे थ। डिब्बे के उस धुधलके मे उनके चेहरे काले काले लग रहे थे और उनकी आँखो म खुशी उन्माद और विजय की एक विचित्र चमक थी।

'सज्जनो ! आप यह क्या कर रहे है ?' सुध-बुध खोकर उनीदी सी स्थिति मे उन्होने उनसे पूछा। सज्जनो के रूप म उन्होने एक ऐसे शब्द का इस्तेमाल किया जिसका उपयोग अब लगभग बन्द हो चुका था।

"सज्जन लोग खम्भो से लटक रहे है' मजाक उडाते हुए चचक-दाग एक छोटे से आदमी ने कहा। वह उनका सरदार लगता था। 'उन्होने तुमको अपनी शुभकामनाएँ भेजी है और कहा है कि तुम्हारे बग़ैर वे अकेलापन महसूस करते हैं।

उन लोगो ने उनका फर का कोट उतार लिया और फिर उनकी टोपी, जाकेट और जूते तथा घडी भी छीन ली, फिर उनका बटुआ ले लिया और अगुली स शादी की उनकी अँगूठी उतार ली। उन्होने प्रतिरोध नही किया दीनता स झुक गये और सिफ इधर-उधर इस तरह देखते रहे जैसे कि वे दूसरो को बुला रहे है कि व आकर उनकी तरफदारी करें। उनकी इस वृद्धावस्था मे उनको जो इस तरह अपमानित किया जा रहा था उसे रोकें और वे मानवोचित गौरव तथा उनके रूप म विधान को जो निन्दित और लांछित किया जा रहा था उसकी प्रताडना करें। लेकिन कोई अपनी जगह से नही हिला, सभी चुप्पी साधे रहे।

"वाह ! यह तो बहुत बढ़िया कोट है," फ्रोकेट की कमीज पहने एक घुड़सवार ने खुशी से फूलते हुए कहा । "बूढ़े ने इसे तीन सौ साल पहले लिया था इसीलिए अब किसी और को पहनने दे !"

उसने बड़े प्रेम से गाली बकी । उसकी नीली आखें और भी साफ और पारदर्शी लगने लगी ।

और बुजुर्ग प्रोफेसर को एक बार फिर लगा कि वह एक बाहरी व्यक्ति है जिन्हे तिरस्कृत ही कर दिया गया है । उन्होंने सोचा कि उनकी जगह अगर कोई रसोइया होता तो दूसरा न उसकी तरफदारी जरूर की होती । इस डिब्बे मे कहा उस जिन्दगी मे जा उन्हे पीछे छोड़कर चली गयी थी वह किसी के लिये उपयोगी नही थे । "निठल्ला कही का !" उन्हे याद आया और वे कांप उठे जैसे कि उन्हे कोई शारीरिक पीड़ा हो गयी हो ।

तब उन लोगो ने उनसे बक्सा खोलने के लिए कहा । उन्हे अपनी व्यक्तिगत चीजो के चले जाने की चिन्ता नही थी, मनोदशा ही उनकी ऐसी थी कि उनकी उन्होने चिन्ता नही की । हर वस्तु को उन्होने उदासीन भाव से उन लोगो को दे दिया । लेकिन उस बक्से के उन दागेदार बर्तनो और मर्तबानो म और उनकी नोट-बुको म महामारी के सम्बन्ध मे किये गये उनके अमूल्य अन्वेषण काय के निष्कष बन्द थे । वह जानते थे कि विज्ञान के लिये वे सब अमूल्य थे, तथा कोच, लिस्टर तथा लौफलर द्वारा किये गये काय जितने ही महत्वपूर्ण थे । उन्होने महसूस किया कि उनका शरीर रोष से काप रहा था । वे भयभीत थे कि एक ही मिनट मे, बूट की एक ही ठोकर से सब कुछ नष्ट हो जायेगा । अपना सब-कुछ दे दिया था उन्होने, लेकिन यह सब वह उन्हे सौंप नही पा रहे थे—क्योकि ये चीजें उनकी नही, विज्ञान की थी । इन चीजो को उनके हवाले कर देना गद्दारी होगी, दगा देना होगा, यह एक ऐसी हरकत होगी जिसके लिए वह जीवन भर शर्मसार रहेंगे । काँपते हाथो से उन्होने वह बक्सा अपनी ओर खीच कर अपने

शरीर से चिपका लिया। अपने शरीर से उसकी रक्षा करते हुए उन्होंने तै किया कि चाहे कुछ भी क्यों न हो जाय वह उसे किसी का नहीं बर्बाद करने देंगे। उन्होंने सोचा कि यदि उनका यह काम भी किसी के उपयोग का नहीं है तो फिर इसके बाद उनके लिये जिन्दा रहने के लिए कुछ नहीं था, और अधिक जीने में फिर उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी।

पर उन लोगों ने उन्हें एक ओर को ढकेल दिया। चेचक के दाग से भरे मुँह वाले आदमी ने बक्सा उनके हाथ से छीन लिया और उसका ढक्कन खोल डाला। डिब्बे के लोगों में पहली बार कुछ हलचल सी हुई। वे उठकर बैठ गये, बेंचों के किनारों पर उन्होंने अपने सिर टिका दिये और कौतूहल से एक दूसरे के कंधों के ऊपर से देखने लगे कि बक्से में ऐसा क्या था जिसके लिए वह आदमी अपनी जान तक को जोखिम में डाल रहा था ?

"क्या यह शराब है ?" चेचक दाग वाले ने पूछा। उसने एक जार उठाया, उसे खोला और लालचीपन से अपनी नाक के पास ले गया। लालच ने तत्काल ही गुस्से की त्योरियों का रूप ले लिया। जार को उसने फर्श पर पटक दिया।

"पूँजीपति के बच्चे ! लोगों को तुम बेवकूफ किसलिए बना रहे हो ?" कड़ाई से उसने पूछा।

फिर उसकी नजर माइक्रोस्कोप* पर पड़ी यह एक बेहद नाजुक बेश कीमती और दुर्लभ सूक्ष्म यन्त्र था जो कि प्रोफेसर की प्रयोगशाला का गौरव था। चेचक दाग वाले ने उत्सुकता से उसे देखा और झट से अपने झोले में डाल लिया।

डाकुओं ने कुछ व्यापारियों और ऐसे यात्रियों को लूटा जो कुछ अच्छे कपड़े पहने थे। फिर यह कहकर कि अन्य जारों में क्या है इसे देखने के अगले स्टेशन पर आयेंगे—वे चल गये।

---

*माइक्रोस्कोप अणुवीक्षण यन्त्र। अनु०

उन लोगों के जाने के बाद पूरे एक मिनट तक कोई कुछ नही बोला।

"मैंने सोचा था कि इसम वह नमक या आटा छिपाये होगा ' गाल की उभरी हड्डियो वाले नाविक ने हँसते हुए कहा, 'या बुडढे के पास सुअर का मास होगा। आजकल सुअर के मास के लिए बहुत से लोग पागल है। पर इसके बक्से म निकन जार और बोतलें ! महामहिम, तुम भी खूब ही आदमी हो ! इन बतनो के लिए तुम गोली खाने को तैयार हो !'

बस, इस एक बूट से जैसे उसके सब्र का प्याला भरकर बह निकला। बाहर से ठण्डी हवा आ रही थी। प्रोफेसर को जिसके शरीर पर अब केवल एक कमीज रह गयी थी, लगा कि वह ठिठुरता जा रहा है। उसके बक्से के पास नीचे कुछ गीला था। उसन हाथ से उस छुआ। उसके मतवान (जार) से कुछ गिरकर फश पर फैल गया था। मतवान टूट गया था। उसक चारो तरफ लोग हँस रहे थे। और उसके दिल म गहरी और दुखदायी उदासी भर गयी थी। उसे लगा कि उसकी छाती फट जायगी। उसका गला भर आया। उसन जबरदस्त घुटन-सी महसूस की। यकायक बिना यह सोचे समझे कि वह क्या करने जा रहा था, वह उठकर सीधा खडा हो गया। प्रोफेसर का खडा होना कुछ ऐसा था कि सारा डिब्बा एकदम शान्त हो गया। उनके पीछे खाने के अपने बार पर जो आदमी बैठा था उसने उन्हे पीछे से खीचा और सहमी हुई आवाज मे कहा, "यह क्या कर रहे हो ! चुप बैठो, तुम बात को और भी बिगाड दोगे। लेकिन वह अपन पैरो पर खडे हो गये। उन्होने किसी की बात पर ध्यान नही दिया। केवल वास्कट और टूटी पेटी मे उनकी आकृति एक साथ ही अजीब और दयनीय लग रही थी। श्वेत बालो के तेजस्वी आभा मण्डल से मण्डित उनके चेहरे और आँखो पर सच्चाई और आक्रोश की

शानदार छाप थी। उनका भव्य चेहरा तमतमा रहा था। उन्होंने अपने को सीधा किया और बोलना शुरू कर दिया।

वह एक अनोखा अव्यवस्थित सा, किन्तु जबरदस्त भाषण था। उनके मुह से निकलता हर शब्द जैसे जल रहा था। उनका एक-एक शब्द डिब्बे मे बैठे लोगो के दिलो म स्फुरण पैदा कर रहा था और उन्हे उत्तेजित कर रहा था। लोगो के हृदयो की धडकन तेज हो गयी थी, क्योकि प्रोफेसर के शब्दो म भावनाओ की गहरा पुट था, एक स्वाभिमानी मानव के हृदय का आजस्वी आक्रोश था। उन्होने उन महान वज्ञानिको की चर्चा की जिन्होने उन साधारण बतनो म भरे ज्ञान के अदभुत कणो को निस्वाथ भाव से और न जाने कितने श्रम से इकट्ठा किया था। वे लोग हँस रहे थे क्योकि वास्तव म वे जानते नही थे कि उनके अन्दर कितना अज्ञात अथपूण तथा आश्चयजनक ज्ञान मौजूद था। प्रोफेसर ने उन्हे मेश्निकाव के बारे म बतलाया जिसने टाइफाइड के भयानक कीटाणुओ के बारे म जानकारी प्राप्त करने के लिए उनका परीक्षण करने के लिए, बिना मौत की परवाह किये हुए स्वय अपने शरीर म उनका इन्जेक्शन लगा लिया था—और, इस प्रकार, सम्पूण मानवता की रक्षा की थी। उन्होने उन्हे आर्कमिडीस के बारे मे बतलाया जिन्होने अपने नगर म घुस आये शत्रुओ से अपने नक्शो की रक्षा करने के लिए अपने सिर तक की पर्वाह नहीं की थी। उन्होने उन्हे गलीलियो के बारे म बतलाया जिन्होने कि, पुरानी किवदन्ती के अनुसार, प्राण दण्ड देने वाली अदालत मे भी निर्भय भाव से उदघोष किया था कि और यह (अर्थात पृथ्वी अनु०) अब भी घूम रही है'' उन्होने उन लोगो को उन दजनो महान और अदभुत मेधावी मनीषियो के विषय मे बतलाया जिन्होने आगे आने वाली पीढियो के कल्याण के लिए अपना सवस्व न्योछावर कर दिया था—अपने मान, प्रतिष्ठा, धन और यहाँ तक कि

अपने जीवनो तक को ज्ञान विज्ञान की वेदी पर चढा दिया था। उन अपरिचित श्राताओ के सम्मुख उन्होने मानव के रचनात्मक मस्तिष्क की अनजानी गहराइयो के अनेक रहस्यो का उदघाटित किया। उनके सामने उन्होने उन पेचीदा जादू जैसे चमत्कारपूण नियमो का उदघाटन किया जिन पर दुनिया का अस्तित्व आधारित है। और, एक उन्मादी जैसे व्यक्ति के आवेश म अनिवचनीय उल्लास और उत्साह से भरकर उन्होने उनके सामन बुद्धिजीवियो की एक अत्यन्त जाज्वल्यमान और गरिमा मण्डित तस्वीर उपस्थित कर दी। ब्रह्माण्ड को आच्छादित किये आवरणो को एक-एक करके निभयता स वे उठाते और चीरते गय। दद, घृणा तथा तीव्र वेदना के साथ उन्होन दासता की उन जजीर की याद उन्हे दिलायी जिन्होने शताब्दिया तक लोगा का जकड रखा था और जिनको उतार फेंकने मे रूस का मेहनतकश वग प्रथम सिद्ध हुआ था। एक स्निग्ध मुस्कान क साथ उन्हान उनके सामन मानव के उस स्वाधीन और सुखी भविष्य की तस्वीर खीची—जब वह अपने आपको शोषण और अनान से पूणतया मुक्त कर लेगा और प्रकृति के अपार ससाधना का स्वामी बन जायगा। क्रान्ति के विषय मे बालते हुए उन्होन उनसे कहा कि सिफ क्रान्ति ही विज्ञान को ऊँचाइया के उत्तुग और अब तक अछूते शिखरो तक पहुँचाने की क्षमता रखती है। उन्होने उन्हे समझाया कि उनके द्वारा उनका उपहास किया जाना कितना खतरनाक और भयानक था और उन मतबानो म भरी सामग्री किसी व्यक्ति की सम्पत्ति नही थी, उसकी किसी को अपने लिए जरूरत नही थी, बल्कि सबके लिए जरूरत थी। फिर उन्हाने उन्हे खुद अपने जीवन के बारे म बतलाया कि किस तरह पूरे तौर से वह विज्ञान और मानव-सेवा के लिए समर्पित था और अब उसका कितना दुखद और दारुण ढग से अन्त होने जा रहा था ।

उनके विचार असम्बद्ध लग रहे थे, अव्यवस्थित और ऊल-जलूल लग रहे थे, उनका गला रुँध रुँध जाता था। वे जैसे सन्निपात की स्थिति मे बोल रहे थे। अनुचित और अकारण किये गये अपमानो की उनकी समस्त पीडा, शकाओ की उनकी सारी कटुता असयमित शब्दो की जसे एक अबाध धारा मे उफन-उफन कर उनके अन्तरतम से फूटी चली आ रही थी, किन्तु उनके उस आश्चर्यजनक रूप स उत्तेजक भाषण मे सच्चाई और ईमानदारी का कुछ ऐसा पुट था कि १९१९ के उस विद्रोहपूर्ण वष मे रेल के उस ठण्डे और गन्दे डिब्बे क अन्दर उस रात वह एक दुन्दुभि की तरह गूज उठी । उन्हे अचानक लगा कि डिब्बे के लोग आगे बढ आय है उनके पास आ गये है जसे कि किसी घने कोहरे के आवरण से निकल आये हो। वे खिसक खिसक कर उनके चारो तरफ एक मजबूत घेरा बनाकर जमा हो गय थे। किन्तु वह स्वय न उनके चेहरो को पहिचान पा रहे थे और न उनकी खिची हुई आतुर आकृतियो को ही ठीक से देख पा रहे थे। वे सबके सब सास रोक कर उनकी बातो को सुन रह थे। उनकी कोशिश थी कि उनका एक शब्द भी उनस छूट न जाय। प्रोफेसर के ये शब्द पहली बार एक नयी और जादुई दुनिया स उनका परिचय करा रहे थे। वे फौजी लोग कान लगाकर एक एक बात को सुन रहे थे, किन्तु प्रोफेसर स्वय इस स्थिति मे नही थे कि इस बात को समझ सकें कि इससे पहले कभी उन्हे उससे अधिक श्रद्धालु ज्ञान के प्यासे और उत्कट एव आतुर श्रोता नहीं मिले थे तभी उन्होन देखा कि उनकी ओर किसी के बढते हुए दो हाथ चले आ रह है। पर वह इस हद तक हताश हो चुके थे कि उन्हे लगा कि या तो कोई उन पर प्रहार करने के लिए आगे बढा आ रहा था, अथवा धक्का देकर उन्हे फिर गिरा देने के लिए। पर उन हाथो ने सिर्फ एक ओवर-कोट बर्फ की मानिन्द ठण्डे और कांपते हुये उनके शरीर पर रखकर धीरे से उसे ढँक दिया। किसी दूसरे व्यक्ति ने उनके बैठने के लिये एक

उल्टा ववसा उनकी ओर कर दिया और कोई तीसरा व्यक्ति फुसफुसाती-सी आवाज म चिन्तापूवक बोला कि "जल्दी करो, फैल्ट के गम जूते इन्हे जल्दी से पहना दो '

वे बोलते ही रहे जव तक कि डिब्बा एक झटके के साथ रुक कर यकायक खडा नही हो गया। उनका शब्द-प्रवाह बीच मे टूट गया। थक कर और निढाल होकर वह बैठ गये और अपने चेहरे को उन्होने हाथो मे ढक लिया। बाहर कोलाहल हो रहा था। वे एक स्टेशन पर खडे थे। लेकिन अन्दर काफी देर तक लोग मन्त्र मुग्ध की तरह एकदम खामोश बैठे रहे मानो चन्द मिनट पहले की बातो के सम्मोहन को वे भग नही करना चाहते थे।

तब बढी दाढी वाला वह विशालकाय फौजी, जो काफी देर से शायिका के नीचे सिर लटकाये लेटा था, सम्मानपूर्ण और कोमल आवाज मे बोला

"डाक्टर ! इसके लिए हम दोषी न ठहराइए ' वह हर चश्मा पहनने वाले व्यक्ति को डाक्टर ही कहकर बुलाता था, अत उनको भी उसने "डाक्टर' कहकर ही सम्बोधित किया। वह बोला, "हम हँस इस-लिए रहे थे क्योकि हम मूख हैं, क्योकि हम कुछ समझते नही हैं। अभी हमारे मस्तिष्क इतनी दूर नही पहुच पाते हैं। पर क्या हमारे हृदयो मे ज्ञान के प्रकाश तक पहुचने की इच्छा नही है ? डाक्टर, आप कृपा कर चिन्ता न करें, हम पथ विमुख नही होंगे। अब जबकि हममे समझ आ रही है हमारे हृदय हमारा माग प्रशस्त करेंगे "

इन शब्दो मे भरी तप्त सवेदनशीलता, स्नेह और निश्छलता की भावना से तथा अपनी बात का कहने की उस फौजी की शक्ति से चकित होकर प्रोफेसर ने एकदम अपना सर उठा लिया। उन्होंने चारों ओर उन पीले-पीले, सूख किन्तु गहन रूप से प्रभावित चेहरो पर और उनपर उभर आयी स्वप्निल-सी मुस्कराहट पर, आन्तरिक ज्योति से प्रदीप्त उनकी विस्फारित आँखो की अद्भुत चमक पर नजर

डाली। उन्होंने इस सबको देखा और उन्हें लगा कि जैसे उन के कंधों से अचानक एक भारी बोझ उतर गया है। उनका हृदय शान्त हो गया। स्वयं को वह उतना ही हल्का और प्रसन्न महसूस करने लगे जितना कि अपनी बेफिक्र नौजवानी के दिनों में वह करते थे।

दरवाजा खुला और चेचक दाग चेहरे वाला आदमी डिब्बे में धीरे से कूद कर फिर आ गया।

उसने कहा, "ऐ पूँजीपति अपनी बोतलें खालो!

प्रोफेसर चुप बैठे रहे। एक शब्द भी नहीं बोला गया और न कोई अपनी जगह से ही हिला। उस आदमी ने आश्चर्यचकित होकर चारों ओर नजर दौड़ाई, गन्दी गालियों की बौछार की, और बक्से की तरफ बढ़ने लगा। लेकिन दाढ़ी वाले फौजी ने अचानक हुंकार भरी उसके नथनों से आवाज़ निकलने लगी और फिर वह एकदम खड़ा हो गया। वह अपनी पूरी दानवीय लम्बाई के साथ सीधा अकड़कर खड़ा हो गया। बकरे की रान जैसी उसकी मांसल भारी मुट्ठी कस गयी। उसे चेचक-दाग की तरफ करते हुए उसने कहा, "ज़रा कोशिश तो करो। मैं तुम्हारी गर्दन मरोड़ कर रख दूंगा, कमबख्त कहीं के!"

चेचक दाग वाले आदमी ने अपनी पिस्तौल की पेटी की तरफ हाथ बढ़ाया, पर जैसे ही उनकी आँखें मिलीं वह हिचकिचा गया और अपने हाथ को उसने नीचे कर लिया। दूसरों की नजर बचाते हुए चोरों की तरह उसने अपने चारों ओर के चेहरों पर दृष्टि डाली फिर जल्दी से अपना सिर दरवाज़े की ओर मोड़ा और लपक कर चुपचाप बाहर निकल गया।

उनमें से चार लोग साथ साथ शहर की ओर गये। सड़कों पर लोगों के कपड़े उतारे जा रहे थे। उन्हें गाली से उड़ाया जा रहा था। उन लोगों ने निश्चय किया कि प्रोफेसर का अकेले बाहर जाना ठीक नहीं होगा।

बाहर बर्फ का तूफान गरज रहा था। तेज हवा आकाश में काले-काले बादलों को काफी नीचे स्तर पर उड़ाये लिये जा रही थी। सूखी, पैनी बर्फ उनके चेहरों पर थपेड़े मार रही थी। वह उनकी आँखों में घुम घुम जा रही थी। उस नाविक की फटी फर लगी जाकेट में जो उन्हें ठण्ड से बचाने के लिए उसने उनके कंधों पर डाल दी थी, तथा उन भारी भरकम बड़े-बड़े फैल्ट के जूतों में जो एक दूसरे विशालकाय सिपाही ने उन्हें पहना दिये थे प्रोफेसर को ठण्ड नहीं महसूस हो रही थी। उनका सिर घुड़सवार द्वारा उन्हें दी गयी मबरन्गार रोआं की टोपी में महफूज था। प्रोफेसर को और कुछ भी नहीं महसूस हो रहा था। वह तो बगैर किसी प्रत्यक्ष कारण के जैसे खूब जोर से हँसना चाहते थे—वैसे ही जैसे कोई अपनी सत्रहवीं वर्षगाँठ पर हँसता है। चलते चलते वह सोच रहे थे कि सब ठीक हो जायेगा, कि सब कुछ सुन्दर होगा। रेल के डिब्बे के अन्दर जो आँखें उन्होंने देखी थीं उनमें सृजन की जो ललक और झलक थी, उनमें नवयुवकों जैसी सृजनात्मक क्रियाशीलता की जो तीव्र पिपासा प्रतिबिम्बित थी भविष्य के सम्बन्ध में उनकी मुस्कराहटों में जो दृढ़ आस्था जगमगा रही थी—वह सब गारन्टी थी इस बात की कि अब सब ठीक हो जायगा। उन्होंने सोचा कि देश के सारे विश्वविद्यालय भी अगर ढेर हो जायें और सौ वर्षों का संचित सब-कुछ भी अगर मिट्टी में मिल जाय तब भी कुछ विशेष बात नहीं होगी—क्योंकि विजयी वर्ग में इतनी क्षमता, इतनी शक्ति और इतनी ठोस प्रतिभा मौजूद है कि वह सब कुछ ठीक कर लेगा, सारी कमियों को दूर कर देगा। उन्होंने स्पष्ट रूप से अनुभव किया कि जीवन और काम की तो वास्तव में अब शुरुआत हो रही थी। विज्ञान जो अभी तक केवल कुछ लोगों की ही इजारेदारी था, अब इन हजारों नये लोगों के हाथ में पहुँचने जा रहा था जिनकी आँखों में स्वप्न-द्रष्टाओं की अविजेय चमक थी। उन्होंने उन अपमानों के बारे में सोचा जिनसे उस दिन वह आहत हुए थे किन्तु वह सब अब उन्हें

डाली। उन्होंने इस सबको देखा और उन्हें लगा कि जैसे उन के कंधों से अचानक एक भारी बोझ उतर गया है। उनका हृदय शान्त हो गया। स्वयं को वह उतना ही हल्का और प्रसन्न महसूस करने लगे जितना कि अपनी बेफिक्र नौजवानी के दिनों में वह करते थे।

दरवाज़ा खुला और चेचक-दाग चेहरे वाला आदमी डिब्बे में धीरे से कूद कर फिर आ गया।

उसने कहा, 'ऐ पूँजीपति, अपनी बातलें खोलो!'

प्रोफेसर चुप बैठे रहे। एक शब्द भी नहीं बोला गया और न कोई अपनी जगह से ही हिला। उस आदमी ने आश्चर्यचकित होकर चारों ओर नज़र दौड़ाई, गन्दी गालियों की बौछार की, और बक्से की तरफ बढ़ने लगा। लेकिन दाढ़ी वाले फौजी ने अचानक हुंकार भरी, उसके नथनों से आवाज़ निकलने लगी और फिर वह एकदम खड़ा हो गया! वह अपनी पूरी दानवीय लम्बाई के साथ सीधा अकड़कर खड़ा हो गया। बकरे की रान जैसी उसकी मांसल भारी मुट्ठी कस गयी। उसे चेचक-दाग की तरफ करते हुए उसने कहा, "ज़रा कोशिश तो करो। मैं तुम्हारी गर्दन मरोड़ कर रख दूंगा, कमबख्त कहीं के!"

चेचक-दाग वाले आदमी ने अपनी पिस्तौल की पेटी की तरफ हाथ बढ़ाया, पर जैसे ही उनकी आँखें मिलीं वह हिचकिचा गया और अपने हाथ को उसने नीचे कर लिया। दूसरों की नज़र बचाते हुए चोरों की तरह उसने अपने चारों ओर के चेहरों पर दृष्टि डाली, फिर जल्दी से अपना सिर दरवाज़े की ओर मोड़ा और लपक कर चुपचाप बाहर निकल गया।

उनमें से चार लोग साथ साथ शहर की ओर गये। सड़कों पर लोगों के कपड़े उतारे जा रहे थे। उन्हें गोली से उड़ाया जा रहा था। उन लोगों ने निश्चय किया कि प्रोफेसर का अकेले बाहर जाना ठीक नहीं होगा।

बाहर बर्फ का तूफान गरज रहा था। तेज हवा आकाश में काले काले बादलों को काफी नीचे स्तर पर उड़ाये लिये जा रही थी। सूखी, पैनी बर्फ उनके चेहरों पर थपेड़े मार रही थी। वह उनकी आंखों में घुस घुस जा रही थी। उस नाविक की फटी फर लगी जाकेट में जो उन्हें ठण्ड से बचाने के लिए उसने उनके कंधों पर डाल दी थी, तथा उन भारी भरकम बड़े-बड़े फैल्ट के जूतों में जो एक दूसरे विशालकाय सिपाही ने उन्हें पहना दिये थे प्रोफेसर को ठण्ड नहीं महसूस हो रही थी। उनका सिर घुड़सवार द्वारा उन्हें दी गयी खबरेदार रोओं की टोपी से महफूज था। प्रोफेसर को और कुछ भी नहीं महसूस हो रहा था। वह तो बगैर किसी प्रत्यक्ष कारण के जैसे खूब जोर से हँसना चाहते थे—वैसे ही जैसे कोई अपनी सत्रहवीं वर्षगांठ पर हँसता है। चलते चलते वह सोच रहे थे कि सब ठीक हो जायगा, कि सब-कुछ सुन्दर होगा। रेल के डिब्बे के अन्दर जो आँखें उन्होंने देखी थीं उनमें सृजन की जो ललक और झलक थी, उनमें नवयुवकों जैसी सृजनात्मक क्रियाशीलता की जो तीव्र पिपासा प्रतिबिम्बित थी भविष्य के सम्बन्ध में उनकी मुस्कराहटों में जो दृढ़ आस्था जगमगा रही थी—वह सब गारंटी थी इस बात की कि अब सब ठीक हो जायगा। उन्होंने सोचा कि देश के सारे विश्वविद्यालय भी अगर ढेर हो जायें और सौ वर्षों का संचित सब-कुछ भी अगर मिट्टी में मिल जाय तब भी कुछ विशेष बात नहीं होगी—क्योंकि विजयी वर्ग में इतनी क्षमता, इतनी शक्ति और इतनी ठोस प्रतिभा मौजूद है कि वह सब कुछ ठीक कर लेगा, सारी कमियां को दूर कर देगा। उन्होंने स्पष्ट रूप से अनुभव किया कि जीवन और काम की तो वास्तव में अब शुरुआत हो रही थी। विज्ञान जो अभी तक केवल कुछ लोगों की ही इजारेदारी था, अब इन हज़ारों नये लोगों के हाथ में पहुँचने जा रहा था जिनकी आँखों में स्वप्न-द्रष्टाओं की अविजेय चमक थी। उन्होंने उन अपमानों के बारे में सोचा जिनसे उस दिन वह आहत हुए थे किन्तु वह सब अब उन्हें

अत्यन्त तुच्छ और क्षुद्र लग रहा था। वह स्वय लज्जित महसूस करने लगे। उन्होने अनुभव किया, उनका जीवन बेकार नही था।

वर्दी का सिर्फ फटा कोट पहने गाला की उठी हड्डिया वाला नाविक सर्दी से कापता हुआ चल रहा था और चेचक-दाग वाले डाकू को खूब भद्दी भद्दी गालियाँ दे रहा था।

ऊपर नीचे कूदते हुए और अपनी अगुलिया को गम करने के लिए झटकते हुए उसने शुरू किया, इस तरह के लोग विश्व क्रान्ति के शरीर पर कोढ के समान है। थूथन जैसी नाक वाले इस अराजकता वादी को तो देखा ! मैंने पूछा कि आखिर वह अपने आपको समझता क्या है जो इस तरह वैज्ञानिक बानला को तोड रहा है। उसने कहा वह कमिसार (जनाधिकारी) है। मैं इन अधिकारियो की कौम का बखूबी जानता हूँ—२८ मई के आदेशानुसार जब इतरा की देखभाल करने के लिए नियुक्त किये गये अधिकारी

दाढी वाला फौजी शांतिपूर्वक साथ साथ चल रहा था। जहाँ भी जमीन फिसलाऊ होती प्रोफेसर को सहारा देने के लिए वह उनका हाथ पकड लेता। वह यदा कदा ही बोलता और वह भी कठोरता भरी एक ऐसी सादगी से जसे कि कोई नस उस बच्चे से बोलती है जिसका हाथ पकड कर वह उसे कही ले जा रही हो।

"सावधानी से चलिए, धीरे-धीरे चलिए वरना आपका पर फिसल जायेगा ! ओ हो, आप तो स्वय सतक है, ठीक है, चल चलिए ।"

उनके पीछे-पीछे नीली आखो वाला वह घुडसवार सनिक नमूना के बक्से को लादे हुए चल रहा था। उसके सर पर कटोप नही था, उसके बाल गीले और उलझे हुए थ और उनके ऊपर गिरती हुई बर्फ का गाला चमक रहा था। थोडी थोडी देर म बक्से के ढक्कन को पोछकर उस पर पड़ी बर्फ को वह हटा देता था।

कुछ देर बाद चिन्तित स्वर मे उसने कहा, "दोस्तो, जरा एक

मिनट को ठहर जाओ। बस, सिर्फ एक मिनट को। मैं अपने इस लबादे को उतारकर इनके इन खटमलों को उढा दूं। कहीं उन्हें सर्दी न लग जाय।'

कमखाब का जो कोट वह पहने था उसे उतारकर उससे बक्से को चारों तरफ से अच्छी तरह उसने ढक दिया और फिर एक लम्बे गन्दे गुलूबन्द से मजबूती से उसे बाँध दिया जिससे कि उसके अन्दर ठंड न पहुँच सके।

प्रोफेसर केवल इतना ही कह सका, 'मेरे दोस्तो!' प्रोफेसर का हृदय द्रवित हो उठा और उन्हें लगा कि उनका गला भर आया है। मुश्किल से उनके मुँह से फिर निकला 'मेरे प्यारे दोस्तो'

आखिरकार वे सब प्रोफेसर के निवास-स्थान पर पहुँच गये। प्रोफेसर ने उनको घर के अन्दर आमन्त्रित करते हुए कहा, "आप लोग अब जरा अपने शरीर को गर्म कर लें। दो लोग तो अन्दर घुस गये, लेकिन दाढ़ी वाला वह फौजी मकान के दरवाजे पर ही खड़ा-खड़ा अपने पैर झाड़ता रहा। उसने अपने ओवरकोट से बक्से के ऊपर की बर्फ को पोछकर सावधानी से हटा दिया। फिर जैसे किसी को ललकारते हुए क्रोध में उसने कहा, 'अब मैं स्टेशन जाकर इनकी दूरबीन का पता लगाऊँगा। जिस डिब्बे में वे चोर बैठे थे उसे मैंने नोट कर लिया था। उन मूर्खों ने इन्हें लूट लिया, वे एकदम गधे थे। भला बताइए तो—उसे क्या कहते हैं, उसके बिना प्रोफेसर पता कैसे चला पायेंगे कि कौन चीज क्या है? यह कोई तरीका नहीं। मैं उन ठगों की हड्डी पसली एक कर दूंगा, उनकी चमड़ी तक उधेड़ दूंगा। आप लोग जानते हैं कि मैं एक शान्त स्वभाव का आदमी हूँ लेकिन जब मुझे गुस्सा आ जाता है तब यही बेहतर होता है कि कोई मेरे सामने न आये। इसी में उसकी खैर रहती है क्योंकि उस वक्त मैं बलूत के बड़े-बड़े पेड़ों तक को जड़ से उखाड़ कर फेंक देता हूँ।"

। नीली आखो वाले घुड़सवार सैनिक ने कुछ चौकन्ना होते हुए उससे पूछा, 'तो क्या अब तुम्हे गुस्सा आ गया है, क्यो ?'

महाकाय दानव जैसे उस फौजी ने उत्तर दिया "हा, अब मैं अपने आप मे नही हूँ।

किसी ने नही सुना और न कोई जानता ही है कि नये वर्ष की उस अदभुत रात्रि मे प्रोफेसर ने अपने उन विचित्र अतिथियो के साथ क्या बात की थी। किन्तु, कई घण्टे बाद जब वे उनके पास से जाने लगे और उनके घर के द्वार पर खडे होकर सम्मानपूर्वक वे उनसे हाथ मिला रहे थे तो उनके चेहरे एक असाधारण और अत्यन्त गहरी अनुभूति की ज्योति से दमक रहे थे। यह ज्योति एक महान ऐसे नये विचार की थी जिसका उन्हे जीवन मे पहली बार अहसास हुआ था। उनके चेहरे ऐसे आदमियो के चेहरो की तरह लग रहे थे जिन्होने कोई सर्वथा अनपेक्षित और महत्वपूर्ण सकल्प कर लिया था जो किसी सर्वथा नये निर्णय पर पहुँच गये थे।

लगभग दस वर्ष बाद प्रोफेसर की मृत्यु हो गयी। उनके शव को जब श्मशान घाट की तरफ ले जाया जा रहा था तब शोक के गमगीन शव यात्रा के गीत के स्वरो मे डूबते–उतराते हुए जो दो व्यक्ति उनके शव को कधो पर ले जा रहे थे वे उनके अत्यन्त नजदीकी सहायक और निजी मित्र थे। बायी तरफ नीली आखो वाला घुडसवार सेना का वह सैनिक था। वह अब भी पहले ही जैसा था, सिर्फ उसकी कनपटियो के बालो मे कुछ सफेदी आ गयी थी और माथे पर कुछ सिलवटें दिखलायी देने लगी थी। उसे तार देकर योरोप से बुलाया गया था। योरप मे जीव शास्त्रियो की एक विश्व कांग्रेस हो रही थी। वहाँ वह सोवियत सघ के एक प्रतिनिधि के रूप मे गया हुआ था और उसने वहाँ एक निबन्ध पढा था जिसकी हाल के वर्षों के सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान के रूप मे सर्व सम्मति से सराहना की गयी थी।

शव के दाहिनी तरफ गाल की ऊँची हड्डियों वाला वह पुराना

नाविक था। वह उक्राइन के एक महत्वपूर्ण शोध संस्थान का अब निदेशक था।

ककन दाढ़ी वाले और रूखे दिखनेवाले उस फौजी की कमी इस समय खटक रही थी। उसकी उस स्मरणीय रात स रेलवे स्टेशन पर हत्या कर दी गयी थी। अगले दिन उसकी लाश एक पुल के नीचे पड़ी मिली थी। वह वहाँ पड़ा था। उसने दोनों बड़े-बड़े और गंदे दीखने वाले हाथ उस अणुवीक्षक यंत्र को जिसे उसने उसके चुराने वालों से छीन कर हासिल कर लिया था—मजबूती से पकड़े हुए इस तरह छाती से चिपकाये थे जैसे कि वह कोई ऐसी चीज हो जिसे वह अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करता था।

★

शिक्षा के जनमत्री*

(१)

दरवाजे पर जल्दी-जल्दी एव माधारण ड्राइगपिन के सहारे लगा दिया गया काग़ज का एक टुकडा लटक रहा था। उसपर लिखा था

शिक्षा के जनमत्री

ए० वी० लूनाचार्स्की

मुलाक़ातियों से शनिवार को दो से छ बजे तक मिलते हैं

लेकिन वहाँ पहुँचते ही आदमी को स्पष्ट हो जाता था कि इस सूचना को लोग बहुत गम्भीरता से नही ले रहे थे। वह नोटिस टेढे मेढे रूप म वहाँ लटक रहा था, किन्तु कोई सरकारी औपचारिकता का प्रदशन वहाँ नही मिलता था। नोटिस की तरफ कोई ध्यान नही देता था। लोग जब चाहते थे तब अ दर चले जाते थे।

अनातोली वासीलियेविच—पेत्रोग्राद के सारे लोग लूनाचार्स्की को इसी नाम से जानते-पुकारते थे—मनेज्नी माग पर, लिटेनी के समीप, एक छोटे-से, बदरूप किस्म की कोठरी म रहते थे। उस कोठरी को रोजाना दजनो लोग आकर घेर लेते थे। व सब अनातोली वासीलियेविच की सलाह और सहायता के लिए आते थे।

शिक्षक, मजदूर, आविष्कारक, पुस्तकालयो के अध्यक्ष, सरकस के लोग, भविष्यवादी, हर प्रवत्ति और शली के (पुराने पेगीपटटिक-

*कमिसार। —सम्पादक

कोरनेई चुकोवस्की

लेनिन पुरस्कार विजेता कोरनेई चुकोवस्की (जन्म १८८२) की संग्रहीत रचनाओं में अत्यन्त भिन्न भिन्न प्रकार की कृतियाँ मौजूद हैं। "दो से पाँच" नामक बच्चों के लिए कहानियाँ और कविताओं की पुस्तक से लेकर नेक्रासोव के काव्य का पाडित्यपूर्ण अध्ययन तथा लेखकों, संगीतज्ञों और कलाकारों के भव्य रेखाचित्र तक उनमें एकत्रित हैं।

"समकालीनों" नामक उनकी कृति में ब्लॉक, ब्राइउसोव, रेपिन, गोर्की और मायाकोवस्की जैसे विशिष्ट व्यक्तियों के सुन्दर रेखाचित्र संकलित हैं। लूनाचार्स्की के बारे में प्रस्तुत रचना उसी पुस्तक में उद्धृत की जा रही है।

*शिक्षा के जनमंत्री**

(१)

दरवाजे पर जल्दी-जल्दी एक साधारण ड्राइंगपिन के सहारे लगा दिया गया काग़ज़ का एक टुकडा लटक रहा था। उसपर लिखा था

शिक्षा के जनमंत्री

ए० वी० लूनाचार्स्की

मुलाक़ातियो से शनिवार को दो से छ बजे तक मिलते हैं

लेकिन वहाँ पहुँचते ही आदमी को स्पष्ट हो जाता था कि इस सूचना को लोग बहुत गम्भीरता से नही ले रहे थे। वह नोटिस टेढे मेढे रूप म वहाँ लटक रहा था, किन्तु कोई सरकारी औपचारिकता का प्रदर्शन वहाँ नही मिलता था। नोटिस की तरफ कोई ध्यान नही देता था। लोग जब चाहते थे तब अ दर चले जाते थे।

अनातोली वासीलियेविच—पेत्रोग्राद के सारे लोग लूनाचार्स्की को इसी नाम से जानते-पुकारते थे—मनेज्नी माग पर, लिटेनी के समीप, एक छोटे-से, बदरूप किस्म की कोठरी मे रहते थे। उस कोठरी को रोजाना दजनो लोग आकर घेर लेते थे। वे सब अनातोली वासी लियेविच की सलाह और सहायता के लिए आते थ।

शिक्षक, मजदूर, आविष्कारक, पुस्तकालयो के अध्यक्ष, सरकस के लोग, भविष्यवादी, हर प्रवृत्ति और शैली के (पुराने पेरीपटटिक–

*कमिसार। —सम्पादक

(विचरणशील) दल के लोगों से लेकर घनवादियों तक के) चित्रकार, दार्शनिक, संगीत-नाट्यों के नर्तक और नर्तकियाँ, सम्मोहन विद्या वाले हिप्नोटिस्ट, गायक, प्रोलेतकुल्त आन्दोलन से सम्बन्धित कवि तथा पुराने शाही थियेटर के साधारण कवि और कलाकार—ये सब के सब अनातोली वासीलियेविच की दूसरी मंजिल की उस कोठरी की गन्दी सीढ़ियों से चढ़कर ऊपर जाते थे। उनका अन्तहीन ताँता लगा रहता था। अन्त में उनकी उस छोटी कोठरी को लोगों ने "स्वागत कक्ष" कहना शुरू कर दिया था।

यह बात १९१८ की है। कुछ ही दिनों बाद दरवाजे पर लगे कागज की जगह एक दूसरा नोटिस लटका दिया गया जो बहुत रोबीला लगता था। उस पर लिखा था

शिक्षा के जनमंत्री

ए० वी० लूनाचार्स्की

मुलाकातियों से शरद प्रासाद में (अमुक-अमुक दिनों पर) और शिक्षा के जन मंत्रालय में (अमुक अमुक दिनों पर) मिलते हैं

यहाँ पर मुलाकातियों से नहीं मिला जाता।

लेकिन इससे भी किसी पर कोई असर नहीं पड़ा। सुबह के नौ बजते-बजते "स्वागत कक्ष" खचाखच भर जाता। लोग कमरा में पड़े फटे-पुराने सोफे पर, खिड़कियों के पास वाली खाली जगहों पर और रसोई घर से खींच लाये गये स्टूलों पर बैठ जाते।

उनसे जो अनेक लोग मिलने आते थे उनमें से कुछ की तो मुझे विशेष रूप से अच्छी तरह याद है। जैसे कि।

वसेवोलोद मेयरहोल्ड वह अब भी नौजवान जैसे लगते थे, बगैर दाढ़ी बनाये, उत्तेजित और अत्यन्त जल्दी में ऐसे आते थे जैसे कि अभी अभी किसी तूफानी कारखाने के शोरो गुल और झगड़े से निकल कर सीधे वहाँ आ पहुँचे थे

व्लादीमीर बख्तरेव—यह प्रसिद्ध मनश्चिकित्सक थे जो दाढी रखे थे और मोटे मोटे उनीदे-से लगते थे। उनका चेहरा किसाना जैसा भारी था,

मपिलबाम यह फाटोग्राफर थे, झगडालू किस्म के, किन्तु मिलनसार। वह क्लासागे वाला ढीला-ढाला मखमल का कुरता पहन रहते थे,

मिखाइल निकोलायेविच चर्नीशेव्स्की के सुपुत्र थे, जो अल्पभाषी और गठीली बनावट के थे। उनके मोटे मोटे हाथ कुछ भारी भारी चमकीले लाल रग की किताबो को बडे चाव स सहला रहे थे। इन पुस्तको म उनके महान पिता की रचनाएँ थी। उनके बारे म जनमन्त्री (जन कमिसार) से बात करने वह आये थे,

अकादमीशियन ओल्डेनबुग जो छोटा-सा विद्यार्थियो जैसा कोट पहन थे। वह बहुत नाटे कद के थ और उनका कोई विशेष राब नही पडता था, लेकिन वह छोट बच्चो की तरह उल्लसित दिखलायी पडत थे,

आयरोनिम-आयरोनिमिच यासिन्सकी जो उपन्यासकार थ। उनका नाक नक्शा बहुत सुगढ और प्रभावशाली था और अपनी सुरम्य घनी भौंहो, श्वत बालो से आच्छादित सर तथा छोटी छोटी चुम्त और चिक्नी आँखो के साथ अपनी वृद्धावस्था मे भी वह भव्य लगत थ,

यूरी अनेन्कोव जो कलाकार थे (सब लोग उन्हे यूराचका के नाम से जानते थे)। वह सवव्यापी, जिन्दादिल और प्रतिभा-शाली थ,

एलेक्जेण्डर क्यूगेल थियेटर के जबदस्त प्रेमी और कला पारखी थ। वह आलोचको के भूतपूव बादशाह थे। वह मजाकिया, घुघराल बालो वाले और गन्दे थे। उनकी थकी हुइ, दुख की मारी आँखो मे एक स्नेहहीन और व्यग्यपूण मुस्कराहट झलकती रहती थी,

वे सब सलाह और सहायता के लिए अनातोली वासीलियेविच के पास आते थे और, उस नन्ही-सी छोटी कोठरी मे अकेले बैठे बैठे वह

ढर एक का इतनी हार्दिकता और दिलचस्पी के साथ अभिनन्दन करते थे जैसे कि बहुत दिनो से वह उसी व्यक्ति के बारे में सोचते रहे थे और इस बात की तलाश में थे कि मौका मिल जाय तो उसके साथ विचार-विमर्श कर लें और आवश्यक हो तो, बहस भी कर लें।

मेरे साथ तो मेरे मुह खोलते ही उन्होंने बहस करना शुरू कर दिया था। उन्होने कहा,

'तुम भारी भूल कर रहे हो। सारे वक्त तुम अपने ह्विटमैन का ही गुणगान करते रहते हो क्योंकि उन्हे जनतन्त्र का कवि* समझा जाता है। जनतन्त्र है क्या ? अधकचरापन, मेहनतकशो को धोखा देने के लिए तैयार की गयी एक धूर्ततापूर्ण टट्टी ! सम्पत्ति के छोटे स्वामियो का गणतन्त्र ! नही ह्विटमैन ।

कूदकर वह एक नौजवान की तरह खडे हो गये और कमरे में चहलकदमी करते हुए और अमरीका के "जनतन्त्र के गायक" के सम्बन्ध में अपनी धारणाओ को व्यक्त करने लगे। उनका तेज और विश्वास से भरपूर भाषण बिना रत्ती भर भी हिचकिचाहट अथवा रोक टोक के धारा प्रवाह रूप से चलता रहा। एक कलाकार जैसी तेजस्विता से, सर्वथा सहज और उन्मुक्त भाव से, शब्दो और चित्रो को वे गढते और व्यक्त करते जाते। जल्दी ही उन्होने "आत्मा की ज्योतिर्मयता", "ब्रह्माण्ड की स्थापत्य कला" "मानवीय इच्छाओ का विलयन" जैसी कलात्मक अभिव्यक्तियो का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया। किन्तु यह अतिशयोक्तिपूर्ण भाषण भी अनातोली वासीलियेविच के मुह से अच्छा लगता था, उनकी सुरीली आवाज और उनके सम्पूर्ण वाङ्मय और प्राञ्जल व्यक्तित्व पर यह सब खूब फबता था। बिना किसी प्रयास के वह कविताओ के उद्धरण देते जाते थे—केवल वॉल्ट

---

*इससे कुछ ही दिन पहले महान अमरीकी कवि वाल्ट ह्विटमन के सम्बन्ध में मैंने एक पुस्तक प्रकाशित की थी।

ह्विटमैन की कविताओ के नही, बल्कि वरहेरेन, ब्यूतचेव और जूल्म रामेन्स की कविताओ के भी। उन्हें बहुत सी कविताएँ कण्ठस्थ थीं—तीन चार भाषाओ में, और उन्हें सुनाने म उन्हें आनन्द आता था। वह किंचित नाटकीय ढग से बहुत मजा लेते हुए उनका पाठ करते थे।

उनका स्वर उच्च से उच्चतर होता गया। ऐसा मालूम पडने लगा जैसे कि वह किसी मच से एक बडी भीड के सामने भाषण दे रहे हैं। और यह सोच सोच कर कि उनकी इस ओजस्वी वक्तृत्व कला का व्यय केवल मेरे ऊपर हो रहा था मैं परेशानी महसूस करने लगा।

फिर भी वाल्ट ह्विटमैन के काव्य के सम्बन्ध मे लूनाचार्स्की ने जो व्याख्या की उसे पूरे तौर से मै स्वीकार न कर सका। जब मैंने उनसे कहा तो मुझे बुरा लग रहा था, किन्तु मुझे अच्छी तरह याद है कि, मेरी आपत्तियो को उन्होने धैर्य पूवक और ससम्मान सुना था। मेरी बातो का उन्होंने बुरा नही माना। मेरी आपत्तियाँ थोडी और असम्बद्ध थी, किन्तु उन्होने अत्यन्त स्नेहभाव से मेरे विचारों का विश्लेषण किया और उन्हें स्पष्ट रूप से व्यक्त करने मे मेरी सहायता तक की। उसके बाद फौरन उन्होने उनका खण्डन किया।

फिर अचानक उन्होने अनुभव किया कि देर हो गयी थी और स्वागत-कक्ष मे अब भी बहुत से लोग बैठे इन्तजार कर रहे थे। उन्होंने दरवाजा खोला और मेयरहोल्ड को अपने अध्ययन कक्ष मे बुला लिया। मेयरहोल्ड के साथ वे घण्टो तक-वितर्क करते थे—कभी कभी तो, थोडे बहुत व्यवधानो के साथ, यह सिलसिला बहुत-बहुत रात तक चलता रहता था।

तय हुआ कि अपनी बहस को पूरा करने के लिये कुछ दिन बाद दोबारा मैं उनके पास आऊँ। सारी बहसा बहसी का निष्कर्ष यह निकला कि मैंने अनातोली वासीलियविच से अनुरोध किया कि ह्विटमैन के ऊपर लिखी गयी मेरी पुस्तक के नये सस्करण के लिए वम

से कम एक छोटा-सा लेख वह लिख दें। मन्त्रियो-जसी किसी भी प्रकार की शर्तों के बिना वह खुशी खुशी सहमत हो गये। उन्हें इस बात पर कोई आपत्ति नही थी कि अमरीकी कवि की रचनाओं के विषय में उनके विचारो के साथ-साथ उनसे सर्वथा भिन्न विचार भी प्रकाशित किये जायें।

"लेख परसो तक तैयार हो जायगा। उन्होंने अपनी घडी पर नजर डाली और बोले, परसो चार बजे शाम तक।"

मैं जानता था कि अक्सर वह दिन में बीस बीस घण्टा काम करते थे। कभी कभी खाना खाना भी वह भूल जाते थे और हफ्तो तक पूरी नींद नही सोते थे। उनका सारा समय सम्मेलनो, मुलाकातियो लेक्चरो और सभाओ में दिये जाने वाले भाषणो में चला जाता था (केवल पत्रोग्राद में ही नही, बल्कि कौसदात, सस्त्रोरेत्स्क तथा, मेरा खयाल है, अन्य स्थानो में भी उनके भाषण होते रहते थे। निश्चित समय पर जब मैं उनके पास पहुँचा तो मुझे यकीन था कि लेख तैयार नही होगा। परन्तु मैंने सुना कि बन्द दरवाजे के अन्दर उनके अध्ययन कक्ष से टाइपराइटर के ज़ोर ज़ोर से चलने की आवाज आ रही थी। और जब उन सुपरिचित शब्दो का स्वर ('आत्मा की ज्योतिमयता, ब्रह्माण्ड की स्थापत्यकला, 'एक अविच्छिन्न एकात्मता में एक असाधारण स्वर") मेरे कानो में पडा तो मैं समझ गया कि अनातोली वासीलियेविच उसी लेख को लिखवा रहे थे। वह बिना रुके लिखाते चले जा रहे थे और उनकी गति इतनी तीव्र थी कि मेरे अन्दर पशेवर ईर्ष्या का भाव जाग उठा।

लेख ठीक समय से पूरा हो गया होता, लेकिन कमरे में आने वाले लोगो का ताँता लगा हुआ था और उससे बाधा पडती थी।

वह हर एक की बात को ध्यानपूर्वक सुनते थे और अगर उन्हें लगता कि आगन्तुक व्यक्ति कोई अच्छा सुझाव दे रहा है तो टाइप करने वाले को ह्विटमैन सम्बन्धी उनके अपूर्ण लेख को टाइपराइटर में

निकाल कर हर बार और विद्युत जैसी तेजी से अनातोली वासीलियेविच के प्रशासकीय आदेशो, निर्देशो, आज्ञाओ तथा अनुरोधो को टाइप करना पडता था। अनातोली तुरन्त, बिना और विचार किये हुए, उनपर दस्तखत कर देते थे। किन्तु ज्योही आगतुको की बाढ घटने लगती त्योही टाइप करने वाला फिर लेख के अधूरे पृष्ठ को टाइपराइटर पर चढा देता और अनातोली वासीलियविच ठीक उसी शब्द स जिस पर लेख रुक गया था फिर उसी प्रवाह और उसी स्वर सतुलन के साथ लख को लिखाना शुरू कर देते।

टाइपिस्ट शिकायत करता था कि पिछले दिनो अखबारो के लिए वह इसी तरह लिखते आये थे। लिखने के बीच-बीच मे छोटे छोटे रोजमर्रा के मामले सामने आ जाते थे और उनकी चपेट मे बडे-बडे सैद्धान्तिक विचारधारात्मक प्रश्न उपेक्षित हो जाते थे। लकिन मैं देखता था कि इससे उन्हे कोई परेशानी नही होती थी, कोई खास बोझ उनपर नही पडता था। उनके काम का असाधारण पहलू उस समय (पेत्रोग्राद मे, १९१८ मे) यह था कि, राष्ट्रीय तथा यहाँ तक कि विश्व महत्त्व की व्यापक समस्याओ का समाधान निकालते हुए भी, उन्हें अनगिनत छोटी छोटी और तुच्छ समस्याओ से भी जूझना पडता था। उदाहरण के लिए, किसी बूढी अभिनेत्री के घर के लिए जडीकृत अम्ल-बदरियाँ मोहय्या करने अथवा ओख्ता मे स्थित बाल गृह के लिए पैरो म पहनने के कपडो का बन्दोबस्त करना जसे काम भी उनके जिम्मे थे।

युद्ध द्वारा तबाह कर दिये गये देश के ठिठुरते और भूखे जीवन की अनातोली वासीलियेविच से यह अपेक्षा थी कि बडे और छोट कामो के बीच वह निरन्तर ताल-मेल बैठाते रहे और चूकि उनकी समस्त चिन्ताओ और परेशानियो के बीच, छोटी-सी छोटी चिन्ताओ और परेशानियों के बीच भी उनके सामने एक महान लक्ष्य था—अक्तूबर क्रान्ति की उपलब्धियो को सुगठित और सुदृढ बनाने का लक्ष्य, नयी,

अभीतक अनात, सोवियत सस्कृति के जन्म और विकास म हर प्रकार से सहायता करने का लक्ष्य इसलिए रोजमर्रा के जीवन की तुच्छ से तुच्छ चीजो को भी ठीक करने की वह खुशी खुशी कोशिश करते थ और इस काम को भी उसी उदात्त लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किया गया सेवा काय समझते थे।

मेरे पास अब भी अनानोली वासीलियेविच द्वारा लिखे गये उस समय के कुछ पत्र और टिप्पणियाँ है। उनमे से प्रत्येक उसी प्रकार की "तुच्छ चीजो" के सम्बन्ध मे है जो, अपनी क्षुद्रता के बावजूद, सोवियत सस्कृति के निर्माण के विशाल काय मे सहायता पहुँचाने वाली थी (और जिन्होने सहायता पहुँचाई भी थी!)।

उनमे से एक, जो उनकी काय-पद्धति का एकदम ठेठ नमूना है यह है। कागज के दायें हाथ की तरफ एक स्तम्भ मे निम्न वजनदार शब्द छपे है

रूसी सघीय सोवियत गणतन्त्र

गणतन्त्र के सम्पत्ति विभाग का

जन मन्त्रालय

पीटसबग खण्ड

१२ जूलाई, १६१८

क्रम सख्या १५०१

पीटसबग

शरद प्रासाद

इन शब्दों के नीचे रबड की मोहर लगी है जिसमे लिखा है

रूसी गणतन्त्र। मजदूरा और किसानों की सरकार। शिक्षा जन-मन्त्रालय। कला विभाग।

कागज के दाहिन तरफ निम्न पक्तियाँ लिखी हैं

सेवा में साथी कोर्नेई इवानोविच चुकोवस्की ।

प्रिय साथी,

आप साथी पुनी द्वारा लिखी गयीं बाल कथाओं से भली-भांति परिचित हैं। मेरी आप से प्रार्थना है कि लिखित रूप से अपने सुयोग्य मत से इस विषय में आप मुझे अवगत करा दें कि यह सामग्री राज्य प्रकाशन गृह द्वारा प्रकाशन के योग्य है या नहीं ।

ए० लूनाचार्स्की

जन मन्त्री

जिन लोगो को उस असाधारण समय का ज्ञान नही है वे कदाचित आश्चय कर सकते है कि क्रांति के उस दुधर्ष सदर दफ्तर के एक नेता के लिए एक अज्ञात युवा लेखक द्वारा बच्चों के लिए लिखी गयी किन्ही कहानियों मे दिलचस्पी लेना कहाँ तक तक संगत था। किन्तु, जैसा कि पत्र की भाषा से देखा जा सकता है, अनातोली वासीलियेविच इस संदभ मे भी एक छोटेसे प्रश्न की ओर इसलिए इतना ध्यान दे रहे थे क्योंकि वह जानते थे कि उससे भी महान काय भारी को पूरा करने मे मदद मिलेगी। जल्दी जल्दी लिखे गये उनके उस छोटे-से पत्र को अगर कोई अधिक गहराई से जाँचे तो वह देखेगा कि भावी सोवियत संस्कृति के दो महत्वपूर्ण साधना के सम्बन्ध म उन्हें कितनी हार्दिक चिन्ता थी। एक तरफ तो उन्हें राज्य प्रकाशन गृह की फिक्र थी जो उस समय तक केवल बीज रूप मे ही कायम हो सका था और आगे भी एक साल तक कुछ करने म असमर्थ रहा था, और, दूसरी तरफ, उन्हें सोवियत बच्चो के लिए उस बाल साहित्य के प्रकाशन की चिन्ता थी जो उस समय तक अजन्मा ही था।*

*"राज्य प्रकाशन गृह" की स्थापना के सम्बन्ध मे अखिल रूसी केन्द्रीय कायकारिणी समिति ने १९ मई, १९१९ को फैसला किया था।

'आज, जब कि हमारे राजकीय प्रकाशन गृहो ने प्रौद्योगिकी, विज्ञान और कला की तमाम शाखाओ के सम्बन्ध म हजारो प्रथम श्रेणी की, और अक्सर तो शास्त्रीय श्रेणी की, कृतियाँ प्रकाशित करके श्रेय अर्जित कर लिया है और जबकि बच्चो क हमारे साहित्य का जैसे अपना एक अलग राज्य ही कायम हो गया है और उसन सारे ससार म मान्यता प्राप्त कर ली है—समय की गति के कारण पीले पड गये कागज के इस टुकडे को देखकर इन्सान प्रभावित हुए बिना नही रह सकता। पीला पड गया यह पत्र उस समय की कहानी की स्मृति को ताज़ा कर देता है जिस समय कि गोसिज्दात जैसा विशालकाय प्रकाशन गह इतना छोटा और अज्ञात था कि शिक्षा के प्रथम जनमत्री को उसे जीवित रखने के लिए भी हर सम्भव प्रकार से प्रयास करना पडता था, और बच्चो के प्रकाशन गह, देतिज्द का तो तब तक कल्पना मे भी जन्म नही हुआ था।

इस प्रसग मे यह भी कह दू कि, राज्य की आवश्यकताओ के अतिरिक्त भी *अनातोली वासीलियेविच, जो कि स्वभाव से एक* कलाकार थे, किसी अच्छी परीकथा, गीत, नाटक, अथवा बच्चो की आनन्ददायी किसी तुकबन्दी को लेकर आसानी से उत्साह से भर उठते थे। इसम उनका कोई स्वार्थ नही होता था। किसी भी चित्रकार की साधारण सी कृति का, हर कविता और सगीत की हर धुन का—यदि उसम जरा भी प्रतिभा दिखलायी देती थी—वह पूरी सहानुभूति और उत्साह से स्वागत करते थे। कलाकार या रचनाकार के प्रति व दिल स आभार व्यक्त करते थे। मैंने उन्हे कवि ब्लोक की कविता "प्रतिशोध का पाठ उन्ही के मुँह से सुनते देखा था। मैंने देखा था कि वह मायाकोव्स्की की रचनाओ को कैसे सुनते थे। मैंने उन्हे एक नाटककार का, जिसे मैं नहीं जानता था पद्य म लिखे गये एक ऐतिहासिक नाटक को भी सुनते हुए देखा था। जिस तरह वह किसी कवि की रचनाओ

को सुनन थे उस तरह केवल कोई कवि ही सुन सकता है। ऐसे क्षणा मे उन्हे देखन मे मुझे बहुत आनन्द आता था। उस समय उनकी सारी भाव भगिमा स, उनके सर के मुडने से, जिस तरह अचानक वह एक तरुण जैसे बन जाते थे उससे, जिस तरह वह अपने पुष्ट कधो को सीधा करत थे, या आतुर भाव से अपनी पतली पतली अँगुलियो से अपन कोट के छोरो को मोडते मरोडते थे और सुनन वाल व्यक्ति की तरफ स्नेह भाव से देखते थे—उस सबस उनका कला प्रेमी रूप उभर कर स्पष्ट रूप से सामने आ जाता था।

कला के सारे रूपो मे लूनाचार्स्की को सबसे अधिक पसन्द थियेटर था। उस वह चित्रकारिता से अधिक, सगीत स अधिक और कविता स भी अधिक पसन्द करते थे। थियेटर मे वह कभी उदासीन नही बैठ सकते थे—या तो वह आह्लाद से भर जाते, या रुष्ट हो जाते, या हर्षोन्मत्त हो उठते, और, वह चाहे कितने भी व्यस्त होते, थियेटर के किसी भी शो को, चाह वह रद्दी ही क्यो न हो, वह हमेशा अन्त तक देखते थे।

गार्की, आन्द्रीयवा और ब्लोक के प्रभाव से प्रसिद्ध सगीतज्ञ और हास्य कलाकार मोनाखाव ने जब नाटको मे काम करना शुरु कर दिया और शिलर के नाटक "डौन कारलोस" मे (१९१९ मे, पेत्रोग्राद मे) बादशाह फिलिप की भूमिका अत्यन्त मनोवैज्ञानिक तथा सूक्ष्म अन्तदृष्टि के साथ अदा की तो खेल के खतम होते ही उनसे मिलन लूनाचार्स्की अविलम्ब परदे के पीछे पहुँच गये। मोनाखाव अभी तक अपना मेकअप भी नहा साफ कर पाये थे कि लूनाचार्स्की उनके पास पहुँच गये और रग रोगन से पुते उनके मस्तक पर उन्होने उन्हे चूम लिया। मोनाखोव आम तौर स रूक्ष और सकोची स्वभाव के व्यक्ति थे। जनमती के इस प्रकार के आवेग पूण अभिनन्दन से वह और भी सकोच मे पड गये और उनका हृदय द्रवित हो उठा।

रंगमंच से सम्बन्धित किसी व्यक्ति के नाम इस तरह के युद्ध-मनोचित उत्साह और उत्कटता से भरे पत्र वही लिख सकता है जो स्वयं भी थियेटर का हार्दिक उपासक हो।

[२]

लूनाचार्स्की का विश्वास था कि राज्यसत्ता के प्रतिनिधि की हैसियत से उनका यह कर्तव्य था कि कलाओं में लगे हुए लोगों के प्रति जो लोग सृजनात्मक ढंग से सोचते हैं उनके प्रति, वे एक सहानुभूतिपूर्ण सक्रिय तथा कोमल स्नेहभाव रखें। इस विचार को लारीसीर मायाकोव्स्की की स्मृति में लिखे अपने एक लेख में अत्यन्त स्पष्टता के साथ उन्होंने व्यक्त किया था। कवि की मृत्यु के अवसर पर बोलते समय उन्होंने निम्न स्वीकारोक्ति की थी "हम सब मार्क्स की तरह नहीं हैं जो कहा करते थे कि कवियों को बहुत प्यार-दुलार की आवश्यकता होती है। इस बात को हममें से सब नहीं समझते, ठीक उसी तरह जिस तरह कि हममें से सब इस बात को नहीं समझ पाये थे कि मायाकोवस्की को बेहद प्यार-दुलार की आवश्यकता थी।"

जहाँ तक उनका स्वयं का सम्बन्ध था, उन्होंने अक्तूबर के प्रथम दिनों से ही मायाकोवस्की को खूब 'प्यार दुलार' दिया था। वह उनके प्रचारक, उनके पतिरक्षक, उनके व्याख्याकार और उनके मित्र थे। १९१८ में अक्सर मैं उन्हें साथ साथ देखता था। हो सकता है कि ऊपर से देखकर कुछ लोगों ने सोचा हो कि मायाकोवस्की को किसी प्रकार के 'प्यार-पुचकार' की जरूरत नहीं थी। उनमें नौजवानों जैसा एक अक्खड़पन था वह एकदम स्वतन्त्र चेता थे और इन चीजों का ढिठाई से प्रदर्शन करते थे। इस बात को समझने के लिए लूनाचार्स्की जैसे व्यक्ति की गहरी सम्वेदनशीलता की जरूरत थी कि मायाकोवस्की के समस्त प्रदर्शन के पीछे 'स्नेहशीलता और प्रेम की एक जबदस्त भूख, अत्यधिक

थियटर के सम्बन्ध में अनातोली वासीलियविच के युव-जन जैसे भावपूर्ण उत्साह का अगर और भी अधिक अभिव्यंजनापूर्ण और रंगीन उदाहरण कोई देखना चाहता है तो उसके लिए उनके उस छोटे-से पत्र को पढ लेना ही काफी होगा जो मृत्यु शैय्या पर पडे यास्तानगोव के नाम उन्होंने लिखा था। अनातोली वासीलियविच ने रंग मंच के उस महान कलाकार द्वारा पेश किये गये "राजकुमारी तुरान्दोत' के प्रथम प्रदर्शन को देखा था और उसी के प्रभाव के अन्तर्गत यह पत्र उन्होंने उन्हें लिखा था

प्रिय, एवजेनी वगरानियोवनोविच,

इस समय मुझे एक अत्यन्त विचित्र सी अनुभूति हो रही है। मेरे हृदय को आपने एक ऐसे अदभुत निरभ्र, उद्दाहपूर्ण और सगीत मय समारोह की भावना से आप्लावित कर दिया है और इसी समय मुझे यह भी मालूम हुआ कि आपकी तबियत ठीक नहीं है। आप हमारी अत्यन्त प्रिय और सर्वतोमुखी प्रतिभा हैं, आप स्वस्थ हो जाइए। आप के दवी गुण इतने विविधतापूर्ण, इतने काव्यमय, इतने अगाध हैं कि हम सब आपको प्यार करते हैं, हम सबको आप पर अभिमान है। आपके जितने भी नाट्य मैंने देखे हैं वे सब अत्यन्त उद्दीपक हैं और बहुत आशा पदा करते हैं। सोचने के लिए मुझे आप थोडा समय दें। आपके विषय मे जल्दबाजी मे नहीं मैं कुछ लिखना चाहता। किन्तु मैं "वाख्तानगोव" के विषय मे जरूर लिखूंगा। मात्र एक रेखा चित्र नहीं, बल्कि उन सब चीजों के बारे मे जो जनता को देकर आपने मुझे दी हैं। जल्दी अच्छे हो जाइए। मेरी सारी शुभ कामनाएँ आप के साथ हैं। आप की सफलता पर आपको बधाई। आप से मैं बडी बडी और असाधारण चीजों की अपेक्षा करता हूँ।

आपका
सूनाचास्की

रगमच स सम्बधित किसी व्यक्ति के नाम इस तरह के युव-जनोचित उत्साह और उत्कटता से भरे पत्र वही लिख सकता है जो स्वय भी थियेटर का हार्दिक उपासक हो।

[२]

लूनाचार्स्की का विश्वास था कि राज्यसत्ता के प्रतिनिधि की हैसियत से उनका यह कतव्य था कि कलाओ म लग हुए लागा के प्रति, जो लोग सृजनात्मक ढग से सोचते ह उनके प्रति व एक सहानुभूतिपूण, सक्रिय तथा कोमल स्नेहभाव रखें। इस विचार को लादीमीर मायाकोव्स्की की स्मृति म लिखे अपन एक लेख मे अत्यन्त स्पष्टता के साथ उन्होने व्यक्त किया था। कवि की मृत्यु के अवसर पर बोलते समय उन्होने निम्न स्वीकारोक्ति की थी हम सब मार्क्स की तरह नहीं हैं जो कहा करते थे कि कवियो को बहुत प्यार-दुलार की आवश्यकता होती है। इस बात को हमम से सब नही समझते, ठीक उसी तरह जिस तरह कि हममे से सब इस बात को नही समझ पाये थे कि मायाकोवस्की को बेहद प्यार दुलार की आवश्यकता थी।'

जहाँ तक उनका स्वय का सम्बध था, उन्होने अक्तूबर के प्रथम दिनो से ही मायाकोवस्की को खूब 'प्यार दुलार दिया था। वह उनके प्रचारक, उनके प्रतिरक्षक, उनके व्याख्याकार और उनके मित्र थे। १९१८ मे अक्सर म उन्ह साथ साथ देखता था। हो सकता है कि ऊपर से देखकर कुछ लागो न सोचा हो कि मायाकोवस्की को किसी प्रकार के 'प्यार-पुचकार' की जरूरत नही थी। उनमे नौजवानो जसा एक अक्खडपन था, वह एकदम स्वतन्त्र चेता थे और इन चीजो का ढिठाई से प्रदशन करते थे। इस बात को समझने के लिए लूनाचार्स्की जैसे व्यक्ति की गहरी सम्वेदनशीलता की जरूरत थी कि मायाकोवस्की के समस्त प्रदशन के पीछे "स्नहशीलता और प्रेम की एक जबदस्त भूख, अत्यधिक

अंतरंग सहानुभूति की जबदस्त भूख समझे जाने और कभी-कभी तसल्ली दिये जाने मे प्यारे-पुचकारे जाने की ख्वाहिश' छिपी हुई थी। लूनाचार्स्की ने कहा था "धातु की उस ऊपरी पत के नीचे जिसमे कि एक पूरी दुनिया प्रतिबिम्बित थी एक ऐसा धड़कता हुआ दिल था जो न केवल जल रहा था, जो न केवल अत्यन्त मृदुल था, बल्कि जो बहुत नाजुक और आसानी से घायल हो जाने वाला भी था।"

उस नाजुक और आसानी से घायल हो जाने वाले दिल की अपनी शक्ति भर हिफाजत करके लूनाचार्स्की ने सोवियत संस्कृति की महान सेवा की थी।

कवि और जनसेवी के आपसी सम्बन्ध सर्वथा प्रतिबन्ध मुक्त, खरे सिद्धान्तनिष्ठ तथा सीधे थे। और ऐसा लगता था कि उनके अंतर्गत (किसी भी तरफ से) किसी प्रकार की स्नेह-शीलता की गुंजायश नहीं थी। उदाहरण के लिए, अनातोली वासीलियेविच से इस बात को मायाकोवस्की कभी नही छिपाते थे कि, यद्यपि एक ओजस्वी आलोचक के रूप मे वह उनका (लूनाचार्स्की का) बहुत सम्मान करते थे, किन्तु उनके नाटकों और उनकी कविताओं का वह बहुत निम्न स्तर का मानते थे। कुछ समय बाद अपनी इस राय को मायाकोवस्की ने सार्वजनिक रूप से भी व्यक्त किया था। १९२० मे मास्को के "प्रेस हाऊस' म लूनाचार्स्की की इन रचनाओं के सम्बन्ध मे एक चर्चा हुई थी। वर्जे तसव अध्यक्षता कर रहे थे। चर्चा ने निर्मम आलोचना का रूप ले लिया था। *मायाकोवस्की समेत जिन लोगो ने भी उसमे भाग लिया* उन सबने, एक के बाद एक, सम्पूर्ण एकता के साथ पूरे चार घण्टे तक लूनाचार्स्की के नाटकों की निन्दा और भर्त्सना की थी।

अनातोली वासीलियेविच "मंच पर बैठे रहे और चार घण्टे तक अपने नाटकों के विरुद्ध सर्वथा संहारात्मक आलोचनाओं को सुनते रहे।' कुछ वर्षों के बाद इस घटना को याद करते हुए मिखाइल कोल्तसोव ने लिखा था, 'लूनाचार्स्की उन सबको चुपचाप सुनते रहे और

इस बात की कल्पना करना भी कठिन था कि उन अभियोगो के अम्बार का व क्या जवाब देंगे। अना तोली वासीलियविच बोलने के लिए जब खडे हुए तब लगभग आधी रा बीत चुकी थी। फिर क्या हुआ ? वह ढाई घण्ट तक बोलते रहे और सभा क ा स एक भी अादमी बाहर नही गया, किसी ने हिलने डुलने तक का नाम नही लिया। एक अत्यन्त विलक्षण भाषण म उन्होंने अपने नाटका का पक्ष पोषण किया और अपने विरोधियो के अलग अलग व्यक्तिगत रूप म और सबको मिलाकर सामूहिक रूप से भी, पैर उखाड दिये।

लगभग तीन बजे सुबह उनके भाषण का जब अन्त हुआ तो समस्त श्रोता, जिसमे कि लूनाचार्स्की के कटु मे कटु विरोधी भी शामिल थ उठकर खडे हो गये और ऐसे विजयोल्लास के साथ उन्होंने उनका अभिनन्दन किया जैसा कि "प्रेस गृह' म इससे पहले कभी नही देखा गया था ।'

उस स्मरणीय वाद विवाद के समय मैं मौजूद नही था, किन्तु उसके ताजे प्रभाव के अन्तगत उसके बारे मे प्रशसा से भरे मायाकोवस्की ने पेत्रोग्राद मे मुझसे जो कुछ कहा था उसे मैं भूल नही सकता।

'लूनाचार्स्की ईश्वर की तरह बोल थ।"—यही मायाकोवस्की के वास्तविक शब्द थ। आगे उन्होंन जोडा था, 'उस रात लूनाचार्स्की जीती जागती एक महान प्रतिभा बन गये थे।" उस रात की चर्चा के बाद लूनाचार्स्की मिखाइल कोल्तसाव के साथ बाहर सडक पर निकल गय थ।

कोल्तसोव ने बाद मे उस रात की बात का याद करते हुए कहा था मैं यह जानने के लिए उत्सुक था कि उस थकाने वाली लडाई से उन्हे क्या मिला था, किन्तु उन्होंने एकमात्र जो बात कही वह यह थी, 'आपने ध्यान दिया, मायाकोवस्की उदास लग रहे थे ? क्या आपको कुछ मालूम है कि उन्हे किस चीज़ की परेशानी है ?'" फिर

चिन्ता भरे स्वर मे उन्होंने मुझसे कहा "मुझे जाकर उनसे मिलना होगा और उन्हे प्रसन्न करने की कोशिश करनी होगी।' इसी प्रसग म यह भी बतला दू कि चर्चा की उस रात अपने तर्कों के प्रवाह मे बहकर मायाकोवस्की न लूनाचार्स्की के नाटको पर विशेष रूप से तीक्ष्ण प्रहार किया था।

जिन घटनाओ का मैंने अभी उल्लेख किया है ये तो बाद मे तब घटित हुई थी जब अनातोली वासीलियविच मास्को चले गये थे। किन्तु मैंने उन्हे १९१८ मे पेत्रोग्राद मे सावजनिक सभाओ म भाषण देते हुए सिर्फ तीन या चार बार ही सुना था—इससे अधिक नही परन्तु इस बात को समझने और अनुभव करने के लिए इतना भी काफी था कि उनके अन्दर प्रचारक, वक्ता और मौके पर, बिना किसी तयारी के, बोल लेने की कितनी जबदस्त प्रतिभा और क्षमता थी। मैंने उनकी जितनी भी स्पीचें (पत्रोग्राद म और, बाद म, मास्को म) सुनी थी वे सब शब्द के पूर्णतम अथ मे स्वयस्फूत थी। मुझे याद है कि १९१८ की वसन्त ऋतु के आरम्भ मे गोर्की से मिलने के लिए वह पेत्रोग्राद जिला जाना चाहते थे।

ड्राइवर स उन्होंने कहा, "क्रोनवक्सकी माग की तरफ चलो।

गोर्की क्रोनवक्सकी माग पर रहते थे और अनातोली वासीलियविच उन दिनो उनस मिलन बारम्बार जाया करते थे। कभी-कभी तो वह वहाँ लगातार कई-कई दिना तक रह जाते थे। कार मे बैठे बैठे उन्होंने अपने बग स कुछ कागज निकाले और सावधानी स उन्हे पढना शुरू कर दिया। वह उन्हे अपनी खास तेज गति से पढते हुए गोर्की के साथ बातचीत के लिए तयारी कर रहे थे।

किन्तु हम लोग क्रोनवक्सकी माग तक न पहुँच सके। हमे रास्ते म ही रुक जाना पडा। उस समय नगर मे मोटरकारें बहुत ही कम दिखलायी पडती थी। अनेक लोगो न अनातोली वासीलियेविच की कार को पहचान लिया। वे उनके आने-जाने के आम रास्ते को जानते थे।

उन्होंने उन्हें रास्ते में ही रोक लिया। इस बार उन्हें रोकनेवाले बाल्टिक सागर के कुछ नाविक थे। सर से पैर तक वे हथियारों से लैस थे। वे इस तरह चल फिर रहे थे जैसे कि वही आजाद देश के मालिक थे। वे उनके पास आ गये। उनमें से एक आश्चर्यजनक रूप से यसेनिन की तरह लगता था। पीटर और पाल के किले में कोई झंझट हो गयी थी—उसी के बारे में लगभग ५ मिनट तक जनमन्त्री से उन्होंने बातचीत की और उनसे वादा करा लिया कि उसी दिन वह वहां आयेंगे। इसके बाद उनको कार का पीटसबर्ग की किस्म के कुछ बुजुर्ग लगन वाले मजदूरों ने रोक लिया। इन मजदूरों को—जो मजबूत, किन्तु दुबले-पतले, सजीदा, कम बोलने वाले और सख्त किस्म के लगते थे—मैं बचपन से ही जानता था। उन्होंने अनातोली वासीलियेविच को, अगर मैं भूल नहीं रहा हूँ, सादोवाया मार्ग पर मुद्रकों के क्लब के संस्थापन समारोह में आमन्त्रित किया। उन्होंने अपनी नोट बुक पर नज़र डाली और कहा कि वह अवश्य वहाँ पहुँचेंगे।

मुझे यह याद है कि यही वह पहला अवसर था जब मैंने इस बात की अनुभूति की—जिसे बाद में (विशेष रूप से मास्को में) फिर मैंने अनेक बार अनुभव किया था—कि बातीसेली का यह पारखी, रिचर्ड वैगनर का यह रसज्ञ, इब्सेन, मैटरलिंक, मार्सल प्रूस्त और पिराण्देलो का यह उच्च श्रेणी का व्याख्याकार, साधारण मजदूरों के बीच भी पूरे तौर से अपनापन महसूस करता था। ये लोग वास्तव में स्वयं उनके अपने लोग थे और उनका सारा काम, और उनका सारा ज्ञान, इन्हीं की सेवा में अर्पित था।

✱

कॉंसटेन्टीन फेदिन

१९१९ की शरद ऋतु मे एक तरुण सैनिक क्रान्तिकारी पत्नोग्राद आया था। अभी तक वह अपना फौजी ओवरकोट पहने था। यही फेदिन—अर्थात "शहरो और वर्षो , "प्रारम्भिक खुशियो ', "वह साधारण ग्रीष्म ऋतु नही थी ' तथा अनेक देशो में विख्यात अन्य अनेक उपन्यासो के भावी लेखक थे। (उनका जन्म १८९२ में हुआ था।)

पेत्रोग्राद मे आते ही फेदिन को लाल सेना म भर्ती कर लिया गया था और फिर गृह युद्ध का अन्त होने तक वह लाल सेना के ही अखबारो मे काम करते रहे थे। इस दौरान जो अनेक अनुभव उन्होने प्राप्त किये उनसे लिखने की उनकी पुरानी इच्छा फिर जाग उठी। फेदिन लिखने लगे और उन्होंने बहुत लिखा। उन्होने गोर्की स परिचय प्राप्त किया और फेदिन की कहानियो के वही प्रथम गुण दोष निर्णेता बन। "गार्की—हमारे बीच ' नामक उनकी कृति से लिये गये निम्न उद्धरणो म फेदिन ने क्रान्ति के प्रारम्भिक वर्षो मे गोर्की के साथ हुइ अपनी मुलाकातो का विवरण दिया है।

फेदिन ने लिखा था, "तीसरे दशक मे नवजात सोवियत साहित्य को रूप और दिशा देने मे गोर्की का बहुत बडा हाथ था। किसी भी लेखक के भवितव्य मे उनकी दिलचस्पी बहुधा उस प्रतिभाशाली व्यक्ति के आगे के सम्पूर्ण विकास क्रम को निर्धारित कर देती थी। उन्होने अनेक तरुण लेखको का भाग दीप्त किया था।'

गोर्की हमारे बीच

> लेकिन नहीं ! वही वास्तविकता थी, वह
> वास्तविकता से भी कुछ अधिक थी—
> वह वास्तविकता और पूर्व स्मृति थी।
>
> —लेव तोल्सताय

१९१९ की शरद ऋतु में जब सेना से मुक्त होकर मैं पत्रोग्राद पहुँचा तो शहर एक हथियारबन्द शिविर बना हुआ था। दरअसल, उसे 'पेत्रोग्राद का मोर्चाबन्द क्षेत्र' ही कहा भी जाता था। क्षेत्र का सदर दफ्तर शहर के बीचो बीच पीटर और पाल के किले मे स्थित था। यूदेनिच के श्वेत गार्ड (क्रान्ति-विरोधी सैनिक) शहर की बाहरी सीमा तक आ पहुँचे थे। पुलकोवो की ऊँचाइयो से यूदेनिच के अफसर दूरबीनो से मास्को के चुंगी-द्वार को देख सकते थे। उनका इरादा था कि या तो अचानक धावा बोलकर शहर पर कब्जा कर लिया जाय—या उसकी घेराबन्दी कर ली जाय।

पेत्रोग्राद के मजदूरो और लाल सेना ने उस समय जो काम कर दिखाया था उसे अनेक लोग असम्भव मानते थे। उन्होने दुश्मन के बढाव को रोक दिया था और खदेड कर उसे पीछे भगा दिया था। यूदेनिच की फौज के पैर उखड गये थे। और उसकी इज्जत मिट्टी मे मिल गयी थी।

इस अदभुत प्रयास के अवशेष बहुत दिनो तक पत्रोग्राद की हर सडक तथा उसके हर मकान और पत्थर पर देखे जा सकते थे।

शांतिकाल मे शहर की जितनी आबादी थी अब उसकी केवल एक तिहाई रह गयी थी। लोग भूख, टायफाइड और शीत से पीडित थे। वे हजारो किस्म की छोटी छोटी ऐसी तकलीफो और बीमारियो से त्रस्त थे जिनकी शांतिकाल मे उन्होने कभी कल्पना तक नही की थी।

किन्तु उन भूखे, ठण्ड से ठिठुरते किले का उन्होने अपने नये और अनोखे भविष्य के प्रति अपने अमिट विश्वास के सहारे जीवित और सुरक्षित बनाये रखा था।

अपने चारो ओर के लोगो की तरह मुझे भी किसी तरह जिन्दा बना रहने के लिये कठिन संघर्ष करना पडता था। फिर भी, क्षण भर के लिए भी, मैं साहित्य और उसके तकाजो को नही भूल पाता था। उस विशाल नगर मे, बीते कल की उस राजधानी मे, मैं निपट अकेला था। उस शहर को इस बात का कभी गुमान भी नही हुआ होगा कि उसके चौडे मार्गों पर एक और ऐसा तरुण आ पहुँचा था जो सदा लिखने के पेशे का सपना देखता रहता था और यह आशा करता था कि उसमे वह भी कुछ उपलब्धियाँ हासिल करेगा और, हो सकता है कि, कभी कुछ प्रसिद्धि भी प्राप्त कर ले!

मेरे अन्दर हर चीज को जानने समझने की एक अमिट और अपराजेय लालसा हिलोरें ले रही थी। मुझे लगता था कि साहित्य से बेहतर कोई भी चीज इस लालसा को पूरा नहीं कर सकेगी। युद्ध के एक बन्दी के रूप मे जो कुछ मैंने अनुभव किया था उसके बाद मेरे अन्दर जो सबसे बलवती भावना घर कर गयी थी वह यह थी कि रूस मेरी मातृ-भूमि है। क्रान्ति मे इसी भावना को लेकर मैं शामिल हुआ था। क्रान्ति ने इस भावना को तोडा या मिटाया नही था उससे मिल-कर वह एक—रूप हो गयी थी

और भी बहुत से लोग ऐसे थे जो मेरी ही तरह सोचते थे और, मैं सविश्वास कह सकता हूँ कि, साहित्य से वे भारी अपेक्षा करते थे।

शौर्यमण्डित, भूखे नाना बीमारियों से त्रस्त और गुमसुम उस पत्राग्राद में एक व्यक्ति ऐसा था जो शेष सब लोगों से अलग खड़ा प्रतीत होता था, किन्तु, जो वास्तव में, उस आन्दोलन का जो अभी उठ ही रहा था, वास्तविक केन्द्र-बिन्दु था। यह व्यक्ति गोर्की था। और वह आन्दोलन था सोवियत संघ की सेवा में जुटने के बुद्धिजीवियों द्वारा किये जाने वाले प्रयास की शुरुआत का।

गोर्की ने जादू भरी अपनी बंसी के माध्यम से इकट्ठा होने के लिए लोगों का आवाहन किया और धीरे-धीरे लोगों में साहस पैदा हुआ और वे अपनी खोलियों और अंध गुफाओं से बाहर की ओर झाँकने लगे। मजदूरों के मरे हुए संघ फिर उठ खड़े हुए। लेखक बाहर निकल आये और अपनी जमी स्याही को गर्माने लगे। वैज्ञानिक भी निकल और अपनी प्रयोगशालाओं में अपना स्थान ग्रहण करने लगे। लोगों को प्रभावित करने के गोर्की के पास अनेक तरीके थे। इस काम में उनका मुख्य साधन तो स्वयं उनका व्यक्तित्व था। कोई भी समझदार आदमी गोर्की के इरादों की पवित्रता पर जरा भी सन्देह नहीं करता था किन्तु इरादों की पवित्रता बुद्धिजीवियों के लिए कोई अनोखी चीज नहीं थी। परन्तु अन्य सभी बुद्धिजीवियों की अपेक्षा गोर्की की स्थिति एक माने में विशेष रूप से अच्छी थी—उनका जीवन क्रान्ति के इतिहास के साथ अभिन्न रूप से जुड़कर उसके ताने बाने में मिल गया था और उसका अभिन्न अंग बन गया था। अपने काल की वह जीवन गाथा थे। इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि क्रान्ति के समय वह उसी तरफ थे जिस तरफ उन्हें होना चाहिए था और उनकी अपीलों में आकस्मिकता अथवा अवसरवाद की कहीं कोई गंध नहीं थी। और पूर्वकाल की उनकी प्रसिद्धि, कला के क्षेत्र में उनका प्रभाव

और इसीलिए लोगों के दिमागों पर उनका असर इतना जबरदस्त था कि उन्हें इन चीजों का बड़ा-सा प्रयास करने की जरूरत नहीं थी।

यथासमय ढंग से सोचा-भाला लोग यह मानते हैं कि गार्की की जादू भरी कमी की शक्ति का स्थान वास्तव में गाढ़ी थी वह राशन था जो वह लोगों को दिया करते थे। परन्तु हर कोई देख-समझ सकता था कि लोगों को राशन दिलाने की कोशिश के पीछे उनकी कोई छिपी चाल नहीं थी। वास्तव में, वह भी उन प्रयासों में से एक था जो संस्कृति की रक्षा और विकास के लिए गार्की कर रहे थे।

वह स्वयं उस संस्कृति का एक अंग थे और इसलिए उस संस्कृति को जीवित बनाये रखने के विचार के अलावा और कोई विचार उनके मस्तिष्क में हो ही नहीं सकता था।

क्रोनवर्कस्की मार्ग के अपने कमरे में सड़क की तरफ खुलने वाली एक चौड़ी सी खिड़की के सामने बैठे गार्की लिख रहे थे। एक बड़ी सी मेज के ऊपर झुकी हुई उनकी आकृति को मैं भली भांति देख सकता था। उनकी मेज पर हर चीज़ इतने करीने से रखी थी कि वह खाली-खाली लगती थी। अपने चश्मे के ऊपर से नज़र उठाकर जब उन्होंने मुझे देखा तो उनके चश्मे के शीशे सूर्य के प्रकाश में चमक उठे। उन्होंने उन्हें उतार कर रख दिया और आगे बढ़कर आसानी से मेरी तरफ आ गये। उनका एक कंधा नीचे की ओर झुका तथा बाहर की ओर निकला था। मेरे पास आकर उन्होंने मेरी बांह पकड़ ली और मुझे एक दूसरी अपेक्षाकृत छोटी मेज के पास ले गये।

"यहां बैठो!" उन्होंने कहा।

किताबों के एक ढेर को उन्होंने अपनी तरफ खींचा और फिर छांटते हुए उन्हें एक-एक कर खोलने लगे। अपने सिर को किंचित पीछे की ओर झुकाकर वे पुस्तकों के नाम वाले पृष्ठों को खोलने और अपनी अंगुलियों से उनके लेखकों के नाम मुझे दिखलाने लगे।

यह दाहरान जान, यह बहुत हाशियार है तरिन मजे की बात यह है कि "ग्राम मागी चानावी भरी हुइ है जार वह भी ज्यादातर बिना किसी माप व। यह बिल्कुल हल्के। फुल्की है किन्तु इसके नचर का जानकारी है। उसन काफी तथ्य दिय ह उसक तर्कों म काइ जान नहीं है इसके चक्कर म मत फसना और यह इतनी परिणामपूर्ण और तत्त्व भडक वानी रचना है कि यह किसी फ्रासीसी के अधिक उपयुक्त हाती। लकिन उसकी वातो म तारतम्य है। पर जमन हाने के बावजूद, उसके लखन म काई व्यवस्था नहीं ह और वह मात्र दोष दर्शी है।"

वह कहन लग, "१८४८ की क्रांति के सम्बन्ध मे बस इतनी ही किताबें मैं अभी तक ढूढ पाया हूँ। एक और बहुत अच्छी किताब थी किन्तु वह कही खा गयी ह। मैं उस ढूढ नही पा रहा हूँ। तुम ता जानते हा कि बहुत से ऐसे उचक्के ह जो मेरी अलमारियो मे किताबे चुरा ले जात ह। शायद मुझे उन सबका बन्द करवा देना चाहिए।'

किताबा की अलमारियाँ दीवाला पर किसी सावजनिक पुस्तकालय की अलमारिया की तरह बाकायदा रखी हुइ थी। उनके बीच से आने-जाने के सँकरे रास्ते थ, किन्तु इस बडे कमरे के अन्दर उन सँकरी खाली जगहा म भी सूरज की राशनी पहुँचती थी।

उन किताबो का एक तरफ को खिसकाते हुए एक हल्की सी मुस्कराहट के साथ गोर्की न अपनी मद्धिम किन्तु गम्भीर आवाज म कहा, "अपने को किसी तरह किसी सकुचित दायरे मे मत फँसने देना। तुम बड स बडे मच का इस्तेमाल करना। चाहो ता मरकस की जगह भी तुम्हे मिल सकती है। अथवा सैकडा और हजारा पात्रा को लकर तुम शहर के चौक का इस्तेमाल कर सकते हो। क्या तुम गिर्जाघर की सीढियो का इस्तेमाल कराग? उसम भी एक शानदार दृश्य उपस्थित किया जा सकता है।'

उठकर तम्बाकू के धुएँ के बादलों में साथ हुए वह अपनी बड़ी मेज़ पर लौट गये। उस पर रखी हुई अपनी थोड़ी सी चीज़ों पर उन्होंने हाथ फेरा जैसे कि वह पक्का करना चाहते थे कि वे सब सही-सलामत वहाँ मौजूद थीं—उनकी नीली पेंसिल, गोंददानी, चश्मा, रूलदार कागज़ के पन्ने।

वह मुझसे कहने लगे अपने वनानिकों के साथ मेरा सम्पर्क अधिकाधिक बढ़ता जा रहा है। वे असाधारण लोग हैं। अपने अध्ययन कक्षों में बैठे अपने हाथों को घर के बने दस्ताने और पैरों को उनपर लपेटकर रखे गये कम्बलों से गरमाते हुए वे निखते रहते हैं। वे कुछ इस तरह बैठकर काम करते हैं जैसे कि उन्हें इस बात का ख्याल हो कि उनकी सैनिक टुकड़ी का सार्जेण्ट (अफसर) किसी भी क्षण यह देखने के लिए आ सकता है कि वे अपना काम कर रहे हैं या नहीं। वे यूराल की पथहीन पर्वतमालाओं पर विचरते हैं और विज्ञान अकादमी के लिए बहुमूल्य पत्थरों के विलक्षण संग्रह कर लाते हैं। महीनों महीनों तक उन्हें देखने तक को रोटी का एक टुकड़ा नहीं नसीब होता। आश्चर्य होता है कि आखिर वे जीवित किस तरह रहते हैं—कदाचित जंगली लोगों की तरह शिकार करके ज़िन्दा रहते हैं। लेकिन तुम तो जानते हो कि, यह सोने की तलाश के समय का कैलीफोर्निया नहीं है। रुपये पैसे में उनकी दिलचस्पी नहीं है, वे अपनी जेबें नहीं भर रहे हैं। वे ऐसे लोग हैं जिन पर हमें गर्व होना चाहिए।

"हमें रूसी विज्ञान की रक्षा करनी है। हमें भोजन चाहिए, किसी भी कीमत पर भोजन चाहिए।

'तुम जानते हो, इस तरह की तकलीफ मुझे पहले कभी नहीं हुई थी। दिल में दर्द होता है और पैर सूज जाते हैं। फास्फोरस की कमी है। चीनी भी नहीं है।

यकायक वह खामोश हो गये (वह फिर अपने बारे में बात करने लगे थे!)।

'हमारे काम का नाड़ी-तंत्र पर जो दबाव पड़ता है उसके लिए फास्फोरस आवश्यक है,' उपदेशात्मक ढंग से उन्होंने हमें बताया। फिर अधिक उत्साहपूर्ण स्वर में बोले,

"तुम से पहले मुझसे मिलने आने वाले व्यक्ति प्रोफेसर फसमैन थे। उन्होंने टेलीफोन से मास्को में अभी अभी लेनिन से बात की थी। वैज्ञानिकों की दशा को सुधारने के लिए जो कमीशन बनाया गया है उसी के काम के सम्बन्ध में उन्होंने लेनिन से बात की थी। लेनिन का रुख अत्यन्त सहानुभूतिपूर्ण था और वह हर तरह से सहायता करने के लिए तैयार हैं। फसमैन ने मुझे विश्वास दिलाया कि लेनिन पूरे तौर से बुद्धिजीवियों के पक्ष में हैं।"

लेनिन के विषय में जब वह बात कर रहे थे तो मैंने उनकी तरफ फिर देखा। स्नेह-भरे परिहास के ढंग से अपने कंधों को कुछ उचकाते हुए जैसे कि किसी की नकल बना रहे हों, उन्होंने गोर्की—लेनिन वार्तालाप को फिर पेश कर दिया।

"यह पहला वर्ष नहीं है जिसमें कि मुझे यह समझाने की कोशिश करनी पड़ रही है कि बुद्धिजीवियों की उपेक्षा करने के लिए अदूरदर्शी लोगों को बाद में पछताना पड़ेगा। इन्हीं अकादमीशियनों और प्रोफेसरों के पास आरजू-मिन्नत करते हुए फिर हमें जाना पड़ेगा। यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि बुद्धिजीवी वर्ग की सहायता के बिना हम कुछ नहीं कर सकते—और फिर क्या हुआ? इस बात का खयाल करके शिक्षित महानुभाव निश्चित रूप से मन ही मन फूलकर बहुत कुप्पा हो रहे हैं। यह चीज भी अच्छी नहीं है! बिल्कुल अच्छी नहीं है।"

जो किताबें उन्होंने मेरे लिए छाटी थीं उन्हें बाधकर मैं एक पैकेट बना लेना चाहता था।

वह बोले 'लाओ, इसे मुझे दे दो। पैक करने का मुझे बहुत अनुभव है।'

'मैं भी अच्छी तरह पैक कर लेता हूँ।'

'देखें भला कौन बेहतर ढंग से पैक कर सकता है!'

अनुभवी ढंग से उन्होंने चीनी लपेटने वाले नीले रंग के कागज का एक ताव लिया और उसे सामने फैला दिया, किताबों के ढेर को ठीक से जमा कर कागज पर रख दिया, कागज को मजबूती से पकड़ कर किताबों के ऊपर लपेट लिया। फिर डोरी को अपनी तर्जनी में लपेट कर और पार्सल को अपने हाथ में उठाकर दोनों तरफ से कसकर उसे बांध दिया। फिर अपने बायें हाथ से डोरी को मोड़ा और एक झटके से उसे तोड़कर उसके छोर को गांठ के पास बांध लिया। तब पार्सल को लेकर वह मेरे पास आये, एड़ियों को जोर से मिलाकर सैलूट जैसी आवाज की, और मुस्कराते हुए बोले

'लीजिए श्रीमान जी! अब बतलाइए कौन अधिक अच्छी तरह पैक करता है!'

'मैं भी इतनी ही अच्छी तरह बंडल बना सकता था।'

'अच्छी बात है, अगली बार देखेंगे।'

एक नव दीक्षित की तरह विदाई के उनके शब्दों को मन में संजोये हुए मैं वहां से चला आया। किताबों के उस पैकेट को, जिसमें कदाचित मेरा भविष्य छिपा था, मैं मजबूती से बगल में दबाये था। काम के लिए आदर्श, कला के रहस्य, जीवन का सत्य—कौन जान सकता था कि उसके अन्दर क्या क्या छिपा था!

गर्मियों में मुझे लेनिन और गोर्की का एक साथ दर्शन का मौका मिला—जुलाई में, कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय संघ की द्वितीय कांग्रेस के अवसर पर। उस कांग्रेस में भाग लेने के लिए लेनिन स्वयं आये थे और उस नगर में, जिसने कुछ ही समय पहले महान बलिदान दे कर

अपनी प्रावीण्य की दुश्मन से रक्षा की थी, उन्होंने भाषण दिया था। उस समय वहा समारोह के लगभग सभी भागो से मजदूरो की पार्टियो के प्रतिनिधि आये हुए थे। इन सब चीजो ने वहा एक विजयोल्लास का वातावरण पैदा कर दिया था। परन्तु, इस विजयोल्लास के बीच भी कुछ कटु और निर्मम स्वर सुनायी पडते थे। संघर्ष, जीवन मरण का संघर्ष अब भी जारी था। काग्रेस के काम को जैसे दात भीचकर, अन्त तक जूझते रहने के अडिग संकल्प के साथ चलाया जा रहा था।

सभा-भवन मे लेनिन का प्रवेश एक रोमाचकारी घटना थी।

फानूसो से निकलने वाली मद्धिम पीली रोशनी रोशनदानो मे छन छन कर आते दिन के तेज प्रकाश की वजह से और भी फीकी और आभाहीन लग रही थी। खचाखच भरे सभा कक्ष की उत्तेजना भारी भारी इस वातावरण के कारण और भी अधिक बढ गयी प्रतीत होती थी। काग्रेस के शुरू होने के बहुत पहले से ही प्रासाद का वातावरण भारी हो गया। तभी, बिजली और सूर्य की रोशनी के इस विचित्र मेल के कारण तथा घुटन और लम्बी प्रतीक्षा के उस वातावरण के कारण जो तनाव पैदा हो गया था उसमे अचानक जोरो से तालियो की गडगडाहट गूज उठी। तालियो की शुरूआत संगीतज्ञो की दीर्घा से हुई। फिर दूसरे स्थानो से सुनाई देने वाली गडगडाहट के साथ मिलकर वह एकाकार हो गयी और धीरे धीरे सम्पूर्ण प्रासाद के चारो तरफ फैल गयी। ऐसा लगा जैसे कि सम्पूर्ण प्रासाद को उसने अपने अन्दर समेट लिया है और उसे झूला झुला रही है। अपने सर को इस तरह आगे झुकाये वह चल रहे थे जैसे कि सामने से आती किसी आधी के बीच से बढ रहे हो। प्रतिनिधियो की एक भीड के आगे-आगे लेनिन ने सभा भवन मे प्रवेश किया। पूरे सभा भवन के अन्दर से गुजरते हुए जल्दी से वह अध्यक्ष मडल के उस स्थान पर जा पहुँचे जहाँ उनके बैठने के लिए जगह नियत की गयी थी। लोगो की नजरे

वह बाले 'लाओ, उन्ह मुझे दे दो। पैक करने का मुझे बहुत अनुभव है।

म भी अच्छी तरह पैक कर लता हूँ।"

"देखें भाा, कौन बहतर ढग से पैक कर सकता है।'

अनुभवी ढग से उन्होने चीनी लपटन वाले नीले रंग के कागज का एक ताव लिया और उसे सामने फला दिया किताबो के ढेर को ठीक से जमा कर कागज पर रख दिया कागज को मजबूती से पकड कर किताबो के ऊपर लपट दिया, फिर डोरी को अपनी तर्जनी म लपट कर और पासल को अपने हाथ मे उठाकर दोनो तरफ से कसकर उसे बाध दिया। फिर अपने बाये हाथ से डोरी को मोडा और एक झटके से उसे तोडकर उसके छोर को गाठ के पास बाध लिया। तब पासल को लेकर वह मेरे पास आये एडियो को जोर से मिलाकर सैलूट जैसी आवाज की, और मुस्कराते हुए बोले

"लीजिए, श्रीमान जी! अब बताइए कौन अधिक अच्छी तरह पैक करता है।'

"मैं भी इतनी ही अच्छी तरह बडल बना सकता था ।'

"अच्छी बात है, अगली बार देखेंगे ।

एक नव दीक्षित की तरह विदाई के उनके शब्दो को मन मे सजोये हुए मैं वहा से चला आया। किताबो के उस पैकेट को जिसमे कदाचित मेरा भविष्य छिपा था, मैं मजबूती से बगल म दबाये था। काम के लिए आदेश, कला के रहस्य जीवन का सत्य—कौन जान सकता था कि उसके अन्दर क्या क्या छिपा था!

गर्मियो मे मुझे लेनिन और गार्की को एक साथ देखने का मौका मिला—जुलाई म कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय सघ की द्वितीय काग्रेस के अवसर पर। उस काग्रेस म भाग लेने के लिए लेनिन स्वय आये थे और उस नगर म, जिसने कुछ ही समय पहले महान बलिदान दे कर

अपनी प्राचीरो की दुश्मन से रक्षा की थी, उ हान भाषण दिया था। उस समय वहा ससार के लगभग सभी भागा से मजदूरा की पार्टियो के प्रतिनिधि आये हुए थे। इन सब चीजा न वहा एक विजयोल्लास का वातावरण पैदा कर दिया था। पर तु, इस विजयोल्लास के बीच भी कुछ कटु और निमम स्वर सुनायी पडते थे। सघर्ष, जीवन मरण का सघष अब भी जारी था। काग्रेस के काम को जस दात भीचकर, अन्त तक जूझते रहने के अडिग सकल्प के साथ चलाया जा रहा था।

सभा-भवन म लेनिन का प्रवेश एक रोमाचकारी घटना थी।

फानूसो से निकलने वाली मद्धिम पीली रोशनी रोशनदाना म छन छन कर आते दिन के तेज प्रकाश की वजह से और भी फीकी और आभाहीन लग रही थी। खचाखच भर सभा क क्ष की उत्तजना भारी भारी इस वातावरण क कारण और भी अधिक वढ गयी प्रतीत होती थी। काग्रेस के शुरु होने के बहुत पहले से ही प्रासाद का वाता वरण भारी हो गया। तभी, बिजली और सूय की रोशनी क इस विचित्र मेल के कारण तथा घुटन और लम्बी प्रतीक्षा के उस वातावरण के कारण जो तनाव पैदा हो गया था उसम अचानक जोरो से तालियो की गडगडाहट गूज उठी। तालियो की शुरुआत सगीतना की दीर्घा स हुई। फिर दूसरे स्थाना से सुनाई देने वाली गडगडाहट के साथ मिलकर वह एकाकार हो गयी और धीरे धीरे सम्पूण प्रासाद के चारो तरफ फैल गयी। ऐसा लगा जैसे कि सम्पूण प्रासाद का उमग अपने अन्दर समेट लिया ह और उसे झूला झुला रही है। अपन सर को इस तरह आग झुकाये वह चल रह थ जैस कि सामने से आती किसी आधी के बीच से बढ रह हा। प्रतिनिधियो की एक भीड के आग-आग लेनिन ने सभा भवन म प्रवेश किया। पूर सभा भवन के अन्दर स गुजरते हुए जल्दी से वह अध्यक्ष-मडल के उस स्थान पर जा पहुँचे जहाँ उनके बैठने क लिए जगह नियत की गयी थी। लोगा की नजर

स वह ओझल हा गये और तालियो की गडगडाहट निरन्तर बढती ही गयी। फिर, अचानक थोडी देर के लिए वह सामने आ गये और तेज़ी से मच की सीढियो पर चढने लगे। लोगो ने उन्हे देखा तो वे भी उसी तरफ बढने लगे जहा थोडी देर के लिए वह रुके थे। वह लोगो के एक भारी घेरे मे घिर गये और सभा भवन तुमुल जन-नाद मे फिर प्रकम्पित हो उठा। लेनिन मीखा त्सखाकाया के साथ घुल-मिलकर बातें कर रहे थे। वह बिल्कुल उनके कान के पास झुककर बाते करने की कोशिश कर रहे थे। परन्तु जब अव्यवस्था बहुत बढने लगी तो जैसे क्रोध स हाथ हिलाते हुए, लोगो से उन्होने शान्त होने की अपील की। फिर लागो की भीड के अन्दर से तेज़ी से चलते हुए वह सीढियो से नीचे उतर गये।

अपनी रिपोर्ट पेश करने के लिए जब वह मच पर खडे हुए तब उन्हे तीसरी बार जन घोष का सामना करना पडा। अपने कागज़ो के उपर नज़र डालते हुए बहुत देर तक वह मच पर यो ही चुप खडे रहे। फिर उन्होने अपनी एक भुजा ऊपर उठायी और हाथ के इशारे से उस श्रोता मडली को शान्त करने का प्रयास किया जो किसी प्रकार चुप ही नही हो रही थी। उस गूजते जय-घोष के बीच अपने को अकेला पाकर, जैसे कि अपना बचाव करने के लिए अपनी वास्कट की जेब से यकायक उन्होने अपनी घडी निकाली, उस भीड को दिखलाया और किंचित क्रोध मे शीशे पर हाथ से आवाज़ की। लेकिन सब बेकार था। तब फिर परेशान होकर उन्होंने अपने कागज़ो को उलटना-पलटना शुरु कर दिया—जैसे कि वह इस दुर्भाग्यपूर्ण अव्यवस्था मे समझौता कर लेने मे अपने को पूर्णतया असमर्थ पा रहे थे।

परन्तु, लेनिन के मुँह से प्रथम शब्दो के निकलते ही श्रोताओ के साथ उनका जीवित सम्बन्ध कायम हो गया। वह बहुत ज़ोर से नही

बोलते थे, कि तु उनका स्वर तीक्ष्ण था। और 'र' की उनकी आवाज जैसे गले से अटकती हुई निकलती मालूम होती थी। तथ्यात्मक ढग स वह सीधी-सादी चीजा क बार म बात कह थ किन्तु उनके स्वर मे असाधारण प्रेरणापूण ओज था, एक सच्च सुवक्ता का प्रेरणापूण ओज। अपन नोटो का अपनी आखो के नजदीक लाकर उन्होन आकडा की तालिकाएँ पढनी शुरु कर दी। उनके शब्दो म हर चीज स्पष्ट और व्यावहारिकता लिए हुए थी। उनम किसी प्रकार की अलकारिकता अथवा सजावट-बनावट नही थी। कि तु जिन सीधे सादे समभ्मानवाले सकेता और अग विक्षेपो के साथ तथा अपने पूरे शरीर की सहज गतिशीलता और फुर्ती के साथ जिस प्रकार वह बोल रहे थे उससे लगता था कि उनके शब्दा के अदर एक आन्तरिक ज्वाला थी।

लेनिन न श्रोताओ के सम्मुख विशाल दुनिया का एक नया नक्शा उजागर कर दिया था--दुनिया के उस सघष का नक्शा जो मानव-जाति के हित के लिए पृथ्वी पर स्थापित हुई प्रथम सोवियत राजसत्ता चला रही थी। ऐसा लगता था कि इतिहास की बागडोर का पकड कर सहज ढग मे वह उस सभा-भवन के अदर ल आय थे और जादूगरी ढग स हमारी आखों के सामने वह हाल ही म हार पालण्ड, उल्टे पाव भाग गय रैंगिल, और इनक हिमायती उस ब्रिटेन के कारनामो के पृष्ठो को खोल खोलकर रख रही थी जिसके दिल म अचानक शाति के लिए प्रेम का सागर लहरान लगा था और जिसन अब प्रस्ताव रखा था कि वह सोवियता तथा शाति विरोधियो के बीच समझौता कराने के लिए तैयार था। लेनिन न इतिहास के केवल एक ही क्षण का चित्रण किया था, किन्तु व्यावहारिकता स भरे उनके शब्द किसी वैज्ञानिक की गणनाओ की तरह सुस्पष्ट थ। उनके अन्दर उस नये ससार का सपना मौजूद था जो दिल की धडकन की तरह हरएक के अदर स्पदित हो रहा था। काग्रेस के प्रतिनिधियो ने न

नाम ले रहे थ। गार्की के चेहरे पर मुझे कोई एकदम नई चीज दिखलायी दी, ऐसी चीज जिसे पहले की अपनी मुलाकातों में मैंने कभी नहीं देखा था। निसन्देह, भावातिरेक से उनका हृदय द्रवित हो उठा था और वह अपने मन की हलचल पर काबू पाने की चेष्टा कर रहे थे। इसकी वजह से उनका चेहरा किंचित कठोर लगने लगा था और उनके गालों की साधारण तौर से गतिशील सिलवटें तनकर सख्त हो गयी थीं। मुझे लगा कि उनके चेहरे पर श्रेष्ठ गुरुत्व का भाव मौजूद था और उनकी सम्पूर्ण आकृति एक प्रकार से उस महान सत्य को मूर्तिमान कर रही थी जो लेनिन के भाषण के फलस्वरूप सब लोगों के मन में जाग उठा था और जिससे पूरी कांग्रेस स्फूर्ति और उत्साह से भर गयी थी।

मैं भीड़ में धक्के खा रहा था और आस पास के लोगों के कंधों और सिरों के ऊपर से उन दोनों व्यक्तियों की—लेनिन और गार्की की—जो एक दूसरे के पास पास खड़े थे, प्रत्येक गतिविधि को मन के अन्दर सजो लेने की भर सक कोशिश कर रहा था। मुझे उस समय ऐसा प्रतीत हुआ कि गोर्की के सम्बन्ध में जो कुछ भी अच्छा मैंने कभी सोचा था उस क्षण वह सब लेनिन के सामीप्य में, दुनिया में जो कुछ भी हो रहा था उसकी उच्चतर समझदारी के उस सामीप्य में उनके अन्दर एकदम साकार हो उठा था।

मैं जब उनके पास गया था तो हमेशा की तरह उस बार भी केवल उस मुलाकात के बारे में ही सोच रहा था जो उनके साथ होने वाली थी। कमरे में, किताबों की अलमारियों के बीच छिपा कोई और भी था—इसे मैंने नहीं देखा था। हमारी बातचीत शुरू हो गयी तो उन्होंने मेरी बांह पकड़कर धीरे से मुझे पीछे की तरफ घुमा दिया और बोले,

'क्रमवानोद इवानोव से मिलो। यह भी लेखक है। साइबेरिया से आये हैं। हूं, हूं ।'

केवल लेनिन ने विचारों की गतिशीलता को हृदयंगम किया बल्कि ऐसा लगने लगा कि वे सब के सब अपने हाथों को बढ़ाकर लेनिन के दिल को थाम लेना चाहते थे ।

मंच के निकट ही मैं पत्रकारों की दीर्घा में बैठा था । क्षण भर के लिए भी अपनी आंखों को मैं लेनिन के चेहरे से न हटा पा रहा था और मुझे लग रहा था कि यदि मैं चित्रकार होता तो केवल अपनी स्मृति के सहारे ही मैं उनका भव्य चित्र बना देता ।

अधिवेशन के बाद मैंने उन्हें फिर उस समय देखा था जब प्रतिनिधियों से घिरे वह बाहर की तरफ जा रहे थे । रेला जबदस्त था और उस घुटन-पूर्ण वातावरण में वह चारों तरफ से घिरे हुए थे । उन्हें नजदीक से देखने के लिए सैकड़ों लोग धक्का देते हुए उनके पास पहुँचने की कोशिश कर रहे थे । दालानों गलियारों सभा भवन तथा दीर्घाओं के बीच से जब वह निकलने की कोशिश कर रहे थे तो एक भारी भीड़ उन्हें चारों तरफ से घेरे थी । उनके आगे बढ़ने के रास्ते में उससे कारण बहुत कठिनाई हो रही थी ।

अचानक मुझे गोर्की का ऊँचा सिर दिखलायी दिया । उनका सिर लेनिन और उस भीड़ से काफी ऊपर था । सारी भीड़ दरवाजे के नजदीक आकर रुक गयी और फिर धीरे धीरे—बाहर की ओर जाने लगी । लेनिन और गोर्की इसी तरह साथ साथ प्रासाद से बाहर निकले । भीड़ उन्हें निकलने नहीं दे रही थी और वे दोनों हाथ में हाथ डाल लगभग एक दूसरे से चिपके हुए बाहर निकलने का प्रयास कर रहे थे । बाहर द्वार मंडप में पहुँचकर, भीड़ फिर रुक गयी । एक दूसरे को धक्का देते हुए फोटोग्राफरों के एक हजूम ने लेनिन और गोर्की को घेर लिया । फोटोग्राफर काले कपड़ों, या रूमालों के अन्दर अपने सरों को छिपाये खटाखट तस्वीरें खींच रहे थे । गोर्की नंगे सिर लेनिन के पीछे के खम्भे के पास खड़े थे । सूर्य की रोशनी में दमकता उनका सिर दूर दूर से दिखलाई पड़ रहा था और मेरे इर्द गिर्द चारों तरफ लोग उनको

नाम ले रहे थे। गार्की के चेहरे पर मुझे कोई एकदम नई चीज दिख-लायी दी, ऐसी चीज जिसे पहले की अपनी मुलाकातों में मैंने कभी नहीं देखा था। निस्सन्देह, भावातिरेक से उनका हृदय द्रवित हो उठा था और वह अपने मन की हलचल पर काबू पाने की चेष्टा कर रहे थे। इसकी वजह से उनका चेहरा विचित्र कठोर लगने लगा था और उनके गालों की साधारण तौर से गतिशील सिलवटें तनकर सख्त हो गयी थीं। मुझे लगा कि उनके चेहरे पर श्रेष्ठ गुरुत्व का भाव मौजूद था और उनकी सम्पूर्ण आकृति एक प्रकार से उस महान सकल्प को मूर्तिमान कर रही थी जो लेनिन के भाषण के फलस्वरूप सब लोगों के मन में जाग उठा था और जिससे पूरी काग्रेस स्फूर्ति और उत्साह से भर गयी थी।

मैं भीड़ में धक्के खा रहा था और आस पास के लोगों के कधो और सिरों के ऊपर से उन दोनों व्यक्तियों की—लेनिन और गार्की की—जो एक दूसरे के पास पास खड़े थे, प्रत्येक गतिविधि को मन के अन्दर सजो लेने की भरसक कोशिश कर रहा था। मुझे उस समय ऐसा प्रतीत हुआ कि गोर्की के सम्बन्ध मे जो कुछ भी अच्छा मैंने कभी सोचा था उस क्षण वह सब लेनिन के सामीप्य में, दुनिया में जो कुछ भी हो रहा था उसकी उच्चतर समझदारी के उस सामीप्य मे उनके अन्दर एकदम साकार हो उठा था।

मैं जब उनके पास गया था तो हमेशा की तरह उस बार भी केवल उस मुलाकात के बारे में ही सोच रहा था जो उनके साथ होने वाली थी। कमरे मे, किताबों की अलमारियों के बीच छिपा कोई और भी था—इसे मैंने नहीं देखा था। हमारी बातचीत शुरू हो गयी तो उन्होंने मेरी बाह पकड़कर धीरे से मुझे पीछे की तरफ घुमा दिया और बोले

'कमबाकोव इवानोव से मिलो। यह भी लेखक है। साईबेरिया से आये हैं। हू, हू ।'

चूल्ह की तरफ पीठ किय एक ढील-ढाले अद्ध-फौजी कोट म मर मामने एक व्यक्ति खडा था। उसके पैरा मे पट्टिया लिपटी हुई थीं। यह वश-भूषा उन दिना एकदम आम हो गयी थी। किन्तु, उमके फट और बदरग कपडा का दखकर लगा कि कदाचित वह किसी लम्ब फौजी अभियान से लौटा था। उसक चेहरे और हाथा का रग राख जैसा हो गया था। कृश-काय, एकदम मरियल जसा वह लग रहा था। स्पष्ट दिखलायी द रहा था कि वह पैदल एक लम्बा सफर करके आया था और दखन मे एक भाग हुए आदमी जैसा लगता था। गोर्की न विश्वास दिलात हुए कहा, 'जो कुछ इन्होंने मुझे बतलाया है वह भयानक है ।

यह बात सच थी। वह अत्य त बीभत्स घटनाआ की गाथा सुना रहा था। वह अभी अभी, कदाचित पैदल ही चलकर, पूव की ओर स आया था और कोल्चक के कुशासन के नजारे छोटे-छोट लेंसोवाले चश्म के पीछे धँसी उसकी छोटी छोटी आखों मे अब भी घूम रहे थ। उमका चेहरा चौडा था और उसका वह छोटा सा चश्मा उस पर फबता नही था। पिछले दो साल मे वह गृह युद्ध के भयानक हत्या-काण्ड और विध्वंस के चक्रवात मे फँसा हुआ था और अब जीवित अवस्था मे, यदि यह जरा भी सम्भव था वह उमसे बाहर निकल आया था। गृह-युद्ध की विभीषिकाओं के विषय म बहुत रूखे ढग म सक्षेप म, लगभग असम्बद्ध वाक्यांशो मे वह बात कर रहा था। अपने हाथो को वह अपने पीछे पकडे रहता था। उसके चेहर स लगता था कि वह जो कुछ कह रहा था उसके साथ उसका कोई लगाव नही था। उसका स्वर शात था।

"लाल सेना के सैनिकों को पकड कर व उनका पेट फाड दत हैं और उनकी अतडियो को निकाल लेते हैं। अतडियो को वे कील ठोंक कर एक खम्भे पर जड देते हैं। इसके बाद, अपनी राइफलो व कुदो से मार मार कर लाल सैनिको को वे खम्भे ... ओर घूमन

के लिए तब तक मजबूर करते ह जब तक कि उसकी मारी अतडिया निकलकर खम्भे से नही लिपट जाती ।"

गोर्की ने मदन और व्यावहारिक ढग म पूछा "किस तरह के खम्भा मे ? '

"किसी भी तरह के खम्भे से। उदाहरण के लिए, तार के खम्भे से ।''

अपने हाथा को इस तरह रगडते हुए जैसे कि उह ठण्ड लग रही थी, गोर्की ने कहा, "भयानक, बहुत भयानक ! और छापेमारा का क्या हाल है ?"

"छापमार ठीक हैं। उनके माथ काम करने म कोई कठिनाई नही होती ।'

गोर्की न इवानोव की आर किंचित सशकित दृष्टि स दखा। किन्तु जल्दी ही महानुभूतिपूर्ण प्रशसा और जिज्ञासा की भावना न उह सयत बना दिया। भागकर आये इस व्यक्ति की असम्भव-सी लगने वाली कहानियो मे कुछ महाका या जैसा गुण था। वह झूठ नही बोल सकता था। उसने बहुत, आवश्यकता स कही अधिक, दखा था। और अगर अपनी कहानिया का थोडा बहुत रग-चुनकर भी वह पेश कर रहा था तो इस काम को वह इतनी अच्छी तरह कर रहा था कि इसका पता नही चलता था और उह न सुनना एक भारी अनुभव से वचित रह जाना होता।

इसके बाद उस भगोडे को बायबग के जिले म, किसी वक्त क एक अस्पताल के गिर्जे के प्राथना कक्ष मे रहन की जगह मिल गयी। उसकी मेज के ऊपर मेहराबा पर चार ईसाई धम-प्रचारको, मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जॉन की मूर्तियाँ लगी हुई थीं। पवित्र भाव म ऊपर से वे उसकी मेज की आर देखती रहती थी। उस मेज पर एक अजीब किस्म का काम हा रहा था। उसम महाप्रभु के सिंहासन म सम्बधित रहस्या जैसी कोई चीज नही थी। एक तरफ उस पर तानि-

वाजा मानचित्रा ाार चित्रा स भर कागज़ा व ताव थ और दूसरी तरफ पत्रि न लिख अ ाा स भर कागज़। उन्ह फाड़ काटा जा रहा था और उनके ढेर जमा होत जा रहे थ। एक निश्वकाय स पाट चित्रा व ऊपर वसवोलाद इवानोव उन भयानक निर्भीपिकाओ की कहानिया लिख रहे थ। उन्ह वह एक एस आदमी की उन्मादभरी ता स लिख रह थे जिसके मस्तिष्क म उन भयानक घटनाओ का चित्र उसन देखा था बचैनी भरी आवाज़ बराबर गज रही थी। गोर्की बीच-बीच म टलीफोन कर लत थे। अपने सम्बन्ध मे गोर्की के चिन्तापूण प्रश्नो का सुनने क लिए प्राथनाघर के अपने कमरे स वह पडास के एक घर म पहुँच जाया करत थ।

"तुम्ह रोटी मिल रही है ? तुम्हारी लिखाई कैसी चल रही ह ? अच्छा, ठीक है अपने काम को जारी रखो।'

सवथा अनात युवा लखका के दनिक भाजन के सम्बन्ध मे गोर्की की चिन्ता की शुरुआत यहीं से हुई थी। वसवोलाद इवानोव उन पहले व्यक्तियो मे से थ जिनको लेकर उन्होंने इस काम म दिलचस्पी लेनी शुरू की थी। 'वैज्ञानिकों के घर' के सामने पीठ पर थला लेकर रोटी के राशन के लिए पात लगाकर खडे होने वालो मे भी इवानोव पहले व्यक्ति थे।

मेरा विश्वास है कि अक्तूबर के बाद क काल के सवाधिक निर्भीक लखको म इवानोव भी थ। बमेल चीज़ो का--क्रूर सत्य और पखदार कल्पना का रासायनिक सयोग स्थापित करने म उन्होंने अदभुत सफलता प्राप्त की थी। गृह युद्ध के सम्बन्ध मे उनकी गद्य रचनाएँ सोवियत साहित्य का एक अजस्र स्रोत बन गयी थी। उनके साथ के लेखको को स्वीकार करना पड़ा था कि नई क्रान्तिकारी सामग्री का विलक्षण कलात्मक क्षमता के साथ लेखन के कौशल स सजोने का काम युद्ध क बाद सबस पहले उन्होंने किया था। यह एक एसा काम

था जिसे रूसी साहित्य की सम्पूर्ण उठती हुई पीढ़ी पूरा करने का प्रयास कर रही थी।

जिन लेखकों की गोर्की ने खोज की थी उनमें सम्भवतः सबसे अधिक सौभाग्यशाली खोज वसवलाद इवानाव की थी।

१९२१ के आरम्भिक दिन गोर्की के लिए सबसे अधिक कष्टमय थे। उनका रोग तेजी से बढ़ता जा रहा था। आत्मा के सतुलन को उलट-पुलट देने की अपनी जबदस्त क्षमता में क्षय का रोग बेजोड़ है। इस मामले में दूसरी कोई बीमारी उसका मुकाबला नहीं कर सकती।

जनवरी में मैंने उन्हें "कलाओं के घर" में देखा था। उस शाम वहाँ विश्व साहित्य पर चर्चा होने वाली थी। एक छोटी सी मेज के सामने बैठे-बैठे चन्द शब्दों के भाषण से सभा की कार्यवाही का उन्होंने शुभारम्भ किया। निस्तब्ध सभाकक्ष की खामोशी में उनकी कठिनाई से सांस लेने की आवाज साफ साफ सुनाई दे रही थी। उन्होंने अपनी जबदस्त थकान पर नियन्त्रण कायम करने के लिए अपनी सारी विशेष शक्ति लगा दी थी—यह चीज स्पष्ट थी और उन सब लोगों को जो वहां उपस्थित थे अत्यधिक चिन्तित कर रही थी। उन्होंने बोलना खतम कर दिया और किंचित डगमगाते हुए लम्बे-लम्बे, किन्तु धीमे कदमों से चलकर वह बाहर चले गये। ऐसा लगता था जैसे कि उनकी हमेशा की फुर्तीली चाल ने हमेशा के लिए उनसे विदा ले ली थी।

क्रोनवक्स्की मार्ग पर स्थित उन संकरी सीढ़ियों पर इस तरह की मनोदशा में मैं पहले कभी नहीं चढ़कर ऊपर गया था। इसका कारण यह नहीं था कि उस दिन ठण्ड थी और उदासी का वातावरण था जैसा कि अक्तूबर में आम तौर से हुआ करता है। इसका कारण यह भी नहीं था कि मैं बीमार था। इसका कारण उनमें से कोई नहीं था। इसका कारण यह था कि मैं जानता था कि वहाँ मैं आखिरी बार जा रहा था मैं उनसे "अलविदा" कहने जा रहा था। गोर्की, जैसा कि उन दिनों हम कहा करते थे इलाज के लिए बाहर जा रहे थे—

पहले नौहीम, और फिर सम्भवतया, फिनलण्ड। इससे अच्छा और क्या हो सकता था ? किन्तु इस बात को मैं बखूबी जानता था कि वह ऐसी स्थिति की ओर बढ रहे थे जिसके बाद सम्भवतः कोई इलाज नहीं हो सकता। अपने दिमाग में इस बात को भी मैं साफ-साफ देख रहा था कि जब मैं उनके कमरे में प्रवेश करूँगा तब और जब वह उठकर मुझसे हाथ मिलायेंगे तब वह कैसे दिखलायी देंगे। अलविदा के इस एक शब्द की वजह से हर चीज पर उदासी की छाया फैल गयी थी। जो अनिवार्य था उसे स्वार्थपरता की अनच्छिक भावना स्वीकार नहीं करने दे रही थी। गोर्की को बाहर जाकर इलाज कराने की जरूरत थी, उससे उन्हें फायदा होगा, किन्तु उससे क्या मेरा, हम लोगों का भी फायदा होगा, उससे क्या आशाओं की उस पूरी दुनिया का भी फायदा होगा जिसकी उन्होंने इतनी स्वच्छता तथा इतनी तेज गति से सृष्टि कर दी थी ? बेशक, इलाज के लिए उनका बाहर जाना जरूरी था। मरना बहुत समझदारी की चीज नहीं होती। ब्लोक के ददनाक अन्त की स्मृति अब भी हमारे दिलों में ताजा थी। जिस तेजी से उनकी मृत्यु हुई थी उससे अब भी हर एक स्तम्भित है। लेकिन मैं अपनी उदासी की भावनाओं को क्या करूँ, अपनी इस कटु चेतना को क्या करूँ कि यह उनसे मेरी आखरी बातचीत होगी ?

काफी दिन बाद अपने संस्मरण में गोर्की ने लेनिन के उस पत्र का हवाला दिया था जिसने उन्हें बाहर जाने का फैसला करने के लिए अन्तिम रूप में विवश कर दिया था

> "किस तरह से खून थूक रहे हो और फिर भी बाहर नहीं जाना चाहते !! सच, यह निलज्जता और एकदम अविवेक की दृष्टि है। योरप में, किसी अच्छे सेनीटोरियम में, न केवल तुम अच्छे हो जाओगे, बल्कि काम भी तीन गुना अधिक करवा सकोगे। सच ! यहाँ न तो तुम इलाज ही करवा सकते हो, न काम ही कर सकते हो। यहाँ तो एकदम खलबली मची हुई है,

चारो तरफ खलबली ही खलबली है। जरूर चले जाओ और अच्छ हो आओ। मेरी बात मानो, कृपा कर जिद न करो।

तुम्हारा,
लेनिन।"

मैं फिर आश्चयचकित था कि गोर्की अधिकांशतया दूसरो के ही विषय मे, उन लोगो के विषय मे जिन्हें छोड़कर वह जा रहे थे, चिन्ता व्यक्त कर रहे थे। परन्तु उन्होंने अपने बारे म भी बात की फूहड ढग से, अव्यवस्थित ढग से, लज्जा से मुस्कराते हुए और पहले एक कधे को उठाकर फिर दूसरे कधे को। उनके चेहरे की झुर्रियो की सख्या बढ गयी थी और वे कुछ अधिक लटक आयी थी। उनकी आँखें और अधिक तेजी से जलती मालूम पडती थी और उनके अन्दर का नीलापन कुछ और अधिक पारदर्शी लगन लगा था। बुखार ने उनकी दृष्टि म और अधिक जान नही पैदा की थी, बल्कि उस थकान को जो उनकी रग रग तक मे भर गयी थी और भी अधिक उजागर कर दिया था। वह बोले, 'मास्को मे तो मैं लगभग मर ही गया था मैं तुमसे सच कहता हूँ। उससे पहले मेरे साथ ऐसी कोई चीज कभी नही हुई थी। खतरे मे मैं पहले भी पडा हूँ किन्तु उसे मैंने कभी महसूस नही किया था। परन्तु इस बार, तुम समझते हो, मैंने उसे महसूस किया, मैंने महसूस किया कि अब शायद मैं मर ही जाऊँगा ।

वह जोर-जोर से, बाल-सुलभ विस्मय भाव से हँसन लगे। अपनी पूरी आखें खोलकर अपनी इसी बात को उन्होने कई बार दोहराया। फिर बोले,

'मुझे लगा कि शायद मैं मर जाऊँगा । बहुत सम्भव था बहुत, कि ऐसा ही हो—तुम समझते हो । उन लोगो न जाच कर पता लगाया है कि मेरा दिल बढ गया है । और, सबसे भयकर बात तो यह है कि, मुझे इसका विश्वास करना पड रहा है ।"

फिर अचानक वह गम्भीर हो गये—जैसे कि अपने को किसी

ऐसी चीज के बारे मे बात करते हुए उन्होंने पकड लिया था जिसका कि कोई महत्व नही है। उन्होंने मुझसे सवाल करने शुरू कर दिये

'जनाब, आप को क्या हो रहा है ?'

हाल ही मे मैं एक अस्पताल से निकल कर बाहर आया था और जल्दी ही फिर मुझे एक ऑपरेशन के लिए वहाँ वापस जाना था। यह बात जब मैंने उन्हे बतलायी तो चिंतित होकर उन्होंने मुझसे पूछना शुरू कर दिया, आपरेशन कौन करेगा, आपरेशन के बाद तुम्हारी देखभाल कौन करेगा ? फिर स्वय अपने शब्दो पर विश्वास न करते हुए और यह भी समझते हुए कि मुझे भी उनसे कोई धोखा नही होगा, वह कहने लगे

'आपरेशन तो बिल्कुल सीधा-सादा है। लेकिन उसके बाद तुम क्या करोगे ? तुम्हे भोजन की जरूरत होगी। वह, बेशक—एक असुविधा की चीज है। भोजन कहा से हासिल किया जाय, है ना ?" तभी उन्हे खासी का एक दौरा उठा जो बहुत देर तक चलता रहा। सारे वक्त वह अपनी एक अगुली आगे बढाकर यह जतलाने के लिए उसे हिलाते रहे कि उनके दिमाग मे एक रास्ता सूझ रहा था। मैं धीरज रखूँ। ज्योही खाँसी का दौर खतम हो जायेगा वह उससे मुझे अवगत करायेंगे। बडी मुश्किल से वह बोल पाये कि, "सिर्फ थोडा-सा इन्तजार कर लो। मेरी पुस्तकें निकलने जा रही हैं। मुझे उनका मेहनताना मिलेगा। और मैं तुम्हारे पास रुपया भेज दूँगा। कला और साहित्य के सभी उपासको के पास भेज दूँगा।'

फिर अचानक और सच्चे स्नेह से भरकर उन्होंने मुझसे कहा, "देखो, अपना खयाल रखना। अपने घर वालो से कहना कि वे भी तुम्हारी भी देखभाल करें। हा, यही ठीक है—सब एक दूसरे की देखभाल करें ।अपने घर वालो से, अपने मित्रो से—सबसे कहना। उस घर के लोगो के लिए मेरे दिल मे स्नेह ही स्नेह है। उसे बचाया जाना चाहिए, हर कीमत पर उसको सुरक्षित रखा जाना चाहिए ।"

वह अपनी जगह से उठकर अपनी उस इकतरफा मुस्कराहट से, जा पहले मुझे बहुत अस्त-व्यस्त कर दनी थी, मुस्कराते हुए मेरे पास तक आ गय और अपनी भावनाआ का नियन्त्रित रखने की कोशिश करते हुए, फूहड ढग स उन्होने मेरे कधे का थपथपाया। धीरे से, जमे बुदबुदाते हुए वह बोले,

'तुम बहुत दुबल हा गय हा। अच्छा, तो तुम्हे ग्रेका चीरने जा रहे हैं, है ना ? बहुत अच्छे सजन है, अपन फन के माहिर । बेशक, फयूदारोव आपरेशन करें तो और भी अच्छा होगा ।"

उन्होने चिन्तापूवक मरी तरफ दखा और फिर स्वय अपने खिलाफ विश्वास के माथ दलील देन लग,

'दरअसल, मुख्य चीज़ तो आपरेशन के बाद की दखभाल ही होनी है, और उसकी हम व्यवस्था कर देंगे। उसकी हम निश्चित रूप स व्यवस्था कर देंगे।"

एक बार फिर, अन्तिम बार, क्षणिक रूप से मुझे एमा लगा कि म मीधे उनकी आँखो के अन्दर तक देख सकता हूँ। फिर यह भावना समाप्त हो गयी, वह पीछे छूट गयी, जिस तरह कि और हर चीज़ पीछे छूट गयी थी।

थोडी देर तक मैं नीचे, दरवाज़े के पास खडा रहा। वहाँ से चलने के पहले मुझे उस भावना के ऊपर काबू पाना ज़रूरी था जो मुझे बहुत परेशान कर रही थी, इसलिए परेशान कर रही थी कि मैं उसे समझ नहीं पा रहा था। मुझे बहुत शक्ति, एकदम शारीरिक शक्ति उस पर काबू पाने के लिए बटोरनी पडी और, आखिरकार, जब एसा करने मे मैं सफल हा गया तो मुक्ति की एक अचानक अनुभूति के साथ अपने से मैंने कहा—लेकिन मैं तो सौभाग्यशाली आदमी हूँ। मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ !

मैक्सिम गोर्की

रूसी क्रान्तिकारियों के बारे में लिखते हुए मैक्सिम गोर्की ने कहा था कि व ऐसे चमत्कारिक लोग हैं कि उनके आध्यात्मिक सौंदर्य और विश्व के प्रति उनके प्रेम की कोई और बराबरी कर सकता है इसे वह नहीं जानते।

मैक्सिम गोर्की (१८६८ १९३६) क्रांति के चितेरे थे। जीवन-पयन्त सर्वहारा आन्दोलन के साथ उनका घनिष्ट सम्बन्ध था। अपने काल के अनेक प्रमुख क्रान्तिकारियों को व्यक्तिगत रूप से वह जानते थे। उनमें से कुछ के बारे में उन्होंने लिखा भी था। लेनिन के वह मित्र थे और लेनिन सम्बन्धी उनके संस्मरण क्रान्ति के नेता के सम्बन्ध में लिखी गयी सोवियत रचनाओं में सबसे ऊँचा स्थान रखते हैं। गोर्की का उपन्यास 'माँ' रूसी क्रान्तिकारी प्योत्र जालोमोव और उनकी माँ के जीवन से सम्बन्धित कुछ घटनाओं पर आधारित था। गोर्की प्योत्र जालोमोव और उनकी माँ दोनों को अच्छी तरह जानते थे और आजीवन उनके साथ उनके मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बने रहे थे।

प्रस्तुत कहानी साइमन तर-पेत्रोसियान के सम्बन्ध में है। क्रान्ति के इतिहास में साइमन तर-पेत्रोसियान को "कामो" के नाम से जाना जाता था।

कामो

१९०५ के नवम्बर दिसम्बर के महीने मे मैं मोखोवाया माग और वोज्दविजेन्का के नुक्कड पर स्थित इमारत के एक फ्लैट मे रहता था। कुछ ही दिन पहले तक अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति का कार्यालय भी इसी इमारत मे था। मेरे साथ उस समय बारह सशस्त्र जॉर्जियाइयो की एक टुकडी रहती थी। समिति के मातहत वोल्शेविक साथियो के एक दल को लियोनिद क्रासीन ने सगठित किया था। यह समिति उनकी मदद से मास्को के मजदूरो के क्रातिकारी कार्यकलापो को निर्देशित व सचालित करने की चेष्टा कर रही थी। इन साथियो की टुकडी विभिन्न जिलो के बीच सचार व्यवस्था को बनाये रखने की कोशिश करती थी तथा सम्मेलनो के दौरान मेरे फ्लैट (कमरे) की रखवाली भी करती थी। बहुत बार इस टुकडी को "यमदूतो' (ब्लैक हड्रेडस) के खिलाफ लडने के लिए भी जाना पडता था। ऐसे ही एक अवसर पर जब कि लगभग एक हजार यमदूतो की भीड ने प्राविधिक कालेज पर, जहाँ उस दरिंदे मिखालचुक* द्वारा मार डाले

---

* मिखालचुक निमेत्स्काया माग पर (जिसे अब वाउमान माग का नाम दे दिया गया है) स्थित एक मकान मे ही चौकीदार का काम करता था। वाउमान की हत्या के मुकदमे से वह बरी हो गया था। १९०६ मे उस पर चोरी का इल्जाम लगा था और उसे सजा हो गयी थी।—स०

गये वाउमान का शव रखा था, धावा बाल दिया था तो तरुण जॉर्जियाइयों की अस्त्रों शस्त्रों से अच्छी तरह लैस इस टुकडी ने उस भीड को मार भगाया था।

टुकडी के साथी दिनभर के काम और खतरों से थककर देर गये रात को घर लौटते थे। फिर फश पर लेट-लेटे वे एक दूसरे को दिन भर के अपने अनुभव सुनाते थे। सब के सब वे १८ और २२ वर्ष तक की उम्र के नौजवान थे। उनके कमाण्डर साथी अराबिदजे* थे। साथी अराबिदजे की आयु तीस के करीब हो रही थी। वह अत्यन्त कमठ, अत्यन्त परिश्रमी और बहादुर क्रान्तिकारी थे। अगर मैं गलती नहीं कर रहा हूँ तो १९०८ में जॉर्जिया में वहाँ के लोगों से बदला लेने वाली फौजी टुकडी के कमाण्डर जनरल अज्ञानचीयेव-अज्ञानचेन्स्की को गोली मारकर उन्होंने खात्मा किया था।

'कामो' का नाम सबसे पहले मुझे अराबिदजे ने ही बतलाया था। क्रान्तिकारी तरकीबों के असाधारण रूप से साहसी इस व्याख्याकार के सम्बन्ध में कुछ कहानियाँ भी उन्होंने मुझे बतलायी थीं।

ये कहानियाँ इतनी विलक्षण अविश्वसनीय और कल्पनातीत थीं कि उन वीरतापूर्ण दिनों में भी उन पर विश्वास करना कठिन था। कोई आदमी उनकी तरह का अतिमानवीय साहस दिखाने के साथ-साथ अपने काम में निरन्तर सफल होता जा सकता था, और हृदय की शिशु-जैसी अबोधता के साथ-साथ उनके अन्दर असामान्य किस्म की ऐसी सूक्ष्म बूझ भी हो सकती थी—इस पर विश्वास करना कठिन लगता था। उस समय मुझे लगा कि उनके बारे में जो सब चीजें मैंने सुनी थीं अगर मैं उन्हें लिख डालूँगा तो कोई विश्वास नहीं करेगा। कोई मानेगा नहीं कि वास्तव में हाड माँस का कोई व्यक्ति

---

*जॉर्जियाई अभिनेता—वामो अराबिदजे।—स०

ऐसा हो सकता है। मेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया "कामो" का चित्र एक उपन्यासकार की मात्र कल्पना समझा जायेगा। इसलिए, अराबिद्ज़े ने जो कुछ भी मुझे बतलाया था लगभग उस सब को मैंने अराबिद्ज़े की क्रांतिकारी रोमांसवादिता मान लिया था।

किन्तु, जैसा कि बहुत बार होता है, असलियत किसी भी 'कल्पना' से अधिक जटिल तथा विस्मयकारी साबित हुई।

बहुत दिन बीतने से पहले ही 'कामो" के सम्बन्ध में इन कहानियों की पुष्टि एन० एन० फ्लेरोव नामक एक व्यक्ति ने की जिससे मेरी मुलाकात बहुत पहले, १८९२ में तिफलिस में हुई थी। उस समय वह, काउकाज नामक समाचार पत्र में एक प्रूफ-रीडर की हैसियत से काम करता था। उन दिनों वह 'जनतावादी' था और जिलावतनी की मियाद पूरी करके तभी साईबेरिया से लौटा था। वह एक बहुत थका-मांदा इन्सान था, किन्तु मार्क्स का उसने गहराई से अध्ययन किया था और मुझे तथा मेरे साथी अफानासियेव को बहुत ही ओजस्विता के साथ वह यह समझाने की चेष्टा करता था कि "इतिहास हमारे पक्ष में काम कर रहा है।"

अनेक थके लोगों की तरह वह भी क्रान्ति की अपेक्षा क्रमिक विकास की प्रक्रिया को अधिक पसन्द करता था।

परन्तु १९०५ में वह मास्को आ पहुँचा था और तब वह एक बिल्कुल बदला हुआ इन्सान था। सूखी खाँसी खासते हुए और उस आदमी की तरह की सावधानी भरी आवाज में जिसके फेफड़ों को तपेदिक खाये जा रहा था उसने कहा,

"अरे, इस देश में एक सामाजिक इन्कलाब का श्री गणेश हो रहा है। क्या तुम लोग इसे समझते हो? हाँ, और यह इन्कलाब सचमुच होने जा रहा है, क्योंकि इसकी शुरूआत नीचे से, धरती के अन्दर से हुई है।"

यह देखकर अच्छा लगता था कि एक संकुचित तर्कवादी की

पूर्ति की। मजदूर अपनी टोपी हाथ मे लिये क्षमा याचना करने के अदाज मे उसके सामने खडा था और धीरे धीरे फुसफुसाता हुआ उससे कहने लगा,

'मैं आपको जानता हूँ। आपका नाम पलेराव है। मेरा पीछा किया जा रहा है। जल्दी ही यहा एक दूसरा आदमी आयगा। उसके गले पर पट्टी बँधी होगी और वह चारखाने का ओवरकोट पहन होगा। उससे कह दीजियगा कि वह सुरक्षित घर अब सुरक्षित नही है—वहाँ उसे पकडने के लिए लोग घात लगाये बठे है। उसे आप अपने साथ अपने घर ले जाइयगा। समझ गये ना ?"

उसके बाद टोपी को अपने सर पर ठीक से रखते हुए उस मजदूर ने खुद जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया, 'तुम्हारी बकवास बहुत हो चुकी! ऐसी कौन-सी मुसीबत आ गयी है? क्या मैंने तुम्हारी कोई हड्डी पसली तोड दी है?—इतना हल्ला क्या मचा रहे हो?'

पलरोव हँसने लगा। फिर बोला

'बढिया एक्टिंग थी ना? उसके बाद बहुत दिनो तक मैं सोचता रहा कि उसकी बातो पर मुझे शक क्यो नही हुआ, उसके आदेश को इतनी आसानी स क्यो मैंने मान लिया। कदाचित जिस अधिकार के साथ उसने मुझसे बात की थी उसस मैं प्रभावित हो गया था। कोई उकसाने वाला अथवा सरकारी जासूस होता तो वह मुझसे विनम्रता के साथ बात करता उसमे इतनी हिम्मत न होती कि मुझे हुक्म दे। उसके बाद दो या तीन बार उसस फिर मेरी मुलाकात हुई थी और एक बार वह रात भर मेरे घर रहा था। उस रात हमने लम्बी बात-चीत की थी। सैद्धान्तिक रूप म उसे बहुत ज्ञान नही है। वह इस बात को जानता है और इसके लिए बहुत शर्मिन्दा भी है, किन्तु पढने और अपने को शिक्षित करने के लिए उसके पास बिलकुल वक्त नही है। और, दरअसल तो, इसकी उसे जरूरत भी नही है। उसका अतरतम तक, उसकी एक एक भावना, क्रान्तिकारी है। उसे कभी

की इन कहानियो को सुना है। निस्सन्देह, यह सम्भव है कि स्वय अपने एक नायक की सृष्टि करने के लिए 'कामो' की अदभुत सफलताओ तथा कारगुज़ारियो की कहानी को मजदूर थोडा बहुत रग-चुनकर पश कर रहे हो वग चेतना को धार देने के लिए व एक क्रांतिकारी गाथा ग रहे हो। परन्तु, वास्तव म, वह असाधारण तौर से एक मौलिक व्यक्ति है, नये ढग का व्यक्ति है। कभी-कभी ऐसा लगने लगता है कि मफलता न उस बिगाड दिया है और वह थोडा-बहुत नाटक भी करता है। परन्तु यह केवल नौजवानी की दुस्साहसिकता, केवल दिखावा और रामासवाद नही है। उसका उदगम किसी और चीज से होता है। बेवकूफ की भूमिका वह बहुत सजीदगी के साथ अदा करता है किन्तु लगता है जैसे कि उसे वह, यथार्थ की दुनिया की चिन्ता किये बिना किसी सपने के ससार मे अदा कर रहा है। उदाहरण के लिए, इसी घटना को ले लीजिए। अपनी गिरफ्तारी से कुछ ही समय पहले बर्लिन मे वह एक साथिन के साथ, एक रूसी तरुणी के साथ सडक पर जा रहा था। तरुणी ने एक नागरिक के मकान की खिडकी पर बैठे बिल्ली के बच्चे की ओर सकेत किया और कहा 'देखो तो, वह कितना प्यारा लग रहा है।' कामो ने एक ऊँची छलाँग मारी, खिडकी पर से बिल्ली के उस बच्चे को उठा लाया और अपनी साथिन को उसे भेंट देते हुए बोला—'लो! इसे ले लो!'

"लडकी को जमनो के सन्देह को यह कह कर दूर करना पडा था कि बिल्ली का वह बच्चा खुद ही खिडकी से कूदकर उसके पास आ गया था।

"किन्तु इस तरह की यह कोई अकेली कहानी नही है। मेरा कहना यह है कि 'कामो' क अन्दर सम्पत्ति की जरा भी भावना नही है। उसके मुँह पर अक्सर यह बात रहती है, 'लीजिये, कृपया इसे स्वीकार

कोई डिगा नही सकता। क्रान्तिकारी काम करना उसके लिए उसी तरह की एक शारीरिक आवश्यकता है जिस तरह कि इन्सान के लिए हवा और रोटी की आवश्यकता होती है।"

दो साल बाद कैप्री द्वीप पर "कामो" के कार्य-कलापो की एक और झलक मुझे लियोनिद क्रासीन के द्वारा मिली थी। हम लोग भिन्न-भिन्न पुराने साथियो की याद कर रहे थे। तभी अचानक वह हल्के से हँसे और पूछने लगे, "आपको याद है कि उस समय जिस समय उस तेज तर्रार कार्केशियाई अफसर को सडक पर आँख मारकर मैंने इशारा किया था तो आप को कितना आश्चर्य हुआ था ? आपने आश्चर्य से पूछा था कौन है वह ? मैंने आप को बतलाया था कि वह राजकुमार दादेश केलियानी, तिफलिस का मेरा एक परिचित मित्र था। याद आया ? मुझे यकीन था कि आपने मेरी बात का विश्वास नही किया था। आपने सोचा होगा कि भला ऐसे छल छबीले आदमी से मेरी कैसे यारी हो सकती है। आपको शक हुआ होगा कि मैं आप को बना रहा था। वास्तव मे, वह 'कामो' था। अपनी भूमिका को कितनी खूबसूरती से उसने निभाया था ! अब वह बर्लिन मे पकड लिया गया है और सम्भवत इस बार अब वह न बच पायगा। वह पागल हो गया है। आपसे मैं कह सकता हूँ कि वह पागल वागल कुछ नही है। परन्तु मुझे नही लगता कि इससे वह बच पायगा। रूसी राजदूतावास चाहता है कि वह उसे सौंप दिया जाय। यदि जो-जो काम 'कामो' ने किये है उनके आधे चौथाई का भी पता सैनिकों को लग जायेगा तो वे उसे सूली पर चढा देंगे।

'कामो' के बारे मे मुझे जितनी भी जानकारी थी वह सब मैंने क्रासीन को सुना दी और उनसे पूछा कि उसमे कौन कौन सी चीजें सत्य हैं ?

क्षण भर विचार करने के बाद क्रासीन ने कहा, 'यह सभी चीजें सच हो सकती हैं। मैंने भी उसकी विलक्षण सूझ-बूझ तथा हिम्मत

की इन कहानियो को सुना है। निस्सन्देह, यह सम्भव है कि स्वय अपने एक नायक की सृष्टि करने के लिए 'कामो' की अदभुत सफलताओ तथा कारगुजारियो की कहानी को मजदूर थोडा-बहुत रग-चुनकर पेश कर रहे हो वर्ग चेतना को धार देने के लिए वे एक क्रांतिकारी गाथा गढ रहे हो। परन्तु, वास्तव मे, वह असाधारण तौर से एक मौलिक व्यक्ति है नये ढग का व्यक्ति है। कभी-कभी ऐसा लगने लगता है कि सफलता ने उसे बिगाड दिया है और वह थोडा-बहुत नाटक भी करता है। परन्तु यह केवल नौजवानी की दुस्साहसिकता, केवल दिखावा और रोमासवाद नही है। उसका उदगम किसी और चीज से होता है। बेवकूफ की भूमिका वह बहुत सजीदगी के साथ अदा करता है, किन्तु लगता है जैसे कि उसे वह यथार्थ की दुनिया की चिन्ता किये बिना, किसी सपने के ससार मे अदा कर रहा है। उदाहरण के लिए, इसी घटना को ले लीजिए। अपनी गिरफ्तारी से कुछ ही समय पहले बर्लिन मे वह एक साथिन के साथ, एक रूसी तरुणी के साथ सडक पर जा रहा था। तरुणी ने एक नागरिक के मकान की खिडकी पर बैठे बिल्ली के बच्चे की ओर सकेत किया और कहा 'देखो तो, वह कितना प्यारा लग रहा है।' कामो ने एक ऊँची छलांग मारी, खिडकी पर से बिल्ली के उस बच्चे को उठा लाया और अपनी साथिन को उसे भेट देते हुए बोला—'लो! इसे ले लो!'

"लडकी को जमनो के सन्देह का यह कह कर दूर करना पडा था कि बिल्ली का वह बच्चा खुद ही खिडकी से कूदकर उसके पास आ गया था।'

'किन्तु इस तरह की यह कोई अकेली कहानी नही है। मेरा कहना यह है कि 'कामो' के अन्दर सम्पत्ति की जरा भी भावना नही है। उसके मुह पर अक्सर यह बात रहती है, 'लीजिये, कृपया इसे स्वीकार

"परन्तु, असली कारण क्या था ? क्या तुम्हे उनके लिए दुःख हो रहा था ?"

"इसमे वह नाराज हो उठा और उसका चेहरा तमतमाने लगा। वह बोला, 'दुःखी, बिल्कुल नही। लेकिन वे साधारण गरीब लोग थे। उन्हे उसमे क्या लेना देना था ? उनके वहाँ अटके रहने की जरूरत ही क्या थी ? केवल मै ही नही बम फेंक रहा था। उनके चोट लग जा सकती थी, या वे मर भी जा सकते थे।'

'एक और घटना है जो उसके इस तरह के आचरण पर कदाचित और अधिक प्रकाश डालती है। दिदुब मे एक बार उमे ऐसा लगा कि एक जासूस उसका पीछा कर रहा था। उसने उस आदमी को मजबूती से पकड लिया और उसे दीवाल के पास ले जाकर उमसे उसने निम्न प्रकार कहना शुरू कर दिया 'तुम एक गरीब आदमी हो। हो ना ? तब फिर तुम गरीबो के खिलाफ क्यो काम करते हो ? क्या रईस लोग तुम्हारा साथ देते है ? फिर तुम क्या यह बदमाशी करते हो ? चाहते हो कि मै तुम्हारा काम तमाम कर दू ?'

"उस आदमी ने कहा कि वह मरना नही चाहता था। वह बातूनी के दल का एक मजदूर था। वह वहा क्रान्तिकारी साहित्य लेने के लिए आया था, किन्तु जिस साथी के साथ वह ठहरा करता था उसका पता उसने कही खो दिया था और इसीलिए याददाश्त के आधार पर वह उस के घर का पता लगाने की कोशिश कर रहा था। तो, देखा आपने, 'कामो' किस तरह का मौलिक इन्सान है ?"

'कामो' का सबसे अदभुत काय तो वह ढोंग रचना था जिसस उसने बर्लिन के उस सवज्ञ मन चिकित्सक को बेवकूफ बना दिया था। किन्तु कामो की नकली बीमारी का ढोंग उसकी अधिक सहायता न कर सका। विल्हेल्म द्वितीय की सरकार ने उसे जार के हथियार-बन्द सिपाहियो के हवाले कर दिया। उसे जजीरों से बाध दिया गया

दीजिए।—चाहे प्रश्न स्वयं उसकी कमीज़ का हो, चाहे जूतों का, चाहे वैसी ही किसी दूसरी व्यक्तिगत चीज़ का।

"क्या ऐसा वह केवल दया भाव से करता है? नहीं। वह बहुत बढ़िया साथी है। वह मेरी और तेरी में कोई फर्क नहीं करता। वह हमेशा 'हमारे दल', 'हमारी पार्टी', 'हमारे लक्ष्य' की ही बात करता है।

'और बर्लिन में ही एक और भी घटना घटी थी। बेहद भीड़ वाली एक गली में एक दूकानदार ने एक लड़के को अपने दरवाज़े से धकिया कर बाहर कर दिया था। 'कामो' दौड़ता हुआ सीधे दुकान में घुस गया। उसका घबड़ाया हुआ साथी उसे रोक न पाया। उससे अपने को छुड़ाते हुए उसने कहा, 'जाने दो, मुझे जाने दो। उसकी थोड़ी मरम्मत करना जरूरी है।' कदाचित पागल आदमी के अपने पार्ट का वह पूर्वाभ्यास कर रहा था। किन्तु मुझे इसमें शक है। उन दिनों हम उसे अकेला बाहर नहीं जाने देते थे, क्योंकि यह निश्चित था कि अगर वह बाहर जायगा तो किसी न किसी झंझट में जरूर फँस जायगा।

"उसने मुझसे एक बार खुद ही यह बतलाया था कि एक बार जब वे लोग किसी को बेदखल करने गये थे और बम फेंकने की जिम्मेदारी उसके ऊपर थी तो उसे लगा था कि दो जासूस उसका पीछा कर रहे हैं। सिर्फ एक मिनट बाकी था। इसलिए वह सीधा जासूसों के सामने जा पहुँचा और उनसे उसने कहा 'यहाँ से भाग जाओ, मैं बम फेंकने वाला हूँ।'

मैंने पूछा, 'और वे वहाँ से भाग गये?

'एकदम, वे वहाँ से खिसक गये।

'लेकिन तुमने उन्हें क्यों बतलाया?"

'क्यों नहीं? मैंने सोचा कि उनको बतला देना ही बेहतर है, इसलिए मैंने बतला दिया।"

"परन्तु, असली कारण क्या था ? क्या तुम्हें उनके लिए दुःख हो रहा था ?'

"इससे वह नाराज हो उठा और उसका चेहरा तमतमाने लगा। वह बोला, 'दुःखी, बिल्कुल नहीं। लेकिन वे साधारण गरीब लोग थे। उन्हें उससे क्या लेना देना था ? उनके वहाँ अटके रहने की जरूरत ही क्या थी ? केवल मैं ही नहीं बम फेंक रहा था। उनके चोट लग जा सकती थी या वे मर भी जा सकते थे।'

'एक और घटना है जो उसके इस तरह के आचरण पर कदाचित और अधिक प्रकाश डालती है। दिदुब में एक बार उसे ऐसा लगा कि एक जासूस उसका पीछा कर रहा था। उसने उस आदमी को मजबूती से पकड़ लिया और उसे दीवाल के पास ले जाकर उससे उसने निम्न प्रकार कहना शुरू कर दिया 'तुम एक गरीब आदमी हो ! हो ना ? तब फिर तुम गरीबों के खिलाफ क्यों काम करते हो ? क्या रईस लोग तुम्हारा साथ देते हैं ? फिर तुम क्यों यह बदमाशी करते हो ? चाहते हो कि मैं तुम्हारा काम तमाम कर दूँ ?

"उस आदमी ने कहा कि वह मरना नहीं चाहता था। वह वातूनी के दल का एक मजदूर था। वह वहाँ क्रान्तिकारी साहित्य लेने के लिए आया था किन्तु जिस साथी के साथ वह ठहरा करता था उसका पता उसने वहीं खो दिया था और इसीलिए याददाश्त के आधार पर वह उसके घर का पता लगाने की कोशिश कर रहा था। तो, देखा आपने, 'कामो किस तरह का मौलिक इन्सान है ?'

'कामो' का सबसे अद्भुत कार्य तो वह ढोंग रचना था जिससे उसने बर्लिन के उस मवज्ञ मन चिकित्सक को बेवकूफ बना दिया था। किन्तु कामो की नकली बीमारी का ढोंग उसकी अधिक सहायता न कर सका। विल्हेल्म द्वितीय की सरकार ने उसे जार के हथियार-बन्द सिपाहियों के हवाले कर दिया। उसे जंजीरों से बांध दिया गया

कीजिए।'—चाहे प्रश्न स्वय उसकी कमीज का हो, चाहे जूतो का, चाहे वैसी ही किसी दूसरी व्यक्तिगत चीज का।

"क्या ऐसा वह केवल दया भाव स करता है ? नही। वह बहुत बढिया साथी है। वह मेरी और तेरी मे कोई फर्क नही करता। वह हमेशा 'हमारे दल', 'हमारी पार्टी', 'हमारे लक्ष्य' की ही बात करता है।"

'और बर्लिन में ही एक और भी घटना घटी थी। बेहद भीड वाली एक गली म एक दूकानदार ने एक लडके को अपने दरवाजे से धकिया कर बाहर कर दिया था। कामो दौडता हुआ सीधे दुकान मे घुस गया। उसका घबडाया हुआ साथी उसे रोक न पाया। उससे अपने को छुडाते हुए उसने कहा, 'जान दो, मुझे जाने दो। उसकी थोडी मरम्मत करना जरूरी है।' कदाचित पागल आदमी के अपने पाट का वह पूर्वाभ्यास कर रहा था। किंतु मुझे इसम शक है। उन दिनो हम उसे अकेला बाहर नही जाने देते थे क्योकि यह निश्चित था कि अगर वह बाहर जायगा तो किसी न किसी झंझट म जरूर फँस जायेगा।

उसने मुझसे एक बार खुद ही यह बतलाया था कि एक बार जब वे लोग किसी को बेदखल करने गये थे और बम फेकने की जिम्मेदारी उसके ऊपर थी तो उसे लगा था कि दो जासूस उसका पीछा कर रहे है। सिर्फ एक मिनट बाकी था। इसलिए वह सीधा जासूसो के सामने जा पहुँचा और उनसे उसने कहा 'यहाँ से भाग जाओ, मैं बम फेंकने वाला हू।'

मैंने पूछा, 'और वे वहाँ से भाग गये ?'

'एकदम, वे वहा से खिसक गये।

'लेकिन तुमने उन्हे क्यो बतलाया ?'

"क्यो नही ? मैंने सोचा कि उनको बतला देना ही बेहतर है, इसलिए मैंने बतला दिया।"

"परन्तु, असली कारण क्या था ? क्या तुम्हे उनके लिए दुख हो रहा था ?"

"इससे वह नाराज हो उठा और उसका चेहरा तमतमाने लगा। वह बोला, 'दुखी, बिल्कुल नही। लेकिन व साधारण गरीब लोग थे। उन्ह उससे क्या लेना देना था ? उनके वहाँ अटके रहने की जरूरत ही क्या थी ? केवल मैं ही नही बम फेंक रहा था। उनके चोट लग जा सकती थी या वे मर भी जा सक्ते थ।

'एक और घटना है जो उसके इस तरह के आचरण पर कदाचित और अधिक प्रकाश डालती है। तिफ्लिस मे एक बार उसे ऐसा लगा कि एक जासूस उसका पीछा कर रहा था। उसन उस आदमी को मजबूती स पकड लिया और उसे दीवाल के पास ले जाकर उससे उसने निम्न प्रकार कहना शुरू कर दिया 'तुम एक गरीब आदमी हो ! हो ना ? तब फिर तुम गरीबो के खिलाफ क्यो काम करते हो ? क्या रईस लोग तुम्हारा साथ देते ह ? फिर तुम क्या यह बदमाशी करते हो ? चाहते हो कि मैं तुम्हारा काम तमाम कर दू ?'

"उस आदमी न कहा कि वह मरना नही चाहता था। वह बातूनी के दल का एक मजदूर था। वह वहा क्रान्तिकारी साहित्य लेने के लिए आया था, किन्तु जिस साथी के साथ वह ठहरा करता था उसका पता उसन कही खो दिया था और इसीलिए यादददाश्त के आधार पर वह उस के घर का पता लगान की कोशिश कर रहा था। तो, देखा आपने, 'कामो' किस तरह का मौलिक इन्सान है ?

'कामो' का सबसे अदभुत काय तो वह ढोग रचना था जिसस उसने बर्लिन के उस सवज्ञ मन चिकित्सक को बेवकूफ बना दिया था। किन्तु कामो की नक्ली बीमारी का ढोग उसकी अधिक सहायता न कर सका। विल्हेल्म द्वितीय की सरकार ने उसे ज़ार के हथियार-बन्द सिपाहियो के हवाले कर दिया। उसे जजीरो से बाध दिया गया

ार तिफलिस ल जाकर मिखाइलोव्स्की अस्पताल के मानसिक
ित्सा विभाग म रख दिया गया। अगर मैं भूल नही कर रहा हूँ
उसन पागलपन का स्वाँग पूरे तीन वष तक किया था। अस्पताल
उमका भाग निकलना भी एक आश्चयजनक बहादुरी का काम था।"

व्यक्तिगत रूप स कामो स मरी मुलाकात १९२० मे, मास्को
फारतूनतोवा क फ्लैट (घर) मे हुई थी। वाजदवीजेन्का और
खोवाया माग के कोन पर स्थित यह फ्लट कभी मरा रहा था।

वह एक गठे हुए शरीर का सुपुष्ट आदमी था। उसका चेहरा
काकेशियाई था और उसकी कोमल काली आखो मे नेकी और
ना का सदा चौकस रहन वाला जैसा भाव था। वह लाल सना
वर्दी पहने था।

उसकी गतिविधिया म एक विशेष प्रकार का सयम तथा सतकता
जिससे एसा लगता था कि उस अनभ्यस्त-वातावरण म वह कुछ
शानी महसूस करता था। म तुरन्त समझ गया कि अपने क्रान्ति-
री काम के बारे म पूछ जान वाले सवालो का जवाब देत देत
थक गया था और अब उसका सारा ध्यान किसी और ही चीज
केंद्रित था। वह श्रमिक अकादमी म प्रवेश पाने के लिए जमकर
ाई कर रहा था।

एक पाठय पुस्तक को इस तरह सहलात और थपथपाते हुए जस
वह किसी गुस्सैल कुत्ते को पुचकार रहा हो, किंचित निराश भाव
उसने कहा, 'विज्ञान को समझना कठिन काम है। इसम जितने
त्र होने चाहिए उतने नही हैं। पुस्तको म और अधिक तस्वीरें
नी चाहिए जिससे कि आदमी फौजो की स्थितियो को आसानी से
झ सके। इसके बारे मे क्या आप मुझे कुछ बतला सकते है ?"

जब मैन कहा कि मैं नही बतला सकता तो मेरी बात सुनकर
मो न किंकतव्य-विमूढ ढग से मुस्करा दिया।

"बात यह है कि ।"

उसकी मुस्कराहट लगभग बच्चो जैसी, असहायतापूर्ण थी। उस तरह की असहायता की उस भावना से मैं अच्छी तरह परिचित था क्योकि अपनी युवावस्था मे, पुस्तको के शाब्दिक ज्ञान से पाला पडने पर, मैं स्वय उसका अनुभव कर चुका था। और मैं इस बात को भलीभाति समझ सकता था कि मैदान म पराक्रम दिखलाने वाले एक एसे निर्भीक आदमी के लिए जिसने क्रान्ति के दौरान मुख्य तौर से नय नय अदभुत काय करके उसमे योगदान किया था पुस्तको के इस अवराध को पार करना कितना कठिन रहा होगा।

इसकी वजह मे शुरू से ही 'कामो के प्रति मेर अन्दर गहरे लगाव का एक भाव पदा हो गया था और जितना ही अधिक एक दूसरे को हम जानते गये उसकी क्रान्तिकारी भावना की गहराई तथा सच्चाई से मैं उतना ही अधिक प्रभावित होता गया।

'कामो के पौराणिक कहानी जैसे अदभुत साहस उसकी अति मानवीय इच्छा शक्ति तथा उसके आश्चयजनक आत्म-नियत्रण के विषय म जिन बातो का मैं जानता था उन सबको इस आदमी के साथ, जो पाठ्य पुस्तको से लदी मेज के सामने इस समय मेरे करीब बठा था, जोड सकना सवथा असम्भव सा लगता था।

यह अविश्वसनीय लगता था कि इतने जबदस्त और लगातार काम के बाद भी उसका हृदय इतना कोमल और सरल बना हुआ था और उसका मन इतना जवान, निमल तथा मजबूत था।

उसकी तरुणाई अभी तक समाप्त नही हुई थी और वह एक अत्यन्त चित्ताकषक, यद्यपि चौंधियाने वाली सुन्दर नही, स्त्री से रोमानी ढग से प्रेम करता था। मेरा खयाल है कि आयु मे वह स्त्री 'कामो' से बडी थी।

अपने प्रेम के विषय म उस गीतात्मक उत्कटता के साथ वह बात करता था जिसमे कि केवल पवित्र और शक्तिवान नौजवान ही कर सकते हैं। वह कहता था -

"वह सचमुच असाधारण है ! वह डाक्टर है और विज्ञान के विषय मे सभी कुछ वह जानती है। काम से बाद जब वह घर वापस आती है तो मुझसे कहती है 'इसमे ऐसी कौन-सी चीज है जो तुम नही समझ पाते ? देखो यह तो इतनी आसान है !' और उसकी बात बिल्कुल ठीक निकलती है। वह चीज बिल्कुल आसान निकलती है। वह एकदम सही सिद्ध होती है। वह भी क्या इसान है !"

और कभी-कभी अपनी प्रेमिका का ऐसे शब्दो मे वर्णन करते-करते, जो सुनने मे हास्यास्पद लगते थे, वह एक अप्रत्याशित खामोशी मे डूबकर रह जाता था, अपने घने घुघराले बालों को पकडकर बिखेरा देता था और होठो पर एक मौन-सा प्रश्न लिए हुए मेरी तरफ देखने लगता था।

उसे उत्साहित करता हुआ तब मैं पूछता "हा, फिर इसके बाद क्या ?

स्पष्ट, स्फुट स्वर मे वह कहता, 'देखिये, बात यह है कि । वह फिर चुप हो जाता और बोलने के लिए उसे तैयार करने के वास्ते मुझे फिर बहुत देर तक कोशिश करनी पडती और तब मुझे उसका वह अत्यन्त निश्छल प्रश्न सुनने को मिलता

"कदाचित, मुझे शादी नही करनी चाहिए ?"

"क्यो नही ?"

"बात यह है कि, आप तो जानते हैं, क्रान्ति का दौर चल रहा है। मुझे बहुत पढना और काम करना है। हम लोग शत्रुओ से घिरे हैं। हम उनसे जूझना है !"

और उसकी सिकुडी भ्रकुटियो तथा उसकी आखो मे चमकती दृढ रोशनी को देखकर मैं समझ जाता कि इस प्रश्न को लेकर वास्तव मे वह बहुत परेशान था। शादी करना—क्या क्रान्ति के साथ विश्वासघात करना नही होगा ? तरुणाई-भरी उसकी शक्तिशालिता और उसके पौरुष का अम्लान तेज, उसकी जबरदस्त क्रान्तिकारी कर्म शक्ति से

मेल नही खा पाते थे। उस स्थिति को देखकर बहुत विचित्र, किंचित हास्यपूर्ण तक लगता था, और दिल को बहुत चोट पहुँचती थी।

जितने ही उत्साह से वह अपने प्रेम के बारे मे बात करता था उतन ही उत्कट आवेग से वह देश से बाहर जाकर वहाँ काम करने के बारे म चर्चा करता था। एक दिन कहन लगा, "मैंने लेनिन से इजाज़त माँगी है कि वह मुझे बाहर चला जाने दें। मैंने उनस कहा है कि, 'मैं वहाँ उपयोगी सिद्ध हूँगा।' वह कहते हैं 'नही, अब तुमको पढना है!' सो, बात खत्म हो गयी। वह सब कुछ जानते है! वाह, क्या आदमी हैं! बच्चे की तरह हँसते है। आपने कभी उन्हे हँसते सुना है?"

उसके चेहरे पर मुस्कराहट की चमक दौड गयी। फिर ज्योंही उसने मैंय विज्ञान के अध्ययन की कठिनाइयो की शिकायत करनी शुरू की त्योंही फिर उसके चेहरे पर परेशानी के बादल घिर आये।

जब मैंन उसके अतीत के बारे मे पूछा तो अनिच्छा से उसन उन तमाम अदभुत कहानियो की पुष्टि की जो मैंने उसके बारे मे सुन रखी थी। लेकिन इस सबके बारे मे बात करना उसे पसन्द न था। और ऐसी कोई नयी बात उसने नही बतलायी जो मुझे पहले से ही नही मालूम थी।

एक दिन वह कहने लगा, बहुत से मूखतापूण काय भी मैंने किये ह। एक दिन शराब पिलाकर एक पुलिस वाले को मैंने मदहोश कर दिया और फिर उसकी खोपडी और दाढी को कोलतार से रग दिया। हम लोग एक दूसरे से परिचित थे, सो वह मुझसे पूछने लगा, 'कल उस टोकरी मे तुम क्या ले जा रहे थे?' मैंने कहा, 'अण्डे।' 'और उनके नीचे कागज कौन से थे?' 'कागज-वागज कोई नही थे!' वह बोला, 'तुम झूठ बोल रहे हो। कागजो को मैंने खुद देखा था!' 'तो फिर तुमने मेरी तलाशी क्यो नही ली?' वह बोला 'मैं उस समय स्नान करके लौट रहा था।' मूर्ख कहीं का! उसने मुझे झूठ बोलने के लिए

विवश किया था इसलिए मैं उससे नाराज था। इसीलिए मैं उसे एक सराय मे ले गया। शराब पीकर वह ज्योंही धुत्त हुआ, त्योंही कोलतार से मैंने उसकी अच्छी तरह पोताई कर दी। उन दिनो मैं नौजवान था, लोगो को बेवकूफ बनाने म मुझे मजा आता था।' इसके बाद उसने इस तरह मुह बनाया, जैसे कि कोई खट्टी चीज उसके मुह मे चली गयी थी।

मैंन उसे समझान की कोशिश की कि वह अपने सस्मरण लिख डाले। मैंने कहा कि उन तरुणो के लिए उसके सस्मरण उपयोगी होंगे जो क्रातिकारी तकनीको से अनभिज्ञ है। उसने घुघराले बालो वाले अपने सर को हिलाया और बहुत दिनो तक उसके लिए राजी नही हुआ। कहने लगा, "मैं नही लिख सकता। मैं जानता ही नही कि कैसे लिखा जाय। मेरे जैसा एक असस्कृत आदमी भला सोचिये तो, मैं किस तरह का लेखक बनूगा!"

किन्तु, जब वह समझ गया कि उसके सस्मरण क्रान्ति के लिए उपयोगी होंगे तब वह लिखने क लिए राजी हो गया। और फिर, हमेशा की तरह, जब एक बार उसने निणय कर लिया तब, निस्सन्देह, उसे पूरा करने मे वह जुट गया।

उसका लिखना बहुत शुद्ध नही था और किसी कदर नीरस भी था। स्पष्टतया अपने स ज्यादा वह अपने साथियो के बारे म बतलाने की कोशिश करता था। इस ओर जब मैंने उसका ध्यान दिलाया तो वह नाराज होने लगा। बोला,

'क्या आप चाहते हैं कि मैं खुद अपनी ही पूजा करूँ? मैं कोई पादरी नही हूँ।"

"पादरी लोग क्या खुद अपनी पूजा करते हैं?'

"हा, और क्या? नौजवान महिलाएँ खुद अपनी ही पूजा करती हैं—क्या यह सच नही है?"

लेकिन, इसके बाद, उसने अधिक सजीवता के साथ लिखना शुरू कर दिया और अपने बारे में भी लिखने में नियंत्रण को कुछ कम किया।

अपने विशिष्ट ढंग में वह सुन्दर था, यद्यपि इसका अहसास आदमी को तुरन्त नहीं होता था।

मेरे सामने लाल सेना की वर्दी पहने हुए एक मजबूत, फुर्तीला सा व्यक्ति बैठा था लेकिन कल्पना की आँखों में मैं देख रहा था कि उसके अन्दर एक मजदूर छिपा था, अण्डों को पहुँचाने वाला एक फेरी वाला था, एक टैक्सी ड्राइवर था, एक छैला, राजकुमार दादेशकेलियानी, हथकड़ियों-बेड़ियों में जकड़ा एक पागल, एक ऐसा पगला बैठा था जिसने विज्ञान के बड़े-बड़े पंडितों को भी यह मानने के लिए मजबूर कर दिया था कि वह सचमुच पागल था!

मुझे याद नहीं कि मैंने तियादज़े का क्यों जिक्र कर दिया था। तियादज़े के बायें हाथ में केवल तीन अंगुलियाँ थीं और कैप्री में वह मेरे साथ टिका था।

'कामो' ने तुरन्त कहा, "हाँ हाँ, मैं उसे जानता हूँ—वह मेन्शेविक है!" और फिर, किंचित क्रोध और तिरस्कार से वह बोला, "इन मेन्शेविकों को मैं नहीं समझ पाता। वे ऐसे क्यों होते हैं? वे काकेशश में, हमारी ही जैसी भूमि पर रहते हैं। पर्वतमालाएँ वहाँ भी आकाश तक ऊँची जाती हैं नदियाँ सागर की ओर दौड़ती दिखलायी देती है अपनी सारी सम्पदा को लिये हुए चारों तरफ वहाँ राजे-रजवाड़े फैले हुए हैं और आम लोग गरीब है। फिर भी ये मेन्शेविक इतने कमजोर क्यों होते है? वे क्रान्ति क्यों नहीं चाहते?"

वह बहुत देर तक विस्तार और अधिकाधिक उत्साह के साथ बात करता रहा, किन्तु एक विचार था जिसे व्यक्त करने के लिए वह सही शब्द नहीं ढूँढ पा रहा था। गहरी साँस लेते हुए उसने अपनी बात को इन शब्दों के साथ समाप्त कर दिया,

"महनतकश लोगो के बहुत से दुश्मन हैं। उनमे सबसे खतरनाक वे हैं जो हमारी अपनी ही भाषा मे झूठ बोल सकते है।"

स्वाभाविक तौर से मैं इस चीज को समझने के लिए बहुत उत्सुक था कि इस आदमी ने, जो इतने "निर्दोष हृदय का" है, अनुभवी मनश्चिकित्सको को किस तरह, किस शक्ति और क्षमता से, यह समझा दिया था कि वह वास्तव म पागल है।

पर तु, स्पष्ट था कि इस विषय मे उससे किसी का पूछ ताछ करना उसे अच्छा नही लगता था। उत्तर म वह कधे उचका देता और टाल-मटाल करने की कोशिश करता। कहता,

"इसके बारे मे मैं क्या कह सकता हूँ? मेरे लिए वैसा करना जरूरी था! मैं अपनी चमडी बचा रहा था और सोचता था कि इससे क्राति मे सहायता मिलेगी।"

और जब मैंन उससे कहा कि अपने जीवन के इस नाजुक समय के विषय म उसे अपने सस्मरणो मे लिखना पडेगा और बहुत सोच-समझ कर लिखना पडेगा और, हो सकता है कि, इस काम मे मैं उसकी कुछ सहायता कर सकू, तभी केवल कुछ सोचता हुआ वह एकदम विचार-मग्न हो गया था। उसने अपनी आँखे बन्द कर ली और दोनो हाथो की अगुलियो को जोर से मोडकर उसन उन्ह एक मुक्के की तरह बना लिया। फिर धीरे धीरे उसने कहना शुरू किया,

"मैं कह ही क्या सकता हू? वे मेरे शरीर को लगातार टटोलते रहते, मरे घुटनो पर ठक-ठक करते, मुझे गुदगुदाते, और जाने किस-किस तरह से मरी जाँच करने की कोशिश करते किन्तु अपनी अगुलियो स वे मरी आत्मा को तो नही टटोल सकते थ, टटोल सकते थे क्या? उन्होंने मुझस कहा कि शीशे में अपना मुह देखो और उसमे कैसा भयानक चेहरा मुझे दिखलायी दिया! वह मरा नही था। वह किसी ऐस आदमी का था जिसका चेहरा बहुत पतला था, जिसके लम्बे बाल

चिक्ट कर सूख गये थे और जिसकी आखे जल रही थी—वह किसी बदशक्ल शैतान का चेहरा था ! भयानक चेहरा !

"मैंने अपनी खीसें निपोर दी । मैं मन मे सोचने लगा, हो सकता है मैं सचमुच ही पागल हो गया हूँ । वह बहुत ही कष्टदायक क्षण था ! लेकिन मैंने सोच लिया था कि मुझे कौन सा सही काम करना चाहिए और शीशे पर मैंने थूक दिया ! उन दोनो ने, बदमाशो के एक गिरोह की तरह, एक दूसरे को आँख से इशारा किया । निस्सदेह मुझे लगा कि, वह चीज उन्हें अच्छी लगी थी—यह चीज कि एक आदमी खुद अपना ही चेहरा भूल गया था !"

क्षण भर खामोश रहने के बाद उसने फिर आहिस्ता से कहना शुरू किया,

"जिस चीज के बारे मे मैं सचमुच बहुत देर तक सोचता रहा था वह यह थी कि उस शख्स के सामने मैं टिका रह सकूगा, या वास्तव म पागल ही हो जाऊँगा ? वह बहुत बुरी स्थिति थी, आप समझते हैं न ? मैं खुद अपने ही ऊपर विश्वास नही कर पा रहा था ? ऐसा लगता था कि मैं किसी पहाडी के ऊँचे कगार पर लटका हुआ था । मैं देख नही पा रहा था कि मैं किस चीज के सहारे लटका हुआ हूँ ।"

थोडी देर फिर चुपचाप रहन के बाद, वह मुस्कराने लगा और बोला,

"इसमे कोई शक नही कि वे अपने काम मे माहिर हैं, अपने विज्ञान को वे जानते हैं, किन्तु वे काकेशियाई लोगो को नही जानते ! हो सकता है कि हर काकेशियाई उनको पागल ही मालूम पडता हो ! और फिर, यह तो बाल्शेविक भी था !! हाँ, इसके बारे म भी मेरे मन मे विचार उठे थे । किसके मन म न उठते ? मैंने मन ही मन तय किया कि चलो, खेल को चलन दो, और देखो कौन किसे पहले पागल बना देता है ! मैं सफल नही हुआ । व जैसे थे वैसे ही बने रहे,

और मैं भी अपनी जगह पर अडा रहा। तिफलिस म उन्होंने मेरी अधिक जाँच-पडताल नही की। मेरा खयाल है कि उन्होने सोचा होगा कि जमना से काई भूल नही हो सकती थी।'

उसन जितनी भी बातें मुझे बतलायी थी, उनमे यह सबस लम्बी थी।

और, ऐसा लगता था कि, इस कहानी का बतलाना उसके लिए सबसे अधिक कष्टप्रद था। अनपेक्षित रूप से कुछ मिनटो के बाद फिर वह किसी विषय के सम्बन्ध म बात करने लगा। हम लोग पास-पास बैठे थे। उसने अपन कन्धे से मुझे हल्का सा धक्का दिया और शान्त, किन्तु किंचित कठोर स्वर म बोला,

"रूसी भाषा म एक शब्द है—यारोस्त*। आप इस शब्द को जानते है? इस यारोस्त का अथ क्या है—इसे मैं अभी नही समझ सका था। किन्तु, मेरा खयाल है कि, जिस समय मैं डाक्टरो के सामने था उस समय मैं यारोस्त म ही था। आज मुझे ऐसा ही लगता है। यारोस्त—वह एक अच्छा शब्द है। क्या यह सच है कि एक रूसी देवता हुआ करता था जिसका नाम 'यारीलो था?

और जब उसे यह मालूम हुआ कि वास्तव म एक ऐसा देवता था और उसे सृजनात्मक शक्तियो का मूतमान स्वरूप माना जाता था, तो 'कामो' ठठाकर हँस पडा।

मेरी दृष्टि मे 'कामो उन क्रान्तिकारियो मे से एक था जिनके लिए वतमान की अपेक्षा भविष्य कही अधिक वास्तविक होता है। इसका अथ यह नही कि वे स्वप्न दृष्टा होत है। कदापि नही। इसका अथ यह होता है कि उनके हृदय की, मन की क्रान्तिकारी भावना

---

* हिन्दी मे इसका उलथा किया जाय तो कुछ प्रचण्ड रोष' जैसा अथ उसका होगा।—अनु०

इतनी सामञ्जस्यपूर्ण और सुदृढ़ होती है कि उससे उनके विवेक को साहस मिलता है, उसमें उनकी क्रान्तिकारी भावना को बढ़ने का और दूर-दूर तक छलांगें लगाने का आधार प्राप्त होता है।

अपने क्रान्तिकारी क्रिया कलापों के बाहर वह सम्पूर्ण वास्तविकता, जिसके अन्तर्गत उनके पूरे वर्ग को रहना पड़ता है, उन्हें एक दुःस्वप्न की तरह, एक भयानक मायाजाल की तरह प्रतीत होती है, और जिस असली वास्तविकता में वे जिन्दा रहते हैं वह समाजवादी भविष्य की वास्तविकता होती है।

यूरी जर्मन

सबसे पहले चौथे दशक म पाठको को यूरी जमन (१९१०-६७) ने अपनी सफल रचना हमारे परिचितों' से प्रभावित किया था। युद्ध के बाद 'तरुण रूस' और डाक्टरो की टुकडी का लेफ्टीनेन्ट कनल" नामक रचनाएँ उन्होने लिखी। डाक्टर ब्लादीमीर उस्तीमेन्को के सम्बन्ध मे तीन भागो मे लिखे गये उनके उपन्यास ('जिस लक्ष्य के प्रति तुम अर्पित हो", 'दृढ और सच्चे" तथा 'चिरन्तन सघष") का अनेक यूरोपीय भाषाओ म अनुवाद हो चुका है। यूरी जमन की सर्वाधिक प्रसिद्ध रचनाओ मे उस महान क्रान्तिकारी फैलिक्स जर्जिन्स्की के सम्बन्ध मे लिखी गयी उनकी कहानियो की विशेष रूप स गिनती होती है। उन्ही म स एक कहानी को यहाँ दिया जा रहा है।

अहाते में सैर

सेम्लीमी के जेल मे उनकी कोठरी का साथी एन्तन रोमोल था। तपेदिक निष्ठुर गति से अपना काम कर रहा था और एन्तन मर रहा था। तख्ते की अपनी शय्या से वह शायद ही कभी उठता था। रात म खासी के दौरे उसकी जान ले लेते थे और वह खून थूकता था और, गाकि जो थोडी-सी शक्ति उसके अन्दर बच गयी थी उसे भी वह तजी से खोता जा रहा था किन्तु खाने की उसे जरा भी इच्छा नही होती थी। घण्टो तक वह अपनी काल कोठरी की गन्दी दीवाल की तरफ घूरता हुआ दिमाग म बस एक ही खयाल लेकर पडा रहता था 'बीस वष की आयु मे मरना कठिन होता है।"

निस्सन्देह, परिवार और मित्रो से दूर, जेल के अन्दर लोहे के सीकचा के पीछे बडियो की खनखनाहट, जेल के वाडना की ककश आवाजो और फाँसी के लिए ल जाये जाते अपन साथियो के दद-भरे स्वगो के बीच जेल के अन्दर मरना सचमुच बहुत भयानक होता है। किन्तु, वसन्त ऋतु म, जबकि खिडकियो की लोहे की सलाखो के उस पार शाहबलूत के फूल खिले हो, जबकि दिनो दिन आकाश अधिकाधिक नीला और पार दर्शी होता जाता हो, और जबकि आदमी को यह पता हो कि बाहर की हवा कितनी ताजा और शुद्ध होगी—मरना और भी कितना अधिक भयानक लगने लगता है! ऐसे सुहाने समय मे जेल के अन्दर मर जाना—यह खयाल ही कितना कष्टकर लगता था!

मनुष्य द्वारा मनुष्य के साथ की जाने वाली क्रूरता की बराबरी कोई चीज नहीं कर सकती। वरना, रोसोल को जमानत पर रिहा किया जा सकता था। और, बहुत सम्भव है कि बाहर देहात में, घास और दरख्तों के बीच रहकर और ताज़ा-ताज़ा दूध पीकर, वह अच्छा हो जाता, मृत्यु को पराजित करने में वह सफल हो जाता। परन्तु उसे इस बिना पर रिहा नहीं किया जा रहा था कि उसके बचने की कोई आशा नहीं थी और अगर उसे मुक्त भी कर दिया जाय तो भी वह अवश्य मर जायगा। ऐसी हालत में यही बेहतर था कि वह जेल में मरे। और इतना ही नहीं। सरकार के लिए उसका जेल के अन्दर मरना और भी अधिक अच्छा होगा क्योंकि, बहुत सम्भव है कि मरने से पहले वह डर जाय और जिन चीज़ों के बारे में इस वक्त वह इन्कार कर रहा है उनके विषय में उस वक्त बतलाने लगे। सम्भव है कि वह कुछ लोगों के नाम उगल दे। उससे हथियारबन्द सिपाहियों के उस कप्तान को, जो उसके मुकदमे की देखभाल कर रहा था, तरक्की पाने का मौका मिल जायेगा और एक आध दजन ऐसे साथियों को वह जेल में पहुँचवा देगा जो जारशाही से नफरत करते थे।

इसलिए उन्होंने उसे जेल में ही बन्द रखा।

उसकी टाँगों ने जवाब दे दिया था। चलने फिरने की उसमें शक्ति नहीं रह गयी थी। फिर भी उन्होंने उसे सीकचों के पीछे ही बन्द कर रखा था। उसकी कोठरी के दरवाज़े पर एक बड़ा सा ताला लटकता रहता था और जेलर दिन में कई बार वहाँ आकर दरवाज़े के सूराख से अन्दर झाँक कर यह देख जाता था कि सब कुछ ठीक है या नहीं, रोसोल अपनी शय्या पर पड़ा है या नहीं भागने के लिए कोई सुरंग तो नहीं वह खोद रहा है, अथवा खिड़की के सीकचों को आरी से काटने की तो नहीं कोशिश कर रहा है।

और, हालाँकि रोसोल के अन्दर कोई जान शेष नहीं रह गयी थी फिर भी हथियारबन्द पुलिस के आदमी की अकेले में उससे पूछ-ताछ

करने की कभी हिम्मत नही पडती थी। वह उससे तभी बात करता था जबकि कोई वाडर भी उसके पास मौजूद रहता था—क्योकि वह डरता था कि इस तरह के कैदियो के पास खोने के लिए कुछ नही रहता इसलिए वे कुछ भी कर सकते है। ऐसे मामलो मे आदमी का खूब सावधान रहना चाहिए।।

रात को खाँसी के जो जानलेवा दौरे आते थे वे रोसोल के लिए बहुत ही यत्रणापूर्ण होते थे। किन्तु जेल का डाक्टर ओबेरयुशिन जो डाक्टरी की किसी पत्रिका मे बीमारी का बहाना करने वालो के सम्बन्ध मे लेख लिखा करता था, इस मामले मे भी बीमार बनने की झूठी कोशिश का पता लगाने की चेष्टा कर रहा था। जब इस तरह की कोई चीज वह न पा सका तो मरीज मे उसकी दिलचस्पी खत्म हो गयी और उसने उसे देखने आना भी बन्द कर दिया।

रोसोल जेल के अस्पताल म नही जाना चाहता था। वह वहाँ दो हफ्ते रह चुका था और स्वय अपनी इच्छा से जेल वापस लौट आया था। अस्पताल उसकी कोठरी से भी अधिक भयकर था। वह इतना भयकर था कि जब ज़र्जिन्स्की ने उससे पूछा कि वह वहाँ से क्या लौट आया था तो उसने जवाब तक देने से इन्कार कर दिया था। हाथ हिलाकर उनके प्रश्न को डिसमिस करते हुए, तख्ते की अपनी शय्या पर वह लेट गया था, उसने अपनी आखें बन्द कर ली थी और बोला था, "यह तो स्वग है—स्वग !"

अगर यह जगह 'स्वग' थी तो अस्पताल किस प्रकार का होगा इसकी ज़र्जिन्स्की बखूबी कल्पना कर सकते थे।

एक दिन शाम के समय रोसोल कहने लगा, 'शायद यह सब कोडो की चोटो के कारण हो गया है।'

"कोडो की चोटें कैसी ?"

"आपको क्या कभी मैंने बतलाया नही ?'

"नहीं, कभी नहीं।"

बिना कोई जल्दी किये धीरे धीरे गेमाल ने कहना शुरू किया "आपके आने से कुछ दिन पहले मुझसे मिलन जल का गवनर आया था। वह मेरे पास बैठ गया और बातें करने लगा। वह जानना चाहता था कि मेरा क्या हाल चाल है वगैरा। मैं खामोश उसकी बातें सुनता रहा। वह कहता गया कि जार का निरकुश शासन और जार कितने अच्छे है और क्रान्ति कितनी बुरी चीज है। आप जानते हैं कि इस तरह की बात कैसी होती है। मैंने उसस बहस नही की। मैंने मन ही मन उससे कहा जा और अपनी तोन्द को अच्छी तरह भर! लेकिन वह बोलता ही चला गया और अन्त मे मुझसे पूछने लगा कि अगर क्रान्ति विजयी हो गयी तो हम लोग उसके साथ कैसा बर्ताव करेंगे? मैंने सोचा था कि वह मजाक कर रहा है सिर्फ बातचीत करने के लिए बक बक कर रहा है, किन्तु जब मैंने उसकी तरफ देखा तो मुझे लगा कि वह एकदम संजीदा था। उसकी आखो म वास्तविक दिलचस्पी दिखलायी द रही थी। फिर भी, मजाक करके मैंने उसे टालने की कोशिश की। मैंने कहा कि लेकिन हम लोग आपका कर ही क्या सक्त हैं! आप तो पद और पोजीशन मे बहुत ऊँचे है। वह बोला, 'टाल मटोल मत करो। म सजीदगी से पूछ रहा हूँ। कोई नही जानता कि भविष्य मे क्या हो जाए और अपने भविष्य के सम्बन्ध मे मुझे बहुत दिलचस्पी है। मेरे पत्नी और बच्चे हैं। मैं जानना चाहता हूँ कि मेरा भविष्य कैसा होगा। हा, उसने ठीक इसी तरह पूछा था—'मैं जानना चाहता हूँ कि मेरा भविष्य कैसा होगा।' "

जर्जिन्स्की ने पूछा, "अच्छा? और फिर क्या हुआ?"

"मैं फिर भी मजाक करके टालने की कोशिश करता रहा, किन्तु जितना ही अधिक मैं मजाक करता उतनी ही अधिक मेरे अन्दर यह इच्छा बलवती होती जाती कि मैं जो कुछ सचमुच सोचता हूँ वह उसे बतला दूँ। आप उस इच्छा को समझते हैं?'

जर्जिन्स्की ने आनन्द लेते हुए उत्तर दिया, "हाँ, खूब अच्छी तरह समझता हूँ।"

"तो फिर हम बातें करते रहे। मैंने उससे कहा कि इसके बारे मे वह दूसरो से पूछे, क्योकि मैं विजय के उस दिन को देखने के लिए जीवित नही रहूँगा। परन्तु, मैं जानता था, मैं अपनी रग-रग मे महसूस कर रहा था कि मन की असली बात कहे बिना मैं रह न सकूँगा। मैं उस सुख का आनन्द लेने के लिए जैसे छटपटा रहा था, यद्यपि मैं जानता था कि उसकी मुझे भारी कीमत चुकानी पडेगी। फिर भी, मैंने सोचा, चाहे जो कुछ हो उस छोटे-से आनन्द का सुख मैं जरूर भोगूगा और यही मैंने किया।"

"तुमने उस बात को किस तरह उससे कहा ?"

"ओह बहुत ही विनम्रता से! बहुत ही सावधानी से! एकदम कोमल, लगभग मैत्रीपूर्ण ढग से! मैंने उससे कहा, 'महामहिम, अगर आप सचमुच जानना ही चाहते हैं तो में आपको बतला दू कि एक चीज जो हम जरूर करेंगे वह यह है कि हम आपको गोली से उडा देंगे! देखिए, इस बात को आप ही ने मुझ से पूछा है। मैंने नही इस तरह की अतरग बातचीत के लिए आपको मजबूर किया था।"

'परन्तु क्या आप विश्वास कर सकते है कि इसके बाद भी वह मुझे छोडने को तैयार नही था ? उसने पूछा, 'यह तुम्हारी अपनी राय है, या तुम्हारे साथी भी इसी तरह सोचते है ?"

"और तब, इसी के परिणामस्वरूप, तुम्हे कोडे खाने पडे थे ?"

रोसाल ने जवाब दिया, नही! कुछ देर तक और हम लोग जेल से सम्बन्धित तरह-तरह के ज्ञानपूर्ण विषयो के बारे मे बात करते रहे थे। वास्तव मे, हमारी बातचीत काफी देर तक चलती रही थी। विदा होने से पहले उसने मुझसे कुछ नही कहा। जब वह जाने लगा

तो उसने कहा कि वह मुझे सौ कोड़े लगवाएगा जिससे कि मेरा दिमाग ठीक रहे और इस उधेड़ बुन में न पड़े कि शान्ति करीब है तथा किन्हीं लोगों से वे लोग बदला, आदि लेंगे। उसने अपनी बात एक रूसी कहावत के साथ खत्म करते हुए मुझ से कहा कि, उसे मुझे हमेशा याद रखना चाहिए। कहावत यह थी कि कुए में कभी मत थूकना—हो सकता है कि कभी तुम्हें उसका पानी पीने की जरूरत पड़ जाय!' और मैंने कहा कि मैं भी एक इतनी ही अच्छी कहावत जानता हूँ और वह यह है कि 'कुए में थूक दो, फिर उसका पानी पीने के लायक नहीं रह जायगा।

जर्जिन्स्की हँसने लगे। उन्होंने पूछा, "फिर उन लोगों ने तुम्हें कोड़े लगाये?'

"अवश्य।

"सौ?"

नहीं जानता, याद नहीं है। मैंने गिनना शुरू किया था, लेकिन बीच में ही मेरा होश जाता रहा।"

कुछ देर तक वे दोनों खामोश रहे। फिर यकायक रोसोल ने कहा, 'शायद यह कोड़ों की उसी मार का नतीजा है। इसकी वजह बीमारी नहीं बल्कि दरअसल उन्हीं की चोट है। हो सकता है कि उनकी वजह से अन्दर कोई चोट लग गयी हो। मुमकिन है कि तपेदिक बिल्कुल हो ही न! आपका क्या खयाल है?"

उसे इस बात की आशा थी, कदाचित विश्वास भी था, कि अगर वे उसे रिहा कर दें, अगर उसे ताजी स्वच्छ हवा में रहने को मिल जाय, दूध और सब्जियाँ अच्छी तरह खाने को मिल जायँ, अच्छी देख भाल और धूप उसे प्राप्त हो जाय तो वह फिर अच्छा हो जायेगा और बहुत समय तक, हो सकता है कि सौ वर्ष तक, जीवित रह सकेगा। जर्जिन्स्की अपनी सम्पूर्ण शक्ति तथा उत्साह के साथ अपनी कोठरी के

मायी के अच्छे होने के स्वप्न को सही बनाने की कोशिश करते थे। वह उसका इतने जोश और सजीदगी से उत्साहवर्धन करते थे कि कभी-कभी वह स्वयं भी इस बात में विश्वास करने लगते थे कि वे दोनों ही बहुत दिनों तक जियेंगे और शान्ति के समय तक और उसके बहुत बाद तक भी काम करते रहेंगे। क्रान्ति जब विजयी हो जायगी तब तो सभी कुछ बदल जायेगा और तब स्वतन्त्रता तथा न्याय की स्थापना हो जायगी।

रोसोल से वह विज्ञान की बातें करते और उसे बतलाते कि चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में कितनी जबर्दस्त प्रगति हो रही थी। उन्होंने पैस्चयोर की नूतन खोज के बारे में उसे बतलाया और कहा कि इसके बाद और भी ऐसी ही बड़ी-बड़ी खोजें हो सकती हैं। किसी भी दिन कोई वैज्ञानिक इस बात की जानकारी प्राप्त कर ले सकता है कि तपेदिक से दुनिया को कैसे छुटकारा दिला दिया जाय जिससे कि अतीत की उसी तरह वह भी एक याद मात्र रह जाय जिस तरह कि चेचक की बीमारी अब रह गयी है। तब वे रोसोल को अच्छा कर देंगे और वह फिर क्रांति के लिए काम करने, जेलों में जाने और वहाँ से भागने तथा जेलों के अधिकारियों से लड़ाइयाँ करने का—अर्थात जो जीवन उसने अपने लिए चुना था उसके अनुसार रहने का क्रम पुनः शुरू कर देगा। रोसोल सन्देह के साथ किन्तु ध्यान से, उनकी बातों को सुनता रहता था। वह चाहता था कि जिस चीज़ पर उसे भरोसा नहीं हो रहा है लेकिन जिस पर वह पूरे दिल से भरोसा करना चाहता है उसके सच होने की बात पर उसे विश्वास हो जाय।

इस तरह की बातचीत का साधारण तौर से रोसोल पर यह प्रभाव पड़ता था कि उसकी मन स्थिति बेहतर हो जाती थी और वह अधिक स्वस्थ महसूस करने लगता था। उसके पीले पीले होठों पर

एक मुस्कराहट खिल उठती थी और उसकी आखों मे चुनौती भरा लडकपन का वह भाव फिर लौट आता था जो जर्जिन्स्की को इतना अधिक पसन्द था।

जर्जिन्स्की के अन्दर जितनी भी शक्ति और क्षमता थी उस सबको उन्होने रोसोल की सहायता मे लगा दिया था।

कोठरी के अधेरे मे अगर उन्हे इस बात का आभास मिल जाता कि एडन जगा हुआ है तो वह उसके साथ साथ सारी रात जागते रहते थे। ऐसे मौको पर बहाना करते हुए वह उससे कहते कि उन्हे भी नींद नही आ रही है। फिर कोई मनोरजक कथा-कहानी सुनाकर वह उस बीमार साथी का ध्यान बँटाने की कोशिश करते। हालांकि उनके अन्दर उस समय न हँसने की इच्छा होती थी, न किस्से-कहानी सुनाने की। फिर भी वह उसे सुना सुना कर स्वय हसते रहते थे। वह सोना चाहते थे। जेल के सताने वाले बोझिल दिनो के कारण और स्वय उनके विरुद्ध भी अन्यायपूर्ण ढग से एडन कभी-कभी चिडचिडेपन या क्रोध का जो प्रदर्शन करता रहता था उसके कारण वह थककर वास्तव मे चूर-चूर हो रहे थे। जेल के उस बर्बरतापूर्ण वातावरण मे अपने बीमार साथी के लिए बर्फ का एक टुकडा थोडा-सा नमकीन, अथवा उबला हुआ पानी, जरा सी सही किस्म की दवा, अथवा कपडे का एक साफ टुकडा प्राप्त करने के लिए भी उन्हे जो मशक्कत करनी पडती थी उससे वह सर्वथा क्लान्त और थके हुए थे।

लेकिन उनके लिए चारा ही क्या था?

मरते हुए व्यक्ति को भला वह कैसे उसकी आशकाओं, निराशाओ और यत्रणाओ, के हवाले कर सकते थे?

इसलिए, जर्जिन्स्की उस अधेरी और गधाती काल कोठरी की उसकी लकडी की शय्या के पैताने बैठ जाते और हँसी-खुशी की बातें करके उसे बहलाने तथा प्रसन्न रखने का भरसक प्रयास करते। वह कहते,

'कैसी बढिया बात है कि तुम भी नही मो रह हो ! मुझे भी नीद नही आ रही है। इस सार वक्त मैं योंही जागता पडा रहा हू। एक झपकी भी नही मो सका हूँ।'

सन्देहपूर्वक एतन पूछना "आपको नीद क्यो नही आती ?

ज़र्जिन्स्की उत्तर दने हुए कहत 'मालूम नही क्यो ? तुम तो खूब जानते हो कि जेल म सोना कैसा होना है।"

"मैं तो बीमार पडन मे पहने जेन मे भी खूब मोता था।

अक्सर रोसोल के स्वर म चल्लाहट होती और ज़र्जिन्स्की को लगता कि रोसोल बिगडन के लिए, अपन क्रोध को व्यक्त करने क लिए केवल किसी बहान की तलाश कर रहा था।

रोसोल ज्यो-ज्यो पूछना त्यो ही त्यो उसके क्रोध का पारा चढना जाता और उसकी चिडचिडाहट बढनी जाती। वह कहता "मैं ता कही भी सो सकता हूँ। लेकिन बीमारी की हालत म मैं बिल्कुल नही सो पाता हूँ । यह कहते-कहत उसकी आवाज फटन लगी और वह बोला 'लेकिन मैं अपने कारण किसी का जागत रहन का तो नही कहना। इसके विपरीत, मैं ता आपसे कहता हूँ कि कृपा कर जाइए और सो जाइए। रात के अपने आराम म व्यथ के लिए खलल मत डालिए और, इस तरह, कल क सारे दिन क लिए भी अपन दिमाग को मत बिगाड लीजिए। मैं तो केवल यह चाहता हूँ कि शांति-पूवक मुझे अकेला छोड दिया जाय। हा, शांति म रहन क लिए अकेला छोड दिया जाय ! म तो सिर्फ यही चाहता हूँ।'

रासोल की आवाज ऊँची होती जाती और कर्कशता के स्वर पर पहुँच कर एकदम फट जाती। कभी कभी उसकी आवाज म रोने का सा स्वर होता, इस बात को लेकर उसम कुढन और झुझलाहट भरी होती कि ज़र्जिन्स्की तो साते रहे थे लकिन वह बिल्कुल नही सो पाया था। जब वह पानी लेन की कोशिश कर रहा था और

उसके हाथ से पानी का डिब्बा गिर गया था तब भी जर्जिन्स्की नहीं जागे थे। इस सारे समय उन्होंने उसके पीने के लिए एक बूंद भी पानी नहीं रखा था!

जर्जिन्स्की ने पूछा, "तुमने जोर से आवाज देकर मुझे जगा क्यों नहीं लिया?"

"क्योंकि मैं जानता हूँ कि आप मुझसे ऊब गये हैं। मैं आपको थका देता हूँ, परेशान कर करके आपकी जान लिये ले रहा हूँ। लेकिन मैं करूँ क्या! मेरे अन्दर तो इतनी भी शक्ति नहीं रह गयी है कि ...।"

"लेकिन ये सब फिजूल की बातें तुम क्यों कर रहे हो, एन्टन?"

"ये फिजूल की बातें नहीं हैं। मेरी बददिमागी और नुक्स निकालने की आदत को बरदाश्त कर सकना किसी के लिए सम्भव नहीं है। परन्तु आप अगर सिर्फ यह जान सकते कि मुझे कितनी यन्त्रणा हो रही है, मैं जिन्दा रहने के लिए कितना विकल हूँ, मृत्यु से सम्बन्धित इन विचारों और चिन्ताओं से ऊब कर कितना थक गया हूँ! यह खयाल मुझे खाये जा रहा है कि जल्दी ही, बहुत जल्दी ही मैं मर जाऊँगा और पीछे कुछ भी नहीं छोड़ जाऊँगा कि जीवन में मैं कुछ भी नहीं कर पाऊँगा, कुछ भी नहीं ...।

इसके बाद कमजोरी की अपनी उस दशा में रोमोल का दिल टूट जाता और पुआल की कड़ी तकिया में अपना मुँह छिपाकर वह फूट फूटकर रोने लगता। आँसुओं से उसका गला रुँध जाता लेकिन उसका गरम और गीला हाथ उस अँधेरे में टटोलता हुआ जर्जिन्स्की के हाथ के पास पहुँच जाता और उसे दबाता हुआ फुसफुसाकर वह कहता "आप ही बतलाइए कि मैं क्या करूँ! इस तरह मैं कहाँ तक चल सकता हूँ? किस तरह चल सकता हूँ? अब आशा ही क्या है? आप मेरी मदद कीजिए ...। और मुझसे घृणा मत कीजिए।

यह मत सोचिए कि मैं कायर हूँ, अथवा पस्त हो गया एक बदनसीब दुखियारा हूँ। मैं बीमार हूँ। मेरी यह बीमारी ही सब मुसीबतो और परेशानियो की जड है। मरी कोई गल्ती नही है। मेरी जरा भी कोई गल्ती नही है! जवाब दीजिए! आप समझते है न कि मरी कोई गल्ती नही है? मेरा कोई कसूर नही है?

जर्जिन्स्की ने पूरी हार्दिकता से कहा, 'हा हा, मैं समझता हूँ। वशक, मैं सब कुछ समझता हूँ। तुम अच्छे हो जाओगे तो य सारी चीजें दूर हो जायेंगी।"

और उसके वाद जिस तरह पिछले दिन, और उससे भी पहल के दिन, उन्होने उससे बाते की थी उसी तरह फिर वह घुल मिल कर उमस बातें करन लगे। वह फिर बतलाने लगे कि एतन जब अच्छा हो जायगा तो व क्या करेंगे किस तरह साथ साथ जेल से बाहर जायेंगे, और नदी के पास जाकर जी भर उसमे तैरेंगे। फिर वे जगल मे घूमने जायेंगे और जगल के अन्दर की ही किसी सराय म रात का खाना खायेंगे। उन्होने कहा कि चौराहे पर स्थित एक सराय का, एक असली पुरानी सराय का पता उन्हे मालूम था।

जिस समय वह ये बातें कर रहे थे उसी समय उन्होने देखा कि गेसोल की आखें अधेरे म चमक रही है। जिन्दा रहने की, जगल मे सैर के लिए जाने की, नदी के पास जाकर उसम तैरने की, सराय म, शहर मे, उस हर जगह पर जाने की उत्कट इच्छा और लालसा से उसका मन विह्वल हो उठा था जहा लाग थ, सगीत था जहाँ लोहे के व सीकच नही थ जिनके पीछे स वसन्त का सुहाना सूर्योदय भी मटमैला और उदास दिखलायी देता था! वह एसी जगह जाने के लिए बेकल हो रहा था जहाँ बेडियाँ न हो, जेलें न हो, और जेल की अन्तहीन जान-लेवा, उकताने और थकाने वाली व रातें न हो!

स्वप्न म और भी रग भरत हुए रामोल जर्जिन्स्की स कहन लगा, 'हम लाग साथ साथ कहवाघर भी जायेंगे। कहवाघर के बारे मे आप भूल गय। हम लाग सचमुच किसी बढ़िया कहवाघर को चुनेंगे—ऐस का जिसम पूरे आर्केस्ट्रा का सगीत सुनने को मिलता हो। वहाँ हम लाग सभ्य इन्सानो की तरह बैठकर भिन्न भिन्न प्रकार के पकवानो के लिए आर्डर देंगे। मैं तो साच भी नही सकता कि हम खाने की किन किन चीजो को मगायेंगे ।''

और जर्जिन्स्की अपन मित्र की बाता का सुनत रहत और खुद भी न जान कहाँ कहाँ की बकवास इसलिए करत जिसस कि उसके सूखे होठो पर थोडी देर क लिए ही एक मुस्कराहट फल जाय। बात वह उससे करते रहते परन्तु उनका दिमाग कही और ही लगा होता। वह मन ही मन कहते कि यह कमजोर, क्षय रोग स ग्रस्त, मरणासन्न रोमोल सैकडो बल्कि, कहना चाहिए कि, हजारो पूरे तौर मे तन्दुरुस्त लोगो से अधिक शक्तिशाली है। इन्सान की इच्छाशक्ति कितनी जबदस्त और अति मानवीय है। वह आजादी और जिन्दगी स किस तरह प्यार करता है! वह जानता है कि उसक लिए बस जरा-सा सकेत भर कर दन की जरूरत है, पुलिस के सवाल जवाब करने वाले आदमी को एकदम जरा सा इशारा भर कर देन की एकदम जरा सी ही बात बतला देन की जरूरत ह और उसके बाद, उसी दिन, वह रिहा कर दिया जायगा और जगल की तरफ, नदी के तट की ओर, जगल के अन्दर स्थित सराय म, जहाँ भी वह चाह वहाँ जाने की उस पूरी छूट मिल जायगी—लेकिन वह कितनी दृढता से हर यत्रणा का सामना कर रहा था!

अधिकारीगण उसे यहाँ जेल म बिना मुकदमा चलाये इसलिए रखे हुए थे कि उन्हे उम्मीद थी कि उसका मनोबल टूट जायेगा और छूटन के लिए उन्हे वह व तमाम चीजें बतला दगा जिन्हे वह जानता है।

और आखिर वे उस पर मुकदमा चला ही कैसे सकते थे ? पूछताछ के लिए जिस तरह स्ट्रेचर पर लाद कर वे उसे बाहर ले जाते थे उस तरह वे अदालत में उसे ले नहीं जा सकते थे।

और, अदालत द्वारा सजा दे दिये जाने के बाद भी उसे साइबेरिया में देश-निकाला देना भी उनके लिए मूर्खतापूर्ण ही होगा। और फिर इस बात की ही क्या गारण्टी थी कि अदालत सही ही फैसला करेगी ?

इसलिए, इस आशा से वे उसे यहीं जेल में बन्द रखे हुए थे कि किसी न किसी दिन वह जरूर सब बातें उगल देगा।

लेकिन वह मुह खोलता ही नहीं था।

वे उसे कितनी भी धमकियां देते, किन्तु वह टस से मस न होता। वह कड़ी नजर से और एक हठी मुस्कराहट के साथ उनकी आंख से आँख मिलाये बैठा रहता और जब वे बहुत तंग करते तो जवाब दे देता "मुझे कोई परवाह नहीं है। मैं रत्ती भर भी तुम्हारी परवाह नहीं करता। तुम जो करना चाहते हो कर लो"

और उसकी आँखें नौजवान भेडिये की आँखों की तरह अंगारों की भांति जल उठतीं।

एक उमस भरी शाम को जबकि वर्षा ऋतु की पहली गड़गड़ाहटें सुनने को मिल रही थीं रामोल ने उदासी से भरकर कहा, 'कल आप लोग पानी और कीचड़ में घूम रहे थे। काश, मैं भी ऐसा कर सकता तो मुझे कितना अच्छा लगता।'

यह बात उसने आधी सजीदगी से, आधी मजाक में कही थी। किन्तु फिर वह चुप हो गया और शेष सारी शाम भर खिडकी के जंगले सीकचों से बाहर घूरता हुआ, वर्षा की बूंदों की टपटपाहट को

और बोला, "मैं मुक्त होना चाहता हूँ। मैं आजादी चाहता हूँ—उसके लिए चाह जो भी कीमत चुकाना पडे। आदमी की सहन शक्ति की भी आखिर एक सीमा हाती है। यात्सेक, आप जो चाहे कह, लकिन अब मैं और अधिक इस तरह नही रह सकता। मुझे जेल स बाहर जाने दीजिए। जहन्नुम म जाय और सब कुछ ।

पानी पिलाकर जर्जिन्स्की को उसे शा त करना पडा। वह अपन आपे मे नही था। और जर्जिन्स्की का दिल सहानुभूति और दद स भर गया था। अचानक उनक मूह म निकल गया कि वह कोशिश करेंगे कि अगले दिन शेष सब लोगा के साथ एन्तन को भी सैर क लिए वह अहात म ले जा सकें।

अविश्वास से रोसोल न पूछा "क्या कहा आपने ? मैं ? सैर करन जाऊँगा ? मैं ?"

"हाँ, तुम,' जर्जिन्स्की ने उत्तर दिया।

जर्जिन्स्की अच्छी तरह जानते थे कि रोसोल टहलने के लिए किसी तरह जान की स्थिति मे नही था, किन्तु तीर छूट चुका था। दुख और निराशा से भर कर उन्होन उससे वादा कर लिया था और रोसाल ने उनकी बात को एक सजीदा वादे की तरह स्वीकार कर लिया था। वह इस बात पर विश्वास करना चाहता था कि वह अहाते मे घूमने फिरने अवश्य जायगा। खुल आसमान, रूप, दरख्ता, घास, पानी से भर गड्ढों—आदि को खुद वह अपनी आँखो से दख सकेगा ।

,लकिन गड्ढे ता कल तक सूख जायेंगे जर्जिन्स्की ने कहा।

रोसोल सुन नही रहा था। वह बात करता रहा, लेकिन उसन और कोई सवाल नहीं पूछे। कुछ भी पूछने मे उसे डर लग रहा था क्योकि वह जानता था कि वह पूछेगा तो उसे मालूम हो जायेगा कि

उसके लिए टहलना घूमना नहीं हो सकता कि उसकी बात उसके लिए कष्टप्रद हो सकता है। जमीन पर उसका पहला पैर पड़ जाता है ? तुम कैसी बात कर रहे हो ? और फिर सारी बात समाप्त हो जायगी।

इसलिए सवाल पूछने के बजाय वह अगले दिन घूमने जाने के विषय में ही बात करता रहा।

निस्सन्देह उससे मना करना ठीक नहीं होगा किन्तु उस ओर किस नाम से सम्बोधित करते हैं, इससे क्या फर्क पड़ेगा ? वह कोठरी से बाहर धूप में होगा, अहाते में ताजी हवा और धूप का मजा लेता होगा। इस सुखद अवसर को मनाने के लिए वह अपने लिए मखोरका का एक सिगरेट बनायगा और उसके कुछ कश पियेगा—फिर चाहे जो हो ! दूसरे लोग चाहते हैं तो वे मूर्खों की तरह अहाते में चक्कर लगाते रहें लेकिन वह तो एक जगह बैठकर आसमान को खुले आसमान को देखेगा। अरे नहीं वह सिगरेट नहीं पियेगा, खुली ताजी हवा में सिगरेट पीना बेवकूफी होगी। उसे आया करना होगा। वह तो घास के तिनके उसी के तिनके को चबाता रहेगा। अफसोस घास के तिनके को मुँह में डाले कितना जमाना बीत गया ? और कुछ लोग कितने भाग्यशाली हैं कि वे चाहें तो रोज ही घास के तिनके को मुँह में डालकर उनका स्वाद ले सकते हैं ।

तो वह जमीन पर बैठ जायगा। हाँ नंगी जमीन पर। दूसरों को जेल के सर्किल में वह चक्कर लगाने देगा। वे घूमना चाहते हैं तो घूमें, फिरें, उसे कोई एतराज नहीं है ।

ताजी हवा में थोड़ी देर ही रहने का उसे मौका मिल जायगा तो उसकी भूख जाग उठेगी। और ज्योंही वह खाना ठीक से खाने लगेगा त्योंही उसकी सारी बीमारी अपने आप उड़न छू हो जायेगी। सारा मामला भूख ही का तो है नहीं ? टी० बी० का (तपेदिक

ता) गला घी, मक्खन, दूध और मलाई से ही घोटा जा सकता है। वह भोजन स टरता है। और ताजी हवा म अच्छी तरह रह लने क बाद तो ।

अगल दिन, वर्जिश के लिए बाहर जाने का समय जब नजदीक आन लगा तो रोमोल ने अपना मुह दीवार की तरफ घुमा लिया और अपन सर को कम्बल से ढक लिया। पिछले दिन की उत्तेजना की जगह अब उदासीनता ने ले ली थी। स्पष्ट था कि वह समझ गया था कि घूमने-फिरने के लिए कोठरी से बाहर जाने का उसक लिए कोई प्रश्न ही नहीं हो सकता था। शाहबलूत के पेड उसके लिए नहीं थ। बाहर जाने की वह सारी बात मात्र एक स्वप्न थी।

उस दिन सुबह जर्जिस्की ने कई बार उससे बात करने की कोशिश की, किन्तु वह सोये होने का बहाना बनाय पडा रहा—हालांकि सोने म उसकी रत्ती भर भी दिलचस्पी नहीं थी।

वर्जिश के लिए जान क समय स थोडी देर पहल जर्जिस्की उसक पास गय और उसके मुह क ऊपर स कम्बल को खींच लिया। रूनन ने आँखें खोल दी और गुस्से से उनकी तरफ देखा।

"उठो, कपडे पहन लो, वरना हम लेट हो जायेंगे।

'मैं क्यो कपडे पहनू ?'

"हम लोग सैर के लिए अहाते म जा रहे हैं।

क्षण भर रोमोल जर्जिस्की की तरफ ध्यानपूर्वक देखता रहा। वह यह समझने की चेष्टा कर रहा था कि वह मजाक कर रहे थे, या सचमुच उस ले जाना चाहते थे। परन्तु बिना किसी शको-शुबहा के जर्जिस्की सजीदगी से ही बात कर रहे थे। ऐसी चीजों के बारे म मजाक भला कैसे कोई कर सकता था ?

उसके लिए टहलना घूमना नहीं हो सकता, कि उसकी बात उसके लिए केवल एक सपना है। जजि भी उससे कहेगा, "सैर पर जाना है? तुम कैसी बात कर रहे हो?" और फिर सारी बात समाप्त हो जायगी।

इसलिए, सवाल पूछने के बजाय वह अगले दिन घूमने जाने के विषय में ही बात करता रहा।

निस्सदेह, उसे सैर कहना ठीक नहीं होगा किन्तु उसे आप किस नाम से सम्बोधित करते हैं इससे क्या फर्क पड़ेगा? वह कोठरी से बाहर खुले में होगा, अहाते में ताज़ी हवा और धूप का मजा लेता होगा। इस सुखद अवसर को मनाने के लिए वह अपने लिए मखोरका की एक सिगरेट बनायेगा और उसके कुछ कश पियेगा—फिर चाहे जो हो! दूसरे लोग चाहते हैं तो वे मूर्खों की तरह अहाते में चक्कर लगाते रहें, लेकिन वह तो एक जगह बैठकर आसमान को, खुले आसमान को देखेगा। अरे, नहीं वह सिगरेट नहीं पियेगा, खुली ताज़ी हवा में सिगरेट पीना बेवकूफी होगी। उसे जाया करना होगा। वह तो घास का तोड़कर उसी के तिनके को चबाता रहेगा। ओफ्फोह घास के तिनके को मुँह में डाले कितना जमाना बीत गया? और कुछ लोग कितने भाग्यशाली है कि वे चाहे तो रोज ही घास के तिनके को मुंह मे डालकर उनका स्वाद ले सकते हैं।

तो वह जमीन पर बैठ जायगा। हाँ, नंगी जमीन पर। दूसरे को जेल के सर्किल में वह चक्कर लगाने देगा। वे घूमना चाहते है तो घूमे, फिरे, उसे कोई एतराज नहीं है।

ताज़ी हवा में थोड़ी देर ही रहने का उसे मौका मिल जायेगा तो उसकी भूख जाग उठेगी। और ज्योंही वह खाना ठीक से खाने लगेगा त्योंही उसकी सारी बीमारी अपने आप उड़न छू हो जायेगी। सारा मामला भूख ही का तो है नहीं? टी० बी० का (तपेदिक

का) गला घी, मक्खन, दूध और मलाई मे ही घोटा जा सकता है। वह भोजन स टरता है। और ताजी हवा म अच्छी तरह रह लने क बाद तो ।

अगन दिन, वजिश के लिए बाहर जाने का समय जब नजदीक आन लगा तो रासोल न अपना मुह दीवार की तरफ घुमा लिया और अपन सर का कम्बल से ढक लिया। पिछले दिन की उत्तेजना की जगह अब उदासीनता ने ल ली थी। स्पष्ट था कि वह समझ गया था कि घूमने फिरने के लिए कोठरी से बाहर जाने का उसक लिए कोई प्रश्न ही नही हो सकता था। शाहबलूत के पेड उसक लिए नही थ। बाहर जाने की वह सारी बात मात्र एक स्वप्न थी।

उस दिन सुबह जर्जिन्स्की ने कई बार उससे बात करने की कोशिश की किन्तु वह सोये होने का बहाना बनाय पडा रहा—हालाकि माने म उसकी रत्ती भर भी दिलचस्पी नही थी।

वजिश क लिए जान के समय म थाडी दर पहल जर्जिन्स्की उसक पास गय और उसके मुह क ऊपर स कम्बल का खीच लिया। एन्नन न आँखे खोल दी और गुस्से स उनकी तरफ दखा।

'उठो, कपडे पहन लो, वरना हम लेट हो जायग।

म क्या कपडे पहनू ?'

"हम लोग सैर क लिए अट्टान म जा रह है।

क्षण भर रासाल जर्जिन्स्की की तरफ ध्यानपूवक दखता रहा। वह यह समझने की चेष्टा कर रहा था कि वह मजाक कर रहे थ, या सचमुच उस ले जाना चाहत थ। परन्तु बिना किसी शका-शुबहा क जर्जिन्स्की सजीदगी से ही बात कर रह थ। ऐसी चीजो के बारे म मजाक भला कैस कोई कर सकता था ?

रोसोल ने कहा, "लेकिन मेरी टाँगें मेरे बोझ को न सम्भाल सकेंगी। मैं गिर पड़ूंगा।" फिर एक अपराधी की तरह वह बोला, "यात्सेव, मैं बहुत कमजोर हो गया हूं। मेरी टाँगें बेकार हो गयी हैं।

ज़र्जिन्स्की ने सान्त्वना देते हुए कहा तुम्हें अपनी टांगों का इस्तेमाल ही नहीं करना होगा। टाँगों का इस्तेमाल करने की तुम्हें जरूरत ही क्या है ? मैं तुम्हें उठाकर ले चलूंगा। तुम्हारी टांगों का काम मैं करूँगा। समझे ?'

"समझा ! लेकिन मैं बहुत भारी हूं। आप मुझे न उठा पायेंगे।

रोसोल ने उसी नरम स्वर में उत्तर दिया।

'उठो कपड़े पहनो और बेकार की बातें करना बन्द करो ! फिर हम देखेंगे कि तुम कितने भारी हो। ज़र्जिन्स्की ने उसे आदेश दिया।

रोसोल उठकर बिस्तर पर बैठ गया और अपने जूतों को उठाने की कोशिश करने लगा। लेकिन उसे चक्कर आ गया और वह फिर अपनी तकिया पर लुढ़क गया। ज़र्जिन्स्की उसके जूते उठाकर उसके पास बिस्तर पर बैठ गये और पीछे से हाथ लगाकर उन्होंने उसे फिर बैठा दिया।

जूता पहनने की पुनः कोशिश करते हुए रोसोल ने धीरे से उनसे कहा 'आप चिन्ता न करें। चक्कर थोड़ी देर में खुद खत्म हो जायेगा। मैं एकदम से उठ बैठा था। अब पहले से अच्छा हूं।'

परन्तु उत्तेजना और कमजोरी के कारण उसका माथा पसीज उठा था। वह जूते में पैर डालकर उसे पहन नहीं पा रहा था। उसके अन्दर कुछ भी करने की शक्ति नहीं रह गयी थी।

ज़र्जिन्स्की ने उसकी इस हालत को देखते हुए अधिक से अधिक नरमी और हँसी खुशी के ढंग से उससे कहा, तुम उत्तेजित मत

हो ! वास्तव मे, तुम इतन कमजोर नही हो। यह सब उत्तेजना की वजह से है। तुम उत्तेजित हो जाते हो इसी से परेशानी पैदा हो जाती है। शान्त रहो ! जल्दी करने की कोई जरूरत नही है। अब जूते के उन तस्मो को पकड कर पैर के ऊपर खीचो। देखा ? कितना आसान था ! इसी तरह अब दूसरा जूता भी पहन लो ! उसे भी पहन लिया। आसान था न ? अब अपना कोट पहन लो। कहा है तुम्हारा कोट ?"

रोसोल को कपडे पहनाते और तैयार करते समय वह दिखावा इस तरह कर रहे थे जैसे कि वह सब काम रोसोल खुद ही कर रहा था और वह तो सिर्फ अपने साथी की मदद कर रहे थे उसके कपडे उसे दे रहे थे और उसके साथ गप शप कर रहे थे।

फिर वह बोले "ठीक, बिल्कुल ठीक ! अब तुम तैयार हो गये। अब खडे हो। जल्दी मत करना। मुझे पकड लो और खडे हो जाओ। ठीक, ठीक इसी तरह मे ।"

रोसोल ने कमजोरी महसूस करते हुए कहा, 'मेरी टॉगे मेरे शरीर के बोझ को न सम्हाल सकेगी। मैं खडा नही रह सकता—।

उसी समय जोर के एक धक्के के साथ उनकी कोठरी का दरवाजा खुल गया और जेल का वरिष्ट वाडर, जखारचिक अन्दर घुस आया। उसने गरजते हुए कहा,

'वर्जिश का समय हो गया है। जरा फुर्ती दिखाओ !'

तभी उसकी दृष्टि रोसोल पर पडी।

"यह कहाँ जा रहा है ? सैर के लिए ?"

'हाँ, जर्जिन्स्की ने उत्तर दिया।

"पूछ-ताछ के लिए तो इसे स्ट्रेचर पर लाद कर ले जाना होता है लेकिन सैर-सपाटे के लिए यह चलकर जा सकता है ,

जखारकिन ने व्यग्यपूर्वक कहा और उनकी कोठरी से बाहर निकल गया। कोठरी के दरवाजे को उसने खुला ही रहने दिया।

रोसोल की चक्कर आ रहे थे और उसमें खड़े होने की सामर्थ्य नहीं थी। ज़र्जिन्स्की की यह योजना कि उसको पकड़े-पकड़े वह अपने साथ घुमायेंगे आरम्भ में ही फेल हो गयी थी। जरूरत इस बात की थी कि कोई दूसरा उपाय सोचा जाय और जल्द से जल्द सोचा जाय। जखारकिन कैदियों को दालान में पाँत में खड़ा करने की कोशिश कर रहा था। ज़रा सी देर का मतलब होगा कि फिर वे व्यायाम में भाग नहीं ले सकेंगे। रोसोल के होठ काँप रहे थे। कल के बाद यह दूसरा मौका था जब उसका स्वप्न फिर चूर चूर हुआ जा रहा था।

ज़र्जिन्स्की ने उससे कहा "इतने परेशान न हो। सब कुछ ठीक हो जायगा। चारपाई पर बैठ जाओ।"

क्यों ?

'तुम बैठ तो जाओ मैं तुमसे कहता हूं!'

उसकी आवाज़ में आदेश का स्वर था। रोसोल के सामने उसे मानने के अलावा कोई रास्ता नहीं था।

'अब अपनी बाहों को मेरे कंधों पर रख दो। नहीं, मेरी गर्दन के चारों तरफ नहीं—मेरे कंधों पर! अब अपनी टाँगें मुझे दो। अच्छी तरह पकड़ लिया ?

हाँ।'

'अच्छी बात है अब मज़बूती से पकड़े रहना। मैं उठ रहा हूं।

मैं पकड़े हूं।

ज़र्जिन्स्की उठकर सीधा खड़े हो गये। रोसोल अब उनकी पीठ पर था।

का वजन बहुत था। जेल में अनेक महीने रहने के कारण स्वयं जर्जिस्की की शक्ति बहुत क्षीण हो गयी थी। और रासोल के इस अतिरिक्त बोझ की वजह से उनके लिए खड़ा रहना कठिन हो रहा था। उनके चेहरे से पसीना टपक रहा था और उनका दिल ज़ोर ज़ोर से धौंक रहा था।

परन्तु अधीक्षक का निरीक्षण कार्य इतने धीरे धीरे चल रहा था कि उन्हें लग रहा था कि एंजन को अपनी पीठ पर लाद हुए इस अंधेरी सीलन भरी दालान में खड़े रहने की उनकी अग्नि परीक्षा कभी समाप्त ही नहीं होगी। उनकी नसें जैसे फटी जा रही थीं।

प्रत्येक कैदी का निरीक्षण अधीक्षक व्यक्तिगत रूप से स्वयं कर रहा था और उनकी तलाशी भी ले रहा था। व्यायाम के काल में कैदी अक्सर अपने लिखे नोटों, पत्रों तथा पुस्तकों की अदला बदली आपस में कर लेते थे। किन्तु अधीक्षक ने उनकी इस तरह की गतिविधियों के खिलाफ लड़ाई का एलान कर दिया था। उसको इस बात पर बहुत झुंझलाहट हो रही थी कि अभी तक वह कुछ नहीं पकड़ पाया था। पूरी तलाशी लेने के बाद भी अगर उसे कुछ न मिला तो उसकी स्थिति और भी हास्यास्पद हो जायगी। तलाशी के लिए शेष रह गये कैदियों की संख्या ज्यों ज्यों कम होती जाती थी त्यों ही त्यों अधीक्षक के क्रोध का पारा चढ़ता जाता था। अब वह जर्जिन्स्की के काफी पास आ गया था और उसके दाढ़ी मूंछ से साफ, लम्बी नाक, खिंची हुई भौंहों और भारी से जबड़े वाले उसके पीले-पीले चेहरे को जर्जिन्स्की साफ साफ देख रहे थे। उसकी वर्दी के अन्दर से झांकते हुए उसके कलफदार सफेद कालर के किनारे भी दिखलायी दे रहे थे।

अक्खड़भरी आवाज़ में तभी अधीक्षक ने एक कैदी से पूछा, 'मैं जानना चाहता हूं कि तुम्हारा एक बटन क्यों गायब है? तुम्हें यहां

व कायदे—क़ानून नही मालूम ? अच्छा, तो हम तुम्हे सिखला देंगे। ज़खारकिन ! तीन दिन के लिए तन्हाई मे बन्द करके इसके डडा-बेड़ी डाल दो।

अब वह हर कैदी को डाँट-फटकार रहा था। एक से उसने कहा, "तुम ठीक से क्यो नही खडे हो ?" दूसरे पर वह बिगडा कि वह मुस्करा क्यो रहा था। तीसरे का कसूर यह था कि अपने हाथो को वह अपनी जेबो मे डाले था। चौथे ने अपने चश्मे को वापस मागने की गुस्ताखी की थी। उसके चश्मे को पूछ-ताछ के समय ज़ब्त कर लिया गया था।

"ज़ब्त कर लिया गया था ? तुम्हारा मतलब ?"

'मुझसे पूछ ताछ करने वाले अफसर ने जल्दी कबूलियाने के लिए मेरा चश्मा जबरदस्ती छीन लिया था। चश्मे के बिना मुझे बिल्कुल दिखलायी नही देता है। कृपाकर उसे मुझे वापस दिलवा दीजिए।'

यह कैदी ज़र्जिन्स्की से चार स्थान पहले खडा था। उसका नाक-नक्शा अच्छा था और देखने मे वह समझदार मालूम पडता था। लेकिन जेल का अधीक्षक अब उसकी बात सुन नही रहा था उसकी नजर ज़र्जिन्स्की पर पड गयी थी। अपने सहायक को साथ-लिये-लिये वह ज़र्जिन्स्की की तरफ झपटा। मुहाँसो से भरे मुह वाला उसका नौजवान सहायक भी जाकर उसके पास खडा हो गया। आँखें लाल लाल करते हुए अधीक्षक चीखा, "यह क्या तमाशा है ? क्या कोई स्वाँग हो रहा है ? तुम दोनो सीधे खडे हो ! एकदम !!'

ज़र्जिन्स्की ने कहा, "जैसा कि आप जानते है, मेरा साथी बीमार है। वह खडा नही हो सकता।'

अधीक्षक ने जोर से डाँटते हुए आदेश दिया, "मैं आर्डर देता हू इस तमाशे को बन्द करो ! मैं आर्डर देता हू, पीछे खडे हो

जाओ ! जर्जिन्स्की न दोहराया "लेकिन यह तो खडा हो ही नही सकता।"

अधीक्षक आप स बाहर हो गया। क्रोध से उसका चेहरा तमतमा उठा। दहाडते हुए उसन कहा, "खामोश ! अपनी कोठरी वापस जाओ। म इसकी इजाज़त नही देता !" ज़खारकिन कोठरी स निकाल कर लान के लिए पीठ पर लादकर लान के लिए गैर-कानूनी ढग स इसे यहाँ लान के लिए इस '

इसके बाद उसके मुह मे कोई शब्द नही निकला। गुस्स स वह काँप रहा था। वह भूल गया कि वह कहन क्या जा रहा था।

तभी एक तीखी तेज़ आवाज़ गूज उठी। यह आवाज़ खुद रोसोल की थी,

"जल्लाद ! हत्यारे ! आखिर म हम तुम्हे मौत के घाट ही उतारना पडेगा '

उसी समय रोसाल को खाँसी के एक ज़बदस्त दौरे ने आकर न दबोचा होता तो क्या होता, यह कोई नही कह सकता। वह इतन ज़ोर-ज़ोर से खाँसन लगा कि उसका शरीर दोहरा हो गया, जर्जिन्स्की की पीठ उसके हाथो से छूट गयी और वह बेहोश होकर पीछे की तरफ गिर पडा। उसके चेहरे पर मौत जैसा पीलापन फैल गया। गिरते समय अगर उन्ही के पास खडे डाक्टर न उसे न सम्भाल लिया होता तो उसका सर गलियारे के पत्थर वाल फश स टकराकर फूट जाता।

ज़खारकिन न झपट कर रोसाल को डाक्टर के हाथ म छीनन की कोशिश की। लेकिन डाक्टर न उस नही छोडा। रोसाल, अब भी खाँस रहा था और उसके मुह मे लाल लाल खून निकल रहा था।

"सब लोग पीछे हटो! बगर पाँव ताडे हुए ! हर-एक अपनी जगह पर रह ! गरजत हुए अधीक्षक ने कहा और अपन पिस्तौल

दान से अपना रिवाल्वर निकालने लगा। वह चिल्लाता ही जा रहा था, 'सब लोग पीछे हटो पाँत बनाकर पीछे हटो! पीछे हटो! वरना मैं गोली मार दूगा।'

परतु, अब कोई पाँत वात शेष नही रह गयी थी। वह टूट गयी थी। और कदिया के एक दल ने अधीक्षक का और उनके एक दूसरे दल ने मुहाने वाले उसके सहायक को अच्छी तरह से घेर लिया था। कदिया के एक तीसरे दल न जखारकिन को अपने घरे मे कैद कर लिया था। जार जार मे ललकारता हुआ उन्मत्त स्वर म काई कह रहा था

"साथियो, इन जल्लादा का आज काम तमाम कर दो!'

जखारकिन का चेहरा राख की तरह सफेद हो गया।

जर्जिन्स्की न डाँटते हुए कहा "अबे ओ सुअर अपनी बन्दूक हटा! उसे यहा से दूर ले जा और नही ता अब यह तेरी जान ल लेंगे।

बायी तरफ से किसी के जोर-जार से चिल्लाने की आवाज चली आ रही थी, "साथियो, इन्हें आज मौत के घाट उतार दो! जल्लादो का सफाया कर दो।'

लेकिन मारा किसी का नही गया। जेल का अधीक्षक उसका सहायक और जखारकिन नौ-दो ग्यारह हो गये। उन्ह किसी न रोका नही और भागकर वे गायब हो गये। जर्जिन्स्की न कदियो को समझा-बुझाकर कोठरियो म वापस भेज दिया। रासोल को भी लाद कर उसकी चारपाइ के पास ले जाया गया। डाक्टर भी साथ-साथ वही पहुच गया और रोसाल की चारपाई के पास बैठ गया। जल म सन्नाटा छा गया।

वे सब जानते थे कि इस सब के लिए उन्ह सख्त सजा मिलेगी। शाम तक व उसका इन्तजार करत रह। लेकिन उन्ह सजा देने काई

नही आया। काफी देर बाद जखारविन आया तो वह एकदम बदला हुआ था। वह एकदम शरीफ और भला बन गया था। कोठरी के बाहर से छेद मे मुह लगाकर उसने यह भी पूछा कि रोसोल की तबीयत कैसी है। जर्जिन्स्की ने उतनी ही शराफत से उत्तर दिया, "आपका शुक्रिया। उनकी तबियत अब पहले से बहुत अच्छी है।"

लेकिन जखारविन वहाँ से गया नही। कोठरी के छेद से केवल उसका बिखरे बालो वाला झबरा-झबरा मुह दिखलायी देता था। वह बोला, "ओफ ! लोग कितने बीमार हो सकते हैं!"

जर्जिन्स्की इसका कोई जवाब नही दे सके। रात होते होते तक रोसोल होश मे आ गया। उसका पतला चेहरा सूख गया था और उस पर एक प्रकार का नीलापन छा गया था। उसकी काली-काली आँखें धँस गयी थी। उसके होठो पर पपडी जम गयी थी।

मुस्कराने की कोशिश करते हुए उसन कहा, "हमने खूब अच्छी घुमाई की, ठीक है न ?'

जर्जिन्स्की ने शान्त भाव से जवाब दिया, "कल फिर हम घूमने चलेंगे।"

"सचमुच ?'

"सचमुच!"

वह रोसोल के पास सीधे खडे थे। उनके लम्बे, तगडे, सीधे शरीर और उनके व्यक्तित्व की शान्त शक्ति को देखकर रोसोल को विश्वास हो गया कि वह जो कुछ भी कह रहे थे वह जरूर होगा। निश्चित रूप से कल फिर वे लोग सैर करने जायेंगे। फसला कर लिया गया था और उसके अमल को कोई नही रोक सकेगा।

अनेक महीनो के बाद, उस रात रोसोल को खूब गहरी नीद आयी।

अगले दिन सुबह जर्जिन्स्की ने तैयार होने मे उसे मदद दी। और जखारकिन ने आकर जब दरवाजा खोला और कहा कि वर्जिश क लिए जाने का समय हो गया है तो जर्जिन्स्की ने रोसोल को अपनी पीठ पर लाद लिया और दूसरे कैदियो के साथ वह भी पात मे चलन लगे।

जेल के अधीक्षक का कही पता नही था। पिछले दिन के बाद से उसे किसी ने नही देखा था।

जखारकिन यह जताने की कोशिश कर रहा था कि जर्जिन्स्की या उनके बोझ या किसी भी अन्य वस्तु से उसका कोई वास्ता नही था। वह ता सिफ कैदियो स वर्जिश करा रहा था। वास्तव मे, उसन नजर उठाकर कैदिया की तरफ देखने तक का साहस नही किया। बीच बीच मे वह आवाज देता था "देखो, कदम मिलाकर चला! अपनी बडियो को ठीक से पकडे रहो। चलो! बात-चीत मत करा। सीढियो पर चढने मे जल्दी मत करो।'—लेकिन उसकी आखें जमीन पर ही लगी रहती थी।

बूटो को पटकते हुए और बडियो का खनखनाते हुए कैदी गलियारो, सीढियो, और फिर दूसरे गलियारो मे चल रहे थे।

जर्जिन्स्की से डाक्टर ने पूछा, "भारी लग रहा है ?"

"मैं आदी हो जाऊँगा।" जर्जिन्स्की ने जवाब दिया। आखिरी सीढियो से उतरकर वे आखिरी गलियारे म पहुच गये और फिर जेल के पथरीले अहाते मे बाहर निकल आये। धूप निकली हुई थी। उजला, कुछ कुछ गम-सा दिन था। अखरोटो के दरख्त फूलो से लद थे। फूलो के गुच्छो से उनकी शाखें इस तरह चमक रही थी जिस तरह कि बडे दिन के पेड पर जलाई जाने वाली मोमबत्तिया चम कती है। कैदियो की पात के आगे आगे जखारकिन चल रहा था। किसी सैनिक टुकडी के बैण्ड के नेता की तरह वह आदेश दे रहा था और अपनी बाहो को हिला रहा था।

"अपने बीच का फासला सही रखो। हर दो के बीच हाथ की दूरी रहनी चाहिए। हर जोड़े के बीच तीन कद फासला होना चाहिए। उधर—तुम लोग अपनी पाँत ठीक वरना परेशानी होगी। बातचीत बिल्कुल नहीं।"

किन्तु बाहर खुले अहाते में इतना अच्छा लग रहा था जेलरक्षिन की मूर्खतापूर्ण चिल्ल पों का कोई किसी पर कोई नहीं पड़ रहा था।

सूरज चमक रहा था। अहाते के बीचोंबीच कबूतरों के घूम रहे थे, प्रेमालाप कर रहे थे। और अच्छी हवा, वसन्ती हवा रही थी।

र्जिन्स्की के चेहरे से पसीना टपक रहा था, परन्तु उनका ध्यान नहीं था।

बेड़ियों की खनखनाहट और सैकड़ों बूटों की आवाज के भी उन्हें रोसोल की खुशी और आश्चर्य से भरी आवाज सुनाई रही थी। वह कह रहा था

'यह है जीवन !"
"प्रकृति का वरदान है यह !
"आह, मेरी मा, सूर्य गर्म हो रहा है !'
"परन्तु वह तुम्हारे और मेरे लिए नही चमक रहा है !
आह, कैसा सुहाना मौसम है !'

जर्जिन्स्की को सास लेने मे कठिनाई हो रही थी। उनकी आँखो के सामने कोहरा सा छा रहा था। उन्हे अपने दिल की जार-जार से होने वाली धडकन तथा उन शब्दो के अलावा और कुछ नही सुनायी दे रहा था जो रोमोल उनके कानो म धीरे धीरे कह रहा था।

अपने आप से उन्होने कहा, मुझे हिम्मत से चलते रहना चाहिए। एन्तन को पीठ पर लादे हुए यहा अहाते मे मुझे किसी भी तरह गिरना नही चाहिए !

वह नही गिरे। पन्द्रह मिनट का समय समाप्त हो गया। जखारकिन ने सीटी बजाई और हुक्म दिया कि सारे कैदी अपनी अपनी कोठरियो म वापस चले जाय। जर्जिन्स्की को एन्तन का पीठ पर लादकर अब भी तीसरी मजिल तक और लम्बे-लम्बे गलियारा से जाना था।

इसके बाद मे वह रोमोल को हर रोज इसी तरह ले जाते थे। गर्मियो मे उन्होने अपने दिल को इससे काफ़ी नुकसान पहुँचाया।

लेकिन इस तरह की छोटी छोटी बातो की क्या कभी उन्होने परवाह की थी !

उनके बारे म एक बार किसी ने कहा था

'अपनी सारी जिन्दगी म जर्जिन्स्की ने अगर उस चीज़ के अलावा कभी और कुछ न भी किया होता जो उन्होने रोमोल के लिए की थी तब भी वह इस बात के अधिकारी होते कि उनकी स्मृति म एक शानदार स्मारक बनाया जाय !"

"अपने बीच का फासला सही रखो ! हर दो के बीच मे एक हाथ की दूरी रहनी चाहिए। हर जोडे क बीच तीन कदम का फासला होना चाहिए। उधर—तुम लोग अपनी पात ठीक करो। वरना परेशानी होगी। बातचीत बिल्कुल नही !"

किन्तु बाहर खुले अहाते म इतना अच्छा लग रहा था कि जखारकिन की मूखतापूण चिल्ल पो का कोई किसी पर कोई असर नही पड रहा था।

सूरज चमक रहा था। अहात के बीचो बीच कबूतरो क जोडे घूम रहे थे, प्रेमालाप कर रह थ। और अच्छी हवा, वसन्ती हवा वह रही थी।

जर्जिन्स्की क चेहरे से पसीना टपक रहा था, परन्तु उनका उधर ध्यान नही था।

बडियो की खनखनाहट और सैकडो बूटो की आवाज के बीच भी उन्ह रोसोल की खुशी और आश्चय से भरी आवाज सुनायी दे रही थी। वह कह रहा था,

"यात्सेक ! अखरोटों क उन दरख्तो को तो देखिए ! आपको दिखलायी दे रहे है? और उस घास को भी तो देखिए ! वह इन पत्थरो के बीच से भी उठकर उपर आ रही है। उधर बायी तरफ देखिए, वह कितनी हरी हरी लग रही है। यात्सेक ! आप थक गय होग। आपके ऊपर भारी बाझ लदा हुआ है है न ? उस मोटे कबूतर की तरफ तो नजर कीजिय ! फूलकर कुप्पा हो गया है। इतना मोटा है तो वह उडता कैसे होगा ?"

रोसोल जैसे कई वष छोटा हो गया था।

दूसरे कैदियो के दिलो म भी जस तरुणाई की भावना जाग उठी थी। चारो ओर खुशी का वातावरण फैल गया। आल्हाद भरे स्वरो म आवाजें सुनाई दन लगी,

यह है जीवन !'

"प्रकृति का वरदान है यह !

"आह, मरी मा, सूय गम हो रहा है !

'परन्तु वह तुम्हारे और मरे लिए नही चमक रहा है !'

'आह, कैसा सुहाना मौसम है !

जर्जिन्स्की को सास लन मे कठिनाई हो रही थी। उनकी आखो के सामन कोहरा सा छा रहा था। उन्ह अपने दिल की जार-जार स होने वाली धडकन तथा उन शब्दो के अलावा और कुछ नही सुनायी दे रहा था जो रोमाल उनके कानो म धीरे धीरे कह रहा था।

अपन-आप से उन्होने कहा मुझे हिम्मत से चलन रहना चाहिए। एडतन को पीठ पर लादे हुए यहा अहात मे मुझे किसी भी तरह गिरना नही चाहिए !

वह नही गिरे। पन्द्रह मिनट का समय समाप्त हो गया। जखारकिन ने सीटी बजाई और हुक्म दिया कि सारे कैदी अपनी-अपनी कोठरियो म वापस चले जाय। जर्जिन्स्की का एडतन को पीठ पर लादकर अब भी तीसरी मजिल तक और लम्बे लम्बे गलियारो से जाना था।

इसके बाद मे वह रोमोल का हर रोज इसी तरह ले जाते थे। गर्मिया मे उन्होन अपन दिल को इससे काफी नुकसान पहुँचाया।

लेकिन इस तरह की छोटी-छोटी बातो की क्या कभी उन्होन परवाह की थी !

उनके बारे म एक बार किसी ने कहा था

"अपनी सारी जिन्दगी म जर्जिन्स्की ने अगर उस चीज के अलावा कभी और कुछ न भी किया होता जो उन्होन रोसोल के लिए की थी तब भी वह इस बात के अधिकारी होते कि उनकी स्मृति म एक शानदार स्मारक बनाया जाय !

येलीज़वेता द्राब्कीना

येलीज़वेता द्राब्कीना (जन्म १९०१) १९१७ से ही कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्या हैं। लेनिन के अनेक सहयोगियों के साथ जिनमें उनकी पत्नी नादेज़्दा क्रुप्स्काया भी थीं, उन्होंने काम किया है। लेनिन को व्यक्तिगत रूप से वह जानती थीं। उनके जीवन से सम्बन्धित अनेक घटनाएं स्वयं उनके सामने घटी थीं। इनमें से कुछ को उन्होंने अपनी पुस्तक, "काली रोटी के सूखे टुकड़े" में चित्रित किया है। उन्हीं कहानियों में से एक यहाँ प्रकाशित की जा रही है।

चिन्तन

उस साल की शरद ऋतु लम्बी और खूब धूप भरी थी। और फिर अचानक ठण्डा मौसम आ गया था। अक्तूबर क्रांति के उत्सवो के आरम्भ होने से पहले ही बर्फीली हवा चलने लगी थी। उत्सव के लिए छुट्टियाँ शुरु होने के दूसरे ही दिन बफ का तूफान आ गया। मकानो की खिडकियो को बफ के गालो ने ढक दिया। सगीत समारोह मे जाने के लिए हमने सगीत भवन के टिकट खरीद लिये थे, फिर भी माँ और मैं सोचन लगी कि उस बफ और पाले मे वहाँ जायँ या न जायँ। किन्तु यह हमारी खुशकिस्मती ही थी कि अन्त म हमन यही तै किया कि वहाँ जायँ।

सडक बफ के उडते हुए गालो से ढकी हुई थी। बर्फीले धुधलके मे से रोशनी की सजावट टिमटिमाती हुई ही दिखलाई दे रही थी। ट्रेड यूनियनो के गह के सामन लाल सेना के एक सिपाही की लकडी की एक मूर्ति खडी थी। उसकी सगीन की नाक फौजी जनरलो, जमीदारो और मिल मालिको के कलेजा के अन्दर घुसती मालूम पडती थी। वह उन जीतो को प्रतिबिम्बित करती थी जो देनीकिन और यूदनिच के खिलाफ पिछले हफ्तो म लाल सेना ने हासिल की थी।

बाँह म बाँह डाल माँ और मैं उस तेज हवा म आगे बढत जा रहे थे। हवा झण्डो और पताकाओ को फाडे डाल रही थी और सडक

और सगीत का आनन्द लेने के लिए अपने को तैयार करने लगी। तभी माँ ने अपनी कोहनी से हल्के से मुझे कुरेदा और इशारे से उस व्यक्ति की ओर देखने के लिए कहा जो सामने हमारे बाँयी तरफ बैठा था। मैंने देखा कि वह तो लेनिन थे!

लेनिन को मैंने बहुत बार देखा था। मैंने उन्हे मच से बोलते हुए, मीटिंगो की अध्यक्षता करते हुए और घर मे भी देखा था। उन सभी अवसरो पर वह हमेशा कार्य रत होते थे, उनके अग अग मे गतिशीलता दिखलाई देती थी। यह पहला ही अवसर था जब मैं उन्हे अपने विचारो मे खोया हुआ, चिन्तन की मुद्रा मे देख रही थी।

कोरियोलानस की ऊपर उठती गिरती स्वर-लहरियो को सुनते हुए भी मैं सुन नही पा रही थी। मैं आखो की कोर से लेनिन को देख रही थी। वह एकदम निश्चल, सगीत मे पूरे तौर से खोये बैठे थे। आर्केस्ट्रा अपनी छितराहट को धीरे-धीरे छिटकता हुआ गरमा रहा था, किन्तु उसके स्वर अब भी दबे दबे और मद्धिम थे। परन्तु जब इस वादक की बारी आयी तो मानते हुए भी उसने अपने वाद्य यत्रो को इतने जोरो से पीटा कि पूरा सगीत भवन हिल गया।

हमारे पीछे बैठे किसी ने मजाकिया ढग से कहा 'मालूम होता है अस्तबल से कोई घोडा भाग कर यहाँ आ गया है!'

अन्तिम सुरो के समाप्त होते ही तालियो की गडगडाहट से भवन गूज उठा। लेनिन हल्के से अपनी सीट पर हिले। जिस तरह वह हिले थे उससे मैं समझ गयी थी कि अपने बायें कधे को, जिससे कि उस समाजवादी क्रान्तिकारी द्वारा मारी गयी दो गोलियाँ अभी तक निकाली नही गयी थी वह कुछ इस तरह ध्यान से व्यवस्थित कर रहे थे जिससे कि उन्हे कुछ अधिक राहत मिल सके।

उनके इस तरह हिलने-डुलने से मुझे तुरन्त उन कुछ दिनो की याद आ गयी जब लेनिन के गोली लगी थी। उन दिनो जन मत्रालय मे

के तार उसकी वजह से झूले की तरह झूल रहे थे। बर्फ के ऊपर लोगों के चलन से एक सकरा सा मार्ग बन गया था। हम लोग उसी पर चलते हुए संगीत भवन की तरफ बढ रहे थे। ओवर कोटों, जूतों, आदि के रखने के कमरों का इस्तेमाल तब तक नहीं शुरू हुआ था। इसलिए अपने ओवर कोटों के ऊपर से याही बर्फ झाडकर हम लोग ऊपर चढ गये।

जब हम संगीत कक्ष में पहुँचे तो वह लगभग भर चुका था। परिचारकगण संगीत के साजो सामान को रखते लाते हुए संगीत का प्रबन्ध कर रहे थे। हमारे टिकट सीटों की पाचवी या छठवी पंक्ति के लिए थे। ठीक मेरे सामने की एक सीट खाली थी और उसी की बगल में एक आदमी बैठा था। वह मुलायम रोओं की टोपी लगाये था जिसमे उसके कान तक भी ढके थे। उसके कोट का कॉलर ऊपर को उठा था। अपनी सीट पर वह सिकुडा मुटा झुका झुका सा बैठा था। वह या तो बहुत थका था, या फिर शीत के कारण अपने को गरमाने की कोशिश कर रहा था।

ओवरकोट और रोयेंदार (फर के) हैट पहने वादक गण मंच पर आने लगे। पियानो वादक महिला अपने ऊनी दस्तानों को पहनने लगीं। उन्होंने अपने वाद्य यन्त्रों को ठीक दुरुस्त करना शुरू किया तो हल्के-हल्के स्वर उठने लगे। ऐसा लगता था जैसे कि उस भयानक ठण्ड के कारण संगीत-लहरियाँ भी जम कर अकड़ गयी थीं। आखिरकार संगीत संचालक सर्गेई कुर्जेनित्स्की भी आ गये। वह लम्बा कोट पहने थे। परन्तु बढिया सफेद कमीज की जगह उनके कोट के अन्दर से भूरे रंग का स्वेटर झाँक रहा था। थोडा सा झुककर उन्होंने अभिवादन किया, अपने हाथों पर फूंका और ताल देने वाली अपनी छोटी सी छडी उठा ली। संगीत समारोह प्रारम्भ हो गया।

अपने कोट से मैंने अपने को और अच्छी तरह कसकर ढँक लिया

और सगीत का आनन्द लेने के लिए अपने को तैयार करने लगी। तभी माँ ने अपनी कोहनी मे हल्के-से मुझे कुरेदा और इशारे से उस व्यक्ति की ओर देखने के लिए कहा जो सामने हमारे बायी तरफ बैठा था। मैंने देखा कि वह तो लेनिन थे!

लेनिन को मैंने बहुत बार देखा था। मैंने उन्हे मच से बोलते हुए, मीटिंगो की अध्यक्षता करते हुए और घर मे भी देखा था। उन सभी अवसरो पर वह हमेशा कार्य रत होते थे, उनके अग-अग मे गतिशीलता दिखलाई देती थी। यह पहला ही अवसर था जब मैं उन्हे अपने विचारो मे खोया हुआ, चिन्तन की मुद्रा मे देख रही थी।

कोरियोलानस की ऊपर उठती गिरती स्वर लहरियो को सुनते हुए भी मैं सुन नही पा रही थी। मै आखो की कोर से लेनिन को देख रही थी। वह एकात्म निश्चल, सगीत मे पूरे तौर से खोये बैठे थे। आर्केस्ट्रा अपनी छितराहट को धीरे धीरे छिटकाता हुआ गरमा रहा था, किन्तु उसके स्वर अब भी दबे दबे और मद्धिम थे। परन्तु जब ड्रम वादक की बारी आयी तो बाजते हुए भी उसने अपने वाद्य यत्रो को इतने जोरो से पीटा कि पूरा सगीत भवन हिल गया।

हमारे पीछे बैठे किसी ने मजाकिया ढग से कहा 'मालूम होता है अस्तबल से कोई घोडा भागकर यहा आ गया है।'

अन्तिम सुरो के समाप्त होते ही तालियो की गडगडाहट से भवन गूज उठा। लेनिन हल्के-से अपनी सीट पर हिले। जिस तरह वह हिले थे उससे मैं समझ गयी थी कि अपने बायें कधे को, जिससे कि उस समाजवादी क्रान्तिकारी द्वारा मारी गयी वे गोलियां अभी तक निकाली नही गयी थी वह कुछ इस तरह रखने की कोशिश कर रहे थे जिससे कि उन्हे कुछ अधिक राहत मिल सके।

उनके इस तरह हिलने-डुलने से मुझे मुख्य उन कुछ दिनो की याद आ गयी जब लेनिन के गोली लगी थी। उन दिनो जन मत्रालय के

घण्ट बिताने के बाद सारा क्रान्तिकारी जन समुदाय मास्को के अपने अपने इलाको को लौट जाता था और फिर दुनिया के मजदूरो की अन्तर्राष्ट्रीय एकता के इस दिवस को वहाँ मनाता था। उन दिनो लाल चौक भी जैसा वह आज है इससे बिल्कुल भिन्न था। क्रान्ति के लिए शहीद होने वालो की समाधियाँ उस समय क्रेमलिन की दीवार के साथ साथ घास के नीचे एक बिल्कुल सादी सी पाँत म बिना किसी टीम-टाम के बनी हुई थी। चौक पत्थरो का बना था। उसके किनारे किनारे ट्रामो की दो पटरियाँ बिछी थी। ट्राम गाडियाँ चीखती, शोर मचाती इतिहास के सग्रहालय के समीप के ढाल स गुजरती, फिर उस सँकरे से ढाँचे की तरफ धडधडाती हुइ चली जाती थी जिसे उस समय मास्कोवोरेत्स्की का पुल कहा जाता था। सेण्ट बासिल के गिरजाघर के पास से छोटी-छोटी इमारतो की जो एक पाँत आगे तक चली गयी थी उसकी वजह से वह चौक आज की अपेक्षा बहुत छोटा और घिरा-घिरा दिखायी देता था।

१९१९ का वह मई दिवस पहले कभी से भी अधिक उल्लासमय प्रतीत होता था। दूकानो की उस वीथिका को जिसे आज "गुम" कहा जाता है दो विशालकाय लाल लाल पताकाओ से सजा दिया गया था। एक पताका पर एक मजदूर का चित्र था और दूसरी पर एक किसान का। क्रेमलिन के हर बुर्ज पर लाल लाल ध्वजाएँ फहरा रही थीं। यहाँ तक कि मिनिन और पेजार्स्की की मूर्तियो के हाथो मे भी लाल झण्डे थमा दिये गये थे। फाँसी देने के पुराने चबूतरे पर स्टीपन राज़िन का नया स्मारक श्वेत परिधान से ढका खडा था। उसका उस दिन अनावरण होना था। याकोव स्वेर्दलोव की नयी-नयी समाधि फूलो के एक पुज की तरह लगती थी।

सूर्य तेजी से चमक रहा था। वृक्ष कलियो से लदे थे और स्वच्छ आकाश की पृष्ठभूमि मे उनकी हरी-हरी नक्काशी बहुत

कर्मचारी और यहां तक कि पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की मन्त्रि परिषद के लोग भी अपने आप ही बिना जरा भी आवाज किये धीरे-धीरे चलते थे और आपस में चुपके-चुपके बात करते थे। केन्द्रीय कमेटी का कार्यालय क्रेमलिन से बाहर था। फिर लेनिन ठीक होने लगे। तब हम लोग कितने खुश थे! और जब खाना खाने के लिए हम क्रेमलिन के भोजन-कक्ष में गये थे और हमने खिड़की से उन्हें अहाते में टहलने देखा था तब तो हमारी खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा था।

तालियों की गड़गड़ाहट के एक नये सिलसिले ने मेरे विचारों की शृंखला को तोड़ दिया। लेनिन ने अपना आसन बदल दिया था और अब वह इस तरह बैठे थे कि मैं उनके चेहरे के दाहिने भाग को देख सकती थी। उनके चेहरे पर पूर्व-व्यस्तता का एक प्रकार से उदासी का, भाव था। उनके प्रति गहरे स्नेह की भावना से मेरा मन भीग उठा।

मुझे १९१९ के मई दिवस की याद आ गयी। उन दिनों अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग के इस त्योहार को जिस तरह आज मनाया जाता है उससे भिन्न ढंग से मनाया जाता था। उन दिनों मास्को का सम्पूर्ण क्रान्तिकारी वर्ग सुव्यवस्थित पाँतें बनाकर मार्च करता हुआ लाल चौक पहुंचता था, वहाँ वह सार्वजनिक वक्ताओं के भाषण सुनता था, उनका अभिवादन करता हुआ लेनिन के सामने से गुजर जाता था, गीत गाता था, और समाजवादी क्रान्ति के प्रति अपनी निष्ठा और वफादारी की फिर प्रतिज्ञा करता था। लाल चौक में मई

घण्टे बिताने के बाद सारा क्रान्तिकारी जन-समुदाय मास्को के अपने-अपने इलाकों को लौट जाता था और फिर दुनिया के मजदूरों की *अन्तर्राष्ट्रीय एकता के इस दिवस को वहाँ मनाता था।* उन दिनों लाल चौक भी जैसा वह आज है इससे बिलकुल भिन्न था। क्रान्ति के लिए शहीद होने वालों की समाधियाँ उस समय क्रेमलिन की दीवार के साथ-साथ घास के नीचे एक बिल्कुल सादी सी पाँत में बिना किसी टीम टाम के बनी हुई थीं। चौक पत्थरों का बना था। उसके किनारे किनारे ट्रामों की दो पटरियाँ बिछी थीं। ट्राम गाड़ियाँ चीखती, शोर मचाती इतिहास के संग्रहालय के समीप के ढाल से गुजरती, फिर उस संकरे से ढाँचे की तरफ धड़धड़ाती हुई चली जाती थीं जिसे उस समय मास्कोवोरेत्स्की का पुल कहा जाता था। सेण्ट बासिल के गिरजाघर के पास से छोटी-छोटी इमारतों की जो एक पाँत आगे तक चली गयी थी उसकी वजह से वह चौक आज की अपेक्षा बहुत छोटा और घिरा घिरा दिखायी देता था।

१९१९ का वह मई दिवस पहले कभी से भी अधिक उल्लासमय प्रतीत होता था। दूकानों की उस वीथिका को जिसे आज "गुम" कहा जाता है दो विशालकाय लाल-लाल पताकाओं से सजा दिया गया था। एक पताका पर एक मजदूर का चित्र था और दूसरी पर एक किसान का। क्रेमलिन के हर बुर्ज पर लाल-लाल ध्वजाएँ फहरा रही थीं। यहाँ तक कि मिनिन और पोझार्स्की की मूर्तियों के हाथों में भी लाल झण्डे थमा दिये गये थे। फाँसी देने के पुराने चबूतरे पर स्टीपन राजिन का नया स्मारक श्वेत परिधान से ढका खड़ा था। उसका उस दिन अनावरण होना था। यारोव स्वेदलोव की नयी-नयी समाधि फूलों के एक पुंज की तरह लगती थी।

सूर्य तेजी से चमक रहा था। वृक्ष कलियों से लदे थे और स्वच्छ आकाश की पृष्ठभूमि में उनकी हरी-हरी नक्काशी बहुत

जब गड्ढा तैयार हो गया तो छोटे-छोटे पौधो से भरी एक गाडी लनिन के पास पहुच गयी और नीबू का एक न्हा सा पौधा लनिन को पकडा दिया गया । उन्होने उस सावधानी स गडढे मे लगा दिया, चारो तरफ से मिट्टी से उसे अच्छी तरह थोप दिया, और फिर उस पानी स सीच दिया । जब पूरा काम समाप्त हो गया तब भाषण करने के लिए वहा से चलकर वह अगले मच पर जा पहुचे ।

उस दिन उन्होने जो पहला भाषण दिया था उसमे उन्हान भूत-काल की विवेचना की थी । अब उनका ध्यान भविष्य की आर, उस नयी दुनिया की ओर था जो सोवियत रूस पर छाय युद्ध के धुए के घन बादला के बीच से उभर कर सामन आ रही थी । उन बच्चा म, जा मच के नीचे खडे खडे उनके भाषण को सुन रह थे और उन न्हे न्हे पौधो मे जि ह अभी अभी लगाया गया था—इन दोना म ही उन्हे उस भविष्य के दशन हो रह थे ।

लोग अपने फावडो के सहारे झुककर खडे हो गय और उनके भाषण को सुनन लग । अपन एक हाथ को, जिसपर अब भी धूल और मिट्टी लगी हुई थी ऊपर की तरफ उठात हुए उन्हान कहा,

'पूजीवादी व्यवस्था की दस्तावेजा और उसके भग्नावशेषा को हमारे नाती पोते जब देखेंगे तो उन्ह बहुत अजब लगेगा । उन्ह इस बात की कल्पना करने मे भी कठिनाई होगी कि जीवनावश्यक वस्तुओ का व्यापार कभी निजी लोगा के हाथा मे कम रहा होगा, कारखाने और मिलें कैसे किन्ही निजी व्यक्तिया की सम्पत्ति रही होगी, कैसे एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का कभी शोषण करता रहा होगा, ऐसे लोग कैसे कभी रह होंगे जो कोई काम नही करते थ ! हमारे बच्चे जिस चीज का देखेंगे उसके बारे म अभी तक इस प्रकार बात की गयी है जैसे कि वह कोई परी कथा हो । परन्तु साथियो, अब आप स्पष्ट रूप स देख सकत है कि समाजवादी समाज की जिस इमारत

सुहानी लग रही थी। हर आदमी खुश मालूम पडता था। मोर्चों मे लाल सेना की जीतो की खबर आ रही थी। भीड के अन्दर से गान की आवाजे सुनायी दे रही थी। मित्रगण एक दूसरे का स्वागत एक नये अभिनन्दन से करते हुए कहते थे "मई दिवस शुभ हो साथियो !" इस अभिनन्दन का चलन तब आरम्भ ही हुआ था। नौजवानो की टुकडिया देकियान वेदनी की नवीनतम कविताओ की पंक्तिया गाती सुनायी पडती थी

ओ शोडमान, ओ गन्दे धूर्त,
जीवन को कितना आनन्द उस समय मिलेगा,
जब लम्प के उस खम्भे पर मेरी नजर पडगी
जिस पर, मैं जानता हू, तेरा शरीर लटकता होगा !

दोपहर के करीब लेनिन चौक मे आये। उल्लसित जन समुदाय ने भारी करतल-ध्वनि मे उनका स्वागत किया। उन्होने एक अत्यन्त प्रेरणादायक भाषण दिया। अपने भाषण का अन्त उन्होने, "कम्युनिज्म अमर रहे !" के नारे के साथ किया। इसके बाद बोलने के लिए बारी बारी से एक मच से दूसरे मच पर वह जाते रहे। (चौक के विभिन्न भागो मे मच की तरह की कई अड्डे उस दिन बना दिये गये थे जिससे कि लेनिन तथा दूसरे बोल्शेविक नेताओ के भाषणो को सब लोग सुन सके।) तभी लेनिन को किसी ने रास्ते मे रोक कर उनके हाथ मे एक खुरपी दे दी।

उस साल मई दिवस को 'वृक्षारोपण दिवस' के रूप मे मनाया गया था। सोवियत गणतन्त्र अब भी चारो तरफ से दुश्मनो से घिरा था। फिर भी उसने उस मई दिवस को वृक्षारोपण दिवस के रूप मे मनाने और उस दिन वृक्ष लगाने का फैसला किया था।

मन ही मन प्रसन्न होते और अपने हाथो को मलते हुए लेनिन ने खुरपी को ले लिया और क्रेमलिन की दीवार के बगल मे खोदना शुरू कर दिया।

जब गड्ढा तैयार हो गया तो छोटे छोटे पौधा से भरी एक गाडी लेनिन के पास पहुच गयी और नीबू का एक नन्हा सा पौधा लनिन को पकडा दिया गया। उन्होने उसे सावधानी से गडढे मे लगा दिया, चारो तरफ से मिट्टी स उसे अच्छी तरह थाप दिया और फिर उसे पानी से सीच दिया। जब पूरा काम समाप्त हो गया तब भाषण करने के लिए वहा से चलकर वह अगले मच पर जा पहुचे।

उस दिन उन्हान जो पहला भाषण दिया था उसम उन्होन भूत-काल की विवेचना की थी। अब उनका ध्यान भविष्य की आर, उस नयी दुनिया की ओर था जो सोवियत रूस पर छाय युद्ध के धुए के घने बादलो के बीच स उभर कर सामन आ रही थी। उन बच्चो म, जा मच के नीचे खडे खडे उनक भाषण को सुन रह थे और उन नन्ह नन्ह पौधो मे जिन्ह अभी अभी लगाया गया था—इन दोनो मे ही उन्ह उस भविष्य के दशन हो रहे थे।

लोग अपने फावडो के सहारे झुककर खडे हो गये और उनके भाषण को सुनने लग। अपन एक हाथ को, जिसपर अब भी धूल और मिट्टी लगी हुई थी, ऊपर की तरफ उठाते हुए उन्होन कहा,

'पूजीवादी व्यवस्था की दस्तावेज्रा और उसके भग्नावशेषा को हमारे नाती पोत जब देखेंगे तो उन्हे बहुत अजब लगेगा। उन्ह इस बात की कल्पना करन मे भी कठिनाई होगी कि जीवनावश्यक वस्तुआ का व्यापार कभी निजी लोगो के हाथा मे कसे रहा होगा, कारख़ान और मिलें कैस किन्ही निजी व्यक्तिया की सम्पत्ति रही होगी, कैस एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का कभी शोषण करता रहा होगा ऐसे लोग कैसे कभी रह हागे जो कोइ काम नही करते थे! हमारे बच्चे जिस चीज का देखेंग उसके बारे मे अभी तक इस प्रकार बात की गयी है जैसे कि वह कार्ड परी कथा हो। परन्तु साथियो, अब आप स्पष्ट रूप से दख सकते है कि समाजवादी समाज की जिस इमारत

की हमने नींव डाली है वह कल्पना-लोक की कोई चीज नही है। हमारे बच्चे इस इमारत का और भी अधिक उत्साह से निर्माण करेंगे '

उन्होने नीचे खडे बच्चो की तरफ देखा और थोडा रुककर फिर बोले,

"इस भविष्य को हम नही देख पायेंगे, उसी तरह जिस तरह कि इन पौधो के, जिन्हे आज लगाया गया है, प्रस्फुटन की शोभा को हम नही देख पायेंगे ! किन्तु हमारे बच्चे उन्हे देखेंगे। उन्हे व लोग देखेंगे जो आज तरुण हैं "

तालियो की आकाश भेदी गडगडाहट ने स्पष्ट कर दिया कि सगीत समारोह का मध्यान्तर हो गया है। सब लोग अपने पैरो को पटकते और अपने को गर्म करने के लिए अगडाई लेते हुए खडे हो गये। लेनिन भी उठ खडे हुए।

उन्होंने अपना हैट पहना, अपनी मुट्ठियो को मिलाया, फिर पीछे की तरफ मुडे तो उनकी दृष्टि माँ पर और मुझ पर पडी।

"अरे, एलिजावेथ—स्पैरो ! तुम भी यहा हो !"—बचपन के मेरे नाम को लेते हुए उन्होने मुझे आवाज दी। हाथ मिलाने के अपने प्रसिद्ध सुदृढ और जल्दी-जल्दी के तरीके से उन्होने माँ का और फिर मेरा अभिवादन किया।

हा, यह सब चीजें सचमुच हुई थी !

और आज जब हम उनकी याद करते हैं तो हमारे अन्दर इच्छा पैदा होती है कि हम और भी बेहतर, और भी उदात्त बनें, और सदा कम्युनिस्ट के महान पद को धारण करने के योग्य बने रहें।

वीरा पनोवा

वीरा पनोवा का जन्म १९०८ मे हुआ था। उन्होने उपन्यास, नाटक, कहानियाँ और फिल्म कथाएँ लिखी है। उनकी कुछ फिल्मी कहानियो के नाम है सहयात्री, सर्योजा, समय चलता है, तथा एक भावुकतापूर्ण उपन्यास। तीन बार उन्हे राजकीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

वह पूरे तौर से एक लेनिनग्रादी महिला है। अपने नगर को वह जानती और प्यार करती है। "क्रान्ति के पालने' के क्रान्तिकारी अतीत के सम्बन्ध मे पनोवा ने अनेक कहानियाँ लिखी है। यहाँ जो कहानी दी जा रही है वह लेनिनग्राद के तरुणो और उनकी उन परम्पराओ के सम्बन्ध मे है जिन्हे क्रान्ति करने वाले अपने पूर्वजो से विरासत मे उन्होने प्राप्त किया है।

फाटक के द्वार पर खडे तीन लडक

एक अच्छी सी कोठी के द्वार पर तीन लडके खडे है। यह एक पुराना महल है जिसकी दीवारें पीली और खम्भे सफेद हैं। यह "मार्क्स मैदान के एक द्वार पर स्थित है। आज अगस्त का एक गम-सा दिन है, लडका की छुट्टी और मस्ती के आखिरी सप्ताह का एक दिन है। कुछ ही दिना मे रग-बिरगी तितलियो का पकडन के खल का अ त हो जायेगा। निम्स देह, अब की गर्मी का मौसम बहुत अच्छा था। पर अब वह समाप्त हो गया।

बेलोमोस का सिगरेट का पैकेट पकडाते हुए और अपने विचारा मे लीन विटका न उससे कहा, "लो, सिगरेट पिओ" शाश्का न एक सिगरेट ले ली।

विटका ने यूरचिक से पूछा और तुम ?"

यूरचिक ने कहा, 'मैंने सिगरेट छोड दी। शुक्रिया।"

सचमुच, हमेशा के लिए छोड दी ?"

"हाँ, हमेशा के लिए।'

यूरचिक छोटे कद का एक पीला पीना सा लडका था। वह चश्मा लगाता था। विटका और शाश्का के कधा तक भी बहुत मुश्किल से वह पहुचता था। यूरचिक गर्मियो म अपनी माँ के साथ देहात मे रहा था। वहा एक दिन झाडियो के पीछे से उठत धुएँ को

देखकर जब उसकी मा को पता चला कि लड़के ने धूम्रपान शुरू कर दिया है तो रोते-रोते उसने सारे घर को सिर पर उठा लिया। उसके रोने से ऐसा लगा जैसे कि यूरचिक आत्महत्या करने जा रहा था। इस रोने धोने को यूरचिक बरदाश्त न कर सका। तभी उसने तय कर लिया कि सिगरेट पीने के सुख को वह तिलांजलि दे देगा।

शाश्का ने विल्का से कहा, "उसे लालच मत दो। उसने छोड़ दी तो अच्छा ही किया।

"मैं उसे लालच नही दे रहा हू। मैंने तो उसे यो ही दी थी कि पीना हो तो पीले।

"यह बहुत सिगरेट पीता था। अब इसने छोड़ दी है। पीकर छोड़ना इतना आसान नही होता। इसके लिए चारित्रिक बल की जरूरत होती है।

इन तीनो तगड़े लड़को को यूरचिक के लिए किंचित दुख है। उसकी माँ बहुत पुराने ख्याल की है। परन्तु वे उसका आदर करते हैं—केवल उसके चारित्रिक बल के लिए नही। किताबो के ज्ञान की दृष्टि से भी उसे वह अद्भुत और सर्वज्ञ मानते हैं। आप उससे कुछ भी पूछिए वह उसका उत्तर दे देगा। अगर तुरन्त उत्तर न दे पायेगा तो अगले दिन तक तो अवश्य ही दे देगा। वे उसे बहुत चाहते हैं और उसे "चश्मुद्दीन" कहकर पुकारते हैं।

मकान के सामने की सँकरी सड़क पर ट्राम की लाइनें बिछी हुई हैं। ट्राम लाइनो के उस पार पार्क का खुशनुमा और विस्तृत मैदान है। मैदान मे काटकर अच्छी तरह सजाये गये नीबुओ के पेड़ है। कुछ छोटी छोटी गठी हुई झाड़ियाँ भी हैं। और पन्ने की तरह चमकते घास के हरे-हरे मैदान मे जगह-जगह पीले-पीले और रुपहले फूल खिले हैं। मैदान के ऊपर गहरे नीले रंग का आसमान फैला है। उस पर जगह-जगह बादलो के मोटे मोटे सफेद गोले दिखलायी पड़ रहे थे

फाटक के पास से लडको को किरोव सेतु की तरफ जाने वाला चौडा माग और नेवा नदी अच्छी तरह दिखलायी दे रहे हैं। सोवोरोव का स्मारक वही है। सोवोरोव एक खूबसूरत नौजवान था जो लोहे का टोप लगाये था और वर्दी का कोट पहने था। उसकी मासल पिंडलियाँ उघाडी थी। विल्का और शाश्का का ख्याल था कि वह मूर्ति महा सेनानायक सोवोरोव की थी। किन्तु यूरचिक ने बतलाया कि नही, वह तो युद्ध के देवता "मास" की प्रतिमा है। उसने उन्हे यह भी बतलाया कि उस मैदान को "मास का मैदान' इसलिए कहा जाता है कि सैनिक वहाँ ड्रिल और परेड करते थे। उसने कहा कि तब वहाँ कुछ नही पैदा होता था, पेड पौधो की बात तो दूर रही, घास तक की एक कोपल वहाँ नही उग पाती थी। सिपाहियो के बूटो ने रौंद रौंद कर वहाँ की जमीन को चट्टान की तरह सख्त बना दिया था। उसके ऊपर सिर्फ धूल के बवण्डर उडा करते थे।

लेकिन इन लडको ने उस सबको नही देखा था। उन्ह तो जबसे होश है तब से मास के इस मैदान को वे हरा भरा और फूलो से आच्छादित ही देखते आये हैं। वहा गुलाब और दूसरे फूल खिले रहते हैं। बेंचो पर बूढी माताएँ, दाइया और बच्चो की नर्सें बैठी रहती हैं। धूलभरे मार्गों पर बच्चे खेलते रहते हैं। व्यवस्था बनाये रखने के लिए वहाँ कुछ विशेष प्रकार की महिलाएँ तैनात रहती हैं। कोई गलत चीज होती देखते ही वे सीटियाँ बजाने लगती हैं। बडे लडको पर तो वे खास तौर से कडी नजर रखती हैं, क्योकि वे हमेशा यही सोचती रहती हैं कि ये छोकरे कायदे-कानूनो को तोडने के लिए ही मैदान मे आते हैं।

पुराने जमाने की जो एकमात्र यादगार "मास के मैदान मे शेष बच गयी है वह विचित्र प्रकार की शक्लो वाले लैम्पो के वे पुराने सोलह खम्भे हैं जिनमे शीशे की काली खिडकियाँ बनी हुई हैं। शाम

के समय जब पूरा मैदान बिजली के छोटे-छोटे कुमकुमो से जगमग हो उठता था और वे कुमकुमे मोतियो की तरह चमकते दीखते थे तो ये सोलह पुरानी लालटेनें टिमटिमाती हुईं अजीव प्रकार की मद्धिम रोशनी मे लिपटी खडी दीखती थी। उन्हें देखकर ऐसा लगता था जैसे कि किसी दूसरी दुनिया से वे अपनी रोशनी भेज रही हो। ये लालटेनें मैदान के बीचो-बीच बनी सामूहिक समाधियो के पास लगी थी।

इन समाधियो के चारों तरफ ग्रेनाइट पत्थर की एक नीची-सी दीवाल थी। उसमे मृत लोगो के नाम और उनका विवरण खुदा था। किन्ही किन्ही कब्रो के सामने के विवरण लम्बे, कई-कई पक्तियो के थे और किन्ही के सामने के छोटे। कुछ बडे अक्षरो मे खुदे थे, कुछ साधारण छोटे अक्षरो म।

समाधिया के पास जाने के लिए चारो तरफ से चार माग बने थे। इन समाधियो मे क्रान्ति के शहीद दफनाये गये थे। परन्तु वह बहुत पुराने दिनो की बात है। तब ये लडके तो क्या, इनके मा-बाप तक नही पैदा हुए थे।

समाधियो के ऊपर एक "अमर ज्योति" जलती रहती है। वह गैस से जलती है। गैस को जमीन के नीचे से पाइप डालकर वहाँ पहुँचाया जाता है। ज्योति की लौ निरन्तर जलती रह—इसकी देख-भाल लेनिनग्राद के गैस मजदूर करते रहते हैं।

यह गैस और वह चूल्हा जिससे ज्योति निकलती है साधारण चीजें है। वास्तव मे, कोई खास बात उनमे नही है। ये लडके जिस शहर म रहते ह उसे तो आणविक शक्ति से चलने वाले बर्फ-तोडक जहाज को बनाने का भी श्रेय प्राप्त है। इन लडको की दिलचस्पी बाह्य अतरिक्ष तथा उसम स्थापित किये गये मानव-कृत उपग्रहो मे है। गैस का चूल्हा उनकी दृष्टि मे मात्र गैस का एक चूल्हा है, इससे

अधिक कुछ नहीं ! "अमर ज्योति' का अब उनके लिए केवल इतना है कि लेनिनग्राद के गैस मजदूर अपना काम ठीक से कर रहे हैं।

यूरचिक ने इन लड़कों को एक मतबा बतलाया था कि शिलाओं पर खुदे शहीदों के उन लम्बे विवरणों को स्वयं लूनाचार्स्की ने, जनमंत्री साथी लूनाचार्स्की ने लिखकर तैयार किया था। हाँ, यह भी एक लम्बे अर्से पहले की बात है उस समय हमारे पास रेल के इन्जन नहीं थे। जो थे वे बिल्कुल पुराने और जीर्ण अवस्था में थे। उस समय अमरीकियों ने हमारे सामने प्रस्ताव रखा था कि यदि हम उन्हें ग्रीष्म उद्यान के चारों ओर की सुन्दर जाली दने के लिए तैयार हो जायें तो वे हमें रेल के सौ नये इन्जन दे देंगे !

"हाँ, वही जाली। तुमने उसे देखा है न ? हाँ रेल के सौ इंजनों के बदले में अमरीकी हमसे उसी को ले लेना चाहते थे।"

वित्का ने कहा "अच्छा मैं होता तो जरूर सौदा कर लेता।"

"तुम उस जाली को दे देते ?"

'क्यों नहीं ? यह तो अच्छा सौदा था। उसमें हमारा ही फायदा था।"

"तो तुम्हारा खयाल है कि वह बहुत अच्छा सौदा था ? हमारी उस जाली के बदले में रेल के सौ इंजन ?"

"हाँ, अच्छा ही तो था। नहीं ?

तुम तो वज्र मूर्ख हो !"

वित्का ने पूछा, "मैं मूर्ख हूँ, क्यों ?'

'क्योंकि हमें जितने इंजनों की जरूरत है हम उतने से भी ज्यादा बना रहे हैं—और केवल भाप से चलने वाले इंजन नहीं, बल्कि डीजल और बिजली से चलने वाले इन्जन भी। लेकिन वह खूबसूरत जाली वह तो दुनिया में बेजोड़ है ! दुनिया में दूसरी वैसी जाली कहीं नहीं है !"

लूनाचार्स्की की भी यही राय थी। उन्होंने जन मंत्रि परिषद को समझा-बुझाकर इस बात के लिए राज़ी कर लिया था कि उस अनोखी जाली को किसी भी कीमत पर किसी को न दिया जाय।

शास्का बोल उठा, "तुम्हारे कहने का क्या यह मतलब है कि उस तरह की जाली सारी दुनिया मे सचमुच कही नही है ?"

एक ओर उस जाली स घिरा हुआ वह 'ग्रीष्म उद्यान' है जो सैकडा इजनो से कही अधिक मूल्यवान है और दूसरी ओर है, मिखाईलोव्स्की उद्यान। फाटक से निकल कर अगर आप बायी तरफ को चलें तो आप देखेंगे कि कुछ ही कदमो के बाद विद्युत मजदूरो का क्लब स्थित है। प्रत्यक शाम को उसमे फिल्म शो होते है। थोडा और आगे बढने पर पुल के उस पार, पीटर और पॉल का प्रसिद्ध किला मिलता है। किले और नदी के बीच सकरा सा बालू-तट है। उत्तर की ओर से आने वाली सर्द और तेज़ हवाओ स किले की दीवार उसकी रक्षा करती है। लाग वहा तैरते है तथा लेटकर धूप का आनन्द लेते है। विशेषकर अप्रैल से ही—ज्योही सूर्य निकलता है—धूप-स्नान का आनन्द लेने लगता है। अप्रैल मे, सूर्य निकलने पर भी वहा की बालू बर्फ की तरह ठण्डी रहती है। आप को उस पर लेटना नही चाहिए वरना ऐसी सर्दी लगेगी कि जान ही निकल जायगी। इसलिए जवान और बूढे सभी मर्द कमर तक के कपडे उतार कर खडे-खडे वहा धूप-स्नान करते हैं।

जब तक आदमी बच्चा रहता है वह इस बात की कल्पना नही कर सकता कि मर्द की जिन्दगी कैसी होती है। छोटी उम्र मे तुम सोचते हो कि ७ या ८ घण्टा काम कर लेने के बाद तुम्हारे पिता के दिन का कार्य समाप्त हो गया—ज्यादा से ज्यादा उन्हे थोडा

सा स्वेच्छा-प्रेरित काम और करना पड सकता है, या एक-आध मीटिंग मे भाग लेना पड सकता है। लेकिन, जब तुम बडे होने लगते हो और खुद फाटक के बायें या दाहिने तरफ को जाते हो तब तुम्हें दिखलायी पडता है कि कितनी तरह-तरह की चीजें हैं जिनम लोग लगे रहते हैं। उदाहरण के लिए, "अस्तबल चौक" के उन मोटर साइकिल वालो को ही ले लो जो ड्राइविंग की रोज परीक्षा देते हैं। वहा एक परीक्षक, जन-सेना का एक लेफ्टीनेन्ट मौजूद रहता है। अपनी मोटर साइकिल से आठ का अक बनाता हुआ वह खडा खडा देखता रहता है। उसके चारो ओर जवान और बूढे लोगो की एक अच्छी खासी भीड जमा रहती है। वह भीड एक इच भी इधर-उधर हिलने या हटने को तैयार नही होती। वह वहीं, जैसे जमीन मे गडी हुई, खडी रहती है और टीका टिप्पणी करती है। उसमे कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो काम से लौटते हुए वहा खडे हो गये हैं। वे अब भी अपने काम के लबादे पहने है। उनमे इञ्जन की चिकनाई अथवा सफेदी लगी है। भीड म एक-आध ऐसा भी है जो अपनी मा के लिए डबल रोटी वाले की दूकान से रोटी लेने गया था। रोटी तार के थैले मे लटकी है और उसकी मा रोटी के लिए उसका इन्तजार कर रही है, लेकिन वह सारी दुनिया को भूला हुआ खडा खडा तमाशा देख रहा है।

नेव्स्की नदी के तट पर स्थित उस दूकान मे जिसमे सग्रह योग्य टिकट बिकते हैं अक्सर शाशा भी जाता है। वह दूकान भी हमेशा वयस्क लोगो से ही भरी रहती है। दूकान के अन्दर वे एक दूसरे को धकेलते और दूसरो के धक्के खाते रहते हैं। फिर सिगरेट पीने के लिए बीच-बीच म वे बाहर निकल आते हैं। स्कूली लडको के साथ वे टिकटो की अदला बदली करते हैं दुनिया म हो रहे परिवर्तनो के सम्बन्ध मे चर्चाए करते हैं और यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि अफ्रीका मे और कितने नये राज्य कायम हो

गये हैं। शाश्का कहता है कि ऐसी चीजों के बारे मे उनकी जानकारी भूगोल के किसी मास्टर की जानकारी से कम नही होती। "मिखाई-लोव्स्की उद्यान' की ओर मोइका नहर के किनारे किनारे जाने वाली सडक पर एक जगह कुछ लोगो ने शतरज का एक क्लब स्थापित कर रखा है। अपनी-अपनी शतरज के मोहरे व खुद लाते हैं और वहा बैठकर खेलते हैं। उनके इद-गिद भी शतरज के शौकीनो का अच्छा खासा जमाव रहता है। वे टूर्नामेंट भी सगठित करते हैं। इस क्लब के खिलाडियो के भी अपने बोटेविनिक और ताह्ल हैं। *

इस सम्बध मे भी यूरचिक सम्मान पाने का अधिकारी है। इस क्लब के सजीदा लोगो ने उसे खेलने के लिए आमन्त्रित किया था। उन्होने उससे कहा था कि वह उनके टूर्नामेंट मे भाग ले। और निश्चित रूप से उसमे उसने भाग लिया भी होता अगर उसकी मा से गर्मियो की छुट्टी मे ज़िद करके उसे अपने साथ गाव न ले गयी होती।

इस तरह, फाटक के पास तीन लडके खडे खडे "मास के मैदान' के उस पार देख रहे हैं। लोग बाग मार्गों पर चहलकदमी कर रहे हैं। दादिया, नानिया और नर्सें जगह-जगह बैठी गप मार रही हैं।

लाल फ्राक पहने एक छोटी-सी बच्ची और सफेद कमीज पहने एक नन्हा-सा बालक हरे मैदान पर खिले छोटे छोटे फूलो को तोड रहे हैं। सडक को धोने के लिए होज पाइप को हाथ मे लिये हुए सफैया आया है। लेकिन वह ठगा सा वही खडा है। धूप की किरणो मे अपनी आखो को बचाते हुए वह उन काली-काली नई "ज़िल -

*शतरज के विश्व प्रसिद्ध सोवियत खिलाडी।–स०

मोटरो की कतार को एकटक दृष्टि मे देख रहा है जो मोड की तरफ से अपना सुन्दर सतुलन प्रदर्शित करती हुई उसकी तरफ बढी चली आ रही हैं। उनका एक पूरा लम्बा, अन्तहीन-सा काफिला है। वह पानी खोलना भूल गया।

कारो की लम्बी कतार को देखकर शाश्का बोला, "अरे, कितनी बहुत-सी हैं।'

ज़िल' कारो की गति धीमी हो जाती है। व एक दूसरे से इस तरह सट जाती हैं कि उस सँकरी सडक पर अब और अधिक के लिए जगह नही रह गयी है। ट्राम की लाइनो पर, बडे-बडे गोबरलो की पाँत की तरह, आहिस्ता आहिस्ता व आगे बढती हैं। उनकी वजह से दूसरी तरफ मे आती हुई एक ट्राम को रुक जाना पडता है।

यूरचिक कहता है, "ये लोग पोलैण्ड के होंगे।'

वित्का ने पूछा, "तुम्हे कैसे मालूम ?"

"*यह बात अखबार मे छपी थी।'*

शाश्का ने कहा, "तुम ठीक कहते हो, रेडियो पर भी खबर आयी थी। पोलैण्ड से एक प्रतिनिधि मण्डल आया है।'

यूरचिक ने कहा, "प्रतिनिधि-मण्डल माल्यार्पण करेगा और 'अमर ज्योति को अपने साथ वापस पोलैण्ड ल जायगा।

वित्का ने पूछा, " 'अमर ज्योति' को ले जायेगा ? उसे यहा से उठा ले जायेगा ?

"नही रे, उसे ले नही जायगा। प्रतिनिधि मण्डल हमारी लौ मे *एक और लौ जला लगा और उस अपन साथ ले जायगा।"*

'ज़िल' कारें रुक गयी। कुछ सडक पर ही और कुछ मैदान के उस पार के चौडे माग पर। हल्की आवाज़ के साथ उनके दरवाजे

खुल। लाग उनम से उतर आये। उनमे स दा हैट लगाये हुए हैं, बाकी के सिर उघाड़े हैं। एक हर रग का कोट पहने है शेष भूरे या गिलटी रग की बरसातियाँ ओढे है।

दो व्यक्ति गुलदस्ता-नुमा एक बड़े से हार का लकर समाधियो के पास वाली दीवाल के नजदीक पहुच गय।

राह चलते लोग भी यह देखने के लिए रुक गये हैं कि वहाँ क्या हान जा रहा है। दादियाँ नानिया और नर्स भी अपने बच्चो के हाथ पकड़े, जल्दी-जल्दी चलकर चारा तरफ से समाधियो के समीप पहुच गयी हैं।

तीना लड़के भी उसी दिशा मे चलने लगे। लेकिन अपना बड़प्पन बनाये रखने के लिए, अपने पतलूनो की जेबा मे हाथ डाल वे धीरे-धीरे चल रहे है।

जिल" कारो पर बैठकर जा लोग आय थे वे दीवाल के पास इकट्ठा हो गये है। उनमे से दो ने जो हैट पहने थे अब ख ुद भी दूसरो की ही तरह अपने सर उघाड दिये है। उनके बाल हवा मे उड रहे हैं। हरे कोट वाला वह व्यक्ति 'दुभाषिया होगा। वह हाथ हिला हिलाकर लगातार बात कर रहा है। वह समाधियो के सामनेलिखे विवरणो का अनुवाद करता होगा। प्रतिनिधि मण्डल के लोग उसके इद गिद खड़े उसकी बातो को सुन रह हैं। फिर उनम से एक व्यक्ति दढ कदम उठाता हुआ द्वार से उस चौक की तरफ जाता है जहाँ 'अमर ज्याति' जल रही है। उसके पीछे पीछे दूसर लोग भी चलन लगत है। ज्योति के पास पहुच कर उसन अपना एक घुटना मोडा और नीचे बैठ गया। उसके बाद दूसरे लोग बीच म आ गय। लड़को को अब वह नही दिखलायी द रहा है।

फिर भी जो कुछ उन्होने दखा था वह उ ह अच्छा लगा। उनके चेहर खुशी और अभिमान के भाव से चमक उठे। हा, जिस तरह

उस आदमी ने घुटने के सहारे नीचे बैठकर सफेद बालो वाला अपना सिर झुकाया था वह उन्हें अच्छा लगा था। उसमे एक बाकपन था, वीरो जैसी ऐसी भाव-भगिमा थी जो उन्हें भली लगी थी। श्रद्धा के साथ इस प्रकार घुटने के बल झुककर बैठते हुए इससे पहले उन्होने किसी को नही देखा था। इस तरह की चीजो के बारे मे केवल ऐतिहासिक उपन्यासो मे ही उन्होने पढा था।

वास्तव मे, जिस बात का सबसे अधिक प्रभाव उनके मन पर पडा था वह यह थी कि उस आदमी ने उनकी सामूहिक समाधियो के सामने झुककर उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया था। वह स्वय लेनिनग्राद की उनकी धरती पर श्रद्धानत हो रहा था और नेवा नदी की तरफ से आती हवा उसके सफेद बालो के साथ अठखेलिया कर रही थी।

इस दृश्य को सब लोग खामोशी से देख रहे थे राहगीर, बच्चे, लेनिनग्राद के विद्युत मजदूर और डाकखाने के मजदूर, सब। लेनिनग्राद के विद्युत मजदूर उसे अपने क्लब की पहली मजिल से, और डाकखाने के मजदूर क्लब की निचली मजिल से देख रहे थे थोडी देर म प्रतिनिधि-मण्डल के लोग फिर अलग अलग हो गय। सफेद बालो वाला आदमी सामने आ गया और मोटरो की तरफ वापस लौटने लगा। वह अपने दाहिने हाथ मे कोई चीज लिये था जिसे अपने बाये हाथ से बचाता हुआ वह आगे बढ रहा था। वह वह ज्योति ही होगी जिसे हमारी ज्योति से उन्होने जला लिया है और अब अपने देश ले जा रहे हैं। सफेद बालो वाले आदमी के पीछे-पीछे उसके दूसरे साथी थे। मोटरो के दरवाजे खुले और हल्की सी आवाज हुई। प्रतिनिधि-मण्डल मोटरो मे बैठ गया। हरे कोट वाला उनका दुभाषिया भी उन्ही के साथ बैठ गया।

बस। काली-काली "जिल' कारें हल्की-सी आवाज करती हुई

लौटने लगी। थोडी ही देर मे चमकती हुई काली-काली बढिया मोटरो का वह शानदार काफिला दृष्टि से ओझल हो गया। ट्रामे फिर घडघडाती हुई दौडने लगी। दादिया नानिया और नर्सें भी फिर लौट कर अपनी बन्चो पर आ बैठी।

तीनो लडके अपने हाथो को जेबो मे डाले और बिना एक भी शब्द बोले, मटरगश्ती करते समाधियो की तरफ बढते दिखलायी दे रहे हैं। वे इन्ही समाधियो के पास खेल-कूदकर बडे हुए हैं। गर्मी हो, या जाडा—ऐसा शायद ही कोई दिन होता होगा जिस दिन ग्रेनाइट पत्थर की इस दीवाल को और उसमे खुदे लूनाचार्स्की द्वारा तैयार किये गये विवरणो को वे न देखते हो। लेकिन उन शिला-लेखो को उनमे से किसी ने भी यूरचिक तक ने नही, ठीक से पढने की कभी कोशिश की थी। ग्यारह या बारह वर्ष की उम्र के लोगो मे कब्रो के पत्थरो पर लिखे विवरणो को पढने मे बहुत दिलचस्पी नही होती।

पर अब वे दीवाल के चारो तरफ धीरे-धीरे चल रहे थे। हर शिलालेख के सामने रुक कर अत्यन्त ध्यान और श्रद्धा से उसकी दारुण और पवित्र पक्तिया को वे पढ रहे है। लडके जानना चाहते हैं कि इन समाधियो पर ऐसा क्या लिखा है जिसे पोलैण्ड के वे लोग पढ रहे थे। वे यह भी जानना चाहते है कि उनके "मास मैदान' स वे लोग कौन सी चीज अपने साथ पोलैण्ड ले गये हैं।

स्वतन्त्रता के सघर्ष मे जिन योद्धाओं ने
अपनी आहुति दी थी
और जिन्होने अपना खून बहाया था
उन सबके नामों को न जानते हुए भी
उन तमाम अज्ञात वीरों की स्मृति मे
मानवजाति श्रद्धाजलि अर्पित करती है।

और यहाँ इस शिला को
इसलिए आरोपित किया गया है
जिससे कि युगों-युगो तक
उनकी याद यह दिलाती रहे !!

इन पक्तियो को मन ही मन खामोश भाव से लडको ने पढा। शाश्का की भौंह चढ गयी, वित्का का मुह खुला का खुला ही रह गया, यूरचिक के छोटे चेहरे को देखने से लगता है कि वह गहरे विचारो मे खो गया है।

देर-सबेर, शिला-लेख के शब्दो का अर्थ उनकी समझ मे आने लगता है। और, विचित्र बात तो यह है कि, लेख मे कामा या विराम के चिन्ह कही नही है ! उनके न होने की वजह से कितनी परेशानी उठानी पडती है। परन्तु, इस शिला लेख को देखने से लगता है कि उनके बिना भी आदमी का काम भली-भाति चल सकता है।

यह शिला लेख तो आने वाले वर्षों के लिए लिखा गया है रूमियो, पोलो, सभी राष्ट्रो के लोगो के लिए। इसलिए कामा, विराम के चिन्हो के चक्कर मे पडने की बहुत अधिक जरूरत नही है।

अमर वह है
जो किसी महान उद्देश्य के लिए
प्राण होम करता है
वह
जो अपना जीवन
जनता के लिए न्योछावर करता है
वह जो सबकी भलाई के लिए
काम और सघर्ष करता है
तथा जान देता है।
ऐसा आदमी

जनता के दिल मे
सदा जीवित रहता है

सफेद कमीज वाला छोटा बच्चा और लाल फ्राक वाली छोटी बच्ची थोड़े फासले पर खड़े खड़े उन बड़े लड़को को शिला लेखो का पढता देख रहे है। सम्भवत, यह सोचते हुए वे प्रतीक्षा कर रहे है कि आगे कुछ और होगा। कदाचित, कोई दूसरा आदमी अब घुटन के बल बैठकर झुकेगा। लेकिन बड़े लड़के सिफ अपने मुहो से सिगरट के टुकड़ो को निकालकर अपनी जेबो मे डाल लेते हैं।

तुम सवहारा लोगो ने
उत्पीडन गरीबी और अज्ञान
के गढे से उठकर
स्वतन्त्रता और सु ख
की प्राप्ति की है
तुम सम्पूण मानवजाति का
भला करोगे
और
दासता की शृखलाओं से उसे
मुक्त करोगे

तीनो लड़के दीवाल के अन्दर चले जाते हैं।

पोल लोग बडा सा जो भारी हार लाय थे वह एक किनार टिका रखा है। छोटे-से एक चौकोर मच के बीचो बीच एक थोड़ा गहरा-सा स्थान है जिसम मे 'अमर ज्योति" निकल रही है। पवन मे प्रकम्पित उसकी लौ रुपहली धूप म सुनहरी और लाल एक रमणीक पताका की मानिन्द लगती है। अच्छा, तो वे पोल हमारी इसी ज्योति का लेने यहाँ आये थे! यह वही लौ है गैस के मजदूर जिसकी निरन्तर निगरानी करते हैं जिससे कि वह सदा जलती रहे।

इन प्रस्तर-खण्डों के नीचे
बलि नहीं, बल्कि अपराजेय रणबांकुरे
विश्राम कर रहे हैं
तुम्हारे समस्त चिर कृतज्ञ
वशजो के
दिलों मे
तुम्हारी शहादत से दु ख की नहीं, ईर्ष्या
की भावना जाग्रत होती है
उन लाल और भयकर दिनों मे
तुम खूब शान से जिये थे
और तुमने महान मृत्यु
प्राप्त की थी

लडके सोचने लगते हैं कि क्या हुआ अगर गैस मजदूरो को इस ज्योति की निगरानी करते रहना पडती है। यह काम तो उन्हें करना ही चाहिए और इस जगह को साफ भी उन्हे रखना चाहिए। उन्ह देखते रहना चाहिए कि लौ के माग मे कोई अवरोध न पैदा हो।

और, एक दिन, जिस दिन वह चक्रवात आया था, अगर वह बुझ भी गयी थी तो क्या हुआ ! पवन ने उसे बुझा दिया था लेकिन लोगो ने उसे फिर जला दिया। जरूरत पडने पर वे फिर ऐसा ही करेंगे। निश्चय ही वह तो अमर है, वह "अमर ज्योति' है।

समाधियो पर लगे पत्थर धूप मे कुछ कुछ काले पड गये हैं। कहीं-कहीं उनमे खरोचें लग गयी हैं और ऊपर धूल भी चढ गयी है। फिर भी अपनी मूक, मृद भाषा मे वे उनसे बातें करते है और मृतको के बारे मे, उनके अमर पूवजा के बारे मे वे उन्हे बतलाते हैं।

'श्वेत गार्डों (देश द्रोहियो) से लडते हुए शहीद हो गये "

"दक्षिण पक्षी समाजवादी क्रान्तिकारियों की हत्या के शिकार हुए "

"मोर्चे पर श्वेत आये "

"फिनलण्ड के श्वेत गार्डों द्वारा मार डाले गये थे "

'जुलाई, १६१८ मे यारोशलाव्ल–विद्रोह को कुचलते समय श्वेत गार्ड गद्दारों ने हत्या कर दी थी"

'उन शहीदो की अस्थियां हैं यहा जो १६१७ की फरवरी क्रान्ति और महान अक्तूबर क्रान्ति की लडाइयो मे खेत रहे थे"

चन्द लोगो की
सम्पदा, सत्ता और ज्ञान की सुविधा
के विरुद्ध
तुमने सग्राम किया
और अपने जीवन की आत्माहुति
इसलिए गौरवपूवक तुमने दी
जिससे कि सम्पदा सत्ता और ज्ञान
समानरूप से सबको
सुलभ हो सकें

तीनो लडके अपनी जेबो मे हाथ डाले समाधियो के पास से चले गये।

हाँ, वे सोच रहे हैं कि यह ठीक ही है कि विदशी लोग इन चीजों को नोट करें और उनकी याद को अपने साथ अपन दशो को ले जायें। हाँ, यह ठीक ही है। ऐसा ही होना चाहिए। वहाँ क्या लिखा है ? तुम शान से जिये थे और शान से ही उन दिनो मे बहुत दूर दीखने वाले उन लाल और भयकर दिनो मे मौत का तुमने वरण हँसते हँसते किया था।

विल्का ने पूछा, "लेकिन 'भयानक' उन्हे क्या कहते हो ?"

परन्तु उसके दोस्त इस विषय मे इस समय बहस-मुबाहसा करने के लिए तैयार नही थे। वे अपने विचारो मे खोये हुए हैं।

यूरचिक ने रक्तविहीन मे अपने होठो को कसकर भींच रखा जिससे जाहिर होता है कि वह कोई बात नही करना चाहता बल्कि, तुमसे बन तो तुम खुद भी अपन दिमाग पर जोर डाल क कुछ सोचन-विचारन की कोशिश करो।

लडके खामोशी मे डूबे नीबुओ के पेडो की साफ सुथरी कतारो के बीच से चल रहे है। उनके दिलो मे शिला लखो के उन उदात्त शब्दा की प्रतिध्वनि गूज रही है। ठीक ही समय पर समाधिया के पास से वे हट गये थे। क्योकि तभी सीटी बजाती एक महिला तजी से उनकी तरफ झपटी आ रही थी। उसकी नजर उन पर पड गयी थी, इसलिए वह अधिक से अधिक तेज़ गति स दौडती हुई उन्ही की तरफ आ रही थी। बाद म दादिया, नानिया और नर्सों का उसने बतलाया कि वह डर रही थी कि लडके कहीं उस बडे हाल स फूल निकाल कर न ले जायें। परन्तु वे वहा से हट गये थे और हार ज्यो का त्यो वही सुरक्षित रखा था। इस बात पर महिला को क्रोध आया कि अकारण ही इतनी दौड-धूप करके उसने अपने को थका लिया था। फिर उनकी तरफ देखते हुए, जैसे उनमे अलविदा कह रही हो, खूब जोर से उसने अपनी सीटी बजा दी।

लाल फ्रॉक वाली छोटी बच्ची और सफेद कमीज वाला छोटा बच्चा अपने स्थानो को लौट गय। वे कुछ भी नही समझे थे। उनके समझने का समय अभी नही आया था। छोटी बच्ची अपन लाल फ्रॉक को चारो तरफ फैलाकर बैठ गयी जिसस कि वह एक बडे लाल फूल की तरह दीखन लगी। और घास के उस चमकते हरे-स मदान म वे दानो, वह बच्चा और वह बच्ची, फूलो की तरह खिले दिखलायी दे रह थ।

मित्या पावलोव

सोरोमोवो म जहा मेरा घर है वही मित्या का भी घर था। उमकी मत्यु येलेत्स म किमी जगह टाइफाइड से हो गई थी।

१९०५ म, मास्को विद्रोह के समय सेण्ट पीटमबग मे वह हम लोगो के लिए पारे की कैपस्यूला से भरे विस्फाटका की एक बडी पेटी ले आया था। माथ ही पैंतीस फुट लम्बा फ्यूज का तार (फुस्नार) भी अपनी छाती पर लपट कर वह ले आया था। फ्यूज का तार या तो उसके पसीन की वजह से फूल गया था इसलिए, या फिर इसलिए कि उमकी पसलियो के इद गिद उसे जरूरत मे ज्यादा कस कर बाध दिया गया था, मित्या मेरे कमरे मे ज्या ही दाखिल हुआ त्या ही वह भर-भरा कर फश पर गिर पडा। उमका चेहरा नीला पड गया और उसकी आँखें बाहर निकल आयी। ऐमा लगन लगा जैंमे कि साँस रुक जाने की वजह से वह मरा जा रहा है।

"मित्या, तुम तो बिल्कुल पागल हो गये हो! अगर यहा आते समय रास्ते मे तुम बेहोश हो जाते तो क्या होता? समझते हो कि उस समय तुम पर क्या बीतती?"

साँस के लिए हाफते हुए अपराधी की भाँति उमने उत्तर दिया, 'तब फ्यूज का नुक्सान हो जाता और ये कैपस्यूलें भी जाया जाती।

एम० तिखविन्स्की उमकी छाती पर मालिश कर रहे थे। उमकी बात सुनकर उन्हे भी क्रोध आ गया और उन्होने उमको ओर भी जोर

से डाट सुनाई। लेकिन मित्या अपनी आँखो को भीचता खोलता प्रश्न की झडी लगाये हुए था

"इनसे कितने बम बन जायेंगे ? क्या दुश्मन हमें हरा देगा ? क्या प्रस्तावा अभी डटा हुआ है ?

फिर, जहाँ वह सोफा पर लेटा था वही से तिग्रविस्की की तरफ, जो उस समय उन कैंपस्यूलो की जाँच पडताल कर रहे थ, आँख से इशारा करते हुए आहिस्ता से उसने पूछा,

"क्या बम वही बनाते है ? क्या वह प्रोफेसर ह ? मजदूर है ? सच कहते हो ? "

और अचानक, जैसे कि किसी नयी चिन्ता ने उसे घेर लिया था, वह पूछने लगा,

"विस्फोट से कही वह तुमको तो नही उडा देंगे ? कोई गडबडी तो नही होगी ?"

अपने बारे म,उस भयानक खतरे के बारे मे जिसमे बाल बाल बच कर वह निकल आया था, उसने एक शब्द भी नही कहा या पूछा !
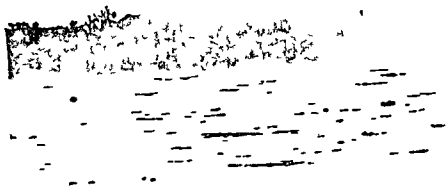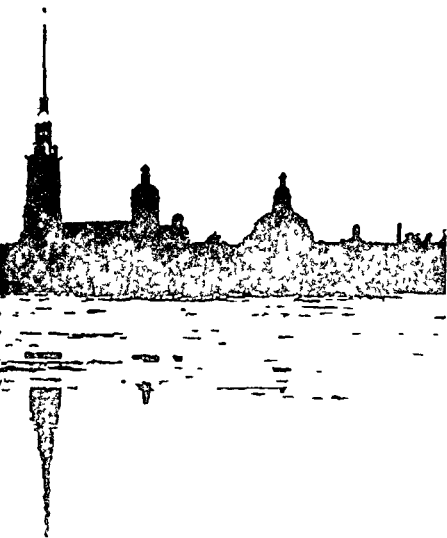
БЕССМЕРТЕН
ПАВШИЙ ЗА ВЕЛИКОЕ
ДЕЛО
В НАРОДЕ ЖИВ
ВЕЧНО
КТО ДЛЯ НАРОДА
ЖИЗНЬ ПОЛОЖИЛ
ТРУДИЛСЯ БОРОЛСЯ
И УМЕР
ЗА ОБЩЕЕ БЛАГО